राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेम पत्र राधास्वामी

[भाग चौथा]

बचन १

। हित उपदेश ।

उपदेश अनेक प्रकार से वास्ते उलटाने और चढ़ाने मन और सुरत के निज घट में ऊँचे को यानी दसवें द्वार की तरफ़, और फिर वहाँ से पहुँचाना सुरत का निज घर यानी राधास्वामी धाम में—इसी का नाम सच्चा और पूरा उद्धार है ॥

(१) प्रकार पहिला

सुरत और मन नौ द्वारों के वसीले से जो पिंड में हैं इस संसार में वर्त रहे हैं और यहां के भोगों का तुच्छ रस लेते हैं, उनको चाहिये

कि दसवें द्वार की तरफ़ भी (जो घट में है) झाँक कर ऊँचे देश का विशेष आनंद लेवें ॥

१-(१) सब जीव स्वभावक नौ द्वार में जो पिंड में हैं बर्त रहे हैं; और वह नौ द्वार यह हैं-दो आँखों के दो कानों के दो नाक के एक मुख का एक इंद्री यानी पेशाब का मुक़ाम और एक पाख़ाने का मुक़ाम-और इन्हीं द्वारों पर धार आकर भोगों का रस लेती है ॥

२-(२) यह इंद्रियों के भोग ऐसे ज़बर हैं कि सब जीव इन्हीं के रस में फँस गये हैं, और उन से छूटना निहायत कठिन हो गया है ॥

३-(३) कोई जीव एक या दो इंद्रियों के रस में ऐसे लिपट गये कि उसी में अपनी जान दे दी, और ज़रा भी सोच अपने जीव के कल्यान का या अपने कुटुम्ब परिवार के नफ़े और नुक़सान का न किया और उसी बासना और भोग की आदत से नीचे के दरजों में उतर गये जहाँ से फिर नर देही और ऊँचे दरजों में उलट कर आना निहायत मुश्किल हो गया ॥

४-(४) इंद्री भोगों का रस लेना और उन्हीं की बासना चित्त में धरना हमेशा सुरत और मन को नीचे और बाहर की तरफ़ बहाते है, और रफ़्ते २ नीचे की जोनों में बासा देते हैं जहाँ से अपनी ताक़त से

कोई जीव उलट कर नर देह में नहीं आ सक्ता जब तक कि संत सतगुरु दया करके न निकालें ॥

५-(५) इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब है कि इंद्री भोगों में एहतियात के साथ बर्ताव करें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन लेकर अपने निज घर की सुध सम्हालें, यानी जुगत दरियाफ़्त करके रास्ता तै करना शुरू कर दें, तब कोई अर्से में जीव का कारज बनना मुमकिन है ॥

६-(६) रास्ता तै करने से मतलब यह है कि निज घर का भेद लेकर और सुरत शब्द मारग का उपदेश हासिल करके, शब्द और स्वरूप के आसरे मन और सुरत को अपने घट में दसवें द्वार की तरफ़ उलटाना और चढ़ाना शुरू करें, तब जिस क़दर कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से अंतर में रस और आनंद मिलता जावेगा उसी क़दर शौक़ के साथ चाल चलती जावेगी ॥

७-(७) अंतर में जो स्वरूप और शब्द का रस मिलना मुमकिन है वह स्वतंत्र है, यानी अभ्यासी जब चाहे तब अपने अंतर में झाँक कर थोड़ा बहुत आनंद ले सक्ता है—और संसार के भोगों का रस परतंत्र है यानी दूसरे के आधीन है क्योंकि जब तक धन ख़र्च करके वह विषय और भोग प्राप्त

न होवें तब तक उनका रस नहीं मिल सक्ता और धन हासिल करने के वास्ते पहिले मिहनत करनी पड़ेगी ॥

८-(८) इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि कुल जीवों को चाहे स्त्री होवे या पुरुष अपनी सुर्त रूह के कल्यान के वास्ते अपने घट में दसवें द्वार की तरफ़ उलटने और चलने की जुगत सुरत शब्द मारग करके ज़रूर थोड़ा बहुत कमाना चाहिये यानी जिस क़दर बन सके उसका अभ्यास नेम से हर रोज़ करना चाहिये तो भारी तकलीफ़ या खौफ़ या चिन्ता के वक़्त और भी मौत के समय बहुत रफ़ाहियत होगी यानी दुख सुख कम व्यापेगा और अंतरी सहायता सुख विशेष मिलेगा ॥

९-(९) सिवाय ऊपर के लिखे हुए फ़ायदे के राधास्वामी मत के अभ्यासी को कुल मालिक का थोड़ा बहुत जलूवा अंतर में नज़र आवेगा और उसकी दया और रक्षा के परचे मिलते जावेंगे कि जिसके सबब से अभ्यासी की प्रीत और प्रतीत दिन २ चरनों मे बढ़ती जावेगी और रफ़ते २ सुरत तन मन से न्यारी होकर कुल मालिक और संत सतगुरु की दया से एक दिन अपने निज घर में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगी—और जो यह काम नहीं किया जावेगा तो मन और इंद्रियों के साथ नीचे देश और जोनों में भरमती रहेगी ॥

१०--(१०) इस काम के करने के वास्ते यह ज़रूर नहीं है कि प्रेमी अभ्यासी अपना घर बार या रोज़गार छोड़े, बल्कि ग्रहस्त में रहकर सब काम दुनियादारी के बदस्तूर थोड़ी एहतियात और होशियारी के साथ करता रहे और राधास्वामी मत की जुगत का अभ्यास भी थोड़ा बहुत हर रोज़ करता रहे, तो दोनों काम यानी स्वार्थ और परमार्थ सहज में बन जावेंगे ॥

---

(२) प्रकार दूसरा

चेतन्य को जड़ पदार्थों से मेल कम करके बिशेष चेतन्य और फिर महा बिशेष चेतन्य से मिलने का जतन वास्ते अपनी तरक़्क़ी और सुख और आराम के ज़रूर करना चाहिये ॥

११--(१) दुनियाँ में हर एक शख़्स अपने से बड़े आदमियों से, जैसे महाराजा राजा अमीर और सेठ साहूकार और विद्यावान और हुनरमंद से मिलना चाहता है, और चाहे कुछ मतलब उनसे निकले या नहीं सिर्फ़ उनसे मुलाक़ात या जान पहिचान करने से ही बहुत मगन होता है और जो कुछ इस काम

में धन ख़र्च पड़े उस को भी खुशी से ख़र्च करता है ॥

१२--(२) और जो कोई अपने बराबर का है या अपने से कमतर है तो उससे मिलने के वास्ते कोई जतन नहीं करता, बल्कि जो वह आपही इस शख़्स से मिलने की ख़ाहिश करके इसके पास आवे तो भी उसके मिलने से ऐसा खुश नहीं होता जैसा कि अपने से बड़े आदमियों से ॥

१३--(३) अब ग़ौर का मुक़ाम है कि दुनिया के मतलब के वास्ते या सिर्फ़ मान बड़ाई के लिये दुनिया के बड़े आदमियों को तलाश करके उनसे मेल करें और परमार्थ के वास्ते निहायत नादान या अनपढ़ बंसावली गुरुओं को अपना गुरू धारन करें और वास्ते अपने उद्धार के धात या पाषान की बनाई हुई मूर्तों को या दरियाओं और दरख़्तों और जानवरों को जोकि मनुष्य से निहायत ओछे और छोटे यानी कम दरजे के हैं और जिनसे किसी क़िस्म का परमार्थी मतलब या काम नहीं निकल सकता परमेश्वर मान कर पूजें ॥

१४--(४) और यह जीव आप अपनी नज़र से देखते हैं कि मूरत के इष्ट वाले के कभी संसय और बिपर्जय दूर नही होते और मूर्त या तीर्थ और

दरख़्त वग़ैरह कोई संसय या भरम दूर करने की ताक़त नहीं रखते और न कोई भेद और जुगत बता सकते हैं ॥

१५-(५) फिर बड़े अफ़सोस का मुक़ाम है कि यह लोग सच्चे परमार्थ से ऐसे बेख़बर और बेपरवाह हैं कि चाहे कुछ फ़ायदा होवे या नहीं मूर्त और दरिया वग़ैरह की पूजा हरगिज़ नहीं छोड़ते और सच्चे परमार्थ का न तो उनके दिल में खोज है और न उसके जानने वाले की तलाश है, फिर ऐसे जीवों को क्या परमार्थी फ़ायदा हासिल होवे और किस तरह उनकी आँख खुले ॥

१६-(६) इन जीवों में जो कोई अधिकारी और संसकारी हैं और बेख़बरी से आम जीवों के संग तीर्थ मूर्त और ब्रत वग़ैरह में लग गये हैं उनके वास्ते संत यह वचन फ़रमाते हैं कि जब कोई संसारी काम वग़ैर अपने फ़ायदे या नफ़े की जाँच किये हुए नहीं करते और अपने से छोटों से किसी क़िस्म की मदद लेना नहीं चाहते तो परमार्थ में ऐसी ग़फ़लत और बेपरवाही कैसे कर रहे हो कि बंसावली या नादान गुरू से उपदेश लेते हो और तीर्थ और मूर्त वग़ैरह से आशा पापों के क्षय होने और मुक्ती की प्राप्ती की रखते हो, यह आशा तुम्हारी बिल्कुल झूठी और भरम है और तुमको आप

अपनी आँख से और थोड़ी बुद्धी की समझ से दिखाई देता है कि यह सब तुम्हारी किसी क़िस्म की मदद परमार्थी न तो यहाँ कर सकते हैं और न आगे करने की ताक़त रखते हैं, फिर बृथा अपना वक़्त और तन मन धन क्यौं ख़र्च कर रहे हो। मुनासिब तो यह है कि सच्चे परमार्थ के भेदी और जानकार और अभ्यासी गुरू खोज कर उनकी सरन लो और जो वह उपदेश करें उसके मुवाफ़िक़ कारंवाई करो और वे सुरत शब्द मारग का उपदेश देंगे, और कुल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल का इष्ट बंधाववेंगे और घट में ही रास्ता और मंज़िलें लखावेंगे ॥

१७-(७) जब ऐसे सच्चे गुरू और उनका सतसंग मिल जावे तब प्रीत प्रतीत के साथ उनका संग करो और उनकी जुगत की कमाई उमंग के साथ घट में करते रहो। कोई दिन के अभ्यास में कुछ कैफियत अंतर में मालूम पड़ेगी और उनकी दया और मेहर की परख आवेगी तब प्रेम और शौक़ आहिस्ते २ बढ़ता जावेगा। और दुनिया का परमार्थ बिल्कुल असार और ओछा नज़र आवेगा और भोग बिलास भी कुछ २ रूखे और फीके मालूम होवेंगे और देह और दुनिया से आहिस्ते २ सिलसिला और बंधन ढीला होता जावेगा, यानी अपनी सच्ची मुक्ति होती हुई के निशान इसी ज़िन्दगी में कुछ २ नज़र आवेंगे, तब अपने भागों की सराहना करोगे और

बेशुमार शुकर बजा लाओगे, कि भूल और भरम और धोखे से कैसे सहज में सतगुर ने न्यारा किया और माया और काल के जाल से निकाला ॥

१८-(८) इस वास्ते समझना चाहिये कि संत सतगुरु और साध गुरू ही इस संसार में सच्चे विशेष चेतन्य और जीवों के हितकारी हैं और कुल मालिक राधास्वामी दयाल महा विशेष चेतन्य हैं और उनका धाम और उसका रास्ता घट में है ॥

१९-(९) जब तक कि कोई विशेष चेतन्य यानी संत सतगुरु अथवा साध गुरू से नहीं मिलेगा, और उनकी दया का बल लेकर अपने अंतर मे शब्द का अभ्यास नहीं करेगा तब तक महा विशेष चेतन्य यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल से उसका सिलसिला या तार नहीं लगेगा, और न उनके धाम में उसको बिश्राम मिलेगा ॥

२०-(१०) संत सतगुर कुल मालिक के निज भेदी या निज पुत्र या निज मुसाहब हैं। जो कोई सच्चे मन से उनका खोज और तलाश करेगा उसका वे अपनी दया से संजोग चरनों में लगावेंगे और सतसंग और अभ्यास कराते हुए उसका परमार्थी भाग जगावेंगे और एक दिन उसको धुरधाम में पहुंचा कर छोड़ेंगे ॥

२१-(११) मालूम होवे कि संत सतगुरु का मारग और उनका सतसंग सच्चा और पूरा है और जो

कोई उसमें भाव और प्रेम के साथ शामिल होवे उसको थोड़े अर्से में जाँच इस बात की और थोड़ी बहुत पहिचान सच्चे मालिक की हो सकती है लेकिन मौज ऐसी है कि वास्ते छाँटने सच्चे परमार्थियों के और दूर रखने निपट संसारी और रोज़गारी और अहंकारी जीवों के संत अपनी और अपने सतसंग की निंद्या कराते हैं। इस सबब से कोई जीव उनके सतसंग में आसानी से शामिल नहीं हो सकता जब तक कि उसके दिल में सच्ची लाग सच्चे परमार्थ की न होवे। ऐसे अधिकारी जीव निंद्या का कुछ ख़याल नहीं करते, बल्कि उसका भेद दरियाफ़्त करके निंदकों को मूर्ख और नादान समझते हैं और शौक़ के साथ संतों का सतसंग और उनके अभ्यास की कार्रवाई करते हैं और अंतर और बाहर उनकी दया की परख करके प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते हैं और फिर उन्हीं का एक दिन सच्चा और पूरा उद्धार होवेगा ॥

२२-(१२) बाक़ी जीव जो इत्तिफ़ाक़ से कभी सतसंग में आजावेंगे तो बचन सुनकर और अपने मन में क़ायल होकर इस ख़ौफ़ से कि शायद दुनिया उनसे न छूट जावे फिर सतसंग में सूरत नहीं दिखावेंगे लेकिन इतनी ही कार्रवाई में दया का बीजा उनके हृदय में पड़ जावेगा और आइंदे किसी वक़्त पर अपना असर दिखावेगा ॥

(३) प्र ार ती रा

अपने से ज़्यादा बल्कि सब से ज़्यादा जो ताक़त वाला और समरत्थ होवे यानी कुल मालिक उसकी सरन लेकर और उसके निज भेदी जो संत सतगुर हैं उनसे मिलकर बैरियों को जो सबल और ज़बरदस्त हैं जीतकर निज घर में जाना चाहिये तब अपना काम पूरा बनेगा॥

२३-(१) इस दुनिया में काल और करम और मन और माया और उनकी सेन्या काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार, और दसों इंद्रियाँ और इर्षा विरोध और नामवरी की चाह वग़ैरह बड़े बलवान हैं और हर एक जीव को इनमें से एक २ अपनी तरफ़ खींच कर घुमाता है और दिन दिन माया के जाल में फँसाता है॥

२४-(२) किसी की ताक़त नहीं है कि इन ज़बर-दस्तों से अपना पीछा छुड़ा सके या उनको नीचा डाले, यानी जब २ जिसका ज़ोर होता है उस वक़्त जीव और उसका मन उसी का रूप होकर इस संसार में वर्तता है। और जबकि मन और इंद्रियों के भोग सन्मुख आवें उस वक़्त बिल्कुल होश नहीं रहता और उनमें वर्तने को बेधड़क और बग़ैर सोच और विचार के तैयार हो जाता है॥

२५-(३) सबब इसका यह है कि यह जीव या उसका मन पहिले ही से उन भोगों की चाह उठाकर अपने ख़याल और गुनावन में उसका थोड़ा बहुत रस लेता रहता है और जबकि इत्तिफ़ाक़ से वह भोग इसके सन्मुख आये तो उस वक़्त बेइख़्तियार मगन होकर उनमें लिपटता है और मुनासिब और नामुनासिब का ख़याल ज़रा भी मन में नहीं लाता ॥

२६-(४) बाद बर्तने के अलबत्ते कोई २ जीव जो सच्चे परमार्थी हैं अपनी हालत पर अफ़सोस करते हैं और पछताते हैं और आइंदे को अपने बचाव के वास्ते दया माँगते हैं। लेकिन अर्से तक ऐसा हाल रहता है कि बसबब असली चाह या आशक्ती किसी ख़ास २ भोगों के यह मन जब २ वे भोग सन्मुख होते हैं गुरू के बचन और अपने इरादे को भूलकर उनमें लिप्त हो जाता है और फिर पछताता है और प्रार्थना करता है॥

२७-(५) मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु जीव के बचाने को हमेशा तैयार रहते हैं लेकिन जब यह आपही भोगों की चाह उठाकर उनमें बर्तता है या बर्तने को तैयार हो जाता है तब वे क्या करें क्योंकि ज़बरदस्ती के साथ किसी का किसी काम से छुड़ाना मंज़ूर नहीं है ॥

२८-(६) हाल यह है कि यह जीव जन्मान जन्म और जुगान जुग से अपने निज घर को छोड़कर

ब्रह्म और माया के देश में, जहाँ कि अनेक तरह के भोग रचे हुए हैं आन कर फँस गया है और अनेक तरह की संसारी आसा मन में उठा कर और बाहर से भोगों में बर्त कर खुश होता है और दिन २ उन्हीं में लिपट कर गिरफ़्तार होता जाता है ॥

२९-(७) यह वासना और आसा जोकि संसारियों के संग से मज़बूत होगई है यकायक नही छूट सक्ती है। इस वास्ते कोई अर्से सतसंग अंतर और बाहर का दरकार है तब कुछ सफ़ाई होवे यानी भोगों की चाह घटती जावे ॥

३०-(८) जब तक अंतर में कुछ सफ़ाई न होगी यानी भोगों की चाह कम न होगी तब तक गुरू के वचन के मुआफ़िक़ वर्तना कठिन होगा क्योंकि वैरी बड़े ताक़त वाले हैं और जीव अपने बल से उनके साथ मुक़ावला नहीं कर सकता ॥

३१-(९) अब समझना चाहिये कि कुल मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी सर्व समरत्थ और सब के करता धरता और हरता हैं और ब्रह्म और माया को त्रिलोकी का राज उन्होंने दिया है और सब रचना तीन लोक की इन दोनों की सुपुर्दगी में है ॥

३२-(१०) और संत सतगुर ख़ास अंस कुल मालिक के हैं या उसके ख़ास पुत्र या ख़ास मुसाहब समझना चाहिये। उनको वही इख़्तियार हासिल है जो कुल मालिक को यानी वे जो चाहें सो कर सकते हैं

और चाहें जिस जीव को अपनी दया के बल से पार उतार सकते हैं–उनसे भी कुल रचना पिंड और ब्रह्मांड की ऐसे ही डरती है जैसे कि कुल मालिक से ॥

३३--(११) इस वास्ते जो कोई कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल या उनके निज मुसाहब की सरन में आया उस पर काल और करम और मन और माया वग़ैरह इस क़दर ज़ोर नहीं कर सकते जैसा कि आम जीवों पर बल्कि उसको किसी क़दर मदद देते हुए अपनी हद्द के पार पहुँचावेंगे ॥

अलबत्ते जिस क़दर कि उसको पिछले करमों के मुवाफ़िक़ क़र्ज़ा या हिसाब ब्रह्म यानी काल पुरुष का देना है वह साफ़ और बेबाक़ कराया जावेगा। मगर इस सफ़ाई में भी सरन वाले जीवों पर ख़ास दया की जावेगी ताकि उनके पिछले करमों का भार जल्द उतर ज़ावे और प्रेम और भक्ती चरनों में बढ़ती जावे और आइंदे करम न चढ़ें ॥

३४–(१२) मालूम होवे कि वास्ते लेने और दृढ़ करने सरन के प्रीत और प्रतीत का चरनों में पैदा होना ज़रूर है और यह प्रीत और प्रतीत अन्तर और बाहर सतसंग करके हासिल होवेगी। इस वास्ते जीवों को जो राधास्वामी मत में शामिल होवें चाहिये कि पहिले बाहर का और फिर अंतर का या दोनों बराबर सतसंग चेत कर होशियारी के साथ करें ताकि कोई संशय और भरम उनके चित्त में

न रहे, नहीं तो प्रीत और प्रतीत में ख़लल पड़ेगा और फिर सरन भी जैसी चाहिये वैसी मज़बूत नहीं होगी ॥

३५–(१३) जो कोई जैसा तैसा नाता संत सतगुर से जोड़ेगा उसको वे अपनी दया से एक दिन ज़रूर पार लगावेंगे यानी आहिस्ते २ चंद जनम में उसकी प्रीत और प्रतीत बढ़ाकर और मुनासिब और ज़रूरी करनी करवा कर निज धाम में बासा देंगे ॥

३६–(१४) इस वास्ते जिन जीवों का रिश्ता संत सतगुरु या साध गुरू से लग गया है, उन्हीं को बड़भागी समझना चाहिये और एक दिन वेही मन और माया और काल और करम के मस्तक पर चरन रख कर संतों के निज देश में पहुँचेंगे। क्योंकि संत सतगुर का सूत धुर मुक़ाम से लगा हुआ है और जो उनसे प्रीत करेगा उसका भी रिश्ता कुल मालिक के चरनों से जोड़ देंगे और जोकि वे सर्ब समरत्थ और कुल रचना के मालिक हैं इस वास्ते कोई उनका हुक्म टाल नहीं सकता ॥

३७–(१५) अब ग़ौर करना चाहिये कि आया कुल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल और उनके प्यारे संत सतगुरु की सरन जैसी बने तैसी लेना चाहिये या कि मन और माया और भोगों के जाल में फँसे रह कर चौरासी में भरमते रहें और बारम्बार देह धरकर दुख सुख और जनम मरन का कष्ट और कलेश भोगते रहें ॥

(४) प्रकार चौथा

सुरत अंस को जो सत्त सिंध की बुंद है और इस संसार में देह और भोगों के साथ जो जड़ और असत्य हैं भूल और भरम करके बँध गई है उसके निज भंडार में पहुँचाने का जतन हर एक शख़्स को चाहे औरत होवे या मर्द करना चाहिये नहीं तो जनम मरन का कष्ट और देह के संग दुख सुख हमेशा सहना पड़ेगा ॥

३८-(१) कुल मालिक राधास्वामी दयाल सत्त सिंध और परम आनंद और महा चैतन्य स्वरूप अपार और अनंत है और जीव यानी सुरत उनकी बूंद और अंस है और वह त्रिलोकी में उतर कर और काल और माया के जाल में फँस कर मन और इंद्रियों और देह में बंध गई है और अनेक भोगों और पदार्थों और कुटुम्ब परिवार वग़ैरह में आशक्त होकर दुख सुख सहती है और जोकि देह माया के मसाले की बनी हुई है और वह असल में ग़ुबार रूप है और इस सबब से एक शकल में हमेशा ठहर नहीं सकती इस वास्ते उसको बारम्बार देह बदलने से जनम मरन की तकलीफ़ उठानी पड़ती है ॥

३९-(२) असल में सुरत रूह को जोकि मिस्ल अपने सिंध के सत्य और चेतन्य और आनंद स्वरूप

है कोई तकलीफ़ या दुख छू नहीं सकता यानी उस पर अपना असर पहुँचा नहीं सकता है लेकिन बसबब बंधन और आशक्ती के देह और कुटुम्ब परिवार और भोग वग़ैरह में इसको सब तरह के कष्ट और कलेश और दुख सुख सहने पड़ते हैं, जैसा कि इसकी हालत जाग्रत और सुपन अवस्था के मिलान करने से ज़ाहिर है यानी जाग्रत अवस्था में जो इसकी बैठक नेत्रों में है और वहां बैठने से इसका सिलसिला देह और संसार के साथ पैदा होता है तब इसको देह और दुनिया के दुख सुख और चिन्ता और फ़िकर ब्यापते हैं और सुरत के नेत्रों के स्थान से सरकने पर यानी सुपन अवस्था में प्रवेश करने पर कोई दुख सुख या चिन्ता और फ़िकर देह और दुनिया के नहीं ब्यापते। इस सबब से जब तक कि अज्ञानता करके सुरत की आशक्ती और बंधन दुनियाँ में रहेंगे और जब तक कि देह में मन और इन्द्री के घाट पर बासा रहेगा तब तक दुख का भोग यानी असर दूर नहीं हो सकता ॥

४०–(३) इस वास्ते संत सतगुर जो कि कुल मालिक के धाम से आते हैं दया करके जीवों को आम तौर पर समझाते हैं कि तुम्हारा निज घर सत्त पुरुष राधास्वामी धाम में है और यह देश ब्रह्म और माया का है और यहाँ भूल और भरम और अज्ञानता का भारी ज़ोर है और मन और माया

की धारें मिस्ल काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार और दसों इन्द्रियों की हर वक्त बड़े ज़ोर से जारी हैं कि जो मन और सुरत को हर वक्त चंचल रखती हैं। इस सबब से झुकाव उनका बाहर की तरफ़ भोगों में जोकि जड़ पदार्थ हैं और कुटुम्ब परिवार वग़ैरह में रहता है और करम के बस होकर बारम्बार दुख सुख सहना पड़ता है और एक दिन यानी मौत के वक्त ज़रूर सब का संग छूटेगा और उस वक्त भारी तकलीफ़ उठानी पड़ेगी और जो मन में देह और दुनिया की आशक्ती और बासना रही, तो फिर जन्म धारन करके वही दुख सुख भोगना पड़ेगा। इस वास्ते जो कोई इस कष्ट और कलेश से बचना चाहे, और अपने निज घर में जाकर परम और अमर आनंद को प्राप्त होना चाहे उसको चाहिये कि अपने निज घर और उसके रास्ते का भेद समझ कर यहाँ से चलने का जतन शुरू कर देवे तो एक दिन उसका सच्चा और पूरा छुटकारा काल और माया के जाल से हो जावेगा॥

४१--(४) और भी संत फ़रमाते हैं कि जोकि सुरत चेतन्य की धार है और पिंड में नेत्र के स्थान पर ठहरी हुई है इस वास्ते जो अपने घर को उलटना चाहे तो उसी धार पर सवार होकर चलना शुरू करे, यानी जो उस धार के साथ धुन और आवाज़ हो रही है उसको पकड़ के घर की तरफ़ चले

सिवाय इसके और कोई रास्ता निज घर में जाने का रचा नहीं गया और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर इस रास्ते का तै करना मुमकिन है ॥

४२--(५) यह काम सबको चाहे औरत होवे या मर्द, वास्ते अपने जीव के कल्यान के करना लाज़िम और फ़र्ज़ है। लेकिन बग़ैर दया और मदद संत सतगुर या साध गुरू के यह कार्रवाई किसी से बन नहीं सक्ती। इस वास्ते पहिले खोज संत सतगुर का करना ज़रूर है और जब भाग से वे या साध गुरू या कोई उनका सच्चा प्रेमी मिल जावे तो उनके साथ प्रीत भाव करना, और उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ निच्त अभ्यास करना चाहिये ॥

४३--(६) संत सतगुर का उपदेश सुरत शब्द के अभ्यास का है, और उसकी चाल नेत्र के स्थान से चलती है और धुर मुक़ाम तक रास्ते में कितनी ही मंज़िलें हैं और हर एक मुकाम का शब्द जुदा है सो यह सब भेद लेकर बिरह और प्रेम अंग के साथ अभ्यास शुरू करना चाहिये ॥

४४--(७) वास्ते दुरुस्ती से बनने अभ्यास के जीव को चाहिये कि संसार और उसके भोगों से किसी क़दर बैराग चित्त में लावे और चरनों में कुल मालिक राधास्वामी दयाल के अनुराग पैदा करे और यह दोनों बातें संत सतगुर के सतसंग और

उनकी दया से प्राप्त होंगी, इस वास्ते उनका सतसंग चेत कर यानी होशियारी और थोड़ा बहुत शौक़ के साथ करना चाहिये ॥

४५--(८) और अभ्यासी परमार्थी को इस बात का भी ख़याल ज़रूर रखना चाहिये कि जितने भोग बिलास और पदार्थ संसार में हैं वे सब नाशमान हैं और एक दिन उनको ज़रूर छोड़ना पड़ेगा, इस वास्ते उनमें बर्तन और आशक्ती ज़रूरत और कार्रवाई के मुवाफ़िक़ करना चाहिये। ज़ियादा आशक्ती अभ्यास में बिघन डालेगी और वक़्त २ पर उसके ब से दुख भी होवेगा ॥

४६--(९) और यह भी ख़याल रखना चाहिये कि सुरत चेतन्य और आनंद स्वरूप है और जितना सामान दुनिया का है वह सब . है, फिर इन दोनों का आपस में असली मेल नहीं हो स । सिर्फ़ देह की सम्हाल और गुज़ारे के वास्ते इनसे किसी क़दर मेल रखना ज़रूर है। बहुत आशक्ती अपने निज पद की तरफ़ से भूल और संसार में भरम पैदा करेगी और ऐसी कार्रवाई से दिन २ ग़फ़लत और अपने जीव के कल्यान की निसबत बेपरवाही बढ़ती जावेगी और नतीजा उसका यह होगा कि जीव भोगों की प्राप्ती के निमित्त उमर भर पचता और खपता रहेगा और इसी आसा और बासना के अनुसार बारंबार देह धर कर दुख सुख भोगता रहेगा और जन्म मरन की फाँसी नहीं काटी जावेगी ॥

४७-(१०) इस वास्ते हर एक जीव को चाहे औरत होवे या मर्द मुनासिब और लाज़िम है कि अपने निज घर में पहुँचने और अपने अंशी यानी सिंध स्वरूप से मिलने का जतन संत सतगुरु की जुगत के मुवाफ़िक़ ज़रूर करे तो एक दिन परम आनंद को प्राप्त होगा और दुनिया और देह के बंधन से छुटकारा हो जावेगा॥

४८-(११) इस कार्रवाई से अभ्यासी को दुनिया में भी उसका दुख सुख कम व्यापेगा और आशक्ती भी उसमें आहिस्ते २ कम होती जावेगी और अख़ीर वक़्त पर अपने निज घर की तरफ़ सुखाला जावेगा यानी दुनियादारों के मुवाफ़िक़ उसको तकलीफ़ न होवेगी, क्योंकि वह जीतेजी उस रास्ते को जिस पर मौत के वक़्त सब को जाना पड़ता है, थोड़ा बहुत साफ़ कर लेगा और अपने मालिक की दया और कुदरत को अंतर में परख लेगा और अख़ीर वक़्त पर वह दया उस पर विशेष होवेगी, और संत सतगुर का दर्शन मिलैगा-यानी वे आप प्रघट होकर अभ्यासी की सुरत को अपनी गोद में बैठा कर ऊँचे और सुख अस्थान में पहुँचा कर बासा देवेंगे॥

(५) प्रकार पाँचवाँ

सुजाती यानी उत्तम को कुजाती यानी नीच से हट कर अपने हमजौहर यानी महा उत्तम से मिलना चाहिये॥

४९-(१) मालूम होवे कि सुरत जो ऊँचे से ऊँचे और कुल मालिक के देश की बासी है वहाँ से उतर कर यहाँ देह में मन और इन्द्रियों का संग करके भोगों और पदार्थों और कुटुम्ब परिवार में बंध गई है और असल में इसका वही जौहर है जो कुल मालिक का जौहर है, यानी यह उसी की ज़ात है लेकिन यहाँ अपने से कमतर दरजे के जीवों में और जड़ पदार्थों के साथ नाता जोड़ कर उनकी और अपने मन और देह की हालत बदलने में दुखी सुखी होती है, और अक्सर वक़्तों पर निहायत दरजे की तकलीफ़ सहती है और यह नतीजा* इसको ग़ैर जिन्सों से मेल करने के सबब से मिला ॥

५०-(२) मुनासिब तो यह था कि इस सुरत यानी जीव को शुरू में वक़्त सम्हालने होश के ऐसी समझौती दी जाती कि इस दुनिया में और जीवों और भोगों और पदार्थों के साथ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ यानी देह और गृहस्त के गुज़ारे के मुवाफ़िक़ मेल और बर्ताव करे, और इस को पता और भेद उसके निज घर का और भी इसके सच्चे माता पिता कुल मालिक राधास्वामी दयाल का दिया जाता और जुगत चलने की समझाई जाती कि जिसके मुवाफ़िक़ यह उलटने का मज़बूत इरादा करके थोड़ा बहुत चलना शुरू कर देता तो अपने मालिक की गति और ताक़त और दया को अंतर में थोड़ा बहुत देख

* फल ।

कर माया के जाल में न फँसता, और अनमेल पदार्थों में आशक्ती करके उन की हानि लाभ में विशेष दुख सुख न भोगता ॥

५१-(३) लेकिन इस दुनिया में किसी को खोज अपने निज घर और सच्चे करतार का नहीं है या बहुत कम है क्योंकि आम तौर पर सब जीव दुनिया के विद्या पढ़ने या पेशा सीखने और सामान के जमा करने में अपना वक़्त ख़र्च करते नज़र आते हैं और कोई भी यह बात दरियाफ़्त नहीं करता कि (१) मैं कौन हूं (२) कहां से आया हूं (३) कौन मेरा मालिक और करतार है (४) यह कौन देश है और (५) यहाँ किस तरह से वर्तावा और क्या कार्रवाई करना चाहिये कि जिससे यहाँ और बाद छोड़ने देह और इस देश के सुख मिले, और बारम्बार जन्मने और मरने से बचाव हो जावे ॥

५२-(४) इस सबब से दुनिया में भूल और भरम और काल और करम का ज़ोर भारी रहता है और कसरत से जीव दुखी रहते हैं, और उस दुख में कोई उन का सच्चा सहाई और मददगार नहीं हो सक्ता ॥

५३-(५) इस वास्ते संत सतगुर दया करके फ़रमाते हैं कि सब जीवों को अपने निज घर का भेद लेकर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करके थोड़ा बहुत चलना उस तरफ़ को ज़रूर और मुनासिब है और सब जीवों को जानना चाहिये

कि वे कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस हैं और निज देश उनका पिंड और ब्रह्मांड के पार है और उसी को दयाल देश अथवा सत्त पुरुष राधास्वामी धाम कहते हैं वहीं से आदि में सुरत की धार उतर कर पहिले ब्रह्मांड में और फिर पिंड में आकर ठहरी है और यहां अनेक इंद्रियों के विषयों का भोग करके और उनके रस की चाट पाकर बंध गई हैं। सो जबतक कि भेद अपने निज घर और रास्ते का मालूम न होगा और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके उस रास्ते को तै करना शुरू न-किया जावेगा तब माया के जाल और देहियों के बंधन से छुटकारा मुमकिन नहीं है और न निज घर अथवा परम पद की प्राप्ती मुमकिन है जोकि हमेशा एक रस रहता है और सर्बसुख का भंडार है॥

५४-(६) यह भेद और जुगत चलने की सतगुर और उनकी संगत से मालूम हो सक्ती है इस वास्ते हर एक जीव को मुनासिब है कि तलाश करके उनसे मिले और सतसंग और सेवा करके उनकी दया हासिल करे और उपदेश लेकर अभ्यास जिस क़दर बन सके शुरू करदे और अपना इरादा राधास्वामी धाम में पहुँचने का मज़बूत बांधे, तो मेहर और दया से उ आहिस्ते २ काम बनता जावेगा और एक दिन ग़ैरजिन्स की रचना के देश से हट कर अपने सच्चे माता पिता के धाम में बासा पावेगा॥

५५--(७) जो संत सतगुर से जल्दी मेला न होवे तो जो कोई उनका मेली और प्रेमी सतसंगी मिल जावै, तो उससे भेद और जुगत दरियाफ़्त करके वक़्त के संत सतगुर की दया के आसरे कार्रवाई शुरू कर देना मुनासिब होगा और जो शौक़ सच्चा और पूरा होगा तो मौज से किसी वक़्त में उनसे भी मेला हो जावेगा या वे अपनी दया से उसको वहीं अंतर में दर्शन देकर अपने चरनों का प्रेम बख़्शेंगे और जिस तरह मुनासिब होगा उसकी सम्हाल करेंगे॥

५६--(८) सब जीवों पर फ़र्ज़ है कि जो सवाल तीसरी दफ़े में लिखे हैं उनका जवाब यानी उनके मुवाफ़िक़ भेद संत मत का दरियाफ़्त करके खोज संत सतगुर और उनकी संगत का लगाते रहें और जहां और जब पता मिल जावे तब उनसे मिल कर जिस क़दर करनी मुनासिब होवे और बन सके शुरू कर दें॥

५७--(९) जो कि सुरत ऊँचे से ऊँचे देश की बासी और इसकी ज़ात यानी जौहर ऐन कुल मालिक की ज़ात या जौहर के मुवाफ़िक़ है इस वास्ते इस को लाज़िम और मुनासिब है कि अपने असल की तरफ़ रुजू करे और ग़ैर ज़ात और ग़ैर जिन्स से, जो कि अपने से निहायत नीचे के दरजे की रचना में दाख़िल हैं, सिवाय ज़रूरत मात्र के मेल और मुहब्बत न करे नहीं तो संग दोष करके इसका उतार नीचे के दरजों में होता चला जावेगा और

दिन २ इसकी चेतन्यता घटती जावेगी और निज घर दूर होता जावेगा, और उसी क़दर दुख ज़ियादा और जनम मरन जल्द २ भोगना पड़ेगा और जो अपने असल की तरफ़ रूजू करेगी तो कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की मेहर से आहिस्ते २ ऊँचा और विशेष सुख का स्थान मिलता जावेगा, आख़िर को निज धाम में पहुंच कर अमर आनंद को प्राप्त होगी ॥

५८--(१०) दुनिया में भी दस्तूर है कि हर एक अपनी ज़ातवालों से मेल रखता है और अपने से ऊँचे दरजे वालों से मिलने की ख़ाहिश उठा कर उसके पूरे होने के निमित्त जतन करता है, और ख़र्च करने को भी ख़ुशी से तैयार होता है लेकिन अपने से कम ज़ात या नीचे दरजे वालों से मिलना और उनके संग बैठना उठना और खाना पीना और शादी ब्योहार वग़ैरह कोई नहीं मंजूर करता फिर किस क़दर अफ़सोस और तअज्जुब की बात है कि सुरत जो कुल मालिक की अंश यानी बच्चा है वह इस नाक़िस देश यानी मृत्यु लोक में निहायत ओछे जीवों और जड़ पदार्थों से मेल और मुहब्बत करे और उनके संग नित्त दुख और तकलीफ़ उठावे और अपना दरजा ज्यादा से ज्यादा घटाना मंजूर करे और अपने निज घर और सच्चे माता पिता कुल मालिक को इस क़दर भूल जावे कि उसका

कभी ख़्याल भी न करे, और जो कोई याद दिलावे उससे हुज्जत और तकरार करने को तैयार होवे और मूर्खता की हठ करके वचन न माने। यह भारी भूल और भरम जैसा कि ऊपर लिखा गया है, सिर्फ़ संत सतगुर के वचन और बानी सुनकर और उनका सतसंग और सेवा करके दूर हो सकते है॥

प्रकार छठवां (६)

कुटुम्बी मौत के वक़्त मालिक के नाम की याद दिलाते हैं, लेकिन जबकि उमर भर धन और स्त्री वग़ैरह में फँसे रहे, तो उस वक़्त मालिक का नाम कैसे याद आ सकता है, इस वास्ते जीते जी मालिक का नाम लेना और उसके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाना मुनासिब है॥

५९-(१) सब मुल्कों में और सब क़ौमो में दस्तूर है कि मौत के वक़्त कुटुम्बी और दोस्त आशना और परोहित और पंडित और भेष और पादरी और मौलवी जो मौजूद होवें सब मिलकर मरने वाले से यही कहते हैं कि अब कुटुम्ब परिवार और धन माल का मोह छोड़ कर अपना चित्त मालिक के चरनों में लगाओ और नाम लो और साफ़ यह कहते हैं कि इस वक़्त हमारी तरफ़ तवज्जह मत करो

इससे साफ़ ज़ाहिर है कि अख़ीर वक्त का सहाई और मददगार सिवाय मालिक के और कोई नहीं समझा जाता है और दुनिया और दुनियादारों की तरफ़ अख़ीर वक़्त पर तवज्जह लाने से मरने वाले का बहुत नुक़सान होता है ॥

६०-(२) लेकिन ग़ौर का मुक़ाम है कि जो कोई उमर भर कुटुम्ब परिवार और धन माल का संग और उन्हीं में प्रीत करता रहा, तब अख़ीर वक़्त पर जबकि अंग २ और रग २ में से जान निकल कर ऊपर यानी सिर की तरफ़ खिंचेगी किस तरह सब का मोह यकायक छूट कर मालिक के चरनों में भाव और प्यार पैदा हो सकता है। ज़ाहिर है कि मरने वाला मुवाफ़िक़ कहने सब लोगों के जो किसी क़दर होश रहा तो नाम लेता है, लेकिन दिल पर उसके दुनिया और देह और कुटुम्ब परिवार के छोड़ने का सख़्त सदमा गुज़रता है जिसका हाल और कोई नहीं जान सकता ॥

६१-(३) इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि हर एक शख़्स को चाहे औरत होवे या मर्द अपने जीव के कल्यान के वास्ते लाज़िम और फ़र्ज़ है कि अपनी ज़िन्दगी में बाद होश सम्हालने के जिस क़दर जल्दी मुमकिन होवे सच्चे कुल मालिक का पता और भेद घट में दरियाफ़्त करके उसके चरनों में थोड़ी बहुत प्रीत करना शुरू करे और अभ्यास सुरत शब्द मारग का जोकि राधास्वामी दयाल ने उपदेश किया

है और जोकि हर एक से यानी औरत और मर्द लड़के जवान और बूढ़े से आसानी से और बेखतरे बन सकता है थोड़ा बहुत जारी करदे तो वक्त किसी तकलीफ़ के जीते जी इस देश में और भी मरने के वक्त उसको अपनी सहायता होती हुई मालूम पड़ेगी और प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ती जावेगी, और मौत का कष्ट और कलेश नहीं व्यापेगा क्योंकि यह अभ्यास रूह या सुरत के ऊपर की तरफ़ चढ़ाने का है--जैसे कि मरते वक्त खिँचाव होता है, सो जो कोई इस काम को जीते जी शुरू कर देगा उसको अखीर वक्त पर जबकि कुदरती खिँचाव होगा अपने अभ्यास में बहुत मदद मिलेगी और मालिक की दया का जलवा या प्रकाश अंतर में नज़र पड़ेगा कि जिसके सबब से रूह या सुरत मगन होकर उमंग के साथ घट में चढ़ेगी, और सहज में बेतकलीफ़ देह को छोड़ देगी ॥

६२--(४) मालूम होवे कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके भेजे हुए संतों ने जो अभ्यास जारी फ़रमाया उसका मतलब यही है कि जैसे सुरत रूह मरने के वक्त अंग २ से खिंचकर मस्तक की तरफ़ चलती और चढ़ती है और जब पुतली आँख की चढ़ जाती है या उलट जाती है उस वक्त देह का त्याग हो जाता है सो उसी तरह अभ्यास करके खिँचाव और सिमटाव और चढ़ाव

सुरत का आहिस्ते २ रोज़मर्रा होता जाता है और जिस क़दर यह कार्रवाई दुरुस्त बनती जाती है उसी क़दर सुरत के सिमटाव और चढ़ाई का रस और आनंद अंतर में मिलता जाता है। और स्वरूप और प्रकाश का दर्शन करके और शब्द की धुन सुनकर शौक़ बढ़ता जाता है, और सुरत रूह मगन होकर ज़्यादा से ज़्यादा चढ़ाई चाहती रहती है और जोकि मौत के वक़्त यह चढ़ाई और खिंचाव कुदरती तौर पर ज़ोर के साथ होवेगा इस वास्ते सुरत को उस वक़्त गहरी मदद वास्ते चढ़ाई के मिलेगी और कुल मालिक राधास्वामी दयाल अपने निज स्वरूप यानी शब्द रूप से और सतगुरु दीनदयाल अपने सूक्ष्म स्वरूप से दर्शन देकर सुरत को निहायत प्यार से अपनी गोद में बैठाकर ऊंचे और सुख स्थान में लेजाकर बासा देवेंगे ॥

६२--(५) जाहिर है कि सुरत का बंधन देह और दुनिया और उसके सामान और भोग बिलास में दुनियादारों के संग के सबब से हुआ है। और जो यही संग उमर भर रहा तो यह बंधन बहुत मज़बूत हो जावेगा कि जिसका तोड़ना या छोड़ना अख़ीर वक़्त पर निहायत मुशकिल होगा और जोकि काल सब बंधनों को तोड़कर सुरत को देह में से निकालेगा उस वक़्त भारी तकलीफ़ अंदर में मरने वाले को मालूम पड़ेगी। इस वास्ते मुनासिब

है कि जैसे और काम दुनिया के किये जाते हैं ऐसे ही थोड़ा सा काम परमार्थ का भी संग २ किया जावे कि जिससे संसारी बंधन थोड़े बहुत ढीले होते रहें और मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत पैदा होकर आहिस्ते २ बढ़ती जावे तो अखीर वक़्त पर मौत का कष्ट और कलेश कम व्यापेगा या बिल्कुल नहीं मालूम होवेगा, और बजाय उसके अंतर में किसी क़दर रस और आनंद मिलेगा और आइंदे को सुख स्थान में बासा पावेगा ॥

६४-(६) जबकि यह बात साबित है कि भारी दुख और तकलीफ़ और चिन्ता और मौत के वक़्त कोई शख़्स किसी का सहाई और मददगार नहीं हो सकता फिर जीवों को लाज़िम पड़ा कि जीते जी सच्चे सहाई और मददगार का खोज करके उसका सच्चा और पूरा आसरा और भरोसा धारन करें। और ऐसा सच्चा और पूरा सहाई और मददगार सिवाय कुल मालिक राधास्वामी दयाल के दूसरा नहीं हो सकता, इस वास्ते उनके धाम और चरनों का भेद लेकर जो जुगत चलने की उन्होंने बताई है उसका साधन शुरू करके उनके चरनों की सरन मज़बूत करें तो जीते जी उनकी दया की नज़र और परख आवेगी और फिर प्रीत और प्रतीत भी बढ़ती जावेगी, इस तरह कारज जीव का दुरुस्त बन जावेगा ॥

६५--(७) अक़लमंद और विचारवान जीवों को मुनासिब है कि जो काम उनको अख़ीर में करना पड़ेगा उसको पहिले ही से आहिस्ते २ करना शुरू करें यानी जैसे उनके कुटुम्बी उनसे अख़ीर वक़्त पर अपना मोह तोड़ते हैं और उनसे भी मोह तोड़ने को कहते हैं और यह समझौती देते हैं कि अब मालिक के चरनों में चित्त लगाओ, तो चाहिये कि पहिले ही से एहतियात करें कि गहरा बंधन किसी में न होवे और मालिक के चरनों में थोड़ा बहुत प्यार और भाव पैदा करके उसको आहिस्ते २ बढ़ाते जावें तो तकलीफ़ से बचाव मुम्किन है और जो ऐसा नहीं करेंगे तो अख़ीर वक़्त पर भारी सदमा और झटका सहना पड़ेगा और अपनी ज़िन्दगी के स्वभाव और बासना के मुवाफ़िक़ फिर देह धारन करके और उन्हीं बंधनों में गिरफ़्तार होकर बारंबार उसी क़िस्म के दुख और तकलीफ़ें सहनी पड़ेंगी ॥

६६--(८) यह दुख और तकलीफ़ें सिर्फ़ संतों के सतसंग और उनकी बानी के समझ २ कर पाठ करने से और भी उनकी जुगती के अभ्यास से दूर हो सकती हैं इस वास्ते हर एक को जो अपना बचाव और आराम चाहे राधास्वामी दयाल के सतसंग में जहाँ सुरत शब्द मारग का अभ्यास इस वक़्त में जारी है शामिल होकर अपने जीव के कल्यान के वास्ते कारवाई करना चाहिये । पिछले संतों के घराने में सिवाय ज़ाहिरी पूजा और पाठ के कोई अन्तर की

कार्रवाई जारी नहीं है और न उसके भेद और अभ्यास की जुगती से कोई वाक़िफ़ नज़र आता है॥

---

(७) प्रकार सातवाँ

दुनियाँ के सब आसरे जिनको तुमने दृढ़ करके पकड़ा है नाशमान और झूँठे हैं इस वास्ते सच्चे और पूरे और सर्व समरथ का आसरा लेना चाहिये कि जो हर वक़्त अंग संग रहकर सहायता और मदद कर सक्ता है और दुनियाँ के आसरे अक्सर वक़्त ज़रूरत के दग़ा देने वाले हैं॥

६७-(१) दुनियाँ में हर एक शख़्स किसी न किसी दुनियाँ के सामान या चीज़ का या किसी दूसरे जीवों का सहारा लेकर अपने मन में आशा बाँधता है कि वह वक़्त ज़रूरत के काम आवेंगे। जैसे अपने गुन और बल और हुकूमत का या धन और माल और असबाब और जायदाद और हथियारों और औज़ारों वग़ैरह का और ज़ात पाँत का या किसी दोस्त और मेली हाकिम या साहूकार या हकीम और वैद और वकील का और औलाद और कुटुम्बी और रिश्तेदारों और

बिरादरी का सहारा और भरोसा हर एक के मन में बना रहता है लेकिन यह सब आसरे अक्सर वक़्तों में कुछ भी काम नहीं देते या दग़ा दे जाते हैं और खास कर सख़्त बीमारी और भारी सदमे और मौत के वक़्त तो इनमें से कोई भी किसी तरह की मदद और सहायता नहीं कर सक्ता है ॥

६८—(२) यह सब दुनियाँ के सहारे आरज़ी यानी नाशमान हैं और हरचंद बहुत से दुनियाँ के छोटे कामों में किसी कदर काम आते हैं लेकिन वक़्त सख़्त मुसीबत के सिवाय कुल मालिक और संत सतगुर के और कोई सच्ची और पूरी सहायता नहीं कर सकता ॥

६९—(३) हाल यह है कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त और सिंहासन हर एक जीव के निजघट में मौजूद है और जो जीव संत सतगुर का उपदेश लेकर और मालिक का भेद मालूम करके उसके चरनों में अपने अंतर में प्रार्थना करता है और सुरत शब्द जोग का अभ्यास करके और थोड़ा बहुत सिमट कर और ऊँचे की तरफ़ चढ़कर नित्त चरनों का स्पर्श करता है, वह वक़्त मुसीबत के जब अपने मन और सुरत को अंतर में मामूल के मुवाफ़िक़ लगाकर चरनों में राधास्वामी दयाल के प्रार्थना करेगा तो ज़रूर उसको

थोड़ी बहुत शान्ती आवेगी और फिर वही जतन चंद बार करने से ज़ियादा सहारा अंतर में मिल सकता है ॥

७०-(४) इसी तरह जिस किसी को भाग से संत सतगुर मिल गये हैं और वह जब उनके सन्मुख जाकर अपनी ख़ास तकलीफ या मुसीबत का हाल अर्ज़ करे या यह कि मनही मन में अर्ज़ करे और बाहर कुछ न बोले तो उनके दर्शन और बचन और चरन स्पर्श से इसको किसी क़दर सहारा और शान्ती हासिल हो सकती है और इसी तरह दूरी की हालत में उनकी बानी और बचन मुनासिब वक़्त के पढ़ने और ग़ौर करके समझने से भी किसी क़दर सहारा और मदद मिल सकती है ॥

७१-(५) लेकिन इस बात का ख़याल रखना चाहिये कि जो जीव कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की सरन में आये हैं, और जिनको उन्होंने दया करके अपनाया है तो जो कुछ कि हालत ऐसे जीवों पर सख़्ती और नरमी और आराम और तकलीफ़ वग़ैरह की गुज़रती है वह मौज से पैदा होती है और वे उस हालत से अपने जीव के किसी वक़्त बेख़बर नहीं हैं। फिर जब तक ऐसी हालत रखनी मंजूर है या जैसी मौज उस जीव की निस्बत हो रही है उसी में उसका

फ़ायदा और भलाई है और चाहे प्रार्थना करने या अर्ज़ हाल करने से या और क़िस्म के इलाज मुआलजा करने से थोड़ा बहुत इफ़ाक़ा और सहारा मिल जावे, पर जब तक कि वह मौज नहीं बदलेगी तब तक पूरा फ़ायदा और सहारा नहीं मिलेगा ॥

७२-(६) कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु जब कभी अपने भक्तों पर उनके परमार्थी फ़ायदे की नज़र से कोई तकलीफ़ ख़ास भेजते हैं तब भी उसमें दया का हाथ संग रहता है—यानी उन जीवों को ऐसी सख़्त तकलीफ़ नहीं होगी कि जिससे वे घबरा कर व्याकुल और निरास हो जावें और कुछ भी अपना मामूली परमार्थी काम न कर सकें सिवाय उस हालत के कि जब उनका अख़ीर वक़्त आ पहुँचा है उस वक़्त अलबत्ते बीमार की ख़ाहिश के मुवाफ़िक़ पूरा सहारा नहीं मिलेगा—यानी तकलीफ़ और बीमारी वग़ैरह दूर नहीं होगी पर उसका असर कम व्यापेगा और अख़ीर वक़्त पर अंतर में मदद और सहारा पूरा मिलेगा ॥

७३-(७) मालूम होवे कि दुनियाँ के कामों में क़ायदे और दस्तूर के मुवाफ़िक़ तदबीर करना और जिसकी मार्फ़त कोई कारज सिद्ध होवे उससे

मदद चाहना हर हाल में जरूर है लेकिन परमार्थी शख़्स को चाहिये कि हमेशा मौज को निहारता रहै और जोकि राधास्वामी दयाल कुल के प्रेरक हैं तो कोई काम बिना उनकी प्रेरना और दया के न तो अपनी तदबीर से दुरुस्त हो सकता है और न दूसरे से जैसी मदद चाहिये मिल सकती है। इस वास्ते परमार्थी को हमेशा अंतर में दया और मौज का आसरा और भरोसा रखना मुनासिब है और जाहिर में तदबीर मुनासिब और भी दूसरे शख़्सों की मदद से कार्रवाई करना चाहिये। इस तरह से जो कोई परमार्थी शख़्स बर्ताव करेगा उसको कभी रंज नहीं होगा क्योंकि वह किसी काम में सिवाय मालिक की दया के दूसरे का आसरा अपने मन मे नहीं बाँधेगा और जब कभी कोई काम मरज़ी के मुवाफ़िक़ दुरुस्त न होगा तब किसी की शिकायत या किसी से गुस्सा नहीं करेगा अपने मालिक की मौज समझ कर उसके साथ जिस क़दर बनेगा मुवाफ़िक़त करेगा॥

७४-(८) कुल मालिक राधास्वामी दयाल अपने सच्चे भक्तों की हर तरह से सम्हाल फ़रमाते हैं और जो काम उनके संसारी और परमार्थी दरपेश होवें उनमें जो दया और मदद दरकार होवे करते रहते हैं यानी अपने भक्त के काम वक्त मुनासिब पर आप पूरे करते हैं या जिस जीव से बतौर

औज़ार के उनका कराना मुनासिब है उसको प्रेर कर वह काम फ़ौरन दुरुस्त कराते हैं। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को हर हाल में उनकी दया और मौज का भरोसा दृढ़ रखना चाहिये और ज़ाहिर में जो कार्रवाई मुनासिब या ज़रूरी मालूम पड़े वह भी दस्तूर के मुवाफ़िक़ करना चाहिये ॥

७५-(९) जोकि मालिक की मौज ऐसी है कि वह अपनी दया और मौज की कार्रवाई गुप्त रखना चाहता है, इस वास्ते सच्चे परमार्थी को लाज़िम है कि जो दया उस पर होवे या जो काम उसकी मौज और दया के आसरे दुरुस्ती से अंजाम पावें उनका ज़िकर खोलकर किसी के सामने न करे और अपने मनही मन में शुक्र अदा करे। अलबत्ते किसी ख़ास मौक़े और वक़्त पर इस किस्म का ज़िकर इशारे के साथ सच्चे परमार्थी और प्रेमियों के रूबरू करना मना नहीं है क्योंकि वे भी ऐसी दया और मौज का बर्ताव अपने कामों में निहारते रहते हैं ॥

७६-(१०) मालिक हर दम हर एक जीव के संग है। जो संसारी हैं वह उससे और उसके भेद से बेख़बर हैं और हर काम में अपनी अक़ल की तदबीर और तजवीज़ का या दूसरे आदमियों की मदद वग़ैरह का आसरा रखते हैं और इसमें वक़्त

नाकामयाबी के दुख और झटके सहते हैं और इसकी उसकी शिकायत करते हैं लेकिन जो सच्चे परमार्थी हैं और मालिक के भेद से वाक़िफ़ हैं और उसके चरनों में पहुँचने के लिये नित्त जतन करते हैं वे अपने मन में खूब समझते हैं कि बग़ैर मालिक की दया और प्रेरना के कुछ नहीं हो सकता है और इस वास्ते उसकी मौज के आसरे सब काम करते है और हमेशा दया की निरख और परख करते रहते हैं ॥

७७–११ बग़ैर संत सतगुरु और मालिक के चरनों में भक्ती धारन करने के ऐसी समझ बूझ और प्रीत प्रतीत कि जिससे मालिक के प्रकाश के निहारने की नज़र आवे और उसकी मेहर और दया की परख हासिल होवे कोई शख़्स उसके चरनों का आसरा और भरोसा दृढ़ नहीं कर सक्ता। इस वास्ते सब को चाहिये कि थोड़ा बहुत सत-संग करके भक्ती में क़दम रक्खें और जो जुगत यानी अभ्यास का राधास्वामी दयाल ने उपदेश किया है उसकी थोड़ी बहुत कार्रवाई करें तब उनकी नज़र दुनियाँ और दुनियादारों के आसरे और भरोसे से हट कर मौज और दया का भरोसा धारन करेगी और तब उस सुख और आनंद की जोकि सच्चे भक्तों को हासिल होता है क़दर मालूम पड़ेगी ॥

(८) प्रकार आठवाँ

संतों के दयापात्र जीव और जीवों के मुवाफ़िक् ब्रह्म और माया के देश में पैदा होकर परवरिश पाते हैं, और जब संत प्रगट होते हैं तब मौज से उन जीवों को अपने सन्मुख खींचकर बचन सुनाते और निज घर का भेद और रास्ता और चलने की जुगत समझा कर और मुनासिब करनी कराकर उनको निज धाम में पहुँचाते हैं ॥

७८-(१) जो जीव कि संत सरन में आये हैं या संतों से मिले हैं या जिनको संत चरन में थोड़ा बहुत भाव और प्यार आया है या जिनके मन में दुनियाँ का हाल देखकर कुल मालिक और उसके निज धाम का खोज पैदा हुआ है, और उसके प्राप्ती के जतन की तलाश है या जिन्होंने सुरत शब्द मारग की करनी थोड़ी बहुत संत सतगुर या साध गुरू से उपदेश लेकर शुरू करदी है, यह सब जीव दयापात्र समझे जाते हैं। और जोकि निज धाम में उलट कर जाने का जतन और अभ्यास सिर्फ़ नर देही में बन सकता है इस वास्ते इन जीवों को संत अपनी दया से इस

दुनियाँ में भेज कर आप भी उनकी सम्हाल के वास्ते संसार में प्रघट होते हैं ॥

७९-(२) यह सब जीव दस्तूर के मुवाफ़िक़ इस दुनियाँ यानी ब्रह्म और माया के देश में पैदा होते हैं और जब वे होशियार और समझ बूझ के लायक़ हो जाते हैं तब सवेर अबेर संत उनको अपनी मेहर से संजोग मिलाकर अपने सन्मुख बुला लेते हैं और अपने अमृत रूपी वचन' अनुराग और वैराग और भेद और करनी वग़ैरह के सुनाकर आहिस्ते २ उनकी परमार्थी कार्रवाई में तरक़्क़ी फ़रमाते हैं ॥

८०-(३) यह जीव जिस क़दर संतों का सतसंग करते हैं और दर्शन और वचन और अभ्यास का रस लेते जाते हैं उसी क़दर उनकी प्रीत और प्रतीत चरनों में संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और सुरत शब्द मारग के बढ़ती जाती है और दुनियाँ और उसके सामान और भोग बिलास से उनकी तबीअत किसी क़दर हटती जाती है ॥

८१-(४) संसारी लोग जिनकी विशेष प्रीत दुनियाँ और उसके व्यौहार वग़ैरह में है और स्त्री पुत्र और धन माल में जिनका बंधन ज़बर है, और जोकि दुनियाँ और उसके सामान की तरक़्क़ी और

मान बड़ाई वगैरह की चाह उठा कर रात दिन मिहनत करते हैं संतों के दयापात्र यानी सतसंगी जीवों की चाल ढाल देखकर अचरज करते हैं और घबराते हैं कि किस तरह उनके मन में संसार का सामान और भोग बिलास ओछा नज़र आता है और कैसे उनको प्रीत संत सतगुर में पैदा हो गई कि जिसके सबब से सिवाय उनके सतसंग के और दूसरी सोहबत* पसंद नहीं करते और रोज़ बरोज़ सतसंगियों के प्रेम की तरक्क़ी देखकर ख़ौफ़ खाते हैं कि कहीं वे घरबार छोड़कर दुनियाँ से अलहदा न हो जावें और इस वास्ते जो इन सतसंगियों के कुटुम्बी या रिश्तेदार या बिरादरी या दोस्त आशना हैं वे सब मिलकर वास्ते हटाने उनके संतों के सतसंग से अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ कोशिश करते हैं और उनको धमका कर और तरह २ के डर दिखाकर सतसंग से हटाना चाहते है ॥

८२—(५) और जब संसारी लोग देखते हैं कि उनकी धमकी और डर दिखाने से सतसंगी ने अपनी परमार्थी कार्रवाई नही छोड़ी, तब वे अपनी ओछी और मलीन समझ के मुवाफ़िक़ तरह २ की झूठी सच्ची बातें बनाकर संत सतगुर और उनके प्रेमी जन और सतसंग की बुराई भलाई यानी निंदा अस्तुत करते हैं जिससे उनका रिश्तेदार या

कुटुम्बी या बिरादरी वाला अपनी बदनामी का ख़ौफ़ करके सतसंग से बैठ रहे और अपना अभ्यास छोड़ दे लेकिन जोकि संतों के कृपापात्र जीवों पर ख़ास दया उनकी और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की है इस सबब से संसारी जीवों की निंद्या अस्तुती और धमकी सड़की को मूर्खता और नादानी का कारज समझ कर सतसंगी जीव जिनकी आंख दिन २ खुलती जाती है कुछ भी ख़याल में नहीं लाते बल्कि कोशिश करते हैं कि यह नादान संसारी जीव भी परमार्थी क़दर जानें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की गत मत की थोड़ी बहुत परख करें और निंद्या के पाप से बचकर और सतसंग में शामिल होकर अपनी ज़िंदगी को सुफल करें ॥

८३-(६) जो कोई इन संसारी जीवों में से थोड़ा बहुत ख़ौफ़ मौत और चौरासी और नरकों के दुक्खों का लाता है वह सतसंगियों के बचन सुन कर उनका थोड़ा बहुत सतसंग करने को तैयार हो जाता है और बाक़ी के जीव अपनी कार्रवाई को वास्ते हटाने सतसंगी जीव के परमार्थ और सतसंग से निस्फल देखकर क्रोध करते हैं और संत सतगुर और उनके सतसंग से बेवास्ते विरोध और दुश्मनी करने लगते हैं और जो कोई आदमी संसारी या परमार्थी उनसे मिले तो उनसे

सख़्त निंद्या के बचन और झूँठी बातें बनाकर कहते हैं कि जिससे उनका मन परमार्थ से बिल्-कुल फिर जावे, और संत सतगुर और उनके प्रेमियों की चाल ढाल से नफ़रत करने लगे ॥

८४-(७) हरचंद यह निंदक अपनी मूर्खता से सतसंग से अपने मन में विरोध बढ़ाते हैं और नये और कच्चे जीवों का अकाज कर देते हैं और तरह २ की उपाधि सतसंग में ख़लल डालने की नज़र से उठाते रहते हैं पर जो जीव कि मेहरी हैं उनका ज़रा भी नुक़सान नहीं कर सकते; क्योंकि संत सतगुर और राधास्वामी दयाल की दया उनको भूल और भरम और धोखे की जगह से बराबर बचाती रहती है और यह लोग उन सच्चे परमार्थी जीवों का ज़रा भी नुक़सान नहीं कर सकते बल्कि निंद्या और विरोध करने से अपने सिर पर पाप चढ़ाते हैं ॥

८५-(८) सिवाय संसारी और मूरख जीवों और निंदकों के मन और माया और काल भी तरह २ के बिघन परमार्थी जीवों के भक्ती और अभ्यास की कार्रवाई में डालते हैं, अनेक तरह के भरम और संसय निस्बत संत सतगुर और उनके सत-संग और सुरत शब्द मारग के पैदा करके सत-संगियों के चित्त में उद्वेग और नाक़िस ख़्याल

वक्त २ पर पैदा करते हैं पर राधास्वामी दयाल और सतगुर की दया हर वक्त सच्चे परमार्थी जीवों के मन और बुद्धि और चित्त वग़ैरह की सम्हाल रखती है कि जिससे वह क़तई भरमने न पावें बल्कि जिस क़दर निंदा वग़ैरह सुनकर अपने मत को ग़ौर से विचारें उसी क़दर ज़ियादा रोशनी उनके हिरदे में पैदा होती है और चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती है और ज़ियादा उमंग के साथ भक्ती और सुरत शब्द अभ्यास की कार्रवाई करते हैं ॥

८६-(९) इन विघनों के वाक़े होने से सतसंगी जीवों को ज़ियादा समझ बारीकी और बड़ाई राधास्वामी मत की आती है, और राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया और मेहर ज़ियादा से ज़ियादा नज़र पड़ती है और उनकी ताक़त वास्ते हटाने विघनों और संसारी अंगों के दिन २ बढ़ती जाती है और मन और माया आहिस्ते २ ज़ईफ़ और कमज़ोर होते जाते हैं और प्रेम और विश्वास चरनों में बढ़ता जाता है ॥

८७-(१०) ऐसे फ़ायदे हासिल होते हुए देखकर प्रेमी सतसंगी निंदकों की निंदा और मन और माया के विघनों को मेहर और दया का औज़ार वास्ते अपनी तरक्क़ी के समझ कर उनसे ज़रा भी नहीं

डरते बल्कि अपनी परमार्थी कार्रवाई के अंजाम देने में ज़ियादा शौक़ के साथ मशग़ूल होते हैं यानी दिन २ अपनी भक्ती और अभ्यास को बढ़ाते जाते हैं और राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन दृढ़ता के साथ मज़बूत करते जाते हैं और हर जगह और हर वक़्त दया और सहायता अपने अंग संग देखकर मगन होते हैं और निःचिन्त रहते हैं ॥

८८-(११) जिस क़दर जीव कि संतों के दयापात्र हैं वह चाहें जहां नज़दीक या दूर देश में पैदा होवें लेकिन उनका किसी न किसी तरह संजोग उनके चरनों में हाज़िर होने का लग जाता है और सब संत सतगुर से मिलकर और उनका सतसंग कर २ अपना परमार्थी भाग बढ़ाते हैं ॥

८९-(१२) और फिर जहाँ २ और जिस क़ौम और क़बीले में यह जीव पैदा हुए हैं वहाँ इनकी मार्फ़त बहुत से नये जीव पर असर संतों के परमार्थ का पहुँचता है और जो जीव कि सतोगुनी हैं वे जल्द खिँच आते हैं और सतसंग करके सुरत शब्द मारग के अभ्यास में लग जाते हैं। फिर जहाँ २ इन जीवों का रिश्ता और मेल है इनके वसीले से और २ नये जीवों के हिरदे में बीजा परमार्थ का बोया जाता है, इस तरह तादाद जीवों

की जो कि संतों के परमार्थ में शामिल होते हैं दिन २ बढ़ती जाती है ॥

९०–(१३) संत मत में किसी जीव को धमका कर या लालच दिखाकर या बहका फुसला कर शामिल नहीं किया जाता, सिर्फ़ बचन सुना कर और उसको समझ बूझ बढ़ाकर उसके हिरदे में भक्ती और प्रेम सच्चे मालिक के चरनों का बसाया जाता है और फिर अभ्यास करके वह प्रेम दिन २ बढ़ता जाता है और अंतर की आंख खुलती जाती है ॥

९१–(१४) वही जीव बड़भागी हैं जो करम धरम और भरम से हट कर और दुनियाँ के परमार्थ को असार देखकर और संसारी जीवों और लोक लाज का ख़ौफ़ न करके राधास्वामी दयाल की शरन में आवें और संत सतगुर अथवा साध गुरू और उनके प्रेमीजन का संग करके दिन २ चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते जावें। वही जीव सतगुर की दया और मेहर निहारते हैं और शुकराना करके अपने भागों को सराहते हैं और दिन २ प्रेम बढ़ा-कर एक दिन निजधाम में बासा पाते हैं ॥

---

(९) प्र ार नवाँ

दुनियाँ में जहाँ जिसका प्यार है वहीं उसका चित्त जाता है और चित्त के साथ वह आप

मौजूद है। जो दुनियाँ से छूटना चाहे उसको चाहियें कि अपने चित्त को प्यार के साथ कुल मालिक राधास्वामी के चरनों में बारम्बार जोड़े तो जितनी देर ऐसा अभ्यास करेगा उतनी देर को उसका मालिक के चरनों में संग रहेगा, और फिर इस संग को आहिस्ते आहिस्ते बढ़ाते जाना चाहिये ॥

९२–(१) चित्त असल में सुरत का सीस या मुख है जिस तरफ़ यह जाता है उसी तरफ़ जीव का आपा और मन वग़ैरह भी खिंच जाते हैं और बोल चाल में लोग इसको ध्यान ख़याल और तवज्जह कहते हैं ॥

९३–(२) अब ख़याल करो कि जिस तरफ़ किसी का चित्त जाता है वह सर्ब अंग से उधर की तरफ़ मुतवज्जह हो जाता है और हरचंद कि आंख और कान खुले हैं पर वह कुछ नहीं देखता है और न कोई बचन जो उस वक़्त उससे कहा जावे सुनता है ॥

९४–(३) जबकि चित्त का ऐसा हाल है तब जो कोई इसको मालिक के चरनों में लगावे तो जितनी देर कि ऐसी हालत रहेगी उतने अरसे तक चित्त

चरनों में रहेगा और उस वक़्त दुनियाँ और उसके ख़यालों से न्यारा हो जावेगा ॥

९५--(४) इस कार्रवाई को अमल में लाने के वास्ते दो बात की ज़रूरत है--एक तो मालिक का भेद जानना कि वह और उसका धाम घट में कहाँ है और उसके चरन का भेद क्या है, दूसरे किस तरह चित्त को चरनों में लगाना चाहिये--इसी को अभ्यास की जुगत कहते हैं ॥

९६--(५) सब लोग और सर्व मत कहते हैं कि मालिक सब जगह है और जो वह सब जगह है तो हमारे पिंड यानी घट में भी ज़रूर मौजूद है और जहाँ उसका सिंहासन है वहीं उसका धाम है ॥

९७--(६) अब मालूम होवे कि मालिक का तख़्त ऊँचे से ऊँचे स्थान में मन और माया की हद्द के पार है जहाँ से आदि में रचना का ज़हूर हुआ और आदि ज़हूरा कुल मालिक का शब्द यानी आवाज़ है। राधास्वामी मत में भेद मंज़िलों यानी स्थानों का खोल कर वर्णन किया है ॥

९८--(७) जीव यानी सुरत जो कुल मालिक राधा-स्वामी दयाल की अंश है आदि धाम से उतर कर और ब्रह्मांड की रचना से गुज़र कर पिंड में उसके नाके पर जिसको तीसरा तिल कहते हैं बैठी है

और वहां से दो धारें दोनों आंखों के तिल में आकर ठहरी हैं और यहां से देह और दुनियाँ की कार्रवाई करती हैं इसी स्थान से उसका उलटना चित्त को चरनों में लगाने से मुमकिन है॥

९९--(८) इस स्थान के नीचे पिंड है जिसमें छः चक्र हैं और यह स्थान छठे चक्र का है ॥

१००--(९) इसके ऊपर ब्रह्मांड है जिसमे तीन मुक़ाम है ॥

१०१--(१०) ब्रह्मंड के परे महासुन्न का मैदान है और उसके परे दयाल देश है और वहीं कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त है ॥

१०२--(११) जितने स्थान कि छठे चक्र यानी तीसरे तल और राधास्वामी धाम के बीच में हैं वहाँ हर एक स्थान पर अभ्यासी के वास्ते राधास्वामी दयाल का स्वरूप और चरन मौजूद हैं ॥

१०३--(१२) जो कोई सतगुर से भेद लेकर अभ्यास शुरू करे वह स्वरूप या चरन का ध्यान हर एक मुक़ाम पर करता हुआ सत्तलोक तक अपने चित्त को पहुँचा सकता है और जितनी देर कि वह इस ध्यान में मशगूल रहे और दूसरा कोई ख़याल उसके मन में न आवे तो उतनी देर उसका चित्त उसी स्थान पर जहाँ कि वह ध्यान लगा रहा है ठहरेगा और उसके साथ उसका आपा भी वहीं

मौजूद होगा और उस वक़्त दुनियाँ और देह से किसी क़दर अलहदगी हो जावेगी ॥

१०४--(१३) जो यह अभ्यास थोड़ी २ देर के वास्ते जैसे पाँच सात या दस मिनिट किया जावे तो यक़ीन है कि उतनी देर गुनावन या कोई दुनियाँ का ख़्याल अभ्यासी के मन में नहीं पैदा होगा और उतने अरसे का निर्मल ध्यान उससे बन पड़ेगा--इसी तरह दिन रात में जितनी दफ़े याद आजावे और यह ध्यान किया जावे तो उसका बहुत फ़ायदा अभ्यासी को मालूम होवेगा और यह काम आसानी के साथ हर एक शख़्स से और हर जगह और हर वक़्त बन सकता है ॥

१०५--(१४) जो कोई शब्द का अभ्यास करै तो वह एक या दो मुकाम तक अपनी सुरत को तान सकता है और जो किसी को भाग से ऊँचे के मुक़ामों की आवाज़ें सुनाई देवें तो आगे भी अपनी सुरत को बढ़ा सकता है लेकिन यह बात किसी ख़ास २ सतसंगी को जो भारी संसकारी हैं हासिल हो सकती है। लेकिन ध्यान की मदद से कम दरजे के संसकारी जीव भी अपनी सुरत को किसी क़दर ऊँचे मुकामों तक पहुँचा सकते हैं ॥

१०६--(१५) जो कोई ध्यान के साथ अपने चित्त को चरनों में जोड़ेगा और यह अभ्यास दिन रात

में कई बार शौक़ के साथ करेगा तो उसके मन और सुरत का मुख्य अंग ऊँचे के ृ ामों में बार २ फेरा करने से निर्मल और निश्चल होता जावेगा और कोई अरसे के बाद हालत ऐसे अभ्यासी की बदलती जावेगी, यानी चरनों में राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के प्रेम बढ़ता जावेगा और संसार की तरफ़ से चित्त उदास होता जावेगा और फिर शब्द का अभ्यास भी ज़ियादा दुरुस्ती और आसानी से बन पड़ेगा ॥

१०७--(१६) जो किसी को फ़ुरसत कम होती है या उसके मन में वक्त़ अभ्यास के गुनावन या ख़याल बहुत उठते हैं तो ज़रूर चाहिये कि वह दिन रात में दस या बारह दफ़े ध्यान पांच २ मिनिट या सात मिनिट करे उतने अरसे में गुनावन या दूसरा ख़याल दिल में नहीं पैदा होगा और यह अभ्यास हर वक्त़ और हर जगह बैठे २ और लेटे २ और तनहाई मे और भीड़ भाड़ में और भी काम काज करते वक्त़ ज़रा देर के वास्ते आँखें बंद करके आसानी से बन सकता है और किसी दूसरे शख़्स को उसकी ख़बर भी नहीं हो सकती ॥

१०८--(१७) जो अभ्यासी को थोड़ा बहुत सतगुर के स्वरूप में भाव और प्यार है तो उसको मुनासिब है कि पहिले मुक़ामी स्वरूप का . ाल करके

फिर वहां पर सतगुर के स्वरूप का ध्यान करे इससे मन जल्दी निश्चल होकर शौक़ के साथ अभ्यास में लगेगा और कुछ देर तक मुक़ाम पर ठहरेगा ॥

१०९--(१८) लेकिन जो कोई मुक़ामी स्वरूप का ध्यान करना चाहे तो कुछ हर्ज नही है और जो वह थोड़े शौक़ से यह काम करेगा तो मौज से उसको उस स्वरूप का दर्शन अभ्यास के समय ख़ाह सुपने में कभी २ मिलैगा और फिर प्रीत भी बढ़ती जावेगी ॥

११०--(१९) इसी तरह जो कोई सतगुर के स्वरूप का ध्यान करेगा तो उसको भी मेहर और दया से कभी २ अंतर में दर्शन मिलैगा और शौक़ और प्यार बढ़ता जावेगा कि जिससे अभ्यास आसानी और दुरुस्ती से बनेगा ॥

१११--(२०) जोकि दुनियाँ और उसका सामान नाशमान है और जीव की देह भी छिनभंगी है इस वास्ते हर एक को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने जीते जी इस क़दर अभ्यास पक्का कर लेवे कि जब चाहे जब अंतर में मन और सुरत को चढ़ाकर या तानकर थोड़ा बहुत रस ले सके यानी कुछ देर किसी ऊंचे मुक़ाम पर ठहर कर देह और

दुनियाँ से थोड़ी बहुत अलहदगी हासिल करे तो अख़ीर वक़्त पर यानी मौत के समय उसको कष्ट और कलेश कम ब्यापेगा या बिल्कुल नहीं मालूम होगा और इसी तरह किसी सख़्त तकलीफ़ या दुख के वक़्त भी ज़िंदगी में इस अभ्यास से बहुत फ़ायदा हासिल होगा यानी वह तकलीफ़ और दुख कम ब्यापेगा ॥

११२--(२१) इस कार्रवाई के दुरस्ती से बनने के वास्ते अभ्यासी को ज़रूर चाहिये की कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की शरन लेकर और उनकी मेहर और दया का आसरा और भरोसा मन में रख कर अभ्यास शुरू करे, तो उसका कारज सब तरह दुरुस्त बनेगा और अभ्यास में रस और आनंद मिलता और बढ़ता जावेगा ॥

---

(१०) प्र ार द वाँ

जीव दुनियाँ में सिवाय कुटुम्ब परिवार के और बहुत से लोगों से जिनसे उनका कुछ कारज निकलता है और बहुत सी चीज़ों से जो कभी २ उनके कुछ काम आती हैं प्रीत करते हैं, और अपना मन उनमें थोड़ा बहुत

बांधते हैं। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम मालूम होता है कि वह मालिक कुल के चरनों में भी जो कि उनके घट में मौजूद है और सदा उनके अंग संग रहता है थोड़ी बहुत प्रीत उसका भेद भाव लेकर करें कि जिससे सख़्त तकलीफ़ और भारी दुख और कलेश दूर या हलके होजावें और ख़ास कर मौत के वक़्त उनकी सहायता होवे और मदद मिले ॥

११३--(१) कुल जीव दुनियाँ में अपने कुटुम्ब परिवार के साथ प्रीत करते हैं और उनको अपना हमदर्द और हितकारी समझते है कि वक़्त मुसीबत्त और तकलीफ़ वग़ैरह के मदद करेंगे और रिश्तेदारों और बिरादरी के लोगों से भी मुहब्बत रखते हैं कि वे भी वक़्त ज़रूरत और कारज व्यौहार वग़ैरह के शामिल होवें और दुख के समय हमदर्दी करें ॥

११४--सिवाय कुटुम्बी और रिश्तेदार और बिरादरी के और लोगों से भी जीव प्रीत करते हैं, जैसे पंडित, जोतिषी, डाक्टर, मास्टर, साहूकार और हर क़िस्म के दूकानदार और हाकिम और वकील और कितनेही पेशेवाले और नौकर चाकर वग़ैरह

क्योंकि इन सब से जब तब काम पड़ता है और उनसे प्रीत रखने में वह काम सहज में बनते हैं ॥

११५--(३) सिवाय आदमियों के बहुत से जानवरों से भी लोग प्रीत करते हैं और उनसे काम सवारी और शिकार और खेल और तमाशा और दिल बहलाव वग़ैरह का लेते हैं और बाज़े उसमें अपनी शोहरत चाहते हैं या अपने नफ़े और आमदनी के मतलब से बहुत जानवर पालते हैं और उनकी सैादागरी करते हैं ॥

११६--(४) इसके सिवाय धन माल और ज़ेवर और कपड़ा और बरतन और असबाब और सामान आराइश वग़ैरह और ज़मीन और मकान और बाग़ और तालाब और कुए वग़ैरह में सब लोगों के मन का बंधन अमूमन बहुत मज़बूत रहता है यहां तक कि ज़रा ज़रा से मुआमले में इन चीज़ों के सबब से लड़ाई झगड़ा और फ़िसाद और नालिश अदालत वग़ैरह में करते हैं ॥

११७--(५) अब ग़ौर करना चाहिये कि कितनी जगह जीवों का मन बँधा और फँसा है, गोया इतनी जगह उनका मन गिरवी हो रहा है और वे उसको वहाँ से आसानी से नहीं हटा सक्ते हैं ॥

११८--(६) कुल मालिक राधास्वामी दयाल जो सब के सच्चे माता पिता हैं और हर एक के घट

में बिराज रहे हैं और हर दम हर एक के अंग संग हैं और उसकी सहायता कर रहे हैं उनकी तरफ़ निहायत दरजे की भूल संसार में पड़ रही है यानी कोई उनका खोज नहीं करता और न उनका और उनके धाम का भेद जानता है॥

११९--(७) जबकि दुनियाँ में आदमियों से अदना से आला दरजे वालों तक और भी जानवरों और जड़ पदार्थों से लोग भारी और मज़बूत प्रीत कर रहे हैं और उनसे बहुत कम या थोड़ा थोड़ा मतलब निकलता है फिर कुल मालिक जो सर्व समरथ और सब का पैदा करने वाला और पालन करने वाला है उसके चरनों में प्रीत और प्रतीत न करना किस क़दर नुक़सान और हर्ज की बात है—लेकिन जीव अजान और मूरख हैं और इस क़दर तवज्जह उनकी दुनियाँ के कारोबार में लग रही है कि उनको अपने सच्चे मालिक की सुध भी नहीं है और न उसका भेद दरियाफ़्त करने का शौक़ है॥

१२०—(८) इसमें कुछ शक नहीं कि हर एक जीव को ज़रूरत मदद आसमानी की बहुत से दुनियाँ के कामों में और ख़ास कर वक्त सख़्त तकलीफ़ और मुसीबत और मौत के पड़ती है लेकिन लोगों ने बजाय कुल मालिक के और बहुत से वसीले

मान रक्खे हैं कि जिनसे वे ऐसे वक्तों में मदद मांगते हैं और वक्त पूरे होने उनके मतलब के कुछ ख़िदमत भी करते हैं पर सच्चे मालिक का पता और भेद कोई नहीं जानता है और न उसके चरनों में कोई सिवाय सच्चे और निर्मल और भेदी भक्तों के दुआ या प्रार्थना करता है ॥

१२१--(९) मालूम होवे कि सच्चे मालिक का तख़्त घट घट में मौजूद है और जो कोई उसके चरनों में प्रेम प्रीत करे और जो जुगत की संतों ने [जो उस कुल मालिक के भेदी हैं] बताई है, उसके मुवाफ़िक़ अंतर में अभ्यास करके चरनों से मिलने की आसा रखता है उस पर वह कुल मालिक अपनी ख़ास दया करता है और जब तब अपने नूर की झलक भी दिखलाता है कि जिससे उसकी प्रीत और प्रतीत चरनो में बढ़ती जाती है ॥

१२२--(१०) जो सच्चे मालिक के भक्त हैं वे अपने कुल कामों में अपने प्यारे मालिक की मौज को निहारते हैं और जो काम जैसा मौज से बने उसी में राज़ी रहते हैं और जब कोई तकलीफ़ या मुशकिल पेश आती है तब उसी मालिक के चरनों में दुआ और प्रार्थना करते हैं और दया मांगते हैं ॥

१२३--(११) इसी तरह सब जीवों को मुनासिब है कि अपने कुल मालिक का पता और भेद अपने

घट में दरियाफ़्त करके चित्त चरनों में जोड़ते रहें तो अलबत्ते हर मुआमले में थोड़ी बहुत सहायता उनको मालूम पड़ेगी और दूसरे आदमियों और चीज़ों में इस क़िस्म का भाव कि उनसे वक़्त ज़रूरत कुछ मतलब निकलेगा या कोई कारज बनेगा अंतर में न रक्खे क्योंकि बग़ैर दया और प्रेरना मालिक कुल के कोई कुछ नहीं कर सक्ता है लेकिन दुनियाँ के क़ायदे के बमूजिब जो तदबीरें मुनासिब हैं और जिन ज़ाहिरी बसीलों से उनका अंजाम पाना मुमकिन है वह बदस्तूर करना चाहिये ॥

१२४--(१२) मालिक की सहायता और दया हर वक़्त जारी है और जो प्रेमी भक्त हैं वह उसको हर दम देखते हैं लेकिन आम लोगों को इस बात की नज़र नहीं है, इस सबब से वे अपने ज़ाहिरी बसीलों और अपनी अक़ल की बातों और तदबीरों का भरोसा रखते हैं और वक़्त बनने या न बनने काम के उन्हीं शख़्सों या बसीलों की महिमा या बुराई करते हैं ॥

१२५--(१३) जो लोग कि मालिक और उसके भेद से बेख़बर हैं उनको वक़्त सख़्त तकलीफ़ और मौत के उन दुनियावी आसरों से जिनका भरोसा वे मन में रखते हैं कुछ मदद या सहारा नहीं

मिलता इस सबब से वे भारी दुख सहते हैं जो अपनी ज़िन्दगी में मालिक का भेद लेकर अपने अंतर में तवज्जे और अभ्यास करते तो उस वक्त उनको ज़रूर मदद मिलती ॥

१२६--(१४) जीवों को मुनासिब है कि वास्ते अपनी सुरत के फ़ायदे के थोड़ी बहुत प्रीत कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लावें, और दूसरी तरफ़ मन का बंधन जिस क़दर मुमकिन होवे ढीला करें--यानी कुटुम्बी और रिश्तेदार और बिरादरी और दूसरे लोगों और चीज़ों वग़ैरह में मन अपना उसी क़दर लगावें कि जिस क़दर ज़रूरत है और एहतियात रक्खें कि ज़बर भरोसा और आसरा राधास्वामी दयाल की दया का उनके मन में क़ायम हो जावे और जिस क़दर मुमकिन होवे अपने घट में चरनों से मेला करते रहें, यानी जो जुगत कि संतों ने बताई है उसका अभ्यास बिरह और प्रेम अंग लेकर हर रोज़ करते रहें, तो उनको दुनियाँ के कामों में भी मदद मुनासिब मिलती रहेगी और तकलीफ़ और मौत के वक्त उनको बिशेष सहायता होगी ॥

१२७-(१५) यह कार्रवाई जो ऊपर बयान की गई कुछ मुश्किल नहीं है क्योंकि जीव अनेक जगह प्रीत और सेवा करते हैं और उनका स्वभाव है

कि जहां से कोई मतलब-बरारी की आस होवे वहां खुशी दिल से हाज़िरी और सेवा तन मन धन की करने को तैयार होते हैं फिर जहाँ से कि थोड़ी बहुत सब कामों में मदद मिले और सख़्त तकलीफ़ और मौत के वक़्त ज़रूर सहायता होने का यक़ीन होवे वहां किस क़दर तवज्जह के साथ प्रीत और सेवा करना मुनासिब है यानी ज़ाहिर में तो संत सतगुरु या साधगुरू और उनके प्रेमीजन और सतसंग से नाता जोड़ना और प्रीत भाव करना और अंतर में राधास्वामी दयाल के चरनों में पता और भेद और जुगती का उपदेश लेकर चित्त को चरनों में जोड़ना और प्रीत और प्रतीत बढ़ाना इसी तरह सब कारज दुरुस्ती से बनना मुमकिन है ॥

---

(११) ग्यारहवाँ

कुल मालिक का असल में प्रेम और आनंद और सत्त और चेतन्य स्वरूप है और ऊँचे से ऊँचे देश में उसका निज धाम है और वह सदा निरबंध और हमेशा एक रस है, इस वास्ते सुरत चेतन्य को जो उसकी अंस है अपने अंसी के मुवाफ़िक़ होने का जतन करना

चाहिये यानी देह और दुनियाँ के बंधन तोड़कर निरबंध और सत-चित-आनंद और प्रेम स्वरूप से मिलना चाहिये ॥

१२८--(१) कुल मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम और आनंद के सिंध और भंडार हैं और उनका देश ऊँचे से ऊँचा है--वहीं से सुरत चेतन्य की धार रवाँ होकर और कितने ही ठिकानों पर रास्ते में ठहरती हुई और रचना करती हुई नीचे उतर कर पिंड में आंखों के तिल में ठहरी है और यहां बैठ कर देह और दुनियाँ की कार्रवाई मन और इंद्रियों के मार्फ़त कर रही है ॥

१२९--(२) यह सुरत चेतन्य कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है यानी उनके चरनों से इसका निकास हुआ है, और यह भी असल में मुवाफ़िक़ अपने भंडार के चेतन्य और प्रेम और आनंद स्वरूप है, पर माया के घेर में आकर अपने निज घर और निज रूप को भूल गई है और पाँच तत्त की बनी हुई देह को अपना रूप और इस दुनियाँ को अपना देश समझ कर और भोगों में आशक्त होकर दुख सुख सहती है और जोकि देह नाशमान है इस सबब से जनम मरन का चक्कर इसका जारी रहता है ॥

१३०--(३) राधास्वामी दयाल फ़रमाते हैं कि इस देश को माया का देश जानकर और भोगों को जड़ और ज़हर से मिले हुए पदार्थ समझ कर अपने निज घर और वहां के आनंद की सुध लेकर वह जतन करना चाहिये कि जिससे माया के जाल से निवेड़ा हो जावे और जो दुख सुख की मिलौनी की रचना उसके देश में है उससे छुटकारा हो जावे, यानी जनम मरन का चक्कर वच जावे तब अपने निज धाम और असली स्वरूप का आनंद प्राप्त होगा ॥

१३१--(४) यह समझ बूझ संत सतगुरु या साध-गुरू या उनके सच्चे और प्रेमी सतसंगी के संग से आवेगी और उन्हीं से जतन और जुगत माया के घेर से निकसने की मालूम होवेगी। इस वास्ते पहिले उनका खोज करना ज़रूर है और जब वे भाग से मिल जावें तब प्रेम प्रीत के साथ उनका संग करना और उनसे भेद निज घर और उसके रास्ते का और जुगत चलने की दरियाफ़ करके अभ्यास शुरू करना मुनासिब है ॥

१३२--(५) यह उपदेश उन जीवों के वास्ते है कि जो दुनियाँ और उसके सामान की नाशमानता देखकर और यहाँ की हालत दुख सुख और जनम मरन का मुलाहज़ा करके और अपने मन में विचार कर दरियाफ़ करना चाहते हैं कि सच्चा और कुल

मालिक कैान और कैसा है और उसका निज धाम कहाँ है और जीव यानी सुरत कैान है और कहाँ से आया और कहाँ को जाता है और कोई ऐसा भी मुक़ाम है कि जहाँ जाकर वह अमर हो जावे यानी जनम मरन से छूट जावे और सर्व सुख का भंडार उसको प्राप्त होवे और किसी क़िस्म का कष्ट और कलेश वहाँ न होवे, और जो ऐसा स्थान है (और रचना में ऊँचे नीचे दरजे देखकर ऐसे स्थान के मौजूद होने का ज़रूर यक़ीन होता है) तो वह कहाँ है और वहाँ कैसे पहुँचना होवे ॥

१३३--(६) राधास्वामी मत में इन सब सवालों के जवाब माकूल मौजूद हैं बल्कि यही इस मत का भेद है कि जो सच्चे खोजी और दरदी जीवों को जो इत्तिफ़ाक़ से सतसंग में आवें पहिले ही मर्तबे सुनाया और समझाया जाता है और जब वे उसको समझ कर जुगत चलने की दरियाफ़्त करें तब उपदेश देकर अभ्यास शुरू कराया जाता है ॥

१३४--(७) इस वास्ते जिस किसी के दिल में सच्चा खोज पैदा हुआ है उसको चाहिये कि सब करम और भरम और बाहरमुखी पूजा वग़ैरह छोड़कर राधास्वामी संगत में जाकर दरियाफ़्त हाल करे और जब उसूल और शरायत राधास्वामी मत

को सुन कर और समझ कर निश्चय हो जावे तब मारग का भेद और अभ्यास की जुगत का उपदेश लेकर कार्रवाई शुरू करे तब कोई दिन के अभ्यास से उसको आप मालूम हो जावेगा कि जिस बात की जीव के कल्यान के वास्ते ज़रूरत है वह राधास्वामी मत के अभ्यास से हासिल हो सकती है-- सिवाय उस तरकीब के जो राधास्वामी मत में जारी है और कोई जुगत वास्ते पहुँचने निज धाम और प्राप्ती दर्शन कुल मालिक राधास्वामी दयाल के रचना भर में नहीं है बल्कि रची भी नहीं गई है ॥

१३५--(८) वह जुगत यह है कि जिस रास्ते से सुरत गुज़र कर पिंड में उतरी है उसी रास्ते से घर को लौटना शुरू करे तब यह बेगाना देश आहिस्ते २ छूटता जावेगा और निज धाम की तरफ़ सुरत चलती जावेगी ॥

१३६--(९) और रास्ते का भेद यह है कि कुल रचना धारों से हुई और धारों ही के वसीले से कार्रवाई उसकी जारी है, फिर जिस धार पर सुरत उतरी है उसी को पकड़ कर लौट सकती है और वह धार रूह और जान और अमृत और चेतन्य की धार है और चेतन्य का ज़हूरा शब्द यानी आवाज़ है फिर वही धार शब्द की धार है और शब्द की बराबर कोई अंधेरे में प्रकाश करने वाला

ओर रास्ता दिखाने वाला नहीं है इस वास्ते शब्द का भेद लेकर ओर उसकी धुन यानी आवाज़ को पकड़ कर निज घर की तरफ़ उलटना मुमकिन है॥

१३७-(१०) शब्द का भेद बहुत भारी है और आदि ज़हूरा मालिक का शब्द है और यही शब्द की धार कुल रचना की करता है, जितने ठेके या मुक़ाम रास्ते में हैं हर एक मुक़ाम का शब्द अलहदा है। जिस स्थान का जो शब्द है उसकी धुन या आवाज़ को पकड़ के, यानी तवज्जह के साथ सुनते हुए चलना होता है और वह आवाज़ उस मुक़ाम पर जहाँ से कि उसका निकास है पहुँचाती है। इसी तरह एक शब्द से दूसरे और दूसरे से तीसरे शब्द को पकड़ के अख़ीर मंज़िल तक पहुँचना मुमकिन है और यह भेद और जुगत चलने की वक़्त उपदेश के राधास्वामी मत में समझाई जाती है॥

१३८-(११) सिवाय शब्द के अभ्यास के राधास्वामी मत में ध्यान की जुगत भी बताई जाती है कि जिससे बिखरे हुए मन और सुरत समेट कर एक स्थान पर ठहराये जाते हैं और इसी तरह हर एक स्थान पर ध्यान की जुगत से सुरत का उलटना और ठहराना (जहाँ तक कि रूप रंग है) आसानी के साथ मुमकिन है॥

१३९–(१२) इन दो तरकीब के साथ सुरत चेतन्य का सत्त पुरुष राधास्वामी की मेहर और संत सतगुर की दया से माया के देश से हट कर अपने निज धाम में उलट कर पहुँचना मुमकिन है और यह काम सब को चाहे औरत होवे या मर्द इसी ज़िंदगी में शुरू कर देना और जिस क़दर बन सके उसको दुरुस्ती के साथ अंजाम देना वास्ते अपने जीव के कल्यान के मुनासिब और ज़रूर है, तो वह एक दिन अपने महा चेतन्य और महा आनंद और महा प्रेम के भंडार में पहुँच कर अपने परम पिता राधास्वामी दयाल के दर्शनों का बिलास देखेगी और माया के जंजाल और काल के कष्ट और कलेश से जिसने इसके प्रेम और आनद और चेतन्यता को दबा रक्खा है छूट जावेगी ॥

१४०–(१३) यह सहज जुगत उलटाने सुरत की और भेद निज धाम का कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों पर अति दया करके इस समय में आप प्रघट किया है और जो कोई उनके चरनों की सरन लेकर इस अभ्यास को थोड़ा बहुत शौक़ के साथ करेगा उसकी रक्षा और सम्हाल और तरक्क़ी वे अपनी मेहर और दया से आप करेंगे और एक दिन धुरधाम में पहुँचा कर बिश्राम देंगे कि जहाँ सुरत अंस अपने अंसी का दर्शन पाकर परम और अमर आनंद को प्राप्त होवेगी ॥

(१२) प्रकार बारहवाँ

सुरत चेतन्य को जो निज सूरज महा चेतन्य की रोशन किरन है माया यानी अंधकार के देश को छोड़कर अपने महा प्रकाश स्वरूप भंडार में पहुँचना चाहिये और रास्ते में जहाँ तक अंधेरा और उजेला मिला हुआ है ठहरना नहीं चाहिये ॥

१४१--(१) सुरत जोकि महा चेतन्य कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है जबसे कि अपने निज घर से उतर कर माया के घेर में आई है तब से इसका जनम मरन जारी है यानी माया एक बार उसको निगलती है और फिर उगलती है ॥

१४२--(२) सिवाय जनम मरन के कष्ट के देह धर कर बहुत से दुख सुख इस दुनियाँ में सहने पड़ते हैं, सो जब तक कि सुरत माया के घेर के पार न जावेगी तब तक उन दुक्खों से छुटकारा नहीं होगा ॥

१४३--(३) देहियों के बंधन से छूटने और जनम मरन के चक्कर से बचने की तरकीब सिर्फ़ सत सत-

गुर से मालूम हो सक्ती है, इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब है कि संत सतगुर का खोज करें, और जब वे मिल जावें तौ अपने भागों को सराहें, और उनकी सेवा और बंदगी उमंग के साथ बजा लावें, और जो उपदेश वह देवें उसके मुवाफ़िक़ हर रोज़ अभ्यास करें ॥

१४४--(४) मालूम होवे कि सुरत चेतन्य की धार जब से दूसरे और तीसरे दरजे में जिसको माया का घेर कहते है उतरी है तब से उस पर माया के खोल या गिलाफ़ चढ़ते चले आये हैं, और यह खोल या गिलाफ़ माया के मसाले के रचे हुए हैं, उन से या उनके मसाले से सुरत चेतन्य को कोई ख़ास निसबत नहीं है, सिवाय इसके कि सुरत उनको अपना रूप समझ कर उनमें बंध गई है, और जब कोई तकलीफ़ देह में होती है तो उसको अपने ऊपर घटा कर दुख भोगती है ॥

१४५--(५) देह को अपना रूप मानना भरम है, क्योंकि जब सुरत की धार सोते वक़्त आँख के मुक़ाम से खिंच जाती है तब देह के साथ सिल-सिला ढीला हो जाता है और उसके दुख सुख की कुछ भी ख़बर नहीं रहती है इस वास्ते मुनासिब है कि ऐसा जतन किया जावे कि जिससे यह भरम दूर हो जावे ॥

१४६--(६) और वह जतन यह है कि राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सुमिरन और ध्यान और भजन का उपदेश लेकर थोड़ा बहुत अभ्यास रोज़मर्रा करे तब सुरत और मन ऐसे अभ्यासी के सिमट कर पहिले मुक़ाम यानी सहसदल कँवल की तरफ़ चढ़ेंगे और तब भाव और प्यार दुनियाँ और दुनियाँदारों और अपनी निज देह में घटता जावेगा, और प्रीत और प्रतीत चरनों में कुल मालिक के बढ़ती जावेगी ॥

१४७--(७) अब जानना चाहिये कि हर मुक़ाम पर सुरत उतरते वक़्त एक २ क़िसम की देह धरती चली आई है सो सतगुर से मिल कर और उनकी दया संग लेकर आहिस्ते २ एक मुक़ाम से दूसरे और दूसरे से तीसरे पर उलटती जावेगी और जिस मंडल के मसाले की देह धारन की है वह वहीं छोड़ती जावेगी और उस देह से जो स्वभाव लगे हुए हैं वह भी वहीं झड़ते चले जावेंगे ॥

१४८--(८) अब समझना चाहिये कि जहाँ तक माया का घेर है वहाँ तक थोड़ा बहुत अँधेरा छाया रहता है सो जहाँ तक कि अँधेरा और उजेला शामिल है उस हद में सुरत चलने वाली को नहीं ठहरना चाहिये बल्कि जिस क़दर जल्द बन सके उस देश और उस हद को पार करके

दयाल देश में कि जहाँ सदा प्रकाश एक रस रहता है और अँधेरे की मिलौनी नहीं है पहुँचना चाहिये, तब सच्चा छुटकारा होगा, सो यह काम दुरुस्ती के साथ राधास्वामी दयाल की दया और संत सतगुर की कृपा से बन सकेगा इस वास्ते शुरू में उनके चरनौँ में गहरी प्रीत और प्रतीत लाना चाहिये और उनके हुक्म में खुशी से बर्तना चाहिये, तब अभ्यास आसानी और दुरुस्ती के साथ बन पडेगा और थोड़ा बहुत रस भी अंतर में मिलेगा कि जिसके सबब से प्रीत और प्रतीत राधास्वामी दयाल के चरनौँ में दिन दिन बढ़ती जावेगी और एक दिन काम पूरा बन जावेगा॥

१४९-(९) राधास्वामी धाम और दयाल देश महा प्रकाशवान है कि जिनकी रोशनी का अंदाज़ कहने में नहीं आ सक्ता और वहाँ की रचना भी निहायत रूहानी और सोभावान है कि जिसको देख कर सुरत अचरज में रह जावेगी और वहाँ की दया और कृपा को देख कर निहायत दरजे का शुकराना अदा करेगी कि बग़ैर ऐसी दया और कृपा राधास्वामी दयाल और सतगुर के कोई सुरत इस माया के देश से छूट कर उस आनंद धाम में किसी सूरत में नहीं जा सक्ती॥

१५०-(१०) जिन लोगौँ को कि इस दुनियाँ और इसके सामान की नाशमानता और दुख सुख के

चक्कर का हाल देख कर खौफ़ दिल में पैदा हुआ है और उससे बचने और परम और अमर सुख की प्राप्ती के वास्ते जतन करना चाहते हैं उनसे यह कहा जाता है कि ऐसा सुख स्थान ज़रूर मौजूद है और उसके प्राप्ती का रास्ता हर एक के घट में जारी है सो जो कोई राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करे वही उस रास्ते को आहिस्ते २ तै कर के एक दिन निज घर में पहुँच सक्ता है ॥

१५१-(११) यह अभ्यास हर एक शख़्स को चाहे मर्द होवे या औरत अपने जीव के कल्यान के वास्ते ज़रूर करना मुनासिब है और कुल मालिक राधा-स्वामी दयाल ने निहायत दया फ़रमा कर इस अभ्यास को ऐसा आसान कर दिया है कि हर कोई उसको गृहस्त में रह कर बग़ैर छोड़ने कारोबार और गृहस्त आश्रम के ब्यौहार के आसानी से कर है और फ़ायदा उसका इसी ज़िंदगी में थोड़ा बहुत देख सक्ता है और अख़ीर वक़्त पर राधास्वामी दयाल अपने जीवों को आप अंतर में प्रघट होकर सम्हालते है और अपने सग लेजा कर ऊँचे और सुख स्थान में बासा देते हैं और उस वक़्त सुरत को देह के छोड़ने में कुछ तकलीफ़ नहीं मालूम होती बल्कि शब्द और स्वरूप के दर्शन का इस क़दर आनंद मिलता है कि जिसका बयान नहीं हो है बल्कि उसका असर मरने वाले के

चेहरे पर घंटों तक बाद देह छोड़ने के नज़र आता है ॥

१५२-(१२) ऐसी आसान जुगत रूह के घर की तरफ़ चढ़ाने की जोकि राधास्वामी दयाल ने अब जारी फ़रमाई है किसी वक़्त में ज़ाहिर नहीं हुई और न ऐसी दया जोकि अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल जीवों पर फ़रमा रहे हैं कभी किसी ने करी यानी मरने के वक़्त आप दर्शन देकर अपने जीव को सम्हालते हैं क़ितै नज़र इसके कि उससे चाहे पूरी तौर पर और क़ायदे से अभ्यास बना है या नहीं और मन और इन्द्रियों को उसने किसी क़दर बस किया है या नहीं ॥

१५३-(१३) फिर ऐसे दया के भरे हुए समय में जो जीव राधास्वामी दयाल की सरन में नहीं आवेंगे और उपदेश लेकर जिस क़दर बन सके सुरत शब्द मारग का अभ्यास नहीं करेंगे तो जानना चाहिये कि वे जीव निहायत दरजे के अभागी हैं कि थोड़ा सा अभ्यास निहायत दरजे के आराम के साथ भी करना नहीं चाहते और संसारी और रसमी परमार्थ में बहुत कष्ट झेलते हैं और धन भी ख़र्च करते हैं और फिर भी वहाँ से किसी तरह का परचा ज़िंदगी में नहीं मिलता और न अख़ीर वक़्त पर ख़ास सहायता होती नज़र आती है ॥

१५४--(१४) इस वास्ते वही जीव महा बड़भागी हैं कि जो जैसे तैसे राधास्वामी दयाल की सरन में आ गये हैं या आते जाते हैं और उनके उपदेश का थोड़ा बहुत अभ्यास करते हैं और उनकी दया के परचे अपने अंतर में देखते हैं और बग़ैर मिह-नत और तकलीफ़ और छोड़ने घरबार या रोज़-गार के दो या तीन जनम में अपने निज धाम में कि जहाँ कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त है आसानी से पहुँच जावेंगे। उस निज धाम की महिमाँ अपार है और आज तक किसी को उसकी ख़बर तक नहीं हुई और सिवाय संत के न कोई वहाँ पहुँचा और न पहुँच सक्ता है क्योंकि उस धाम का भेद और चलने की जुगत कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके इस समय मे आप प्रघट की है॥

---

(१३) प्र ार तेरहवाँ

दुनियाँ में चार भारी दुख सब पर आते हैं यानी रोग सोग मौत और कामना का पूरा न होना इनका पूरा इलाज आदमी के हाथ में नहीं है, लेकिन राधास्वामी मत के अभ्यास की कमाई से यह चारों दुख हलके बल्कि दूर

हो सक्ते हैं, इस वास्ते इस अभ्यास की कमाई हर एक को थोड़ी बहुत करना वास्ते अपनी बेहतरी के ज़रूर और मुनासिब मालूम होता है ॥

१५५-(१) इस दुनियाँ में चाहे कोई अमीर होवे या ग़रीब इन चार दुक्खों से बच नहीं सक्ता और वह चार दुख यह हैं पहिला रोग दूसरा सोग तीसरा मौत और चौथा कामना का पूरा न होना ॥

१५६-(२) इन चारों दुक्खों का इलाज किसी के हाथ में नहीं है छोटी और हलकी बीमारियाँ दवा करने से दूर हो जाती हैं पर भारी रोगों का इलाज हकीमों और डाक्टरों के पास नहीं है ॥

१५७--(३) जो कोई इन दुक्खों से बचना चाहे उसको मुनासिब है कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेकर जो कुछ कि अभ्यास उन्होंने फ़रमाया है जैसे सुमिरन और ध्यान और भजन थोड़े बहुत ख़ौफ़ और शौक़ के साथ हर रोज़ नेम के साथ करे तो उसको अपने अभ्यास के दरजे के मुवाफ़िक़ विकारी अंग बहुत कम सतावेंगे और दुक्खों का भी चक्कर मेहर और दया से बहुत हलका हो जावेगा जैसा कि आगे लिखा जाता है ॥

१५८--(४) जो कोई कि सुमिरन और ध्यान और भजन संत सतगुर या उनके सच्चे प्रेमी सतसंगी से

उपदेश लेकर हर रोज़ करेगा तो उसके सुरत और मन किसी क़दर सिमटते और अंतर में ऊपर की तरफ़ को चढ़ते जावेंगे और आहिस्ते २ मन और इंद्रियों का घाट छूटता जावेगा और उसका फ़ायदा यह होगा कि उस अभ्यासी को बसबब कम खाने और कम सोने के रोग बहुत कम सतावेगा और जो कभी किसी बेएतदाली के सबब से कोई बीमारी थोड़ी बहुत आवेगी तो मेहर और दया से उसका असर किसी क़दर उलट जावेगा यानी उस वक्त अभ्यास मे ज़ियादा मन लगेगा और अंतर में शब्द और स्वरूप ज़ियादा साफ़ मालूम पड़ेंगे और मन और सुरत का सिमटाव और खिंचाव ऊँचे की तरफ़ को ज़ियादा होगा ॥

१५९–(५) इसी तरह जिस क़दर अभ्यास ज़ियादा होगा उसी क़दर तवज्जह ऐसे अभ्यासी की दुनियाँ और उसके सामान और कुटुम्ब परिवार की तरफ़ से आहिस्ते २ हटती जावेगी और उनकी हान लाभ में दुख सुख कम व्यापेगा यानी अपने प्यारे कुटुम्बी और रिश्तेदारों के वियोग में बहुत दुख नहीं होगा ॥

१६०–(६) सब में भारी और बढ़कर दुख मौत का है सो राधास्वामी दयाल की दया से वह भी हलका हो जावेगा यानी अभ्यासी को मौत के

रास्ते पर चलने और वहाँ की सैर और कैफ़ियत देखने से जीते जी अभ्यास के समय बहुत आनंद प्राप्त होता है और जब कि अख़ीर वक़्त पर सर्व अंग करके मन और सुरत उस तरफ़ को दौड़ेंगे तब निहायत दरजे का आनंद बसबब खुलने शब्द और प्राप्ती दर्शन स्वरूप के हासिल होगा और मन और सुरत आपही मगन होकर ऊँचे देश की तरफ़ को चलेंगे इस तरह मौत का दुख बहुत हलका हो जावेगा बल्कि बिल्कुल नहीं व्यापेगा ॥

१६१--(७) सब जीव संसार में हमेशा कोई न कोई कामना यानी इच्छा या तरंग उठाते रहते हैं और जिस क़दर बनता है उसके पूरा करने के निमित्त जतन भी करते हैं पर कोई कामना पूरी होती है और कोई अधूरी रहती है और किसी में बिल्कुल कामयाबी नहीं होती इस निरासता का भारी झटका लगता है और जो जतन कि किया जाता है उसका भी नाकामयाबी की हालत में बहुत दुख होता है और उसके साथ किसी क़दर नुक़सान भी आयद होता है ॥

१६२--(८) अब मालूम होवे कि जो कोई राधा-स्वामी दयाल की सरन में आया है और उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ हर रोज़ दुरुस्ती के साथ यानी बिरह और प्रेम अंग लेकर सुमिरन ध्यान और

भजन करता है तो मुवाफ़िक़ क़ायदे राधास्वामी मत के उसको लाज़िम और मुनासिब होगा कि फ़ज़ूल तरंगें वास्ते तरक़्क़ी संसार और उसके सामान के न उठावे और जो ज़रूरी ख़ाहिशों के पूरे होने के वास्ते तरंग उठावे तो उसमें मौज का आसरा और भरोसा मुक़द्दम रक्खे यानी जो काम करे उसका फल मौज पर छोड़ देवे, जतन बदस्तूर दुरस्ती के साथ करे लेकिन फल में अपना मन न बाँधे यानी जैसा फल मौज से होवे उसको मंज़ूर और क़बूल करे और जो कोई ऐसा नहीं करेगा उसकी [illegible]गी में कसर पड़ेगी और उसी क़दर उसके जीव के पूरे उद्धार में देरी होगी ॥

१६३--(९) ऊपर के लिखे से ज़ाहिर होगा कि राधास्वामी मत में किसी को इजाज़त फ़ज़ूल तरंगौं के उठाने की नहीं है और जो ज़रूरी कामौं के वास्ते तरंग उठाई जावें तो उनका फल मौज के ऊपर छोड़ने की हिदायत है जो कामना पूरी होवे तो मालिक का शुकराना और जो नहीं पूरी होवे तो भी शुकराना इस बात का कि कोई ख़ास मस-लहत के सबब से नाकामयाबी हुई करना चाहिये और वही उसके हक़ में बेहतर और मुनासिब था और वैसाही ज़हूर में आया ॥

१६४--(१०) इस तरह चौथे दुख यानी कामना पूरा न होने की तकलीफ़ से बिल्कुल बचाव होगया ॥

१६५-(११) अब सब लोगों को चाहिये कि वास्ते कल्यान अपने जीव के बाद मरने के और भी वास्ते बचाव के भारी दुक्खों से इस ज़िंदगी में जरूर राधास्वामी मत में शामिल होकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास जिस क़दर बन सके थोड़े बहुत शौक़ और ख़ौफ़ के साथ हर रोज़ करें तो उसका भारी फ़ायदा इस दुनियाँ में और भी बाद चोला छोड़ने के आइन्दे हासिल होगा और जो कोई ऐसा नहीं करेगा वह जम दूतों के हाथ से तकलीफ़ उठावेगा और जनम मरन के चक्कर से नहीं बचेगा और इस दुनियाँ में भी तीन ताप और चार क़िस्म के दुख जिनका ज़िकर ऊपर हुआ सहता रहेगा। और वह तीन ताप यह हैं--(१) मानसी दुख, (२) देह का दुख, और (३) उपाधी यानी किसी से लड़ाई झगड़ा और क़ज़िया ॥

१६६-(१२) अक़लमन्द और बिचारवान आदमी को चाहिये कि दुनियाँ का हाल और दुनियाँदारों की चाल देख कर होशियारी के साथ यहाँ गुज़ारा करे यानी अपना मन इस क़दर किसी शख़्स या चीज़ में न बाँधे कि जिससे दुख पैदा होवे लेकिन यह बात समझ में दुरुस्ती के साथ जब आवेगी और उसकी कार्रवाई दुरुस्त जब बन पड़ेगी जबकि वे लोग राधास्वामी मत में शामिल होकर और संत सतगुर की दया संग लेकर सुरत शब्द मारग

का अभ्यास करेंगे तब दिन २ उनकी आँख खुलती जावेगी और दुनियाँ का हाल उनको आईने के मुवाफ़िक़ आहिस्ते २ नज़र आता जावेगा ॥

१६७-(१३) और जो कोई सिर्फ़ विद्या और बुद्धी के आसरे कार्रवाई करते हैं उनसे अभ्यास जैसा चाहिये नहीं बन पड़ेगा और न कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनौं मैं उनसे जैसी चाहिये प्रीत और प्रतीत हो सकेगी और इस वास्ते फल भी उसका जैसा चाहिये नहीं मिलेगा यानी दुख सुख और जनम मरन का चक्कर बदस्तूर जारी रहेगा ॥

---

(१४) प्रकार चौदहवाँ

सुरत चैतन्य ऊँचे और गहरे देश की वासी है और अब यहाँ मलीन माया के देश में तन मन और इंद्रियों के साथ फँस गई है सो हर एक आदमी को लाज़िम है कि उसके छुड़ाने का जतन दुरुस्ती के साथ करे ॥

१६८-(१) मालूम होवे कि सुरत यानी रूह कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है यानी उनके

चरनौं से इसका निकास हुआ है और असल मैं चेतन्य और आनन्द और प्रेम स्वरूप है लेकिन नीचे उतर कर पिंड मैं बैठने से अनेक बंधन इस को लग गये हैं और इस मलीन माया के देश मैं हालत इसकी बहुत ख़राब हो रही है ॥

१६९–(२) जब यह सुरत पिंड और माया के देश से न्यारी न होगी तब तक सफ़ाई नहीं होगी और न इसकी हालत बदलेगी और यह अलहदगी और सफ़ाई और प्राप्ती आनंद की जब तक कि सच्चा परमार्थ न कमावे मुमकिन नहीं है ॥

१७०–(३) सच्चा परमार्थ उसको कहते हैं कि जिसमें सच्चे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का भेद होवे और उनके चरनौं मैं पहुंचने का जतन साफ़ २ और खोल कर समझाया जाता होवे ॥

१७१–(४) और वह भेद संक्षेप करके इस तौर पर कहा जाता है कि राधास्वामी दयाल कुल मालिक और सर्व समरथ हैं और उनका धाम ऊँचे से ऊँचा है वहाँ से आदि धार प्रघट हुई कि जिसको शब्द और चेतन्य की धार कहते हैं और उसी की मदद से सब रचना हुई सो उसी धार को पकड़ कर अपने घट मैं उलटना चाहिये ॥

१७२-(५) यह उलटने की तरकीब राधास्वामी मत में खोल कर बर्णन करी है सो जिस किसी को चौरासी और नरकौँ का ख़ौफ़ है और इस दुख सुख की मिलौनी के देह और देश से अलहदा होना मंज़ूर है और अपने निज भंडार में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होना चाहता है उसको मुनासिब है कि राधास्वामी मत में शामिल होकर यानी उपदेश लेकर अभ्यास सुरत शब्द मारग का शुरू करे तो उसकी सुरत आहिस्ते २ मन और इन्द्रियों के घाट से हट कर आकाश की तरफ़ चलेगी ॥

१७३-(६) जिस क़दर संत सतगुर का सतसंग और सेवा और अन्तर में अभ्यास मेहर और दया से बनता जावेगा उसी क़दर रस और आनंद मिलता जावेगा और सुरत पिंड देश और माया के घेर से न्यारी होती जावेगी ॥

१७४-(७) जोकि कुल जीवौँ का बन्धन देह और दुनियाँ के साथ बहुत मज़बूत हो रहा है और भोगौँ और पदार्थों में रस पाकर फँस रहे हैं इस वास्ते कुल जीवौँ को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने छुटकारे का जीते जी जतन करें और जो इस मामले मे सहल-अंगारी* और बेपरवाही करेंगे तो हमेशा दुख सुख सहते रहेंगे और बारम्बार जनम मरन का कलेश भोगेंगे ॥

* ओछा स ।

१७५-(८) जोकि यह रचना तीन लोक की माया ब्रह्म की करी हुई है और वह नहीं चाहते कि जीव उनकी हद के पार जावे और इस वास्ते उन्होंने अनेक तरह के भोग और पदार्थ रचे हैं और जीवों को लुभा कर उनमें ख़ूब मज़बूती के साथ बाँधा है इस सबब से सच्चे परमार्थियों को मुनासिब है कि संत सतगुर की ओट लेवें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की चरन सरन धारन करें तो सहज में एक दिन निरवार होना मुमकिन है नहीं तो किसी जीव की ताक़त नहीं है कि अपने बल और पौरुष से इस माया के घेर से निकल कर पार जा सके ॥

१७६-(९) इस वास्ते संत सतगुर का खोज हर एक को करना ज़रूर है और वे दया करके अक्सर जगत में मौजूद रहते हैं और जब किसी के दिल में सच्ची चाह और तड़प उनके मिलने की पैदा होती है तो वे दया करके उसके मिलने का संजोग आप लगा देते हैं और फिर अन्तर और बाहर उसको मदद देकर एक दिन निज घर में पहुँचा देते हैं ॥

१७७-(१०) जिस किसी को संत सतगुर मिल जावें वही जीव बड़भागी है और उसी का सच्चा और पूरा उद्धार अनक़रीब होने वाला है और

उसी के हिरदे में सच्चे मालिक का प्रेम सतगुर की दया से पैदा होकर दिन २ बढ़ता जावेगा और दुनियाँ और उसके भोगोँ की तरफ़ से चित्त उदास होता जावेगा ॥

१७८-(११) जाग्रत सुपन और सुषोपति अवस्था के अहवाल से जिसमें सब जीव बर्त रहे हैँ ज़ाहिर है कि सुरत का मुक़ाम बहुत गहरा और ऊँचा और तीनोँ अ ओँ के परे है फिर जब तक जतन करके इन अवस्थाओँ के पार पिंड में और फिर उन्हीं अवस्थाओँ के पार ब्रह्मंड में न जावेगी तब तक उसको अपना रूप नहीं दरसेगा और वहाँ से जब तक अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल के चरनोँ में न जावेगी तब तक अपने निज घर में नहीं पहुँचेगी और उसको पूरा सुख और चैन नहीं मिलैगा और यह रास्ता चढ़ाई या उलटने का घट २ में जारी है पर बिना मौज कुल मालिक राधास्वामी दयाल और दया और मेहर संत सतगुर के कोई उस रास्ते पर चल नहीं सक्ता और न मंज़िलोँ को तै करके धुर घर में पहुँच सक्ता है ॥

१७९-(१२) इस वास्ते कुल जीवोँ को जो अपना सच्चा और पूरा उद्धार चाहते हैँ मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले खोज लगा कर संत सतगुर

से मिलें और फिर उनकी दया और उपदेश लेकर जिस क़दर बन सके अपने घट में अभ्यास शुरू करें तो रफ़्ते २ एक दिन काम बन जावेगा यानी सब परदे फोड़ कर सुरत अपने सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँच जावेगी ॥

---

(१५) प्र ार पंदरहवाँ

दुनियाँ में सब लोग अपने और कुटुम्ब परिवार और प्यारों के तन और मन के आराम के वास्ते अनेक तरह के जतन बहुत मिहनत के साथ उमर भर करते हैं और उसका फ़ायदा सिर्फ़ इस क़दर होता है कि थोड़े दिन के लिये या हद ज़िंदगी भर के वास्ते थोड़ा या बहुत आराम मिल जाता है लेकिन बाद छोड़ने इस देह और देश और कुटुम्ब परिवार के कहाँ जाना और रहना होगा और वहाँ सुख मिलेगा या दुख उसकी ख़बर बहुत कम है और इसके वास्ते जतन भी कम करते हैं इस वास्ते सब को मुनासिब और लाज़िम है कि वास्ते हमेशा के आराम और सुख के भेदी और बख़्

लोगों से हाल दरियाफ़्त करके थोड़ा बहुत जतन ज़रूर करें तो इस ज़िंदगी में उनको उस अमर सुख और आनंद की जो संतों की जुगत कमाने से हासिल होना मुमकिन है थोड़ी बहुत ख़बर पड़ जावेगी और उसकी कुछ परीक्षा और जाँच करके बहुत ख़ुशी हासिल होगी ॥

१८०-(१) दुनियाँ में सब लोग वास्ते अपने और अपने कुटुम्ब परिवार के सुख के अनेक तरह के काम बहुत मिहनत के साथ उमर भर करते हैं पर फ़ायदा उसका इसी दुनियाँ में थोड़े दिन के लिये या ज़िन्दगी भर के वास्ते मिल जाता है और उतने ही में तृप्त होकर मगन हो जाते हैं ॥

१८१-(२) बाज़े जतन जो कि लोग करते हैं बड़े सख़्त होते हैं यहाँ तक कि किसी २ कामोँ में जान जाने का ख़ौफ़ रहता है जैसे कि सिपाहगरी और ख़तरनाक और दरिंदे जानवरों का पालना और नचाना और नट विद्या वग़ैरह ॥

१८२-(३) इन कामौं को लोग बड़ी ख़ुशी और शौक़ से करते हैं और जो वह दुरुस्त बन पड़े तो उनकी शोहरत और आमदनी भी बहुत होती है और इस सबब से मन बहुत खुश होता है और उन कामौं में तरक़्क़ी करता चला जाता है ॥

१८३--(४) लेकिन ऐसे बहुत कम जीव हैं कि जो थोड़ा बहुत जतन अपने २ मत के मुवाफ़िक़ वास्ते प्राप्ती सुख के दूसरे जनम में या जहाँ कहीं आइंदा रहना होवे करते हैं ॥

१८४--(५) इनमें से बहुत से करम कान्डी या शरीअत वाले हैं कि जो वास्ते प्राप्ती बैकुंठ या स्वर्ग या बहिश्त वग़ैरह के इस ज़िन्दगी में करम करते हैं ॥

१८५--(६) और ऐसे जीव बहुत कम हैं कि जो तीन लोक के मालिक या परमेश्वर के चरनों में भक्ती वास्ते प्राप्ती उसके दर्शन और धाम के करते हैं पर जो मुक़ाम या सुख कि इनको प्राप्त होता है वह असल में अमर और पूरा नहीं है ॥

१८६--(७) कोई २ इनमें से अपने को ज्ञानी मान कर समझते हैं कि वे आपही ब्रह्म हैं और इस समझ के नशे में निःचिन्त और बेख़ौफ़ रहते हैं ॥

१८७--(८) लेकिन इनमें से कोई भी सच्चे मालिक को नहीं जानता और न पहिचानता है क्योंकि अपना भेद उसने आप नर रूप यानी संत स्वरूप धारण करके प्रघट किया है और जुगत चलने की भी दया से इस क़दर आसान करदी है कि हर कोई उसकी कार्रवाई चाहे जवान होवे या बूढ़ा आसानी से कर सक्ता है ॥

१८८--(९) यह भेद और जुगत इस वक़्त में सिर्फ़ राधास्वामी मत में खोल कर कही है और राधास्वामी संगत से उसका उपदेश मिल सक्ता है ॥

१८९--(१०) जो कि भक्ती की कार्रवाई सब जगह एक सी है, यानी चाहे देवताओं या औतारों या परमेश्वर या कुल मालिक की, सब जगह तन मन धन से सेवा और सच्ची दीनता और बिरह और प्रेम अंग लेकर अन्तरी अभ्यास और संसार से किसी क़दर बैराग करना पड़ेगा इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले निरनय और तहक़ीक़ात करके सब में बड़े की भक्ती और सेवा इख़्तियार करे तो सब काम पूरा बनेगा यानी सच्चा और पूरा उद्धार होगा और जो ओछे और अधूरे की भक्ती और सेवा की जावेगी तो मिहनत और ख़र्च और बर्ताव उसी क़दर करना पड़ेगा लेकिन फल में कसर रहेगी यानी सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा और धुरधाम में वासा नहीं मिलेगा ॥

१९०--(११) सच्चे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल को ज़ाहिर में संत सतगुर की भक्ती और उनका सतसंग और अन्तर में कुल मालिक और संत सतगुर के निज रूप यानी शब्द स्वरूप की भक्ती और उसका संग यानी सुरत शब्द मारग का

अभ्यास मंज़ूर और पसंद है। इस वास्ते सब को जो अपने जीव के हमेशा के सुख और आनंद के वास्ते जतन करना चाहें लाज़िम है कि संत सतगुर का खोज लगा कर उनका सतसंग और सेवा और भक्ती वग़ैरह शुरू करें, और संत सतगुर वही हैं जो निज घर और उसके रास्ते का भेद और सुरत शब्द मारग का उपदेश समझावें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के निज रूप यानी शब्द स्वरूप की भक्ती अन्तर में दृढ़ावें ॥

९१-(१२) जो कोई प्रीत और शौक़ के साथ संत सतगुर का सतसंग और उनकी जुक्ती का अंतर में अभ्यास करेगा उसको थोड़े दिन में इसी देह और दुनियाँ में कुछ अपने मालिक का जलवा नज़र आवेगा और उसकी दया और मेहर और रक्षा और सम्हाल अपने अन्तर और बाहर मालूम पड़ेगी और बिस्वास और भरोसा कुल मालिक के चरनों का दिन २ दृढ़ होता जावेगा और सरन पक्की होती जावेगी कि जिससे उसको आइंदे के सुख और आनंद की प्राप्ती की आशा और प्रतीत गहरी हो जावेगी और चित्त उसका आहिस्ते २ निःभरम और निरभय और निःचिन्त होता जावेगा॥

९२-(१३) अब ख़याल करो कि दुनियाँदार थोड़े दिन के सुख या अपनी थोड़ी बहुत जीविका

हासिल करने के लिये किस क़दर मुश्किल और मेहनत और . रे के काम शौक़ और ख़ुशी के साथ करते हैं और करमी और शरई लोग स्वर्ग और बै ैरह में कोई दिन के सुख और आनंद भोगने के वास्ते किस क़दर ख़र्च और मिहनत और काष्टा उठाते हैं और मूरत पूजने वाले और तीरथ बरत करने वाले और हठ जोग और मुद्रा ैरह का अभ्यास करने वाले किस क़दर काष्टा और बैराग और मिहनत के साथ अभ्यास करते हैं और इन सब का फल कोई काल भोग कर फिर जनम धारन करके सुख दुख भोगना पड़ता है ॥

१९३-(१४) फिर सब से भारी और अमर सुख और आनंद की प्राप्ती के वास्ते किस क़दर शौक़ और ज्जह और मिहनत के साथ सतसंग और भक्ती और अभ्यास करना ज़रूर है ॥

१९४-(१५) लेकिन इस समय में कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों को बलहीन और दुखी देखकर अति दया करके सहज जुगती और सहज भक्ती जारी फ़रमाई है कि जो हर कोई आसानी के साथ थोड़ी बहुत करके अपना परमार्थ का भाग बढ़ा सकता है और कोई अर्से में निज देश में पहुँच कर अमर और परम आनंद को प्राप्त हो सकता है ॥

१९५--(१६) बावजूद इस क़दर आसानी के यानी थोड़े से तन मन धन और तवज्जह और शौक़ लगाने से जो अपना पूरा काम बनवाने की चाह किसी के दिल में न पैदा होवे यानी वह संत सतगुर का थोड़ा बहुत सतसंग और उनकी जुगती का अभ्यास न करे तो जानना चाहिये कि वह जीव बड़ा अभागी है कि और २ कामों में तन मन धन लगाता है और जो ख़ास उसके जीव के कल्यान की बात है उसमें ज़रा भी तवज्जह नहीं करता लेकिन संत सतगुर के सन्मुख पहुँचने और उनके दर्शन और बचन से यह कसर भी आहिस्ते २ दूर हो सकती है और वे अपनी दया से जीव का परमार्थी भाग जगा सकते हैं और आहिस्ते २ उसको बढ़ा कर एक दिन अपनी दया से पूरा फल बख़्श सकते हैं ॥

(१६) प्र ार ोलहवाँ

तीन क़िस्म की शक्ती हर एक आदमी में मौजूद हैं इनमें से एक या दो अक्सर लोग जगाते हैं पर तीसरी सुरत यानी रूहानी शक्ती का थोड़ा बहुत यक़ीन करके जगाना हर एक आदमी पर वास्ते उसके जीव के कल्यान के मुनासिब और ज़रूर है ॥

१९६–(१) मालूम होवे कि हर एक शख़्स में चाहे मर्द होवे या औरत तीन क़िस्म की शक्ती मौजूद हैं पहिली जिस्मानी यानी देह और इंद्रियों की शक्ती दूसरी मन और बुद्धी की शक्ती और तीसरी सुरत यानी रूह की शक्ती ॥

१९७–(२) असल में एक शक्ती रूह की है और मन और बुद्धी और इंद्रियाँ वग़ैरह औज़ार हैं सो वही रूह की शक्ती अंतःकरन के मुक़ाम पर मन और बुद्धी का काम देती है और इंद्रियों के घाट पर इन्द्रियों का काम देती है क्योंकि जिस वक़्त रूह की शक्ती खिंच जाती या सिमट जाती है यह सब औज़ार बेकार हो जाते हैं ॥

१९८–(३) यह सब शक्तियाँ बग़ैर जगाने यानी मथन करने के पूरी २ नहीं जागती हैं यानी मामूली कार्रवाई करती रहती हैं मगर बढ़की और अचरजी कार्रवाई जब तक कि अभ्यास करके जगाई न जावें नहीं कर सकती हैं ॥

१९९–(४) जैसे एक गांव का आदमी या जिस किसी को कुछ सिखाया नहीं गया सिवाय बोझा उठाने या हल जोतने या दैाड़ने या बोझे के जानवरों को हांकने के और कोई काम नहीं कर सक्ता और उसकी दूरी भी थोड़ी होती है लेकिन जिसने किसी इन्द्री की क़ूवत मश्क़ करके जगाई

है वह हाथ पैर आंख ज़बान और गले से बड़े भारी और अचरजी काम कर सकता है । जैसे लिखना पढ़ना तसवीर खींचना गाना बजाना नाचना और अनेक तरह की नट विद्या की कार्रवाई करना और जानवरों पर सवारी और सिपाहगरी और कारीगरी वग़ैरह, और इन लोगों की आमदनी भी ज़ियादा होती है ॥

२००-(५) इसी तरह जिस किसी ने विद्या पढ़ कर मन और बुद्धी की क़ूवत जगाई वह लोग अपनी २ लियाक़त के मुवाफ़िक़ बड़े २ ओहदों पर राज दरबार में नौकरी पाते हैं और सैकड़ों हज़ारों लाखों और करोड़ों आदमियों पर हुक्म चलाते हैं और शहरों और मुल्कों का बन्दोबस्त करते हैं और भारी तनख़ाहें पाते हैं, लेकिन जिसने कि विद्या नहीं पढ़ी और अपने मन और बुद्धी की ताक़त नहीं जगाई वे लोग हाथ पैर यानी इंद्रियों की कार्रवाई के मुवाफ़िक़ काम और मज़दूरी पाते हैं या जिन्होंने थोड़ी विद्या और हिसाब किताब वग़ैरह सीखा वह ब्यौपार और सौदागरी वग़ैरह का काम करते हैं पर हुकूमत और मुल्क का बन्दो-बस्त उनके सुपुर्द नहीं होता ॥

२०१--(६) इन दोनों क़िस्म की यानी जिस्मानी और अक़ली क़ूवतें जगाने वालों को जो कुछ कि

फ़ायदे होते हैं वह संसारी हैं और उनका ठहराव थोड़े दिन के वास्ते या हद्द ज़िन्दगी भर के लिये होता है, बाद छोड़ने इस देह और देश के उन फ़ायदों में से कोई भी जीव का संगी और मददगार नहीं हो सकता, इसी सबब से उनको तुच्छ और नाशमान कहा जाता है लेकिन जो कोई कि अपना आइंदे और हमेशे के वास्ते फ़ायदा चाहता है उसको चाहिये कि अपनी रूहानी यानी सुरत की ताक़त को जगाने का जतन करे, तब उसको दोनों दुनियाबी और परमार्थी यानी इसी ज़िन्दगी में और भी आइंदे को हमेशे के वास्ते भारी फ़ायदे हासिल हो सकते हैं ॥

२०२--(७) सुरत यानी रूह की ताक़त जगाने से मतलब यह है कि उसको अपने घट में ऊँचे देश की तरफ़ तरकीब के साथ चलाना और चढ़ाना ताकि वह माया के घेर से जिसमें उतरने के वक़्त ग़ोता खागई है उबर आवे और अपनी असली ताक़त हासिल करे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की कि जिनकी वह अंस है प्यारी और दयापात्र हो जावे ॥

२०३--(८) जैसे कि पहिली और दूसरी शक्ती बग़ैर मश्क़ और मिहनत सीखने वाले और मदद उस्ताद के नहीं जगाई जा सकती हैं ऐसेही यह

कारवाई जगाने सुरत की ताकत की भी बग़ैर दया और मदद संत सतगुर या उनके सच्चे अभ्यासी प्रेमी के संग के नहीं बन सकती है, यानी जगवाने वाले को होशियारी के साथ सतसंग और सेवा सतगुर और प्रेमी जनों की और नित्त अभ्यास उनकी जुगत सुरत शब्द मारग का करना जरूर है, तब आहिस्ते २ सुरत सिमटेगी और चढ़ेगी और उसकी ताक़त जागती जावेगी ॥

२०४--(९) जो कोई कि अपनी रूह की ताक़त जगवाना चाहे उसको चाहिये कि दुनियाँ और उसके सामान और कुटुम्ब परिवार की मुहब्बत किसी क़दर कम करके अपना भाव और प्यार प्रतीत के साथ कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों में लावे, और सतसंग होशियारी के साथ करे यानी वचनों को चित्त से सुने और विचारे और जिस क़दर बन सके उनके मुवाफ़िक़ करनी इख़्तियार करे और उपदेश लेकर अंतरी अभ्यास यानी सुमिरन और ध्यान और भजन यानी शब्द का सरवन थोड़ा बहुत बिरह और प्रेम अंग लेकर नित्त नेम के साथ करे तो पहिले उसके मन और सुरत का सिमटाव और फिर आहिस्ते आहिस्ते चढ़ाव होता जावेगा और उसी क़दर रस और आनंद भी अन्तर में मिलता जावेगा ॥

२०५-(१०) जिस क़दर अभ्यास और सतसंग में रस मिलता जावेगा उसी क़दर तरक़्क़ी मन और सुरत की चढ़ाई में होती जावेगी और उसी क़दर सुरत का उबार माया के घेर से होता जावेगा यानी उसी क़दर सुरत की ताक़त जागती जावेगी ॥

२०६-(११) जिस किसी ने कि अपनी सुरत को जिस क़दर जगाया उसी से कुल मालिक उसी क़दर राज़ी हुआ और बग़ैर उसकी चाह और मांग के उसको निहायत दरजे की बड़ाई और शोहरत बख़्शी और ज़माने में उसकी सैकड़ों और हज़ारों बरस तक यादगारी जारी रही, जैसे कि बड़े बड़े औतार और भक्त जन और पैग़म्बरों और वलियों के हाल से जिसको सब लोग जानते हैं ज़ाहिर है, यहां तक कि बाद चोला छोड़ने के उनकी बड़ाई और पूजा और यादगारी ज़ियादा से ज़ियादा बढ़ती चली जाती है ॥

२०७-(१२) दुनियाँ के लोग थोड़ी सी मान बड़ाई और शोहरत और यादगार के लिये बहुत मिहनत और ख़र्च करते हैं और फिर भी यह बात उनको पूरी पूरी अपनी ज़िन्दगी में भी हासिल नहीं होती और बाद चोला छोड़ने के कोई उनका नाम भी नहीं लेता और न ज़िकर करता है,

लेकिन जिन्होंने कि मालिक के चरनों में भक्ती करके अपनी सुरत की ताक़त जगाई उनका नाम और ज़िकर दूर २ देशों में दिन २ ज़ियादा फैलता जाता है और मालिक अपनी दया से इस क़दर बड़ाई उनको देता है कि जो कहने में नहीं आ सकती ॥

२०८--(१३) इस वास्ते कुल जीवों को चाहिये कि वास्ते अपने जीव के कल्यान के ज़रूर थोड़ा बहुत अभ्यास सुरत के समेटने और चढ़ाने का मुवाफ़िक़ क़ायदे राधास्वामी मत के नेम से करें तो जो यह काम उनसे थोड़े से थोड़ा भी बन पड़ेगा तो तीन या चार जनम में उनका सच्चा और पूरा उद्धार हो जावेगा यानी देह और दुनियाँ और उसके दुख सुख और भी जनम मरन के चक्कर से छूटकर एक दिन दयाल देश में बासा पावेंगे और अमर और परम आनंद को प्राप्त होवेंगे ॥

२०९--(१४) जो कोई गहरे प्रेम और उमंग के साथ यह कार्रवाई करेगा और सच्चे मालिक के दर्शनों की तड़प और बिकली और उमंग उसके हिरदे में विशेष होगी तो सत सतगुर की दया से वह अपना काम बहुत जल्द बना लेवेगा । और कुल मालिक राधास्वामी दयाल उसको वह दरजा यानी संत गति बख़्शेंगे कि जो औतारों और

पैग़म्बरों और वलियों के दरजे से बहुत ज़ियादा और ऊँची है और जिस को यह गति हासिल होगी वह पुरुष राधास्वामी दयाल की मौज से लाखों और करोड़ों जीवों का उद्धार कर सकेगा ॥

२१०--(१५) जिन लोगों से यह कार्रवाई यानी सुरत की ताक़त के जगाने की बिल्कुल नहीं बन पड़ेगी और वे अपनी उमर और ज़िन्दगी सिर्फ़ संसार के भोग बिलास में ख़र्च करेंगे तो वे चौरासी के चक्कर में पड़े रहेंगे यानी बारम्बार जनमेंगे और मरेंगे और नीच ऊँच देशों और जोनों में दुख सुख भोगते रहेंगे और कोई उनका उस दुख में सहाई नहीं होगा ॥

---

(१७) प्रकार सत्रहवाँ

तीन बड़ी इंद्रियों के रस में जीव दुनियाँ में फँसा हुआ है, इन तीनों को विशेष और फिर महा रस अंतर में मिल सकता है जो सुरत शब्द का अभ्यास किया जावे। और यहाँ के सब रस तुच्छ और नाशमान हैं और बावजूद मिहनत और मशक़्क़त और धन ख़र्च करने के पूरे २ नहीं मिल सक्ते ॥

२११--(१) ग़ौर से नज़र करने से मालूम होता है कि जीव दुनियाँ में बहुत करके तीन इन्द्रियों यानी आंख कान और ज़बान के सबब से ज़ियादा फँसे हैं और बाक़ी इन्द्रियों के भोगों में भी आशक्ती और बंधन ज़रूर होता है लेकिन इन तीन इंद्रियों की कार्रवाई सब में ज़बर है ॥

२१२--(२) आँखों से देखकर और कानों से सुनकर और ज़बान से रस और स्वाद लेकर जीव दिन दिन जगत में फैलता और फँसता चला जाता है और इन्हीं इन्द्रियों की कार्रवाई से अनेक तरह की तरंगें और चाहें भी मन में पैदा होती हैं और फिर उनके पूरा करने के वास्ते जतन किया जाता है और जतन के सिद्ध होने या न होने से दुख सुख भोगना पड़ता है ॥

२१३--(३) इन तीन इन्द्रियों के सिवाय चौथी काम इन्द्री का रस भी बहुत जबर है और इसके सबब से जो बंधन पैदा होते हैं वह भी भारी हैं। बल्कि दुनियाँ का विस्तार इसी इन्द्री की कार्रवाई यानी पैदाइश औलाद वग़ैरह से होता है लेकिन किसी ख़ास वक्त पर ज़िन्दगी में इस इन्द्री की ताक़त ज़ाहिर होती है और फिर किसी वक्त पर इसका ज़ोर बहुत घट जाता है ॥

२१४--(४) जोकि संसार के बंधनों से दुख सुख पैदा होता है और भोगों में ज़ियादा बर्ताव करने

से रोग पैदा होता है और शुरूआत संसार के बंधनों और भोगों में रस लेने की इन्द्रियाँ हैं इस वास्ते मनुष्य को मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले अपनी इन्द्रियों की सम्हाल करे और उनमें से तीन इन्द्रियों की जिनका ज़िकर ऊपर हुआ ज़ियादा एहतियात और सम्हाल दरकार है ॥

२१५--(५) कुल सामान इस दुनियाँ का और सर्व इंद्रियों के भोग नाशमान और हर दम बदलने वाले और पराधीन हैं और जो किसी का मन इन्हीं में बँधा रहा और इन्हीं के रस और स्वाद में मगन होता रहा और इन्हीं की प्राप्ती के लिये चाह उठाकर उमर भर मिहनत के साथ जतन करता रहा तो इस स्वभाव और चाह के मुवाफ़िक़ वह हमेशा देह धरता रहेगा और उसके संग दुख सुख जो लाज़मी हैं भोगता रहेगा ॥

२१६--(६) अब जिसके मन में ऐसी हालत जगत की देखकर जनम मरन और दुक्खों का थोड़ा बहुत डर पैदा हुआ है वह इस बात का खोज करेगा कि आया कुल रचना में कोई ऐसा भी स्थान है जो अमर और सर्व सुख का भंडार होवे और इसी ज़िन्दगी में जतन करने से कुछ उसकी कैफ़ियत वास्ते दिलाने और पकाने यक़ीन के अपने अंतर में मालूम पड़े सो ऐसे खोजी को पूरा

जवाब राधास्वामी मत में मिल सकता है और भेद और रास्ता उस अमर और महा सुख के स्थान का और भी जुगत चलने की वहाँ से मालूम हो सकती है ॥

२१७-(७) मालूम होवे कि वह अमर और महा सुख का स्थान कुल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम है और हर एक आदमी के घट में मौजूद है और रास्ता उसका नैन नगर से जहाँ जाग्रत अवस्था में जीव की बैठक है जारी है। जो कोई सच्चा दर्दी और खोजी है उसको कुल भेद रास्ते और मंज़िलों का और जुगत चलने की राधास्वामी संगत में समझाई जाती है ॥

२१८-(८) कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जो सहज जुगत मन और सुरत के समेटने और चढ़ाने की सुरत शब्द के अभ्यास से दया करके अब जारी फ़रमाई है उसमें उन तीन इन्द्रियों को जिनका कि ज़िकर ऊपर हुआ बहुत जल्द थोड़ा बहुत रस मिलना शुरू हो जाता है यानी सूक्ष्म आँखों को रूप और रोशनी का और सूक्ष्म कानों को शब्द और बाजे की धुनों का और सूक्ष्म ज़बान को अमृत की बूंदों का जो अभ्यास के समय ऊपर से झड़ती मालूम होती हैं। इस सबब

से अभ्यास सुखाला बनता है और अभ्यासी का शौक़ बढ़ता जाता है ॥

२१९-(९) और जितने मत कि दुनियाँ में जारी हैं उनकी कार्रवाई अक्सर बाहरमुखी है और जो थोडा बहुत अन्तरमुखी अभ्यास रक्खा है वह नीचे के देश का है, और उसमें रिआयत इस क़िस्म की जैसा कि राधास्वामी मत में क़ुदरती तौर पर जारी है नहीं है और न कोई ख़ास मुक़ाम या मुक़ामों की ख़सूसियत है इस सबब से अभ्यासी को मदद और सहारा कुछ नहीं मिलता है और जोकि भेद रास्ते और स्थानों का कुछ नहीं दिया जाता इस सबब से उसकी चाल में तरक़्क़ी भी नहीं होती यानी मन और सुरत की चढ़ाई का ज़िकर भी नहीं है यानी जो कोई कुछ अभ्यास करता है वह जहाँ का तहाँ रहता है और प्रेम का रंग उस पर नहीं बढ़ता ॥

२२०--(१०) राधास्वामी मत का अभ्यासी शब्द और रूप के सहारे ऊँचे से ऊँचे देश की तरफ़ रास्ते की मंज़िलें तै करता हुआ चल सक्ता है और सूक्ष्म से सूक्ष्म और अति सूक्ष्म और महा सूक्ष्म रचना के मंडल से गुज़र कर माया के घेर के पार निरमल चेतन्य देश में कि जहाँ सिर्फ़ रूहानी रचना है और मलीनता माया की नहीं है पहुँच

कर बिश्राम करता है और वहाँ अमर और परम आनंद उसको प्राप्त होता है और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से हमेशा को छुटकारा हो जाता है ॥

२२१--(११) अब इस दुनियाँ और उसके सामान और भोगों का हाल नज़र ग़ौर से देख कर सब जीवों को लाज़िम और मुनासिब है कि राधा-स्वामी मत के मुवाफ़िक़ जुगती का उपदेश लेकर थोड़ा बहुत अभ्यास शुरू करें और इसी ज़िंदगी में कुछ कैफ़ियत और फ़ायदा उस अभ्यास का देख लें ताकि आइंदे के भारी फ़ायदे का निश्चय हो जावे और आसा राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचने की मज़बूत हो जावे तो तीन या चार जनम में जीव का सच्चा और पूरा उद्धार होना मुमकिन है ॥

२२२--(१२) इसमें कुछ शक नहीं कि जीव इस वक़्त में निहायत निबल और नाकारे हैं लेकिन राधास्वामी दयाल अपनी ख़ास मेहर और दया से सब का बेड़ा पार लगाते हैं और हर तरह की मदद उनको अभ्यास की हालत में वास्ते चढ़ाई सुरत के देते हैं और निहायत दरजे की महिमा और बड़ाई इस मत की यह है कि यह सब काम बग़ैर छोड़ने घरबार और रोज़गार और ब्यौहार के आसानी से

बन सकता है सिर्फ़ सच्चा शौक़ और प्रेम कुल मालिक के दर्शनों का दरकार है जो यह शौक़ थोड़ा भी है तो राधास्वामी दयाल और संत सतगुर उसको अपनी मेहर और दया से बढ़ावेंगे और उस जीव को एक दिन निज घर में पहुंचा कर छोड़ेंगे ॥

२२३--(१३) जो जीव कि ऊपर के बचन को नहीं मानेंगे और परमार्थ की तरफ़ से बेपरवाही करके संसार में लिपटे और फँसे रहेंगे, उनका जनम मरन का चक्कर नहीं छूटेगा, ऊँच नीच देश में और ऊँची नीची देहियों के साथ दुख सुख भोगते रहेंगे ॥

---

(१८) प्र ार ठारहवाँ

सैर और तमाशे का शौक़ सब के दिल में रहता है और उसके वास्ते तन मन धन खुशी से ख़र्च करते हैं--अंतर में अभ्यास करने से बहुत भारी सैर कुदरत की नज़र आसकती है इस वास्ते उस तरफ़ भी सब को थोड़ी बहुत तवज्जह करना ज़रूर है ॥

२२४-(१) दुनियाँ में कुल आदमियों को चाहे मर्द होवें या औरत नये शहरों और पहाड़ों और

नई २ चीज़ों के देखने का शौक़ रहता है और इस सबब से लोग हमेशा तीरथ और मेले और तमाशे और सैर के वास्ते दुनियाँ भर में चलते फिरते रहते हैं और नये मकानों और शहरों और पदार्थो और पुराने वक्त की यादगार इमारत और चीज़ों को देख कर खुश होते हैं ॥

२२५-(२) इस कारवाई में ख़र्च भी बहुत पड़ता है और रास्ते में थोड़ी बहुत तकलीफ़ भी होती है लेकिन इस सब को बरदाश्त करते हैं ॥

२२६-(३) कोई २ मुश्किल और ख़तरनाक रास्ते और और मुक़ामों में बहुत सा धन ख़र्च करके और तकलीफ़ उठा कर जाते हैं और वहाँ का हाल दरियाफ़्त करके राज दरबार और लोगों को ख़बर देते हैं ॥

२२७--(४) जोकि मनुष्य की देह कुल रचना का नमूना है और जो कुछ कि बाहर रचना में है वह सब नमूने के तौर पर हर एक आदमी के घट में मौजूद है फिर जो कोई कि सच्चा शौक़ीन सैर तमाशे का है उसको चाहिये कि अपने घट में चलना शुरू करे तब ऐसी अचरजी सैर नज़र आवेगी कि जिसकी तारीफ़ कहने में नहीं आसकती और जिसका अन्त और पार नहीं है यानी उमर

भर बल्कि दो तीन जनम तक चलता रहे और हमेशा नई कैफ़ियत देख कर मगन होता जावे ॥

२२८--(५) इस सैर का कुछ इशारा और भेद संतों ने अपनी बानी में लिखा है लेकिन जो कुछ कि कैफ़ियत है वह देखने ही के तअल्लुक़ है ज्यों की त्यों लिखने में नहीं आ सकती ॥

२२९--(६) जो घट की जात्रा करना चाहे उसको चाहिये कि संत सतगुर के सतसंग में जाकर भेद सिद्धान्त स्थान यानी कुल मालिक राधास्वामी के धाम का और भी रास्ते और मंज़िलों का और तरीक़ा चलने का दरियाफ़्त करे और सच्चे मन से कुल मालिक की सरन इख़्तियार करके बिरह और प्रेम अंग के साथ अभ्यास उस जुगत का शुरू करे तो आहिस्ते २ रास्ता तै होना शुरू होगा और कुछ २ कैफ़ियत भी अन्तर में नज़र आती जावेगी ॥

२३०--(७) संत सतगुर के सतसंग में जीव को ख़बर पड़ेगी कि क्या २ सामान सफ़र का उसको सग लेना चाहिये और क्या २ फ़ज़ूल असबाब छोड़ देना मुनासिब है यानी कौन २ अङ्ग और ख़वास इसको धारन करने चाहियें और कौन २ बिकार हटाने चाहियें तब रास्ते पर चलना आसानी से बन सकेगा ॥

२३१--(८) जबकि दुनियाँ के सैर तमाशे और जात्रा वग़ैरह को लोग जाते हैं तब अपना कारोबार और घरबार कुछ अर्से के लिये छोड़ देते हैं लेकिन घट की जात्रा के वास्ते ऐसी कार्रवाई की ज़रूरत नहीं है यानी गृहस्थ में रह कर और रोज़गार करते हुए यह काम शुरू कर सकते हैं लेकिन सच्चा शौक़ कुल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों का ज़रूर चाहिये चाहे वह थोड़ा होवे तो वह सतसंग और अभ्यास की मदद से आहिस्ते २ बढ़ सकता है ॥

२३२--(९) बिना सच्चे शौक़ के दुनियाँ में भी कोई सैर और तमाशे के वास्ते सफ़र की तकलीफ़ और ख़र्च गवारा नहीं कर सक्ता फिर परमार्थ में भी बिना सच्चे शौक़ कुल मालिक के दर्शनों के और संत सतगुर की सेवा और सतसंग के कोई घट में रास्ता तै नहीं कर सकता ॥

२३३--(१०) दुनियाँ के सैर तमाशे में सिर्फ़ दृष्टी का भोग है और मन को नई चीज़ें देख कर कुछ आनंद मिलता है लेकिन जो अपने घट में सैर करना शुरू करे तो उसको सिवाय कुदरत की नई नई और अचरजी रचना और खेल नज़र आने के इस क़दर आनंद और रस दिन दिन प्राप्त होता जावेगा कि उसके मुक़ाबले में दुनियाँ के तमाशे

और रस और स्वाद आहिस्ते २ फीके पड़ते जावेंगे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का थोड़ा जलवा देख कर और उनकी दया की परख करके चरनों में प्रीत और प्रतीत जागती जावेगी और वह एक दिन धुरधाम में पहुँचा कर छोड़ेंगे और वह धुरधाम अजर और अमर है और महा चेतन्य और महा आनंद और महा प्रेम का भंडार है कि जहां पहुँच कर जीव भी अमर और अजर हो जाता है और परम आनंद को प्राप्त हो कर जनम मरन और देहियों के दुख सुख से हमेशा को बच जाता है–इसी का नाम सच्ची मुक्ती और पूरा उद्धार है, सो यह भारी दौलत घट में चलने वाले को मुफ़ मिलेगी और सहज में उसका निरवार हो जावेगा ॥

२३४–(११) इस वास्ते यह काम यानी अपने घट में सैर करना हर एक को थोड़ा बहुत करना मुनासिब है इसमें दोनों मतलब बढ़के प्राप्त होवेंगे यानी ऐसी सैर कुदरत की नज़र आवेगी कि जिसका नमूना इस दुनियाँ में नहीं है और बढ़का परमार्थ सहज में बन जावेगा कि जिससे माया के घेर और आवागवन के चक्कर से [कि जिसमें कुल जीव फँसे हुए दुख सुख भोगते हैं] क़तई छुटकारा हो जावेगा ॥

२३५--(१२) जबकि लोग दुनियाँ में ऐसे ऐसे मुश्किल मुक़ामों पर जाना मंज़ूर करते हैं कि जहाँ जान का खतरा भारी है फिर बढ़की सैर ऊँचे से ऊँचे मुक़ामों के वास्ते निहायत आराम और आसानी के साथ घट में चलने की कार्रवाई ख़ुशी और शौक़ के साथ करना चाहिये ख़ास कर जबकि संत सतगुर भेदी उन मुक़ामों के भाग से मिल जावें और अपनी दया और मेहर से रास्ता तै करने में मदद देते जावें ॥

२३६--(१३) दुनियाँ के सैर और तमाशे का फ़ायदा और यादगारी बहुत कम और थोड़े दिन की है और उससे और लोगों को बहुत कम फ़ैज़ और फ़ायदा पहुँचता है लेकिन जो कोई अपने घट में सैर करने का इरादा मज़बूत करके और संत सतगुर की दया लेकर चलना शुरू करे उसको जो ख़ुशी और फ़ायदे हासिल होंगे वह बयान में नहीं आ सकते और जो कुछ कि फ़ैज़ और जीवों को उससे पहुँचेगा वह भी बेअंत है यानी उस एक चलने वाले के सबब से बहुत से आदमी उसी रास्ते पर चलना इख़्तियार करके सच्ची मुक्ती और पूरे आनंद को प्राप्त होंगे और जनमान जनम के दुक्खों से बच जावेंगे फिर यह सिलसिला एक से दूसरे को फ़ैज़ पहुँचने का जारी होकर न मालूम कितने देश और किस क़दर अर्से तक और कितने

जीवों को फ़ायदा पहुँचावेगा कि जिसका शुमार नहीं हो सकता ॥

२३७-(१४) इस वास्ते जो कोई कि सूरमा और हिम्मत वाले जीव हैं और सख़्ती और नरमी और आराम और तकलीफ़ को वास्ते अपने और औरों के उपकार के खुशी से बरदाश्त करने को तैयार हैं उनको ज़रूर इस तरफ़ तवज्जह लाना चाहिये यानी घट का भेद संत सतगुरु से लेकर ज़रूर इस रास्ते पर जवाँमर्दों के मुवाफ़िक़ क़दम रखना चाहिये तो ऐसी हालत उनकी देखकर कुल मालिक राधास्वामी दयाल उन पर ख़ास दया फ़रमावेंगे यानी उनका काम सहज में पूरा करेंगे ॥

२३८-(१५) ऐसे सूरमा और प्रेमी भक्तों की कार्रवाई की शोहरत और महिमा देशों में आपही आप फैलती है और अनेक जीव कुल मालिक की मौज से अपने कल्यान के निमित्त उनकी तरफ़ रुजू करते हैं और फ़ायदा उठाते हैं बल्कि बाद उनके देह और दुनियाँ के छोड़ने के भी जीवों का उपकार उनके सबब से जारी रहता है ॥

---

(१९) प्र ार उन्नी वाँ

तन बीमार का इलाज सब कोई कराते हैं पर मन की बीमारी की ख़बर किसी को नहीं है

उसके मुआलिज संत और साध हैं उनसे मिल कर इलाज कराना चाहिये नहीं तो देह बिगड़ जावेगी यानी नीचे की जोनों में बारम्बार जनम धरना और दुख सुख भोगना पड़ेगा ॥

२३९-(१) जब किसी को तन की बीमारी होती है तब वे हकीम बैद और डाक्टरों से इलाज कराते हैं और जो दवा और ग़िज़ा वे तजवीज़ करते हैं वही खाते पीते हैं और जो परहेज़ वे बताते हैं उसके मुवाफ़िक़ अमल करते हैं यानी जिन चीज़ों और जिन कामों को वे मना करते हैं उनमें नहीं बर्तते है तब सबेर या अबेर जैसी बीमारी हलकी या भारी होवे उनको आराम हो जाता है ॥

२४०-(२) हर बीमारी में चाहे वह हलकी होवे या भारी बीमार को हकीम या बैद या डाक्टर का एतबार करके उसकी तजवीज़ के मुवाफ़िक़ कार-वाई करना पड़ता है तब उसको फ़ायदा मालूम होता है यानी बीमारी आहिस्ते २ घटती जाती है और थोड़े अर्से में तन्दुरुस्त हो जाता है ॥

२४१-(३) संत सतगुर जो तीनों के यानी तन मन और सुरत के भेदी और वाक़िफ़कार और रखवार हैं फ़रमाते हैं कि सब जीवों का मन थोड़ा बहुत बीमार है और उसकी बीमारी का इलाज

करना इसी ज़िन्दगी में ज़रूर है और जो कोई बेपरवाही और ग़फ़लत करेगा उसकी बीमारी दिन २ बढ़ती जावेगी और अख़ीर को यह फल मिलेगा कि उसको चौरासी की ऊँच नीच जोनों में भरम कर हमेशा दुख सुख सहना पड़ेगा ॥

२४२-(४) मन की बीमारी क्या है-दुनियाँ की मान बड़ाई और भोगों की चाह से भरा होना। जिसके मनका ऐसा हाल है कि वारम्वार नई २ चाहें और तरंगें उठाता रहता है और फिर उनके पूरा करने के लिये जतन करता है तो वह दिन २ करमों का भार अपने सिर पर चढ़ाता जाता है क्योंकि इस कार्रवाई में उससे दोनों क़िस्म के करम यानी पाप और पुन्य बनेंगे और फिर उनका फल दुख या सुख आइंदे के जनमों में भोगना पड़ेगा और यह सिलसिला जब तक कि मन की बीमारी यानी अनेक क़िस्म की फ़ज़ूल दुनियावी चाहों का उठाना बंद न होगा बराबर जारी रहेगा ॥

२४३-(५) मन की बीमारी के मुआलिज (वैद) संत सतगुर हैं सो जीवों को मुनासिब है कि उनके सन्मुख यानी उनके सतसंग में जाकर अपना इलाज करावें ॥

२४४-(६) वह इलाज यह है कि संत सतगुर के बचन सुनकर संसार और उसके सामान और भोग

वग़ैरह की तरफ़ से चित्त आहिस्ते २ हटता जावे और फ़ज़ूल चाहें मान बड़ाई और भोगों की न उठावे ॥

२४५--(७) यह हालत मन की उस वक्त बदलनी शुरू होगी जबकि यह जीव बचनों को चित्त देकर सुनेगा और संसार और उसके सामान को नाशमान देखकर सत्त पदार्थ की तरफ़ जो हमेशा एक रस क़ायम रहता है और महा चेतन्य और प्रेम और आनंद का भंडार है रुजू करेगा और उसकी प्राप्ती के वास्ते मन और इन्द्री के घाट से हट कर राधास्वामी मत की जुगत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करके चलना शुरू करेगा ॥

२४६--(८) इस अभ्यास के दुरुस्ती से बनने के वास्ते ज़रूर है कि अभ्यासी संत सतगुर के बचनों की प्रतीत करके बिरह और प्रेम अंग लेकर कार्रवाई शुरू करे क्योंकि जो मन में किसी तरह का संदेह और शक बाक़ी रहा या चरनों में संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के प्रीत न आई तो वह अभ्यास सुरत शब्द मारग का जिसमें मन और सुरत घट में ऊँचे की तरफ़ चढ़ाये जाते हैं नहीं बन पड़ेगा और इस तरह मन की बीमारी भी दूर नहीं होगी ॥

२४७--(९) कुल मालिक राधास्वामी दयाल हैं और संत सतगुर जीव के सच्चे हितकारी हैं सो

जो जीव कि दीनता के साथ उनकी सरन में आवे उस पर वे ज़रूर दया करते हैं यानी उसके हिरदे में अपने चरनों की प्रीत और प्रतीत आहिस्ते २ बसाते जाते हैं और उसी के साथ उसके मन और इंद्रियों की सफ़ाई भी करते जाते हैं॥

२४८–(१०) लेकिन जीवों का ऐसा हाल है कि बजाय अपनी बीमारी के परखने और परहेज़ के साथ उसका इलाज करने के ऐसी कार्रवाई करते हैं कि जिस से बीमारी बढ़ती जावे और फिर आप इस हाल से बेख़बर या यह कि इलाज थोड़ा करते हैं और बदपरहेज़ी ज़ियादा करते हैं कि जिस से बेमालूम बीमारी बढ़ती जाती है॥

२४९–(११) परमार्थी आदमी को जब से अपने मन की बीमारी का इलाज करना शुरू किया है एहतियात रखना चाहिये कि बेज़रूरत और बेमतलब बड़े आदमियों से न मिले और न उनका संग करे क्योंकि उनसे मेल करने में अनेक तरह के ख़याल और चाहें नई और फ़ज़ूल दिल में पैदा होती हैं और उनके सबब से रंज और हसरत और नाशुकरी करता है और यह बात बरख़िलाफ़ भक्तों के क़ायदे के है यानी इसमें मालिक और संत सतगुर राज़ी नहीं होते हैं॥

२५०–(१२) इसी तरह मेले और तमाशे और सैर बाज़ार वग़ैरह में भी परमार्थी शख़्स को शामिल

होना वग़ैर भारी ज़रूरत के नहीं चाहिये क्योंकि वहां भी इस मन की वैसीही हालत होती है जैसा कि बड़े आदमियों से मिलने और उनका संग करने से जिसका ज़िकर ऊपर किया गया ॥

२५१-(१३) संसारी लोगों के संग बैठने और गप शप करने से भी परमार्थी आदमी को परहेज़ करना चाहिये क्योंकि ऐसे संग में झूठ सच्च बोलने और किसी की निंद्या और किसी की अस्तुती करने की आदत पड़ती है और वक्त़ बे फ़ायदा ख़र्च होता है और यह बात परमार्थ में नुक़सान करने वाली है और मन की बीमारी को बढ़ाने वाली है ॥

२५२-(१४) परमार्थी शख़्स को इस बात की भी एहतियात चाहिये कि अकेले बैठ कर मनोराज न करे यानी आइंदे के अपनी मान बड़ाई और भोग बिलास और तरक़्क़ी दुनियाँ और दौलत और हुकूमत और कुटुम्ब परिवार वग़ैरह के ख़यालात उठा कर अपने मन को ख़ुश न करे क्योंकि ऐसी बातों का बार २ ख़याल करने से वह मन के स्वभाव में दाख़िल हो जाते हैं और अभ्यास में उसी क़दर हारिज होते हैं जैसा कि बाहर उन कामों के करने से नुक़सान पैदा होता है ॥

२५३-(१५) जो बातें कि ऊपर लिखी गई हैं वे परमार्थ के हिसाब में बदपरहेज़ी में दाख़िल हैं

उनसे मन की बीमारी बढ़ती है इस वास्ते जीवों को मुनासिब है कि सचौटी के संग इलाज अपनी बीमारी का करावें यानी हित चित से संत सतगुर का संग करें और उनके बचनों को धारन करके अपनी रहनी दुरुस्त करते जावें ॥

२५४-(१६) संत सतगुर का सतसंग करके जीव की समझ और ख़याल बदलते हैं यानी संसार और उसके सामान को तुच्छ और नाशमान देख कर चित्त उससे हटता जाता है और राधास्वामी धाम की महिमा और वहाँ के आनंद और बिलास का हाल सुन कर और उसका निरनय समझ कर मन में शौक़ पहुंचने उस धाम का और करने दर्शन कुल मालिक राधास्वामी दयाल का जागता है और जिस क़दर अभ्यासी रास्ता तै करके आनंद और सरूर पाता जाता है उसी क़दर शौक़ बढ़ता जाता है और सफ़ाई मन की होती जाती है, और जिस क़दर प्रेम मन में भरता जाता है उसी क़दर बीमारी और मलीनता उसकी हटती जाती है और यही कार्रवाई एक दिन प्रेमी अभ्यासी को माया के घेर के पार पहुँचा कर पूरा प्रेम बख़्शेगी और मन तन्दुरुस्त होकर अपने ठिकाने पर जो त्रिकुटी का मुक़ाम है रह जावेगा, और वहाँ से सुरत अकेली सत्तलोक और राधास्वामी धाम की तरफ़ रवाना होगी ॥

२५५-(१७) संसार और संसारी लोग इस कार्रवाई में बहुत विघन डालते हैं सो सच्चे शौक़ीन को चाहिये कि अपने परमार्थ के बनाने में इन मूरख जीवों की सलाह न माने और न उनकी निंद्या अस्तुती सुन कर अपने मन में घबरावे और अपना काम यानी अंतर और बाहर का सतसंग आहिस्ते २ बदस्तूर जारी रक्खे तो उस को चन्द रोज़ में कुछ रस और आनंद अपने अंतर में मिलेगा और फिर उसकी ताक़त दिन २ बढ़ती जावेगी और प्रीत और प्रतीत भी चरनों में ज़ियादा होती जावेगी और अपने मन की सफ़ाई होती हुई नज़र आवेगी कि जिसको देख कर उस को यक़ीन हो जावेगा कि इसी कार्रवाई से एक दिन पूरा काम बन जावेगा ॥

२५६-(१८) मालूम होवे कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर रचना भर में सच्चे हैं और या सुरत जोकि उनकी अंस है सच्ची है-क्योंकि कुल कार्रवाई रचना की और उसका ठहराव इस लोक में सुरत के आसरे, जो घट २ में दयाल देश से उतर कर बैठी है मालूम होता है-पर जिस सुरत ने कि संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करके राधास्वामी धाम में पहुंचने का जतन सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके शुरू किया वही एक दिन सत्त पद

में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगी, और झूँठे यानी माया और काया का संग कि जिसके सबब से हमेशा दुख सुख और जनम मरन भोगना पड़ता है क़ितई छूट जावेगा ॥

२५७--(१९) लेकिन जो कोई कि काया और माया और उसके रचे हुए भोगों और पदार्थों में आशक्त रहेगा उसकी प्रीत दिन २ झूँठे में और भी मन की बीमारी बढ़ती जावेगी और आख़िर को उन के बियोग का दुख सहना पड़ेगा और फिर स्वभाव और बासना अनुसार बारम्बार देह धारन करके उन्हीं भोगों में लिपट कर दुख सुख सहता रहेगा और चौरासी के चक्कर यानी माया के घेर से उसका छुटकारा नहीं होगा ॥

२५८--(२०) इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने जीव के बचाव और कल्यान के लिये इसी ज़िन्दगी में संत सतगुरु और उनके सतसंग से किसी क़दर नाता जोड़कर थोड़ा बहुत अभ्यास उनकी जुगती का शुरू करदें तो उनकी मेहर और दया से रफ़्ते २ उनका कारज बन जावेगा यानी मन की सफ़ाई होकर वह अपने निज पद यानी त्रिकुटी में पहुँच कर मगन हो जावेगा और सुरत वहां से अकेली चलकर अपने निजधाम यानी राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंच कर अमर आनन्द और बिलास को प्राप्त होगी ॥

(२०) प्रकार बी वाँ

जिस किसी से संतों की जुगत यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास कोई वजह करके दुरुस्ती से न बन सके तो उसको चाहिये कि जिस क़दर और जैसा तैसा अभ्यास उससे बन सके उतनाही करता रहे और संत सतगुर और उनके सतसंग से सच्चा और पक्का नाता जोड़े यानी उनमें थोड़ी या बहुत सच्ची और पक्की प्रीत करे तो वे अख़ीर वक़्त पर अपनी दया से उसकी सहायता करेंगे और अपना बल देकर आइंदे उससे करनी जिस क़दर मुनासिब और ज़रूर होगी कराकर उसका पूरा काम बनावेंगे ॥

२५९--(१) जो जीव कि संत सतगुर के सतसंग और सरन में आये हैं और उपदेश सुरत शब्द मारग का ले लिया है पर उनसे अभ्यास जैसा चाहिये दुरुस्ती से नहीं बनता है यानी मन उनका चंचल रहता है और अनेक तरह की संसारी गुनावन उठाता रहता है-

२६०--(२) लेकिन वह जीव सतसंग नेम से करते हैं और संत सतगुर के दर्शन और बचन में उनकी

किसी क़दर लाग है और थोड़ी बहुत सेवा भी तन मन धन की अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ करते रहते हैं–

२६१--(३) और जो सतसंग से दूर रहते हैं तो बानी का रोज़मर्रा थोड़े बहुत शौक़ के साथ पाठ करते रहते हैं और जब २ मौक़ा मिले सतगुर के सन्मुख जाकर कोई दिन सतसंग करते हैं–

२६२--(४) और जो भजन में मन नहीं लगता है तो ध्यान और सुमिरन मन लगा कर करते हैं और जो ध्यान में भी मन अच्छी तरह नहीं लगे, तो सिर्फ़ सुमिरन राधास्वामी नाम का प्यार के साथ करते हैं–

२६३--(५) खुलासा यह कि जो वक़्त उन्हों ने अपने परमार्थ की कार्रवाई के वास्ते मुक़र्रर कर लिया है उसमें कोई न कोई परमार्थी काम जैसा तैसा किये जाते हैं और अपने मन की हालत देख कर अंतर में झुरते शरमाते और पछताते रहते हैं और थोड़ी बहुत चिन्ता अपने उद्धार की निसबत उनके मन में लगी रहती है–

२६४--(६) ऐसे जीवों को मुनासिब है कि अपनी हालत की निरख और परख हमेशा करते रहें और संत सतगुरु और उनके प्रेमी भक्तों और साधुओं से प्रीत का नाता मज़बूत जोड़े और अपने मन में

इस बात का यक़ीन करें कि उनका काम सतगुर दीन दयाल अपनी दया और मेहर से बनावेंगे॥

२६५--(७) और ऐसे जीवों को चाहिये कि संत सतगुर और प्रेमी जन के साथ सच्ची दीनता से बर्ताव करें और जोकि मन उनका अंतरी अभ्यास में कम लगता है तो तन और धन की सेवा अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ शौक़ और प्रीत के साथ ज़ियादा करें॥

२६६--(८) ऐसी कार्रवाई से उनके मन में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी, और उसके साथ मन भी थोड़ा बहुत निर्मल और निश्चल होता जावेगा और अंतर अभ्यास भी किसी क़दर दुरुस्ती से बनने लगेगा॥

२६७--(९) लेकिन इन जीवों को ख़ास कर भरोसा संत सतगुर की दया का अपने मन में मज़बूत रखना चाहिये और जैसे बने तैसे उनकी प्रसन्नता हासिल करने में कोशिश जारी रखनी चाहिये॥

२६८--(१०) इन जीवों की ऐसी हालत मुलाहज़ा करके संत सतगुरु ज़रूर उन पर दया फ़रमावेंगे यानी अख़ीर वक़्त पर उनकी सहायता करेंगे और थोड़ी बहुत प्रेम की दात देकर आइंदा उनसे अंतरी अभ्यास दुरुस्ती से करा कर उनके मन और सुरत को ऊँचे देश में चढ़ावेंगे और रफ़्ते २ एक दिन

निज घर में पहुँचा कर विस्राम देंगे जहाँ हमेशा को महा सुखी हो जावेंगे ॥

२६९--(११) संत सतगुर की दया का वार पार नहीं है जिस जीव पर प्रसन्न हो जावें या जो कोई उनसे थोड़ी भी सच्ची प्रीत करे उसका उद्धार सहज में आप करते हैं और अपनी दया का बल देकर जिस क़दर करनी मुनासिब और ज़रूरी है बेतकलीफ़ आप करा लेते हैं और थोड़ी सी प्रीत भाव पर भारी बख़्शिश अपनी तरफ़ से करते हैं ॥

२७०--(१२) जिस किसी का थोड़ा बहुत नाता या रिश्ता मुहब्बत का संत सतगुर से लग गया वही जीव बड़भागी है क्योंकि वह नाता उसको एक दिन दयाल देश में पहुँचा कर छोडेगा यानी माया के घेर के पार पहुँचा कर जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से उसका सच्चा छुटकारा कर देगा ॥

२७१--(१३) संत सतगुर की महिमा अपार है जिसको उनका दर्शन भाग से मिला गोया उसने सत्त पुरुष का दर्शन पाया चाहे वह इस बात से ख़बरदार है या नहीं लेकिन दर्शन का असर ज़रूर होवेगा यानी उसकी सुरत ऊँचे स्थान पर चढ़ाई जावेगी, चाहे यह काम जल्दी होवे या कुछ देर के साथ मुताबिक़ उस शख़्स के करमों के। जो करम उसके हलके और थोड़े हैं तो वह सतसंग में

शामिल होकर अभ्यास में लग जावेगा और दया और मेहर लेकर जल्दी अपना काम बनवा लेगा लेकिन जो करम उसके भारी और बहुत से हैं तो. दया से उनका जल्द कटना शुरू हो जावेगा यानी एक दो तीन जनम में चाहे जिस जोन में उन करमों का भोग करके सतसंग में आवेगा और शौक़ के साथ बचन सुनकर और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर अभ्यास में लग जावेगा ॥

२७२–(१४) सिवाय परमार्थी नाते के जो कोई संत सतगुर से किसी क़िस्म का नाता या प्रीत थोड़ी या बहुत जोड़ेगा वह भी दया से ख़ाली नहीं रहेगा चाहे वह उनकी महिमा जाने या नहीं यानी अंत समय पर उसकी सुरत की किसी क़दर सम्हाल की जावेगी और सुख स्थान में बासा दिया जावेगा ॥

२७३–(१५) दुनियाँ में कोई बादशाह या महाराजा वक़्त का जिस किसी को भेष बदले हुए जहां कहीं मिला तो चाहे उसने उसको पहिचाना या नहीं पर मुलाक़ात और बात चीत तो उसकी बादशाह से हुई और जो वह किसी बात से खुश हुआ तो तख़्त पर बैठ कर उसको जो चाहे वह इनाम दे दिया, तब उस जीव को ख़बर पड़ी कि मैं किससे मिला और क्या फ़ायदा हासिल हुआ, ऐसेही जो कोई संत सतगुर से मिला वह असल में

सत्त पुरुष से मिला और उन्होंने दया करके सिवाय ज़रूरी सामान दुनियाँ के उसको भक्ती या प्रेम की दात बख़्शी फिर वही बख़्शिश उसके प्रेम और भक्ती यानी अभ्यास को बढ़ाती हुई एक दिन निज घर में पहुँचा कर छोड़ेगी तब ज्यों २ तरक़्क़ी होती जावेगी उसको ख़बर पड़ती जावेगी कि मैं किससे मिला और कैसी भारी दया उन्होंने मुझ पर करी और जब वे दूसरे जनम में मिलेंगे और मेहर से थोड़ी बहुत अपनी पहिचान बख़्शेंगे तब यह सर्व अंग से उनकी सेवा और सतसंग और अभ्यास करेगा और दिन २ अपना काम बनता हुआ देखकर मगन और निःचिन्त हो जावेगा ॥

२७४-(१६) ऐसी महिमा संत सतगुर की समझ कर हर एक जीव को चाहे औरत होवे या मर्द मुनासिब और लाज़िम है कि जैसे बने तैसे थोड़ी या बहुत प्रीत उनके चरनों में करे, और चाहे जिस क़िस्म का नाता मुहब्बत का उनके चरनों में जोड़ लेवे तो आहिस्ते २ एक दिन उनकी मेहर और दया से छुटकारा उसका काल और करम के घेर और मन और माया के जाल से ज़रूर हो जावेगा और अपने निज घर में पहुँच कर परम आनंद और परम शान्ती को प्राप्त होगा ॥

२७५-(१७) संत सतगुर का मिलना और उनकी थोड़ी बहुत पहिचान करना महा कठिन है क्योंकि

वे गुप्त रहते हैं और ज़ाहिर में जीवों की तरह वर्ताव करते हैं इस वास्ते उनके सन्मुख जाना और सतसंग में शामिल होना और उपदेश लेकर अभ्यास दुरुस्ती से करना बड़े भारी और कठिन काम हैं और हर एक की ताक़त नहीं कि इस मारग में क़दम रक्खे क्योंकि पहिले तो अपनाही मन वेईमान है यानी अपने सच्चे मालिक को भूल कर दुनियाँ के भोग और विलास में अटक रहा है और उनकी तरफ़ से हटना नहीं चाहता और न दुनियाँ और उसके सामान और कुटुम्ब परिवार वग़ैरह की बुराई या नाशमानता का हाल सुनना चाहता है बल्कि जो कोई उसको बयान करे तो हरचंद जानता है कि वह सच कहता है तो भी उससे मन में नाराज़ होकर उसकी सूरत देखना और उसके पास बैठना और बचन सुनना मंजूर नहीं करता, दूसरे कुटुम्ब परिवार बिरादरी दोस्त आशना पड़ोसी वग़ैरह जिनके घट २ में वैसाही मन बैठा हुआ है हर तरह से अपना बिरोध सच्चे परमार्थ की कार्रवाई से जाहिर करते हैं यानी संत सतगुर और उनके सतसंग और उनकी भक्ती की चाल ढाल की निस्बत उल्टे सीधे बचन तान और निंद्या के सुना कर अपने रिश्तेदार या दोस्त को उसमें शामिल होने से मना करते हैं और तरह २ के रोक और अटकाव लगाते हैं कि वह सतसंग में शामिल भी हो जावे तो धमकी देकर और हर तरह

से उसको तंग करके परमार्थ से हटा देते हैं, ऐसी सूरत में कोई बिरले परमार्थी जीव सतसंग में शामिल होकर ठहरेंगे और सेवा सतसंग और अभ्यास करके संत सतगुर के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते हुए अपने जीव का कारज बनवा लेवेंगे और बाक़ी जीव निंद्या वग़ैरह के डर से सतसंग में भी नहीं जावेंगे, इस तरह वग़ैर सच्ची लगन के संत सतगुर से मिलना और उनके चरनों में प्रीत का जारी रहना कठिन है ॥

दुनियाँ में लोग चाहे जैसी बदफ़ेली करें कोई उनसे कुछ नहीं कहता क्योंकि सब का मन जो काल और शैतान का गुमाश्ता है, ऐसे कामों से राज़ी होता है पर सच्चे परमार्थ के स्थान पर जाने से उसको निहायत डर अपनी मौत और दुनियाँ और उसके भोग बिलास के छूटने का पैदा होता है और इस सबब से शामिल होना नहीं चाहता। जिन जीवों पर संत सतगुर और धुर की मेहर है उनका मन संसारी जीवों के मन से मुवाफ़िक़त नहीं करता क्योंकि उसमें बजाय दुनियाँ की प्रीत के कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों की प्रीत का बीज बोया हुआ है और वह दिन २ उनकी दया और मेहर से बढ़ने और फलने वाला है ॥

(२१) प्रकार इक्कीस

ज़मीन की चोटी यानी कुतुब और नये २ मुल्कों और जंगलों और पहाड़ों का हाल दरियाफ़्त करने के लिये और भी वास्ते बनाने नई २ कलें और सवारियाँ हवा में और पानी और ज़मीन पर चलने की बहुत कोशिश और मिहनत और तन मन धन का ख़र्च हिम्मत वाले लोग कर रहे हैं, इसके सिवाय हाल आसमानी रचना और इल्म कीमियागरी और कूवत बर्क़ी वग़ैरह की तहक़ीक़ात करके बहुत सी बातें ईजाद कर चुके हैं और करते जाते हैं कि जिनके सबब से अवाम को थोड़ा बहुत फ़ायदा दुनियावी पहुँचना मुमकिन है लेकिन घट के भेद की बहुत कम वाक़िफ़ियत है इस तरफ़ भी यानी अपने अंतर में तवज्जह करके कुछ हाल दरियाफ़्त करना मुनासिब मालूम होता है कि जिससे भारी फ़ायदा जीवों का वास्ते हासिल होने मुक्ती और परम आनंद बाद मरने के मुतसव्वर है ॥

२७६—(१) दुनियाँ में देखने में आता है कि बहुत से इल्म और शौक़ वाले लोग अपनी तेज़ हिम्मत और बुलंद हैासलगी और तलाश और तहक़ीक़ात और मिहनत और मशक्क़त से और तन मन धन ख़र्च करके बहुत से नये २ मुल्कों और सितारौं वग़ैरह के हाल की ख़बर देते हैं और नई २ कलें और नई २ इल्मी बातें ज़ाहिर करते हैं कि जिनसे दुनियाँ के लोगोँ को थोड़ा बहुत आराम और फ़ायदा पहुँचता है या अचरजी बातें और कार्रवाइयाँ सुनने और देखने में आती हैं ॥

२७७—(२) इनमें से बहुत से ऐसे काम हैँ कि उनमें इत्तिफ़ाक़ से जान और माल का नुक़सान भी हो जाता है लेकिन फिर भी हिम्मत वाले लोग उन कामौं के पूरा करने के वास्ते बराबर कोशिश जारी रखते हैं ॥

२७८—(३) फ़ायदा इन कार्रवाइयोँ का इस क़दर है कि दुनियाँ में इल्म और अक़ल की तरक़्क़ी होती है और कलोँ वग़ैरह की ईजाद से लोगोँ को इसी ज़िन्दगी में नफ़ा और आराम पहुँचता है लेकिन बाद मरने के क्या हाल होगा इसकी तहक़ीक़ ख़बर बहुत कम मालूम है ॥

२७९—(४) जो कोई ऐसा हिम्मत वाला है कि वह इस तहक़ीक़ात पर कमर बाँधे कि सच्चा मालिक

कौन और कहां है और जीव को बाद मरने के किस तरह सुख मिल सकता है और दुक्खों से कैसे बचाव हो सकता है और कौन कार्रवाई इसको इस ज़िन्दगी में करना चाहिये कि जिससे अपने निज घर में जहाँ से जीव आया है पहुँचे और माया के देश में नीची ऊंची जोनों में भरम कर दुख न पावे ॥

२८०-(५) ऐसा शख़्स परमार्थी कहलाता है और उसी के हिरदे में सच्चे मालिक का प्रेम जागेगा यानी जिस क़दर भेद और महिमा सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल की उसको मालूम होती जावेगी उसी क़दर उसके दिल में प्यार और शौक़ मिलने का पैदा होगा ॥

२८१-(६) ऐसे खोजी और तहक़ीक़ात करने वाले को सिर्फ़ राधास्वामी मत में पूरा २ हाल और भेद मालिक का और जुगत उसके मिलने की मालूम हो सकती है और जितने मत कि दुनियाँ में जारी हैं उनमें सच्चे खोजी को मुफ़स्सिल हाल और भेद नहीं दरियाफ़्त हो सकता और न उसकी तसल्ली हो सकती है ॥

२८२-(७) जो कि इस दुनियाँ में कोई चीज़ ठहराऊ नहीं है सब का अपने २ वक़्त पर अभाव हो जाता है इस वास्ते यहाँ के इल्म और अक़ल और सुख और आराम वग़ैरह का कुछ एतबार

नहीं हो सकता और न यहाँ के दुक्खों के दूर करने का जतन किसी से पूरा २ बन सकता है फिर चाहे जैसे सुख और दौलत और हुकूमत वग़ैरह किसी को हासिल हो जावें एक दिन उनको ज़रूर छोड़ना पड़ेगा ॥

२८३–(८) इस वास्ते सच्चे खोजी को दरियाफ़्त करना नीचे की लिखी हुई बातों का बहुत ज़रूर है कि जिससे वह यहाँ के नाशमान दुख सुख से बच कर ऐसे देश में बासा पावें कि जो अमर है और जहाँ पहुँच कर यह भी अमर हो जावे और जहाँ इसको परम आनन्द प्राप्त होवे और दुख और कलेश किसी तरह का वहाँ न होवे ॥

२८४–(९) तहक़ीक़ात करने के लायक़ बातें यह हैं:--

(१) कुल मालिक कौन है कहाँ है और कैसा है ?

(२) जीव कौन है और कहाँ से आया और अमर है या क्या ?

(३) यह दुनियाँ कौन देश है ?

(४) जो जीव अमर है तो उसको कौन कार्रवाई वास्ते प्राप्ती अमर सुख और पहुँचने अपने निज धाम के करना चाहिये ताकि दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से पूरा बचाव हो जावे ?

(५) थोड़ा बयान रास्ते के हाल का और कैफ़ियत चलनेवाले की ।

२८५--(१०) ऊपर के पाँच सवालों का मुख़्तसिर जवाब नीचे लिखा जाता है:-

(१) कुल मालिक की मौजूदगी में किसी तरह का शक नहीं है देखो यहाँ की रचना इस सूरज के आधीन है और यह सूरज उससे ऊंचे सूरज का आधीन है और इसी तरह वह सूरज सत्तनाम सत्त-पुरुष के आधीन है और सत्तनाम कुल मालिक राधास्वामी दयाल के आधीन है-यह पद अपार और अनंत और अमर और अजर है और ऊंचे से ऊंचा उसका धाम और देश है और शब्द और प्रेम का अथाह भंडार है और शब्द और प्रेम ही उसका निशान और ज़हूरा है ॥

(२) जीव यानी सुरत सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल की अंस यानी किरन है और उनके चरनों से उतर कर नीचे के देश में आई है और अब पिंड में आँखों के मुक़ाम पर बैठ कर इस दुनियाँ में कार्रवाई कर रही है और मुवा[illegible] अपने भंडार और पिता के अमर और अजर है और शब्द ही उसका भी ज़हूरा है यानी जब तक आदमी बोलता है ज़िन्दा है और जब बोल बन्द होगया मुरदा है यानी सुरत देह को छोड़ गई ॥

(३) यह दुनियाँ निर्मल चेतन्य और मलीन माया का देश है यानी संतों के हिसाब के मुवाफ़िक़ तीसरा दरजा है और दूसरा दरजा इससे ऊंचा

जिसको ब्रह्मांड कहते हैं निर्मल चेतन्य और शुद्ध माया का देश है और उससे भी ऊँचा पहिला दरजा जिसको निर्मल चेतन्य देश कहते हैं और जहाँ माया नहीं है कुल मालिक सत्त पुरुष राधा-स्वामी का धाम है इस मलीन माया देश में दुख सुख और जनम मरन का चक्कर चल रहा है और उसके सबब से जीव कष्ट और कलेश भोगते हैं ॥

(४) संत सतगुर की संगत में पहुँच कर उनसे दीनता और प्रीत के साथ उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग का नित्त अभ्यास करे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन दृढ़ करके प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे और बाहर से चित्त देकर सतसंग और सेवा तन मन धन की जिस क़दर बन सके करता रहे और जो इत्तिफ़ाक़ से सतसंग में ठहरना न होवे तो थोड़ासा पाठ बानी का समझ २ कर शौक़ के साथ करता रहे और जहाँ तक मुमकिन होवे बचनों के मुवाफ़िक़ अपनी रहनी भी दुरुस्त करता जावे ॥

(५) पिंड यानी रचना के तीसरे दरजे में छः चक्र हैं और छठे में असली बैठक सुरत की है और संतों का रास्ता यहीं से यानी नैन नगर में होकर चलता है। ब्रह्मांड यानी दूसरे दरजे में तीन मुक़ाम हैं और उसके ऊपर महासुन्न का मैदान है जोकि

निर्मल चेतन्य देश और ब्रह्म और माया देश के बीच में बतौर हद्द के वाक़ै है और पहिले दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश में चार मुक़ाम हैं और इनके परे कुल मालिक राधास्वामी का निज धाम है ॥

अभ्यासी को रास्ते में शब्द सुनकर और स्वरूप का दर्शन करके अथवा प्रकाश देखकर रस और आनंद पैदा होगा और कुछ २ राधास्वामी दयाल की दया और मेहर की परख होती जावेगी तब उसकी प्रीत और प्रतीत चरनों में आहिस्ते २ बढ़ती जावेगी और संसार और उसके सामान की तरफ़ से उसी क़दर मन हटता जावेगा और फिर जिस क़दर अभ्यास की तरक़्क़ी मेहर और दया से होती जावेगी उसी क़दर आनंद और प्रीत और प्रतीत चरनौं में बढ़ती जावेगी—और ज़ियादा हाल बानी और बचन से मालूम होवेगा ॥

२८६-(११) सच्चा खोजी और दर्दी इस हाल को सुनकर बहुत खुश होगा और दिलोजान से वास्ते पूरा करने अपने मतलब यानी प्राप्ती दर्शन कुल मालिक के कार्रवाई करने को तैयार होगा और संत सतगुर के चरनों में प्रेम और भाव के साथ बर्ताव करेगा और उनके उपदेश के बमूजिब अभ्यास शुरू करके उसमें आहिस्ते २ तरक़्क़ी हासिल करेगा ॥

२८७–(१२) इस तरकीब से उसको संतौं के वचन की अपने अंतर में जांच होती जावेगी और दया और मेहर की परख करके दिन २ प्रीत और प्रतीत और शौक़ चरनौं में कुल मालिक राधास्वामी दयाल के बढ़ता जावेगा और एक दिन धुर धाम में पहुँच कर उसका कारज पूरा बन जावेगा ॥

२८८–(१३) ऐसे प्रेमी और दर्दी सेवक के दर्शन और संग और वचन बिलास से बहुत से जीवौं को फ़ायदा होगा यानी वे भी परमार्थ की कार्रवाई में शामिल होकर अपना भाग जगाकर सच्चे उद्धार के भागी हो जावेंगे और यह सिलसिला एक दूसरे से आइन्दे को बढ़ता जावेगा ॥

२८९–(१४) खोजी सेवक और जिस २ को उसका संग होगा अंतर में वह कुछ रस पाकर और कुल मालिक की दया और कुदरत देखकर सच्चे परमार्थ की महिमा जानेंगे और अपने भागों को सराह कर निहायत मगन होवेंगे और तब उनको ख़बर पड़ेगी कि दुनियावी और परमार्थी तहक़ीक़ात और तलाश और उनकी कार्रवाई में किस क़दर फ़र्क़ है और फिर किस क़दर लोगों पर फ़र्ज़ है कि बजाय बाहर में तहक़ीक़ात और तलाश करने रचना की चीज़ों के अपने घट में तवज्जह और तहक़ीक़ात करने और रास्ता काटने में किस क़दर भारी और अनमोल और हमेशा का रूहानी

फ़ायदा है सिर्फ़ अपने ही वास्ते नहीं बल्कि सब जीवों को जो २ बचन सुनें और मानें और उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करें ॥

(२२) प्रकार बाईं वाँ

दुनियाँ का कोई काम सीखने या करने के वास्ते शौक़ और सिखाने वाला और सीखने वालों का संग दरकार है इसी तरह परमार्थ की कार्रवाई के वास्ते मालिक के चरनों का प्रेम और सतगुर और प्रेमी जन का संग ज़रूर है तब दुरुस्ती के साथ अभ्यास बन पड़ेगा और आहिस्ते २ तरक़्क़ी होती जावेगी ॥

२९०--(१) दुनियाँ में जितने काम और इल्म और हुनर और कारीगरी वग़ैरह हैं बग़ैर शौक़ सीखने वाले के और बग़ैर उपदेश और तालीम सिखाने वाले के नहीं हासिल होते है बल्कि सीखने वालों की जमाअत* में दाख़िल† होने से जलदी सीखने में आते हैं और शौक़ भी तेज़ हो जाता है ॥

२९१--(२) इसी तरह जो कोई सच्चा परमार्थ हासिल किया चाहे वह भी बग़ैर संत सतगुर और उनके सतसंग के और भी बग़ैर शौक़ और प्रेम के

*संगत। †शामिल।

नहीं प्राप्त हो सक्ता है इस वास्ते सच्चे खोजी और दर्दी परमार्थी को पहिले सतगुर और सतसंग का तलाश करना ज़रूर है और जब उनका पता मिल जावे तो वहाँ जाकर दीनता के साथ और कपट छोड़ कर शामिल होना चाहिये ॥

२९२--(३) पहिले दिन संत सतगुरु और सतसंग की महिमा और उनकी गत की अच्छी तरह ख़बर नहीं पड़ेगी लेकिन जो कोई पांच चार या ज़ियादा दिन बराबर सतसंग करेगा और वचन चित्त देकर के सुनेगा और उनका मनन और बिचार भी करेगा तो उसको मालूम होगा कि संत अथवा राधास्वामी मत से ऊँचा और गहरा और धुर पद में पहुँचानेवाला और कोई मत रचना भर में नहीं है और जो भेद रास्ते और मंज़िलों का और जुगत चलने को जैसा कि खोल कर सफ़ाई के साथ राधास्वामी दयाल ने अपनी बानी और वचन में वर्नन किया है उसका ज़िकर पूरा पूरा और साफ़ २ किसी मत की किताबों में पाया नहीं जाता ॥

२९३--(४) इस वास्ते सच्चे खोजी और दर्दी परमार्थी को चाहिये कि भटकना और अटकें छोड़-कर मन और चित्त से राधास्वामी मत का अभ्यास शुरू करदे और होशियारी के साथ सतसंग के वचन सुन कर और समझ कर संसार और संसारी जीवों

में और भी माया और उसके रचे हुए पदार्थों और भोगों में प्रीत कम करे और उनकी प्राप्ती के वास्ते फ़ज़ूल चाह न उठावे ॥

२९४-(५) जब इस तरह सतसंग किया जावेगा तब मन में से भाव और प्यार संसार और उसके भोग बिलासों का घटना शुरू होवेगा और उसी क़दर परमार्थ और उसके भेद की महिमा और बड़ाई चित्त में समाती जावेगी और थोड़ा बहुत अभ्यास भी दुरस्ती से बनता जावेगा और अन्तर में मेहर और दया से थोड़ा २ रस भी मिलता जावेगा और शौक़ और उमंग बढ़ते जावेंगे ॥

२९५--(६) ऐसे सच्चे परमार्थी को दया करके संत सतगुर अपनाते हैं और हर तरह से उसकी रक्षा और सम्हाल करते हुए उसकी समझ बूझ और अभ्यास में मुनासिब तरक़्क़ी देते जाते हैं कि जिससे उसके मन के संसारी बंधन दिन २ ढीले होकर चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जाती है और सतगुर की आज्ञा के अनुसार अपना व्योहार और बर्ताव दुरुस्त करता जाता है ॥

२९६--(७) और सतसंग में प्रेमी जन की हालत और उनका भक्ति अंग में बर्ताव देख कर सच्चे परमार्थी के मन में प्रेम और उमंग जागते हैं और भक्ती की रीति में दिन २ तरक़्क़ी के साथ बर्ताव होता

जाता है और अंतर में आहिस्ते २ मन और सुरत की चढ़ाई भी होती जाती है ॥

२९७--(८) हरचंद मन और माया और काल और करम अनेक तरह के बिघन डालते हैं पर संत सतगुरु की दया और सच्चे परमार्थी की लगन और मिहनत से वे आहिस्ते २ कटते जाते हैं और अभ्यास में थोड़ी बहुत आसानी होती जाती है ॥

२९८--(९) कुटुम्बी और बिरादरी के लोग और दोस्त आश्ना सच्चे सतसंग की निंद्या करते हैं और सच्चे परमार्थी को अनेक तरह के डर दिखा कर और धमका कर हटाना और रोकना चाहते हैं लेकिन राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से उन लोगों की तदबीरें पेश नहीं जाती हैं बल्कि सच्चे परमार्थी को पक्का करती हैं और उस की प्रीत और प्रतीत को तेज़ी और मज़बूती देती हैं ॥

२९९--(१०) अफ़सोस का मुक़ाम है कि दुनियाँ के कामों में कुटुम्बी और बिरादरी के लोग और दोस्त आश्ना सब मदद देते हैं पर सच्चे परमार्थ की कारवाई में बजाय मदद देने के अनेक तरह के बिघन डालते हैं और अदावत करते हैं लेकिन जो कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया शामिल हाल है तो सच्चे परमार्थी का कुछ अकाज नहीं हो सक्ता बल्कि यह सब लोग उसकी नज़र में नादान और ओछे और मालिक की भक्ती

के विरोधी नज़र आते हैं और इस सबब से उसकी प्रीत और बंधन इनके साथ दिन २ घटता जाता है और अंतर की सफ़ाई जल्द होती जाती है ॥

३००--(११) प्रेम या शौक़ बहुत भारी और अनमोल पदार्थ है और जिस घट में यह थोड़ा बहुत प्रघट हुआ वहां सफ़ाई करेगा यानी संसारी चाहों को हटावेगा और मन के विकारी अंगों को दूर करेगा ॥

३०१--(१२) प्रेम की दौलत जिस किसी को थोड़ी बहुत मिली वही बड़भागी है और वही सच्चे मालिक और संत सतगुर की दया लेवेगा ॥

३०२--(१३) जिस घट में मालिक के चरनों का प्रेम थोड़ा बहुत बसा है वही आहिस्ते २ सब का प्यारा हो जावेगा और उसके मन में सब की तरफ़ प्यार और दया भाव पैदा होता जावेगा और अपने अंतर में वह हमेशा मगन रहेगा सिर्फ़ प्रेम के बढ़ने की तड़प लगी रहेगी ॥

३०३--(१४) सच्चे मालिक के भक्त और प्रेमी जन सदा शान्त स्वरूप रहते हैं और जो कुछ कि मालिक देवे और जैसे उनको रक्खे उसी में राज़ी रहते हैं ॥

३०४--(१५) सच्ची दीनता प्रेमियों का ज़ेवर है और क्षमा करना उनका स्वभाव हो जाता है ॥

३०५--(१६) सच्चे प्रेमी कुल मालिक और संत सतगुर की सेवा में तन मन धन बहुत खुशी और

उमंग के साथ लगाते हैं और उनके यही चाह ज़बर रहती है कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की प्रसन्नता हासिल करें ॥

३०६--(१७) प्रेमी भक्त पर इस क़दर दया रहती है कि उसकी सुरत और मन को अंतर अभ्यास में कोई चीज़ रोक या लुभा नहीं सक्ती और न बाहर कोई माया के पदार्थ या भोग उसको अटका सक्ते हैं ॥

३०७--(१८) जिस घट में प्रेम प्रघट है वहीं सुमत और आनंद का बासा है और जहाँ मालिक के चरनों का प्रेम नहीं है वहीं कुमत और कलेश का थाना है ॥

३०८--(१९) यह प्रेम संत सतगुर और प्रेमी जन के संग से हासिल होगा और कोई जतन उसकी प्राप्ती का दुरुस्त नहीं है खुलासा यह कि यह दौलत सतगुर की दात है जिस पर वे दया करें उसी को बख़्शें ॥

३०९--(२०) जो कि बग़ैर प्रेम के कुल मालिक के धाम में पहुँचना मुमकिन नहीं है इस वास्ते हर एक सच्चे परमार्थी को चाहिये कि पहिले संत सतगुर का खोज करे और जब वे भाग से मिल जावें तब उनका सतसंग और सेवा करके उनकी दया और प्रसन्नता हासिल करे तब प्रेम की बख़्शिश होगी और उससे सब कारज सिद्ध होते चले जावेंगे, यानी सब की प्रीत हट कर या घट कर

संत सतगुर और मालिक के चरनों में गहरा प्रेम आ जावेगा और तबही सुरत और मन चढ़ना शुरू करेंगे और आहिस्ते २ एक दिन धुर धाम में पहुंच कर सच्चे मालिक का दर्शन और उसके चरनों में बासा मिलेगा ॥

३१०--(२१) जिस मत में संत सतगुर और कुल मालिक के चरनों में प्रेम की ज़रूरत नही समझी जाती है और न उस प्रेम की प्राप्ती के वास्ते कोई जतन कराया जाता है वह मत थोथा और ख़ाली है उसमें कभी जीव का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा इस वास्ते सच्चे परमार्थी को मुनासिब है कि सिवाय संत अथवा राधास्वामी मत के और किसी मत में शामिल होकर अपना वक़्त बेफ़ायदे न खोवे क्योंकि वहाँ सिवाय ज़ाहरी और दिखावे की कार्रवाई के और कोई जतन वास्ते सफ़ाई और चढ़ाई मन और सुरत के जारी नही है ॥

---

(२३) प्रकार तेईसवाँ

जड़ चेतन्य की गांठ क़ुदरती लगी हुई है और इस संसार में बहुत जगह जीवों ने आप बंधन लगाये हैं सो हर एक को मुनासिब है कि मरने से पेश्तर उस गाँठ के खोलने का जतन

शुरू करदे और जगत के बंधन जहाँ तक मुमकिन हो ढीले करे ताकि अख़ीर वक़्त पर काल की खींचा तानी का दुख और कलेश न सहना पड़े और सहज में छुटकारा होकर सुरत अपने देश की तरफ़ सिधारे ॥

३११--(१) मालूम होवे कि वक़्त उतार सुरत के पहिली गांठ जड़ चेतन्य की त्रिकुटी के मुक़ाम पर लगी जहाँ चेतन्य की माया के साथ मिलौनी हुई और फिर दरजे बदरजे उतार होकर वह मिलौनी बढ़ती गई यहाँ तक कि सुरत का बंधन साथ मन और इंद्री और देह के बहुत मज़बूत हो गया ॥

३१२--(२) वक़्त पैदाइश से जवानी की उमर तक सुरत का फैलाव देह में होता है और अंग २ में उस का बंधन मज़बूत हो जाता है ॥

३१३--(३) इसी अरसे में जीव का बंधन यानी मुहब्बत साथ कुटुम्ब परिवार और बिरादरी और दोस्त आश्नाओं के पैदा हो जाता है और अनेक भोगों और पदार्थों में रस पाकर जीव की आशक्ती भारी हो जाती है ॥

३१४--(४) खुलासा यह कि अनेक जीवों और चीज़ों और भोगों में आशक्ती और बंधन पैदा करके जीव इस संसार में बहुत दुख और कलेश

सहते हैं यानी अलावे भोगने फल अपने करमों के दूसरों के कर्मों का असर भी (जब उनको दुख होता है) झेलना और सहना पड़ता है और ज़ाहिरा कोई जतन ऐसे दुक्खों से बचाव का नहीं मालूम होता है ॥

३१५--(५) जब वक़्त मौत का आता है उस वक़्त काल सुरत और मन को ऊपर की तरफ़ खींचता है और यह दोनों अपने स्वाभाव और आशक्ती के मुवाफ़िक़ अंग २ की तरफ़ और भी बाहर के बंधनों की तरफ़ झोका खाते हैं और खिंचते हैं और इस खैंचा तानी में बहुत दुख और कलेश होता है और झटके और झकोले खाने पड़ते हैं ॥

३१६--(६) इस तकलीफ़ के कम या दूर करने का जो कि आख़ीर वक़्त पर थोड़ी या बहुत सब जीवों को गुप्त या प्रघट सहनी पड़ती है कोई भी जतन या इलाज नहीं करता बल्कि बहुत से लोग उस से बिलकुल बेख़बर हैं और इस क़दर दुनियाँ के कामों में फँसे हुए हैं कि कभी मौत के वक़्त की हालत का ख़याल भी नहीं करते ॥

३१७--(७) कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुर रूप धारन करके फ़रमाया है कि कुल जीवों को चाहे औरत होवें या मर्द मुनासिब और लाज़िम है कि जीते जी यानी इसी ज़िंदगी में अपने प्रघट और गुप्त बंधनों के तोड़ने या घटाने

का जतन शुरू करदें और उस जतन या तरकीब का असर और फ़ायदा राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करने से हासिल होगा ॥

३१८--(८) और वह जतन और तरकीब यह है कि जो घट २ में हर वक़्त शब्द हो रहा है उसको तवज्जह के साथ एकान्त बैठ कर सुने और उसकी आवाज़ को पकड़ कर अपने मन और सुरत को ऊंचे की तरफ़ चढ़ावे और इसी तरह मुक़ामी या गुर स्वरूप का ध्यान नेम से करै तो उसके आसरे मन और सुरत एक मुक़ाम से दूसरे मुक़ाम की तरफ़ चढ़ेंगे और कुछ रस भी पावेंगे ॥

३१९--(९) इस अभ्यास के करने से अंतरी और बाहरी बंधन ढीले होवेंगे बल्कि जिस क़दर रस मिलेगा उसी क़दर सुरत और मन सब तरफ़ से हट कर थोड़ा बहुत अपने घट में चढ़ेंगे ॥

३२०--(१०) जिस क़दर यह बात कि संसार और उसके भोग सब नाशमान हैं और कुटुम्बी और बिरादरी के लोग सब स्वार्थ के यार हैं और इस देश में किसी को सच्चा और पूरा सुख हासिल नहीं है चित्त में समाती जावेगी और तजरबे से उसकी ख़बर पड़ती जावेगी उसी क़दर मन फ़ज़ूल बंधनों को तोड़ देगा और ज़रूरी बंधनों को हलका करके मालिक के दर्शन की प्राप्ती के वास्ते होशियारी और शौक़ के साथ अभ्यास करेगा ॥

३२१--(११) यह सब बातें जो ऊपर लिखी गई हैं संत सतगुर के सतसंग और उनके उपदेश की कमाई से हासिल होंगी इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब है कि पहिले संत सतगुर की तलाश करें और जब मौज से पता मिल जावे तब उनके सतसंग में हाज़िर होकर वचन चेत कर सुनें और विचारें और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर जिस क़दर बन सके अभ्यास शुरू करें ॥

३२२--(१२) इस दुनियाँ में सिवाय संत सतगुर के कोई किसी का सच्चा संगी और हितकारी नहीं है वे जीव की हर दम रक्षा और सहायता कर सक्ते है पर शर्त यह है कि सच्चे मन से उनकी सरन में आवें और जो वे हिदायत करें उसके मुवाफ़िक़ जिस क़दर बन सके कार्रवाई शुरू करदें तब वे अपनी दया का बल देकर जिस क़दर करनी ज़रूर है इससे करालेंगे और अपने चरनों में प्रीत लगवा कर इसके गुप्त और प्रघट बंधन ढीले कर देंगे कि जिसके सबब से मौत के वक़्त इस को तकलीफ़ बहुत कम होगी और मेहर और दया से अपने दर्शन देकर इसकी सुरत को चरनों में लिपटा कर ऊँचे और सुख स्थान में बासा देंगे और जब तक कि यह करनी करके अधिकारी धुर धाम में पहुँचने का न होगा तब तक कई बार नर देह में जनम देकर और दरजे बदरजे करनी करा के ऊँचे से ऊँचे और

ज़ियादा से ज़ियादा सुख स्थान में बासा देते जावेंगे और एक दिन राधास्वामी धाम में पहुँचा कर इस को अमर और परम आनंद बख़्शेंगे और जनम मरन और देहियों के दुख सुख से क़तई छुटकारा कर देंगे ॥

३२३--(१३) ऐसी भारी दया जिसका ज़िकर ऊपर लिखा गया कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने इस समय में जीवों पर फ़रमाई है और किसी मत में यह बात किसी को हासिल नहीं हो सक्ती यानी अपने करमों के मुवाफ़िक़ शुभ और अशुभ फल पाते हैं और चौरासी का चक्कर उनका किसी वक़्त में बन्द और दूर नहीं होता है यह ताक़त सिर्फ़ संतों की है कि जिसको अपनी सरन में लगावें उसी का चक्कर बंद करके दो तीन हद्द चार बार नर देही में जनम देकर और भक्ती और सुरत शब्द मारग का अभ्यास कराके निज घर में पहुँचाते हैं और जड़ चेतन्य की गाँठें जो जा बजा लगी हैं वह सब खोल देते हैं यानी जैसे सुरत चढ़ती जाती है उसी क़दर माया के घेर से निकलती जाती है ॥

३२४--(१४) मालूम होवे कि पिंड में सुरत मन और माया के ख़ोलों में दबी हुई है और वही ख़ोल उसके आवरन यानी परदे हो रहे हैं और वेही खोल सूक्षम और स्थूल वग़ैरह देही कहलाते हैं सो इन परदों यानी देहियों से बग़ैर प्रीत और प्रतीत

सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के और भी बग़ैर अभ्यास सुरत शब्द मारग के उद्धार यानी छुटकारा नहीं हो सक्ता, खुलासा यह कि जिस क़दर सुरत बिरह और प्रेम अंग लेकर और शब्द की धुन या डोरी को पकड़ के ऊपर की तरफ़ घट मे चढ़ेगी उसी क़दर भौसागर यानी माया के घेर से उसकी निकासी होती जावेगी और उसी क़दर मन और माया के बंधन ढीले और दूर होते जावेंगे ॥

३२५--(१५) बग़ैर सुरत की चढ़ाई के घट में ऊँचे देश की तरफ़ परदों का दूर होना और जड़ चेतन्य की गांठों का खुलना मुमकिन नहीं है और जितने मत कि दुनियाँ में जारी हैं उनमें भेद कुल मालिक और उसके धाम का और भी रास्ते और उसके मंज़िलों का और जुगत चलने और चढ़ने का कुछ ज़िकर नहीं है और न कोई अभ्यास इस क़िस्म का जारी है फिर साफ़ ज़ाहिर है कि उन मतों में जीव का सच्चा और पूरा उद्धार मुमकिन नहीं है ॥

३२६--(१६) यह उद्धार निहायत दया और आसानी के साथ सिर्फ़ राधास्वामी मत में होसक्ता है इस वास्ते सब जीवों को जो बारम्बार देह धरने और उसके साथ दुख सुख सहने से बचाव चाहते है मुनासिब है कि राधास्वामी मत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द योग का लेकर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की

सरन दृढ़ करके थोड़ा बहुत अभ्यास शुरू करें तो उनके जीव का गुज़ारा बख़ूबी हो जावेगा ॥

३२७-(१७) और मालूम होवे कि तरीक़ा अभ्यास सुरत शब्द योग का राधास्वामी दयाल ने इस क़दर आसान कर दिया है कि लड़का जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द उसको बआसानी कर सकते हैं-और उसमें प्राणों के खींचने और रोकने और चढ़ाने की कुछ ज़रूरत नहीं है सिर्फ़ चित्त लगाकर शब्द को जो घट २ में हर दम हो रहा है भेद समझ कर सुनना चाहिये फिर जो कुछ कि असर और फ़ायदा इस अभ्यास का है वह अभ्यासी को आप थोड़े दिन में नज़र आवेगा और आइंदे को उसकी प्रीत और प्रतीत चरनों में कुल मालिक और सतगुर के और भी इस अभ्यास में आहिस्ते २ बढ़ती जावेगी और एक दिन दया से पूरा काज बन जावेगा ॥

---

(२४) प्र ार चौबी वाँ

इस लोक में मनुष्य स्वरूप सब से उत्तम है और उसके स्वरूप का ख़ाका बराबर नीचे की जोनों में थोड़ी कमी बेशी के साथ चला गया है तो खोजी को दरियाफ़्त करना चाहिये कि यह मनुष्य स्वरूप कहाँ से आया यानी ऊँचे लोकों

में यह स्वरूप दरजे बदरजे ज़ियादा लतीफ़ और नूरानी और ताक़त वाला ज़रूर होगा और जहाँ कि प्रथम ज़हूर स्वरूप का हुआ उसके परे असली अरूप है सो उस आदि स्वरूप और उसके परे असली अरूप से मिलना चाहिये और वही कुल मालिक का धाम है, और वहीं पहुँच कर सुरत को पूरा २ सुख और अमर आनंद प्राप्त होगा ॥

३२८—(१) इस लोक में जिस क़दर कि रचना जानदारों की है उसमें मनुष्य स्वरूप सब से उत्तम है यानी इस स्वरूप में कुल मालिक का जलवा और प्रकाश ज़ियादा मौजूद और प्रघट है और इसी सबब से मनुष्य की हुकूमत थोड़ी बहुत सब जानदारों पर है बल्कि तत्तों और गुनों से भी (जो कि माया का मसाला है) मुनासिब और ज़रूरी काम वास्ते अपने आराम के लेता है ॥

३२९—(२) इस लोक में मनुष्य स्वरूप का नक़्शा या ख़ाका कुछ कमी और बेशी के साथ कुल जानवरों में पाया जाता है और दरजे बदरजे ताक़त उसकी किसी २ अंग में कम होती गई है और किसी किसी अंग में बाज़े जानवर मनुष्य से बहुत ज़ियादा ताक़त रखते हैं लेकिन यह सब से सेवा लेता है ॥

३३०-(३) अब ग़ौर करना चाहिये कि जैसे मनुष्य स्वरूप का नमूना नीचे के दरजों में पाया जाता है इसी तरह यह भी किसी बिशेष उत्तम और ऊँचे दरजे के स्वरूप का नमूना है और जो स्वरूप कि दरजे बदरजे ऊँचे मुक़ामात में हैं वे मनुष्य स्वरूप से ज़रूर ज़ियादा लतीफ़ और नूरानी और ताक़त में बिशेष होने चाहियें लेकिन इन आँखों से वह रचना नज़र नहीं आसक्ती ॥

३३१-(४) संत सतगुर (जो कुल मालिक के ख़ास मुसाहिब या पुत्र और कुल रचना के भेद से वाक़िफ़ हैं) फ़रमाते हैं कि सब रचना उस धार की करी हुई है जो कुल मालिक के चरनों से आदि में प्रघट हुई और वह धार किसी क़दर फ़ासले पर ठहर कर और मंडल बांध कर रचना करती हुई उतरी है इस तरह कई मंडल एक के नीचे एक रचे गये हैं और हर एक मंडल में पहिली रचना के मुवाफ़िक़ यानी थोड़ी बहुत उसी नमूने पर नीचे रचना होती आई ॥

३३२-(५) जो कि मनुष्य स्वरूप कुल रचना का नमूना है और इस में कुल मंडल और उनकी रचना का नक़्शा छोटे पैमाने के मुवाफ़िक़ मौजूद है तो जो कोई संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ अपने घट में अभ्यास करके मन और सुरत को चढ़ावे वह उस सब रचना को अन्तर दृष्टी से देख सक्ता है ॥

३३३-(६) कुल मालिक अरूप और अपार और अनंत और अकह और सब जगह मौजूद है लेकिन एक देशी भी है और सर्व देशी भी यानी एक देश में बेपरदे और माया से रहित है और बाक़ी देश में माया के ग़िलाफ़ों से ढका हुआ है। जो आदि धार कि उस एक देशी स्वरूप के चरनों से निकली और रचना करती चली आई उसी से किसी क़दर फ़ासले पर माया प्रघट हुई यानी जो आदि ग़िलाफ़ कि चेतन्य के ऊपर किसी क़दर फ़ासले पर शुरू हुआ उस धार ने उसको जुदा करके उससे रचना का कारज लिया और उसी स्थान पर प्रथम मिलौनी चेतन्य की साथ सूक्षम से सूक्षम माया के हुई और वहीं आदि स्वरूप प्रघट हुआ और फिर उसी स्वरूप का नमूना या नक़शा नीचे की रचना में आया और दरजे बदरजे उसमें कमी बेशी होती गई यहाँ तक कि मनुष्य स्वरूप प्रघट हुआ और वह थोड़ा बहुत उसी आदि स्वरूप का नमूना है॥

३३४-(७) जो आदि धार कि प्रघट हुई वही चेतन्य और शब्द की धार है क्योंकि शब्द प्रथम ज़हूरा चेतन्य का है इस तरह कुल रचना शब्द स्वरूप है कहीं प्रघट और कहीं गुप्त। जहां शब्द प्रघट है वे जानदार कहलाते हैं जैसे जब मनुष्य पैदा होता है पहिले शब्द करता है तो ज़िन्दा समझा जाता है और जब बोल यानी शब्द बंद हो जाता है तब मुरदा है॥

३३५–(८) कुल रचना धारों की है और जो सुरत की धार उतर कर पिंड में नेत्र के मुक़ाम पर ठहरी है वही शब्द और नूर और जान की धार है, जो कोई ऊँचे दरजों की सैर करता हुआ कुल मालिक के धाम में पहुँचना चाहे उसको मुनासिब है कि सुरत की धार को पकड़ के उलटा चढ़े यानी जो शब्द की धुन उस धार के साथ होती चली आई है उसको सुनता हुआ चले ॥

३३६–(९) शब्द की बराबर कोई गुरू और अंधेरे में प्रकाश करने वाला और रास्ता दिखाने वाला नहीं है इस वास्ते शब्द का भेद लेकर रास्ता तै करना शुरू करे ॥

३३७–(१०) जितने मुक़ाम कि कुल मालिक के धाम से और जीव की पिंड में बैठक के स्थान तक वाक़े हैं उन हर एक मुक़ाम का शब्द जुदा है सो एक मुक़ाम के शब्द को पकड़ कर दूसरे और दूसरे को पकड़ के तीसरे मुक़ाम पर और आगे इसी तरह चढ़ना और चलना होगा और ऐसे ही एक मुक़ाम के स्वरूप का या सतगुर के स्वरूप का एक मुक़ाम पर ध्यान करके वहाँ पहुँचना और इसी तरह दूसरे तीसरे चौथे और पाँचवें मुक़ाम तक जो आदि स्वरूप का स्थान है ध्यान करके चलना मुमकिन है ॥

३३८–(११) ... असल भेद रास्ते और मुक़ामों का और उनके स्वरूप और शब्दों का सिर्फ़ राधास्वामी

मत में खोल कर कहा है और राधास्वामी संगत से उसका उपदेश मिल सक्ता है यानी जुगत ध्यान और भजन की मालूम हो सक्ती है और किसी मत में जो आज कल जारी हैं यह भेद और ऐसी आसान तरकीब अभ्यास की जो कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुर रूप धारन करके प्रघट की है मुतलक़ नहीं पाई जाती है ॥

३३९--(१२) इस वास्ते जिस किसी को अपने घट में चढ़ कर ऊँचे दरजे के स्वरूपों का दर्शन और भी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचने का सच्चा शौक़ है उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर कोई दिन सतसंग करे और जब उसूल और शरायत इस मत के बख़ूबी समझ में आजावें उस वक्त़ उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करदे ॥

३४०--(१३) आज कल जीवों पर कुल मालिक राधास्वामी दयाल बड़ी भारी दया कर रहे हैं यानी जिसने कि उनके चरनों की सरन लेकर के तीन रोज़ भी सुरत शब्द मारग का अभ्यास किया उसको चौरासी से बचा कर अख़ीर वक्त़ में ऊँचे और सुख स्थान में वासा देते हैं और दो तीन बार नर देही में जनम देकर और अपनी दया से करनी कराके निज धाम में पहुँचाते हैं जहाँ हमेशा का सुख और आनंद प्राप्त होता है ॥

३४१--(१४) और अचरज यह है कि घर बार और रोज़गार किसी का नहीं छुड़वाते गृहस्त में रह कर दो तीन या चार घंटे रोज़मर्रा अभ्यास कराके अपनी तरफ़ से जीवों को सच्ची मुक्ती देते हैं यानी निज धाम में जो कि महा आनंद और महा प्रेम का भंडार है पहुँचा कर जनम मरन और देहियों के दुख सुख से क़ितई छुटकारा कर देते हैं ॥

३४२-(१५) राधास्वामी मत में कोई संजम या वक्त़ अभ्यास का मुक़र्रर नहीं किया गया जब जिसको फ़ुरसत मिले और दिल चाहे और जहाँ मौक़ा होवै वहीं आध घंटे से लगा कर चाहे जितनी देर अभ्यास करे जो विशेष रस आवै तो ज़ियादा देर और मामूली तौर पर आध घंटा अभ्यास करे और दिन भर में इस तौर पर चाहें जितनी दफ़े ध्यान और भजन करे यानी ध्यान गुरु स्वरूप या मुक़ामी स्वरूप का और भजन यानी तवज्जह के साथ सुन्ना आवाज़ का घट में ॥

३४३-(१६) जो कोई अपने घट मे उलटने का जतन इसी ज़िन्दगी में नहीं करेगा और संसार में भोग बिलास वग़ैरह के साथ फँसा रहेगा तो वहीं संसारी बासना उसके मन में भरी रहेगी और इस सबब से वह जनम मरन का दुख सहता रहेगा और मरने के वक्त़ या उसके पीछे अफ़सोस करना और पछताना कुछ फ़ायदा नहीं देगा ॥

३४४-(१७) इस वास्ते सब जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपने जीव के कल्यान के मुनासिब और लाज़िम है कि राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ थोड़ा बहुत अभ्यास ध्यान और भजन का ज़रूर शुरू कर दें तो उनका बचाव चौरासी के चक्कर से हो जावेगा और आइंदे को आहिस्ते २ एक दिन निज धाम में पहुँच कर अमर और परम आनंद को प्राप्त होंगे ॥

---

(२५) प्रकार पच्चीसवाँ

तीन अवस्था में सब जीव बर्त रहे हैं चौथी यानी तुरिया में अपना रूप (जैसा कि पिंड में है) नज़र आवेगा और वहां से ब्रह्म की तीन अवस्था में जो कि ब्रहमान्ड में हैं बर्त कर और दसवें द्वार में सुरत का निज रूप देख कर आगे दयाल देश में चढ़कर अपने कुल मालिक और सच्चे माता पिता सत्त पुर्ष राधास्वामी का दर्शन करना चाहिये वही निज धाम है और वहीं सुरत को सच्चा और पूरा आराम मिलेगा ॥

३४५-(१) मालूम होवे कि संतों ने कुल रचना में तीन दर्जे मुक़र्रर किये हैं पहिला निर्मल चेतन्य देश-

यहाँ माया की मिलौनी नहीं है और यह सत्त पुरुष राधास्वामी धाम यानी संतों का देश कहलाता है; दूसरा निर्मल चेतन्य और शुद्ध माया देश—यहाँ चेतन्य की शुद्ध माया के साथ मिलौनी हुई है यानी इसी दरजे में माया प्रघट हुई और यह ब्रह्म और माया देश कहलाता है और इसी को ब्रह्मांड भी कहते हैं; तीसरा निर्मल चेतन्य और मलीन माया देश—यहां निर्मल चेतन्य की अलावा शुद्ध माया के मलीन माया से मिलौनी हुई इसको जीव और इच्छा देश कहते हैं और पिंड भी इसी का नाम है ॥

३४६--(२) सुरत की धार जो कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंश है उनके निज धाम से उतर कर और रास्ते के मंडलों में जो कि पहिले और दूसरे दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश और ब्रह्म और माया देश में रचे गये गुज़र कर पिंड में आंख के मुक़ाम पर ठहरी है और यहां इसका तीन अवस्था और तीन शरीर और उनके तीन मंडलों में बर्ताव हो रहा है इन अवस्थाओं को जाग्रत सुपन और सुषोपति कहते हैं और यह स्थूल सूक्षम और कारन शरीर से तअल्लुक़ रखते हैं, इन तीनों के परे सुरत की बैठक पिंड में है और उसको चौथी अवस्था यानी तुरिया कहते हैं ॥

३४७--(३) इसी तरह ब्रह्मांड में ब्रह्म के तीन स्वरूप और उनकी तीन अवस्था और तीन मंडल

हैं और इन तीनों के परे सुरत का निज रूप है और उसके पार महासुन्न और उसके परे भँवर गुफा सत्त पुरुष राधास्वामी देश की ड्योढ़ी है ॥

३४८--(४) तीन अवस्थाओं में पिंड की हद्द में सब जीव रोज़मर्रा वर्त रहे हैं लेकिन नींद के बस आते जाते हैं। जो कोई बइख़्तियार अपने यानी सुतंत्र इन अवस्थाओं में बर्तना चाहे उसको चाहिये कि राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करे तब यह ताक़त उसको हासिल होगी ॥

३४९--(५) ज़ाहिर है कि जाग्रत अवस्था में सुरत की बैठक आँखों में है और इसी जगह बैठ कर उसका सम्बंध देह और दुनियाँ के साथ होता है और दुख सुख व्यापता है और मौत के वक़्त और भी सोते वक़्त सुरत की धार आँख के मुक़ाम से अंदर और ऊपर की तरफ़ खिंच जाती है उस वक़्त देह और दुनियाँ की सुध बुध नहीं रहती। अब जो कोई देहियों के बंधन और उनके लाज़मी दुख सुख और फिर जनम मरन के चक्कर से छुटकारा चाहे उसको आँख के मुक़ाम से अन्दर और ऊपर की तरफ़ सरकने का जतन करना चाहिये क्योंकि जब आदमी सो जाता है या जब कि डाक्टर लोग क्लोरोफ़ार्म सुंघाते हैं तब देह और दुनियाँ की ख़बर नहीं रहती और चाहे बदन को जहाँ तहाँ काटें उसका दुख और दर्द नहीं व्यापता ॥

३५०--(६) इस सरकने का जतन मय भेद कुल मालिक के धाम और उसके रास्ते और मंज़िलों के सिर्फ़ राधास्वामी मत में खोल कर और सहज तरीक़े से बर्णन किया है और किसी मत में इसका ज़िकर पूरा २ और साफ़ २ पाया नहीं जाता ॥

३५१--(७) सब जीवों को मुनासिब है कि वास्ते अपनी सुरत या रूह के कल्यान के थोड़ी बहुत तवज्जह और कोशिश करें क्योंकि जो उनका कुल बर्ताव संसार में रहा और उमर भर धन और नामवरी और भोग बिलास के हासिल करने में जतन करते रहे और यही चाह दिल में ज़बर रही तो मौत के वक्त उनकी सुरत पिंड को छोड़ कर यानी तीन अवस्थाओं के मुक़ाम से गुज़र कर चेतन्य आकाश में जोकि सहसदल कँवल के नीचे है पहुंचेगी लेकिन बसबब हायल होने ज़बर बासना दुनियाँ और उसके भोग और बिलास के फिर अपने करमों के मुवाफ़िक़ कोई न कोई देह धारन करेगी यानी फिर जनमेगी और वही कार्रवाई जैसी कि पहिले जन्म में करी फिर करनी पड़ेगी और आख़िर को माल और असबाब और कुटुम्ब परिवार और घर-बार और अपनी देह को छोड़ना पड़ेगा यह चक्कर जनम मरन का जब तक कि सुरत अपने सच्चे मालिक जिसकी यह अंस है और उसके निज धाम

और रास्ते वग़ैरह का भेद संत सतगुर या साधगुरू से लेकर उस तरफ़ को उलटना शुरू नहीं करेगी तब तक नहीं मिटैगा ॥

३५२--(८) सुरत का रुख़ कल्यान यानी उद्धार देहियों और माया के घेर से बग़ैर दया संत सतगुर या साधगुरू के नहीं हो सक्ता इस वास्ते जो कोई अपना निर्वार चाहे उसको मुनासिब है कि पहिले संत सतगुर और उनके सतसंग का खोज करे, और पहिली और साधारन पहिचान उनकी यही है कि वे भेद कुल मालिक के धाम और उसके रास्ते और मंजिलों का देकर सुरत शब्द मारग का उपदेश करेंगे यानी यह समझौती देंगे कि शब्द की धुन को जो घट २ में हर दम जारी है सुन कर अपनी सुरत को ऊँचे की तरफ़ चढ़ाना चाहिये और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का इष्ट और निशाना बांधकर उनके धाम में पहुँचने का इरादा मज़बूत और पक्का करना चाहिये ॥

३५३--(९) जब सुरत इस तरह संत सतगुर से उपदेश लेकर अपने अंतर में अभ्यास शुरू करेगी तो राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया से जिस क़दर सिमटाव और चढ़ाई होती जावेगी उसी क़दर उसकी हालत बदलती जावेगी यानी मालिक की दया और कुदरत और उसका जलवा घट में देख कर प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ेगी और

दुनियाँ और उसके भोगों से उसी क़दर चित्त हटता जावेगा और उतनाही दुख सुख संसार और देह का कम ब्यापेगा और यही अभ्यास आहिस्ते २ बढ़ता हुआ एक दिन सुरत को उसके निज घर में यानी सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचा कर जनम मरन के दुख और कलेश से क़ितई छुड़ा देगा और परम आनंद हमेशा का प्राप्त होगा ॥

३५४--(१०) रास्ते में सुरत को ब्रह्मांड यानी दूसरे दरजे रचना में गुज़र कर चलना होगा और वहाँ इसको तीनों अवस्था ब्रह्म की ख़बर पड़ेगी और उनके परे अपना रूप दरसेगा और फिर वहां से संत सतगुर की मदद लेकर सत्तलोक में पहुँच कर सत्त पुरुष का दर्शन पावेगी और फिर सत्त पुरुष की दया से आगे चढ़ कर राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुँचेगी ॥

३५५-(११) यह काम जल्दी का नहीं है यानी एक जनम में पूरा नहीं बन सक्ता लेकिन जो कोई शौक़ के साथ संत सतगुर और उनके सतसंग की सरन लेगा और कपट छोड़ कर बिरह और प्रेम अंग लेकर अंतर और बाहर सतसंग यानी अभ्यास करेगा तो उसको दो तीन हद्द चार जनम में संत सतगुर निज धाम में पहुँचा देंगे और जब तक धुर धाम में नहीं पहुँचेगा नर देही में जनम लेकर और जहां

से कि अभ्यास पिछले जनम में छोड़ा है दूसरे जनम में शुरू करके रास्ता तै करता जावेगा इस तरह हर दूसरा जनम पहिले जनम से बिहतर और बढ़कर होगा और हर जनम में संत सतगुर और सतसंग मिलैगा और प्रेम बढ़ता जावेगा ॥

(२६) प्रकार तीसवाँ

हर एक शख़्स सुख हासिल करने और दुख दूर करने के लिये कोशिश और जतन करता है लेकिन इस दुनियाँ में पूरा २ सुख हासिल नहीं हो सक्ता, खोजी दर्दी को दरियाफ़्त करना चाहिये कि ऐसा मुकाम भी कोई है कि जहाँ अमर सुख प्राप्त हो और कष्ट और कलेश बिलकुल न हो इसका पता सिर्फ़ राधास्वामी मत में मिल सक्ता है और सुरत शब्द मारग की कमाई और राधास्वामी दयाल की सरन लेने से वह मुक़ाम सहज में प्राप्त हो सक्ता है ॥

३५६--(१) इस दुनियाँ मे सुख बहुत कम और दुख और कलेश बहुत ज़ियादा जीवों को व्यापता है और सुख का असर थोड़े दिन रहता है और बाज़े दुक्खों का असर उमर भर सहना और भोगना पड़ता है ॥

३५७--(२) इस तरह सब जीव दुनियाँ में थोड़े बहुत दुखी रहते हैं और अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ जतन भी उन दुक्खों के दूर करने का करते हैं फिर भी उनका चक्कर वक़्त २ पर जारी रहता है और बाज़े दुख तो बिलकुल असाध यानी लाइलाज हैं और जीव लाचार होकर उनको सहते हैं ॥

३५८--(३) बिचारवान आदमी जो इस दुनियाँ के हाल को ग़ौर की आँख से देखते है और पिछले ज़माने के लोगों का हाल तवारीख़ वग़ैरह से दरियाफ़्त करते है तो उनको बेशुमार दरजे रचना में देख कर यह ख़याल पैदा होगा कि इस रचना में एक से एक मुक़ाम ऊँचा और बढ़ का जहाँ सुख ज़ियादा और दुख कम है होना चाहिये और कोई मुक़ाम ऐसा भी ज़रूर होगा कि जहाँ महा सुख और महा आनन्द प्राप्त हो सक्ता है और कष्ट कलेश और जनम और मरन नहीं है फिर ऐसे मुकाम के प्राप्ती की चाह सब को उठाना चाहिये और जो जतन और तदबीर मुनासिब होवे वह उसकी प्राप्ती के वास्ते ज़रूर करना चाहिये ॥

३५९--(४) लेकिन पहिले यह दरियाफ़्त होना चाहिये कि वह एक से एक बढ़ के सुखदाई मुक़ाम और उनके परे पूरन सुख और आनंद का स्थान कहाँ है और उसका रास्ता कहाँ होकर गया है और कौन सवारी पर चल कर वह रास्ता तै किया

जावेगा और क्या हालत और कैफियत चलने वाले पर रास्ते में गुजरेगी और किस क़िसम का बर्ताव रास्ता चलने वाले को इस दुनियाँ में और अपने संगियों के साथ और भी उस मुकाम की तरफ़ चलने वालों और रास्ते का भेद और जुगत चलने की बताने वाले के साथ बर्तना चाहिये ॥

३६०--(५) दुनियाँ के संगी ससारी कहलाते है उनका संग हर एक के स्वार्थ यानी मतलब के मुवाफ़िक़ जारी रहता है और जब कुछ मतलब नहीं निकलता या नहीं रहता तब उनकी मुहब्बत रूखी फीकी और हलकी हो जाती है इस वास्ते इन लोगों को थोड़े दिन का हद्द उमर भर का संगी कहा जा सक्ता है और भारी तकलीफ़ के वक़्त वे कुछ मदद नहीं दे सक्ते और देह छोड़ने के बाद कोई किसी का संग नहीं दे सक्ता ॥

३६१--(६) महा सुख और महा आनंद के स्थान का भेद और रास्ता बताने वाले और चलने की जुगत समझाने वाले को संत सतगुर कहते हैं वे जीव के सच्चे हितकारी हैं और दुख और सुख के समय और हर हालत में उसके मददगार रहते हैं और यह दया की कारंवाई सिर्फ़ इसी ज़िंदगी में नहीं बल्कि बाद मरने के और भी दूसरे जनमों में जब तक कि उसको धुर मुक़ाम तक जो महा सुख का भंडार है न पहुँचावें जारी रहनी है और उसी सुख

स्थान की तरफ़ चलने वालों को प्रेमी और भक्त जन कहते हैं इनकी प्रीति और मित्रता भी क़ाबिल एतबार और भरोसे के है और जो कि यह सब एक ही स्थान के बासा चाहने वाले हैं इस वास्ते इनका संग भी धुरधाम तक संत सतगुर के साथ निभ सक्ता है ॥

३६२--(७) वास्ते दरियाफ़्त करने उन हालात के जिनका ज़िकर दफ़ा ३५९ नम्बर ४ में हुआ है संत सतगुर के सतसंग में जाना चाहिये वेही पूरे भेदी हैं और चलने की जुगत बता सक्ते हैं और उन्हीं की बानी और बचन में यह भेद साफ़ २ वर्णन किया है, उनके मत का नाम संत अथवा राधास्वामी मत है ॥

३६३--(८) और जितने मत दुनियाँ में बिल्फ़ेल जारी हैं उनमें भेद और जुगत साफ़ २ नहीं कही है बल्कि उस ऊँचे से ऊँचे धुर स्थान की उनके आचारजों को ख़बर भी नहीं हुई फिर उनकी बानी और बचन में उस मुक़ाम का ज़िकर और भेद कैसे मिल सक्ता है और बग़ैर उस धुर स्थान में पहुँचने के सच्चा और पूरा छुटकारा जीव का कष्ट और कलेश और जनम मरन के दुख से मुमकिन नहीं इस वास्ते जब तक कि कोई राधास्वामी मत में शामिल होकर और कुल मालिक सत्त पुरुष राधा-स्वामी दयाल की सरन लेकर अभ्यास सुरत शब्द

मारग का नहीं करेगा उसका सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा ॥

३६४--(९) संत सतगुर और उनके सतसंग की महिमा बहुत भारी है जो जीव कि संसार के हालात देख कर और उससे किसी कदर दुखी होकर उनके सतसंग में कपट छोड़ कर शामिल होगा और उनके चरनो में थोड़ी बहुत प्रीत और प्रतीत करेगा तो वे अपनी दया से कुल स्थानों की जो रास्ते में पड़ते है सैर कराते हुए धुर धाम में पहुँचा देंगे यानी दुख सुख की मिलौनी वाले स्थानों से अलहदा करके परम और अमर आनंद के स्थान में बासा देंगे ॥

३६५--(१०) इस वास्ते उन जीवों को जो कि सच्चे चाहने वाले निज धाम के हैं मुनासिब और लाज़िम है कि संत सतगुर के सतसंग में जाकर होशियारी के साथ वचन सुनें और विचारें और उनके चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत करें क्योंकि वे जीव के सच्चे हितकारी और हमेशा के संगी हैं, तब उनकी दया से आहिस्ते २ उनका काम बनता जावेगा ॥

३६६--(११) जो जीव कि ऐसा नहीं करेंगे और अपनी उमर संसार के भोग बिलास और संसारियों के संग में बसर करेंगे तो वे चौरासी जोन में यानी माया के घेर में भरम कर दुख सुख भोगते रहेंगे, और सच्चे मालिक का धाम उनको कभी नहीं प्राप्त होगा क्योंकि उनके मन में बासना और चाह संसार

के भोग व बिलास की ज़बर रहेगी और उमर भर इसी किसम की कार्रवाई के सबब से वे स्वभाविक दुनियाँ और दुनियाँदारों की तरफ़ झोका खाते रहेंगे और इस सबब से बारम्बार देह धर कर दुनियावी कार्रवाई करते रहेंगे ॥

३६७--(१२) संत सतगुर और उनके सतसंग की पहिले दरजे की पहिचान यह है कि वे सच्चे और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल का पता और भेद समझा कर उनके चरनों का इष्ट और निशाना बँधावेंगे और यह बात जतावेंगे कि कुल मालिक का धाम ऊँचे से ऊँचा है और वह और उसका रास्ता घट में मौजूद है और वहीं से सुरत उतर कर पिंड में नेत्र के स्थान पर यानी तिल में ठहर कर देह और दुनियाँ का कारज कर रही है सो इसी स्थान से उस को शब्द की धुन सुनते हुए उलटाना चाहिये और जिस धार पर कि सुरत उतरी है वही चेतन्य और नूर और जान और शब्द की धार है सो इसी धार पर सवार होकर रास्ता तै किया जावेगा और सुरत का निज घर कुल मालिक का धाम है क्योंकि यह उसी की यानी कुल मालिक की अंस है जैसे सूरज और उसकी किरन और वही निज धाम महा सुख और महा प्रेम का भंडार है और जो कि वहाँ माया नहीं है इस वास्ते वहाँ कष्ट और कलेश और जनम मरन भी नहीं है क्योंकि

उस धाम में सुरत चेतन्य की देह भी चेतन्य यानी रूहानी हो जाती है और इस वास्ते जब तक कि वह माया के घेर को ते करके उसके पार निर्मल चेतन्य देश में न पहुँचेगी तब तक माया कृत देहियों के साथ दुख सुख और जनम मरन का कलेश भोगती रहेगी ॥

३६८–(१३) संत सतगुर और सब इष्टों का जो अनेक मत वालों ने मुकर्रर किये हैं और उन सब का स्थान माया के घेर में है खंडन करेंगे और इसी तरह पुरानी चालें और जुक्तियों का भी जो पिछले आचार्जों ने पुराने वक्तों में जारी करीं निषेध करेंगे क्योंकि वे धुर मुकाम तक पहुँचाने वाली नहीं हैं बल्कि थोड़ी सफ़ाई करने वाली या थोड़ी दूर तक रास्ता चलाने वाली है और उनकी कार्रवाई में अभ्यासी को कष्ट और विघन बहुत से सताते हैं और कुछ मतलब और फ़ायदा सुरत और मन की चढ़ाई का उन मे नहीं पाया जाता है बल्कि अभ्यासी के मन में अहंकार और मान पैदा करती है और उनका अभ्यास भी किसी से पूरा २ नहीं बन पड़ता है ॥

३६९–(१४) सच्चे खोजी और दर्दी परमार्थी को चाहिये कि संत सतगुर के बचन को खूब होशियारी के साथ सुने और समझे और विचार करके उनकी महिमा को तोल करे तब उसको उनके सतसंग से

फ़ायदा होगा और उनके खंडन मंडन के बचनों को सुन कर घबरा कर उचट न जावे यानी संग न छोड़े बल्कि जो बात अच्छी तरह समझ में न आवे उसको फिर पूछे और उसका निरनय करावे तब उसके संशय और भरम दूर हो जावेंगे ॥

३७०-(१५) दूसरे दरजे की पहिचान संत सतगुर और उनके सतसंग की यह है कि सच्चा परमार्थी उपदेश लेकर शौक़ के साथ कोई दिन भजन और ध्यान करे यानी अंतर में स्वरूप का ध्यान और शब्द का सरवन करे तब उसको कुछ रस मिलैगा और संत सतगुर की दया अंतर मे नज़र आवेगी और उसके मन में प्रीत और प्रतीत चरनों की पैदा होगी और आइन्दा आहिस्ते २ बढ़ती जावेगी यानी जिस क़दर उसके मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई होती जावेगी उसी क़दर उसको महिमा और बड़ाई राधास्वामी मत और संत सतगुर और कुल मालिक की समझ में आवेगी और उसके साथ रस और आनंद और निश्चय शब्द मारग का भी बढ़ता जावेगा ॥

३७१--(१६) जब इस तौर से अभ्यास करने से हालत परमार्थी की बदलेगी यानी उसके मन में प्रेम कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों का जागेगा तब दुनियाँ और उसके भोग और पदार्थ उसकी नज़र में ओछे नज़र आवेंगे

और उनमें प्रीत और भाव कम होता जावेगा। यही सच्ची पहिचान संत सतगुर की है कि ज़िनके सतसंग के प्रताप से संसार से सहज बैराग और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में सहज अनुराग पैदा होकर दिन २ बढ़ता जावे, यही बैराग और अनुराग एक दिन सच्चे प्रेमी को धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगा ॥

३७२--(१७) इससे ज़ियादा जो पहिचान कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर और उनके उपदेश सुरत शब्द मारग की है वह ख़ास दया से आवेगी यानी जिस क़दर सच्चा परमार्थी बिरह और प्रेम अंग लेकर सतसंग और अभ्यास करेगा उसी क़दर उस पर अंतर और बाहर दया होती जावेगी और जैसे उसको इस मेहर की परख बख़्शते जावेंगे उसी क़दर उसकी आँख खुलती जावेगी और उनकी गत मत की जो अगम और अपार है थोड़ी बहुत ख़बर पड़ती जावेगी और उसके साथही प्रेमी की प्रीत और प्रतीत भी गहरी होती जावेगी और इसी ज़िंदगी में अपनी मुक्ती और उद्धार होता हुआ देख लेगा और महा सुख के स्थान की तरफ़ को अपनी चाल बढ़ती हुई और रास्ता कटता हुआ उसको नज़र पड़ेगा ॥

---

(२७) ार त्ताई वाँ

इस दुनियाँ में जिस क़दर कार्रवाई है वह शौक़ या प्रीत के सबब से जारी है यानी जिस की जहाँ प्रीत है या जिस बात का जिसका शौक़ है वह वहीं अपना तन मन धन लगाता है लेकिन इस दुनियाँ के ल पदार्थ और भी मनुष्य और जानवर सब नाशमान हैं और उन की हालत भी हमेशा बदलती रहती है इस सबब से हालत बदलने पर और अभाव या नाश होने पर ज़रूर झटका और झकोला प्रीत करने वाले और भी उसको जिससे प्रीत करी है लगता है यानी दोनों दुख सुख भोगते हैं और जुदा होने पर फिर मिलने का भरोसा नहीं है इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि साधारन प्रीत संसार में रक्खो और मुख्य प्रीत कुल मालिक के चरनों में लाओ कि जो हमेशा एक रस क़ायम रहता है और महा सुख और महा आनंद और महा प्रेम और महा चेतन्य भंडार है और हरदम जीव के संग है॥

३७३-(१) ज़ाहिर है कि कुल जीव और जानवर जिस तरफ़ जिसका शौक़ या मुहब्बत है उसी तरफ़ अपनी तवज्जह लगाते हैं और जहाँ जैसी ज़रूरत होवे उसके मुवाफ़िक़ तन मन धन भी ख़र्च करते हैं लेकिन जहाँ जिसका शौक़ या प्रीत नहीं है वहाँ मुतलक़ तवज्जह नहीं करते और न कुछ ख़र्च करते हैं॥

३७४-(२) इसी तरह जिन २ चीज़ों और पदार्थों में जिस को शौक़ या प्यार या ज़रूरत है उनको उसी क़दर वह चाहता है और हिफ़ाज़त और एहतियात उनकी करता है और जब उनमें से किसी चीज़ या पदार्थ का नुक़सान या हरज हो जाता है तब दुखी होता है॥

३७५-(३) जीवों में भी जहाँ जिसकी प्रीत है जब २ किसी को कुछ तकलीफ या कलेश होता है तब प्रीत करने वाले को भी दुख होता है और बिजोग की हालत में निहायत रंज और कष्ट सहना पड़ता है और फिर मिलने की कोई सूरत मालूम नहीं होती॥

३७६-(४) इस तरह कुल जीव अपनी २ प्रीत और बंधन के सबब से हमेशा दुख सुख सहते रहते हैं क्योंकि जिन जीवों या पदार्थों में उनकी आशक्ती है वे हमेशा एक रस क़ायम नहीं रह सक्ते, उनकी हालत वक़्त २ पर बदलती रहती है और एक दिन उनका नाश या अभाव ज़रूर होगा॥

३७७-(५) और मालूम होवे कि जिस क़दर जिस का बंधन या प्यार जिसमें है उसी क़दर उसको दुख सुख व्यापता है और बाज़ी २ तकलीफ़ और दुख के वक़्त में कोई किसी की सच्ची मदद नहीं कर सक्ता यानी अपने प्रीतम के दुख या तकलीफ़ को कम या दूर नहीं कर सक्ता ॥

३७८--(६) इस वास्ते संत सतगुर फ़रमाते हैं कि सब जीवों को चाहिये कि मुख्य प्रीत अपनी कुल मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में लावें और जगत में वाजबी तौर पर यानी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ प्रीत करें और अपने मन में समझते रहें कि संसारी प्रीत थोड़े दिन की है चाहे कोई सबब करके दोनों की ज़िंदगी में घट जावे या जाती रहे नहीं तो मौत के वक़्त ज़रूर उसका बर्ताव बन्द हो जावेगा और निहायत दरजे का दुख और कलेश जुदाई का सहना पड़ेगा ॥

३७९-(७) बिचारवान और समझदार मनुष्य को चाहिये कि अपना मन ऐसे में लगावे कि जिससे दिन २ सुख और आनंद बिशेष मिले और जिससे कभी बिछोहा न होवे और ऐसे हमेशा एक रस क़ायम रहने वाले संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल हैं कि जो घट २ में मौजूद हैं और हर एक जीव के दम २ के संगी हैं, वे निज स्वरूप से हमेशा क़ायम रहते हैं और महा आनंद और महा प्रेम के भंडार हैं ॥

३८०-(८) हर चंद संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का देश ऊँचे से ऊँचा है और रास्ता उसका घट में जारी है पर जो कोई उनके चरनों में सच्ची प्रीत लावे उसको इसी मुक़ाम पर यानी जहाँ जीव की पिंड में बैठक है परचा दे सक्ते हैं यानी उसपर शब्द और प्रकाश के वसीले से अपनी दया हर वक़्त और हर जगह ज़ाहिर कर सक्ते हैं ॥

३८१-(९) इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने जीव के कल्यान और फ़ायदे के वास्ते संत सतगुर का खोज करके उनसे ज़रूर मिलें और कोई दिन उनका सतसंग करके भेद कुल मालिक और उसके धाम का और रास्ते और उसकी मंजिलों का और तरीक़ा चलने का दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू कर दें और चरनो में दिन २ प्रीत और प्रतीत बढ़ाते जावें तो इसी ज़िन्दगी में उनको सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल की प्रीत का थोड़ा बहुत फ़ायदा यानी आनन्द हासिल होता हुआ मालूम पड़ेगा और फिर वह आनंद आहिस्ते २ दिन २ बढ़ता जावेगा और उसी क़दर दुनियाँ के शौक़ और मुहब्बतें उसकी नाशमानता और तुच्छ होना देख कर घटती जावेंगी और फिर जो दुख सुख कि उनके सबब से वक़्त २ पर ब्यापता है उस मे भी बहुत फ़र्क़ हो जावेगा यानी मालिक की

प्रीत के आनंद के बल से उस दुख सुख का असर बहुत कम होवेगा और रफ़्ते २ सब मुहब्बतें दुनियाँ की एक दिन ढीली हो जावेंगी और राधास्वामी दयाल के चरनों का प्यार ज़ियादा बढता जावेगा कि वह एक दिन धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगा यानी अमर, और परम आनंद को प्राप्त कर देगा कि जहाँ जनम मरन और कष्ट और कलेश किसी क़िसम का बिलकुल नहीं है ॥

३८२–(१०) यह भेद निज घर और उसके रास्ते का वही है जो कि कुल मालिक के चरनों से सुरत के उतार का है यानी जैसे कि वक्त़ उतार के सुरत किसी २ मुक़ाम पर ठहरती और रचना करती हुई आई है उसी रास्ते से और उसी धार पर सवार होकर घर की तरफ़ लौट सक्ती है और वह धार चेतन्य और नूर और शब्द की धार है यानी शब्द को सुनती हुई और प्रकाश को देखती हुई सुरत रास्ता तै करके अपने निज धाम में जा सक्ती है सिवाय शब्द मारग के और कोई तरीक़ा कुल मालिक के धाम में चढ़ कर और चल कर पहुँचने का नहीं है ॥

३८३--(११) जो जीव संत सतगुर का सतसंग कर के और उनसे उपदेश लेकर यह कार्रवाई करेंगे उनकी संसारी मुहब्बतें आहिस्ते २ कम होकर राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी और मुख्य प्रीत आजावेगी लेकिन जो कोई संसार और उसके सामान

और कुटुम्ब परिवार की प्रीत में अटके रहेंगे और संत सतगुर और कुल मालिक का इस ज़िन्दगी में खोज नहीं करेंगे वह बारम्बार देह धारन करके दुख सुख भोगते रहेंगे और और जनम मरन का चक्कर उनका कभी नहीं छूटेगा और झूँठे और नाशमान शौक़ और प्रीत मे बंधे रहेंगे और सच्चे मालिक और संत सतगुर का भाव और प्यार उनके मन में कभी नहीं आवेगा और नर देही जो कि मुशकिल से हाथ आई है और जिस में वे मालिक से मिलने का जतन सहज कर सक्के हैं मुफ़्त बरबाद जावेगी ॥

---

(२८) प्र ार ट्ठाई ँ

इस दुनियाँ में दो पदार्थ हैं--चेतन्य और जड़, चेतन्य कुल रचना की कार्रवाई कर रहा है और मनुष्य स्वरूप में कई परदे यानी देहियों के अंदर गुप्त है और इन देहियों का संग करके दुख सुख और जनम मरन भोगता है सो जब तक उलट कर अपने भंडार में नहीं पहुँचेगा सुखी नहीं होगा--राधास्वामी मत का मतलब यही है कि इस बुंद और अंस रूप चेतन्य को उसके सिंध में पहुँचा कर परम आनंद को प्राप्त कराना ॥

३८४–(१) इस दुनियाँ में दो पदार्थ नज़र आते हैं एक चेतन्य दूसरा जड़ चेतन्य के वसीले से कुल कार्रवाई रचना की हो रही है यानी वह कुल का प्रेरक है और मनुष्य स्वरूप में तीन परदों के अंदर बैठ कर अपनी धार के वसीले से तीनों परदे यानी देहियों को चेतन्य कर रहा है और हर एक देही और उसके औज़ारों से उसके तअल्लुक़ का काम ले रहा है ॥

३८५–(२) जानवरों में मुआफ़िक़ उनके दरजों के यह चेतन्य जियादा गुप्त है यानी ज़ियादा मोटे परदों के अंदर बैठ कर कार्रवाई कर रहा है और जड पदार्थों में बिल्कुल गुप्त है और वहाँ औज़ार भी नहीं है ॥

३८६–(३) यह चेतन्य आनंद और प्रेम और ज्ञान स्वरूप है और यही सत्त है क्योंकि इसके आसरे हर एक देही का ठहराव और वर्ताव इस लोक में जारी है और इसके बिजोग में देह स्वरूप का अभाव हो जाता है ॥

३८७–(४) यही चेतन्य देहियों में आशक्त होकर और जड़ पदार्थों में रस और आनंद की प्राप्ती का भरम करके दुख सुख इस संसार में भोग रहा है असल में वह सुख और आनंद इसी चेतन्य में मौजूद है ॥

३८८—(५) जीव अपने चेतन्य स्वरूप के हाल से बेख़बर हैं और अपनी स्थूल देह को अपना स्वरूप और इस माया देश को अपना देश समझ कर यहाँ के पदार्थों में जो मन और इंद्रियों के बिषय हैं थोड़ा बहुत रस पाकर बँध गये हैं और उन्हीं भोगों की प्राप्ती के वास्ते रात दिन जतन और मिहनत कर रहे हैं और हरचंद अपनी आँखों से देखते हैं कि यह दुनियाँ मृत्यु-लोक है यानी कोई शख़्स या चीज़ चंद रोज़ से ज़ियादा नहीं ठहर सक्ती फिर भी कोई सच्चा होकर खोज नहीं करता कि जीव कहाँ से आते हैं और कहाँ को जाते हैं ॥

३८९—(६) बसबब जड़ पदार्थ यानी इंद्री भोगों में आशक्ती करने के सब जीवों का दिन २ झुकाव नीचे यानी स्थूल माया की तरफ़ होता जाता है और इस वजह से सुख घटता और दुख बढ़ता जाता है ॥

३९०—(७) अक़्लमन्द और बिचारवान मनुष्यों को चाहिये कि जैसे वे और २ चीज़ों का इस रचना में खोज लगाते हैं और तरह २ की तहक़ीक़ात कर रहे हैं कि जिससे थोड़ा बहुत फ़ायदा दुनियाँ का हासिल होता है, वास्ते अपने जीव के कल्यान और आराम के अपने चेतन्य स्वरूप का भी खोज करें कि कैसा है और कहाँ से आया और वास्ते

प्राप्ती हमेशा के सुख और आनंद के उसको कहाँ पहुँचाना चाहिये ॥

३९१-(८) जीव चेतन्य का तीन परदों के परे इस पिंड में ठहराव होने का सबूत तीन अवस्थाओं से जिन में उसका रात दिन बर्ताव है मौजूद है यानी जाग्रत अवस्था में इसकी धार आँखों के मुक़ाम पर बैठ कर इस दुनियाँ में मन और इंद्रियों के वसीले से कार्रवाई करती है और उस वक़्त स्थूल देह और मन और इंद्रियाँ चेतन्य होती हैं और सुपन अवस्था में सूक्षम देह में बैठकर सूक्षम मन और इंद्रियों से कार्रवाई करती है और उस वक़्त स्थूल देह और उसके औज़ार स्थूल मन और इंद्री बेकार हो जाते हैं और जब सुषोपति अवस्था यानी गहरी नींद के स्थान पर चेतन्य धार का खिंचाव हो जाता है तब दोनों स्थूल और सूक्षम देही बेकार हो जाती हैं और इस मुक़ाम से ज़ियादा खिंचाव होने पर नब्ज़ और स्वांस बंद हो जाते हैं और फिर मौत वाक़े होती है ॥

३९२-(९) इससे ज़ाहिर है कि जो कोई जीव चेतन्य का खोज लगाना चाहे तो इसी रास्ते से जहाँ होकर उसकी धार गहरी नींद और सुपन और जाग्रत के मुक़ाम पर आती है पता लगावे तो अपने रूप को तहक़ीक़ कर सक्ता है और फिर वहाँ से आगे खोज लगा कर जहाँ से कि आदि में यह चेतन्य धार आई है वहाँ का भेद दरियाफ़्त कर सक्ता है ॥

३९३-(१०) यह पता और भेद सिर्फ़ संत सतगुरु से जो आदि धाम के वासी और कुल मालिक के भेदी हैं मिल सक्ता है और इस वक़्त में इसका मुफ़स्सिल हाल राधास्वामी संगत से मय तरकीब और जुगत तै करने रास्ते की मालूम हो सक्ता है ॥

३९४-(११) मालूम होवे कि संतों ने रचना के तीन दरजे मुक़र्रर किये हैं-एक निर्मल चेतन्य देश जहाँ कुल रचना रूहानी है और माया नहीं है और दूसरा निर्मल चेतन्य और शुद्ध माया देश जहाँ ब्रह्म सृष्टी है और तीसरा निर्मल चेतन्य और मलीन माया देश जहाँ देवता और मनुष्य और जानवर वग़ैरह की रचना है, इस वास्ते जो कोई चेतन्य जीव यानी सुरत का खोज लगाता हुआ धुर धाम तक पहुँचना चाहे उसको तीन परदे मलीन माया देश और तीन परदे शुद्ध माया देश के फोड़कर यानी इन छः देहियों से न्यारा होकर निर्मल चेतन्य देश में पहुँचना चाहिये; यह छः परदे बग़ैर मदद भेदी गुरू के फोड़े नहीं जा सकते हैं ॥

३९५-(१२) राधास्वामी मत का मतलब यही है कि जीव चेतन्य को भेद उसके निज घर का और भी रास्ते और मंज़िलों का समझा कर और जुगत चलने की सुरत शब्द मारग के वसीले बता कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में जो

महा आनंद महा प्रेम महा ज्ञान और महा चेतन्य का भंडार है पहुँचाना और वहाँ बिस्राम देकर हमेशा को सुखी कर देना। जो कोई राधास्वामी संगत में शामिल होकर और उपदेश लेकर शौक के साथ सुरत शब्द का अभ्यास शुरू करेगा उसको चंद रोज़ में अपना रास्ता चलता और कटता हुआ और थोड़ा बहुत रस और आनन्द प्राप्त होता हुआ और दिन २ कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रेम बढ़ता हुआ मालूम पड़ेगा और उसी क़दर संसार और उसके भोगों और पदार्थों से चित्त में उदासीनता आती जावेगी॥

३९६-(१३) जो लोग कि कुल मालिक की मौजूदगी के क़ायल नहीं हैं या शक लाते हैं उनसे भी कहा जाता है कि जरा अपने अंतर में तवज्जह करके अपने चेतन्य स्वरूप का खोज लगावें और जोकि तमाम रचना धारों की है और सुरत चेतन्य की धार अंतर से तीनों शरीरों यानी कारन सूक्ष्म और स्थूल में प्रवेश करके उनको चेयन्य करती है और जब सिमट जाती है तब यह शरीर और उनके औज़ार बेकार होजाते है इस वास्ते उसी धार को पकड़ के अंतर मे चलना चाहिये तब पता और भेद जीव चेतन्य का और फिर कुल मालिक राधास्वामी दयाल का जिनकी वह अंश है लग सकता है॥

३९७-(१४) और जोकि सब लोग वास्ते प्राप्ती दुनियाँ के सुखों के जो तुच्छ और नाशमान हैं और वास्ते दूर करने दुखों के अनेक तरह की तदबीर और मिहनत और मशक़्क़त कर रहे हैं और जो नास्तिक हैं वह भी इसी तरह इस दुनियाँ में बर्त रहे हैं यानी सुख की चाह रखते हैं और दुख से बचना और हटना चाहते हैं इस वास्ते कहा जाता है कि उनको चाहिये कि अपनी तीनों हालतों की ग़ौर से जाँच करें कि जाग्रत में दुनियाँ और देह का दुख सुख उन्हें व्यापता है और सुपन अवस्था में उसकी ख़बर भी नहीं होती वहाँ उस स्थान का जैसा कुछ कि सुख दुख है सूक्ष्म शरीर से भोगते हैं, और यह भी सोचें कि जिस क़दर सुख और आनंद है वह चेतन्य सुरत की धार में है क्योंकि सुपन अवस्था में वे सब इन्द्रियों के भोग का रस उसी क़दर लेते हैं जैसा कि जाग्रत में और उस वक़्त कोई पदार्थ बाहर मौजूद नहीं होता और स्थूल देह की इन्द्रियाँ सब बेकार होती हैं और तीसरी अवस्था में किसी क़िस्म का दुख सुख नहीं व्यापता, फिर जो वे सुख और आनंद चाहें और दुक्खों से बचाव चाहें तो संतों की जुगत के अभ्यास करने से यानी सुरत की धार को जाग्रत के स्थान से जोकि आँखों में है अंतर में उलटाने से विशेष आनंद और रस बग़ैर बाहरी मिहनत

और जतन के सुतंत्र मिल सकता है और दुख और तकलीफ़ का भी असर जाग्रत के मुक़ाम से हटने से नहीं व्यापेगा इस वास्ते उनको यह काम ज़रूर करना चाहिये क्योंकि दुनियाँ में इसी मतलब से हर तरह की मिहनत और मशक्क़त करते हैं फिर जो बढ़का फ़ायदा बग़ैर भारी मिहनत के हासिल हो सके तो उसमें क्यों दरेग़ और बेपरवाही करनी चाहिये ॥

३९८-(१५) जो इस काम को यानी संतों के सुरत शब्द मारग का अभ्यास थोड़ा शौक़ लेकर करेंगे तो उनको अपने स्वरूप की ख़बर पड़ेगी कि ऐन चेतन्य और आनंद और प्रेम और सत्त स्वरूप है और फिर उसके भंडार की भी जहाँ से सब सुरतें आई हैं और जोकि कुल मालिक का धाम है ख़बर पड़ेगी यानी सब भेद रचना का और सुरत की चढ़ाई के रास्ते और मंज़िलों का और भी कुल मालिक और उसके धाम का आहिस्ते २ खुलता जावेगा तब अपनी ओछी और नादानी की समझ पर पछतावेंगे और अफ़सोस करेंगे और अंतर में चढ़ने और चलने से जो कुछ किफ़ायत होगा और भेद मालूम पड़ेगा उसको पाकर अपने भागों को सराहेंगे और संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अपार महिमा समझ कर शुकराना बजा लावेंगे ॥

(२९) उनतीसवाँ प्रकार

यह देश पाप और पुन्य और मिहनत और मशक़्क़त और जनम मरन का है जो कोई इससे बचना चाहे उसको मुनासिब है कि घट का भेद और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अपने अंतर में चले तो एक दिन निःकर्म होकर अमर देश में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा कि जहाँ किसी तरह का कष्ट और क्लेश और जनम मरन का दुख नहीं है ॥

३९९-(१) इस लोक में कोई चीज़ या जीव स्थिर नहीं है यानी हमेशा क़ायम नहीं रहता और जीव जो इस लोक में कारंवाई कर रहे हैं उनका बर्तावा स्थूल देह और स्थूल मन और इन्द्रियों के साथ है यानी अपनी २ इच्छा के अनुसार करम करते हैं ॥

४००-(२) जीव की बैठक इस देह में वक़्त बाहर-मुखी करम करने के आँखों के तिल में है यानी यही करम का स्थान है जब इस मुक़ाम से सुरत की धार अंतर मे खिंच जाती है तब कोई करम नहीं बनता ॥

४०१-(३) जैसा जिसको संग मिला है और जैसा जिस किसी ने सुना या देखा या पढ़ा है उसी

मुवाफ़िक़ मन में इच्छा यानी तरंगें उठती हैं और उनके पूरा करने के वास्ते जैसा कुछ कि जतन मुक़र्रर है या जैसा जिस किसी को अपनी बुद्धी के मुवाफ़िक़ सूझता है करम करता है और उस कार्रवाई में भले और बुरे करम जीवों की चाह जबर या हलकी होने के मुवाफ़िक़ बनते हैं ॥

४०२–(४) जिस किसी को परमार्थ का कुछ पता और भेद मिला है और करम करने की निसबत कुछ हिदायत हुई है वह थोड़ा बहुत सम्हल कर बर्ताव करते हैं और बाक़ी जीव अपने मन की चाह पूरी करने के निमित्त जैसी कार्रवाई ज़रूर समझें बेतकल्लुफ़ और बेख़ौफ़ करते हैं और दूसरे के नफ़े और नुक़सान और आराम और तकलीफ़ का कुछ सोच और विचार नहीं करते ॥

४०३–(५) पुन्य और पाप करम तीन क़िस्म के हैं, (१) मन से, (२) करम करके, (३) बचन करके–सो जब जैसा मौक़ा आपड़े कार्रवाई करने में पाप और पुन्य का ख़याल बहुत कम जीवों को रहता है सिवाय उन कामों के जिनकी निसबत हाकिम से बाज़पुर्स होती है या बिरादरी वाले कुछ ज़ोर डालते हैं, लेकिन पोशीदा तौर पर निरभय होकर इन कामों में भी जीव बर्तते हैं और फिर उनका फल जैसा कुछ कि होवे इस ज़िंदगी में या आइंदा भोगते हैं ॥

४०४-(६) और जोकि इस लोक में कोई चीज या जीव ठहराऊ नहीं है मुसाफ़िर के तौर पर यहाँ आना जाना मालूम होता है और फिर थोड़ी ज़िंदगी और थोड़े सुख के वास्ते भलाई और बुराई करके उसका नतीजा दुख सुख सहना पड़ता है इस वास्ते मुनासिब है कि अमर देश और परम आनंद के स्थान का जहाँ जंनम मरन और किसी क़िस्म का कष्ट और कलेश नहीं है खोज लगाकर वहाँ के चलने का जतन किया जावे ॥

४०५-(७) जो यह जतन नहीं किया जावेगा तो देहियों के साथ दुख सुख का भोग और जनम मरन का चक्कर नहीं छूटेगा क्योंकि संतों के बचन के मुवाफ़िक़ यह देश माया का है और सुरत इस देश में बिना माया के ग़िलाफ़ों के जिनको देही कहते हैं नहीं रह सकती और यह ग़िलाफ़ हमेशा बदलते रहते हैं यानी जब एक ग़िलाफ़ पुराना होजाता है तब सुरत उसको छोड़ कर उसी लोक में या किसी दूसरे लोक में दूसरा ग़िलाफ़ धारन करती है इस तरह जनम मरन बराबर जारी रहता है और हर देही में अगले पिछले और हाल के करमों के मुवाफ़िक़ सुख दुख भोगना पड़ता है ॥

४०६-(८) ऐसा अमर देश कि जो महा सुख और परम आनंद का भंडार है और जहाँ कष्ट

और कलेश किसी क़िस्म का नहीं है निर्मल चेतन्य देश जो कुल मालिक का धाम है कहलाता है और वहाँ माया बिल्कुल नहीं है और बाक़ी देशों में शुद्ध या मलीन माया की मिलौनी साथ चेतन्य के है और इसी सबब से वहाँ पाप और पुन्य और दुख सुख और जनम मरन जारी है सो जब तक यह देश न छूटेगा और जीव निर्मल चेतन्य देश में न पहुँचेगा तब तक उसको अमर आनंद प्राप्त नहीं होगा ॥

४०७-(९) उस देश का पता और भेद और हाल रास्ते का और तरीक़ा चलने का सिर्फ़ राधास्वामी मत में ज़ाहिर किया है और किसी मत में उसका इशारा भी नहीं है और जो कुछ मुअम्मा या गुप्त तौर पर बर्णन भी किया है तो वह मलीन या शुद्ध माया देश का भेद है ॥

४०८-(१०) जो जीव बिचारवान हैं और अपने नफ़े और नुक़सान का ख़याल रखते हैं उनको चाहिये कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते ज़रूर ऐसी कार्रवाई करें कि जिससे माया देश के पार पहुँच कर महा सुख के स्थान में बासा पावें और पाप पुन्य और दुख सुख के धाम से न्यारे होजावें और यह बात संत सतगुर के संग से हासिल हो सकती है इस वास्ते पहिले खोज संत सतगुर या उनकी संगत का लगाना चाहिये और जब वे

भाग से मिल जावें तो शौक़ और दीनता के साथ उनका सतसंग करें और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करदें ॥

४०९-(११) मालूम होवे कि सिवाय सुरत शब्द जोग के और किसी तरकीब के साथ कोई शख़्स माया के घेर के पार नहीं जा सकता है और सुरत मारग से मतलब यह है कि अपनी रूह को आवाज़ आसमानी को सुनते हुए चेतन्य धार को पकड़ कर ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाना। यह धार आदि धाम यानी निर्मल चेतन्य देश से उतरी है और उसके साथ बराबर आवाज़ होती चली आती है सो उस आवाज़ का भेद लेकर तवज्जह के साथ सुनना और उसी के वसीले से सुरत को उस मुकाम की तरफ़ जहाँ से कि आवाज़ आती है चढ़ाना सुरत शब्द जोग कहलाता है ॥

४१०-(१२) इस वक्त़ में इस अभ्यास का तरीक़ा बहुत आसानी के साथ राधास्वामी मत में जारी है सो जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहे वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर इस अभ्यास की सहज तौर पर कमाई कर सकता है और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की सच्चे मन से सरन लेकर अपना काम बहुत आसानी के साथ बना सकता है सब जीवों पर चाहे औरत होवे या मर्द इस अभ्यास का थोड़ा बहुत करना

वास्ते उनके जीव के कल्यान के लाज़िम और फ़र्ज़ है ॥

४११-(१३) बड़ी महिमा इस अभ्यास की यह है कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया इसके अभ्यासी के संग रहती है और वह दया जब तक कि अभ्यासी को धुर मुक़ाम में नहीं पहुँचावेगी उसका संग नहीं छोड़ेगी चाहे यह काम दो तीन या चार जनम में बने हर जनम में नर देह मिलैगी और संत सतगुर और उनका सतसंग भी मिलेगा और जहाँ तक एक जनम में अभ्यास किया है वह दूसरे जनम में फुर आवेगा और उसके आगे कमाई बनती चली जावेगी जब तक कि धुर स्थान मे नहीं पहुँचेगा इस वास्ते जो जीव कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेकर इस अभ्यास में लगे हैं वही बड़भागी है और उन्हीं का एक दिन सच्चा उद्धार हो जावेगा और बाक़ी सब जीव चाहे जिस मत में होवें माया के देश में रहकर नीचे ऊँचे स्थान या जोनों मे बासा पाकर सुख दुख कम या ज़ियादा भोगते रहेंगे और उनका जनम मरन का चक्कर चाहे सबेर होवे या अबेर जारी रहेगा ॥

---

(३०) प्रकार तीसवाँ

इस देश में जीव आसा, मंसा, त्रिष्णा, भय, चिन्ता और परिश्रम से नहीं बच सकता जो

इनसे न्यारा होना चाहें वह कुल मालिक राधास्वामी दयाल के देश में पहुँचने का जतन अपने घट में करें तो एक दिन सब झगड़े और बखेड़े और दुख सुख से बचकर परम आनंद को प्राप्त होंगे ॥

४१२-(१) यह लोक स्थूल और मलीन माया का देश है और यहाँ सुरत यानी जीव स्थूल देह में बैठकर कार्रवाई करते हैं और वास्ते अपने अहार और ज़रूरी कामों के जोकि देह के निरबाह के लिये दरकार हैं जड़ पदार्थों के आधीन हैं और वे पदार्थ बग़ैर धन के और धन व माल बग़ैर मिहनत और मशक्क़त के प्राप्त नहीं हो सकते ॥

४१३-(२) इस सबब से सब जीव रात दिन चिन्ता और फ़िकर और मिहनत में लगे रहते हैं और जब कोई पदार्थ चाह के मुवाफ़िक़ प्राप्त हुआ तो उसके बढ़ाने के वास्ते ज़ियादा मिहनत उठाते रहते हैं ॥

४१४-(३) जोकि इस दुनियाँ में सब चीजों में दरजे हैं और ऐसेही आदमियों में भी धन और माल और सामान किसी को ज़ियादा से ज़ियादा किसी को ज़ियादा किसी को कम और किसी को बहुत कम प्राप्त है सो जब किसी को अपनी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ धन और सामान मुयस्सर आजावे तो वह अपने

से ज़ियादा धन वालों को देखकर उनकी बराबरी के वास्ते हिर्स करता है और अनेक तरह की तदबीरें सोचकर उनमें अपने तन मन को खपाता है कभी कोई कामयाब भी होजाता है और अक्सर ना-मकायाब होकर बहुत दुख सहते हैं और बृथा मिहनत और मशक्कत करते हैं यह त्रिष्ना क्या अमीर क्या ग़रीब सबको सताती है और दुखी रखती है ॥

४१५-(४) इस तरह कोई जीव चाहे उनको ज़रूरत के मुवाफ़िक़ सामान मिल जावे कभी आशा और त्रिष्ना से खाली नहीं रहते और उनके पूरा करने के निमित्त हमेशा चिन्ता और गुनावन जिसको मंसा कहते हैं उठाते रहते हैं और उसके मुवाफ़िक़ करम यानी परिश्रम करते हैं और इस कार्रवाई में कभी दुखी कभी सुखी होते हैं ॥

४१६-(५) यह सब कार्रवाई ' ारी है और कुल जीव इसी में लिपटे रहते हैं और इसी की आपस में जब मिलें बात चीत करते हैं ॥

४१७-(६) खुलासा यह कि उनका मन कभी दुनियावी ख़यालों से ख़ाली नहीं रहता या तो रोज़मर्रा की मिहनत और परिश्रम में लगा रहता है या जो भोग कि प्राप्त हैं उनके भोगने और मज़ा लेने में वक़्त ख़र्च करता है या विशेष भोगों और पदार्थों और मान बड़ाई के हासिल करने को

चिन्ता और गुनावन और फिर जतन करता है या इन्हीं मुआमलों का आपस में ज़िकर मज़कूर करता है या कभी मनोराज करके अपने आप मगन होता है ॥

४१८—(७) यह हालत कुल जीवों की यहाँ तक बढ़ी हुई रहती है कि उनको कभी अपनी मौत का ख़याल भी नहीं आता और न इस बात का कि बाद मरने के कहाँ जायँगे और क्या हालत उन पर गुज़रेगी कभी सोच मन में करते हैं ॥

४१९—(८) जो कुछ मामूली परमार्थ की बात चीत सुनते हैं या किसी वक्त़ मुऐयना पर किताब पढ़ते या सुनते हैं वह कार्रवाई साधारण तौर पर बतौर पुरानी लीक और रसम के करते हैं और उसमें ज़रा ग़ौर और तवज्जह नहीं करते कि इस कार्रवाई का क्या मतलब है और इससे क्या फ़ायदा हासिल होना चाहिये और आया वह हासिल होता है या नहीं ॥

४२०—(९) इसी तरह जब किसी को निहायत दुखी या बीमार या मरते देखते हैं तो उस वक्त़ कुछ ख़ौफ़ मन में लाते हैं लेकिन थोड़ी देर बाद उसको भूल जाते हैं ॥

४२१—(१०) जिस किसी को सच्चे परमार्थ या भक्ती की रीत में बर्तते देखते हैं तो उनको बड़ा अचरज होता है कि वह शख़्स कैसे धन और माल

और दुनियाँ के भोग और उनकी चाह छोड़ कर या कम करके सतसंग और भजन वग़ैरह में अपना वक़्त लगाता है ॥

४२२--(११) लेकिन जब कभी इन जीवों पर सख़्त तकलीफ़ या सदमा गुज़रता है या मौत का वक़्त क़रीब आता है उस वक़्त यह निहायत घबराते और तड़पते हैं और कोई उनका उस असाध दुख में सहाई और मददगार नहीं होता और फिर बाद मरने के अपने करमों का फल दुख सुख भोगते हैं और उसमें भी कोई कुछ बचाव नहीं कर सक्ता और जनम मरन का चक्कर भी नहीं छूट सक्ता ॥

४२३--(१२) ऐसी हालत जीवों की कि सदा दुख सहते रहते हैं देख कर संत सतगुरु दया करके फ़रमाते हैं कि जो महा सुख और अमर आनंद चाहो तो अपने सच्चे माता पिता कुल मालिक सत-पुरुष राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का खोज और पता लगाकर और उनके दर्शनों की सच्ची अभिलाषा मनमें उठा कर और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके उसका अभ्यास शुरू कर दो तो रफ़्ते २ जिस क़दर रास्ता तै होता जावेगा उसी क़दर छुटकारा माया के जंजाल से होता जावेगा यानी देह और संसार के दुख सुख का असर इसे कम व्यापेगा और अपने अंतर में अभ्यास का आनंद मिलता जावेगा और वही अभ्यास और आनंद तरक्की पाकर एक दिन निज घर में पहुँचा देगा ॥

४२४--(१३) यह बात सब को मालूम होना चाहिये कि इस रचना का कोई कुल मालिक ज़रूर है और उसका नाम सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल है और हरचंद वह सब जगह मौजूद है पर उसका निज धाम ऊँचे से ऊँचा है और सब जीव उसकी अंस हैं जैसे सूरज और उसकी किरन और उसके निज देश में माया नहीं है वहाँ कुल रचना रूहानी और चेतन्य है और कष्ट और कलेश और जनम मरन वहाँ नहीं है, और नीचे के देश में माया का भारी जोर और शोर है यानी चेतन्य पर उसके ग़िलाफ़ पर ग़िलाफ़ चढ़ रहे हैं, और जिस क़दर कि भोग और पदार्थ हैं वह सब माया के मसाले से (जो पाँच तत्त और तीन गुन हैं) बने हैं और जड़ है, इस वास्ते जब तक कि जीव अपने अंसी यानी कुल मालिक के धाम में उलट कर न पहुँचेगा तब तक अमर और परम आनंद को प्राप्त नहीं होवेगा और देह सम्बंधी दुख सुख और जनम मरन से बचाव नहीं होवेगा ॥

४२५--(१४) अब सब जीवों को चाहे मर्द होवें या औरत इस दुनियाँ और उसके सामान की नाश-मानता देख कर और अपनी मौत की याद लाकर बिचारना चाहिये कि जब थोड़े दिनो की जिन्दगी के वास्ते इस दुनियाँ में इस क़दर मिहनत और मशक़्क़त करते हैं और नाशमान सुखों की प्राप्ती

के लिये जोकि मरने के वक़्त जरूर छोडने पड़ेंगे इस क़दर पचते और खपते हैं ते। हमेशा के महा सुख और परम आनंद के हासिल करने और दुक्खों से सहज में नजात पाने के वास्ते किस क़दर तवज्जह और मिहनत उनको करना चाहिये ॥

४२६--(१५) पिछले वक़्तों में यह काम बहुत मुश्-किल था और बावजूद सख़्त मिहनत के बहुत थोड़ा फ़ायदा परमार्थी हासिल होता था लेकिन अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके और जीवों को निबल और दुखी देख कर ऐसी सहज जुगत पूरे उद्धार और सच्ची मुक्ती के प्राप्ति की फ़रमाई है कि जो औरत और मर्द और जवान और बूढ़ा बिला छोड़ने घर बार और उद्यम और रोज़गार के थोड़े वक़्त उसका अभ्यास करके परम पद हासिल कर सकता है और इसी ज़िन्दगी में राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया से अपना उद्धार होता हुआ देख सकता है ॥

४२७--(१६) इस वास्ते भूल और ग़फ़लत और बेपरवाही और आलस छोड़कर सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते राधास्वामी दयाल के उपदेश की कमाई थोड़ी बहुत ज़रूर करें कि जिससे इस ज़िंदगी में और भी बाद मरने के उनके जीव की रक्षा और सहायता होवे और दो तीन या चार

जनम में अपना अभ्यास पूरा करके धुर घर में पहुँच कर महा सुख को प्राप्त होवें ॥

४२८--(१७) कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का भेद और तरीक़ा अभ्यास का कि जिससे सुरत मन और इन्द्री और माया के घेर से न्यारी होकर अपने मालिक के चरनों में पहुँचे राधास्वामी संगत से मालूम हो सकता है और किसी मत में जो आज कल जारी है यह भेद और जुगत अभ्यास की पाई नहीं जाती है इसी सबब से सब मत वाले ख़ाली फिरते हैं और करमों में अटक कर पाप पुन्य का फल दुख सुख भोगते हैं और यह चक्कर जब तक कि सच्चे मालिक के चरनों का प्रेम मन में नहीं आवेगा और उसके दर्शन की प्राप्ती के वास्ते संत सतगुर की दया लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास नहीं किया जावेगा कभी नहीं मिट सकता है ॥

(३१) प्रकार इकत्ती वाँ

इस देश में चेतन्य सुरत की धार उलटी बह रही है और इन्द्री द्वारे बाहर बिखर रही है इस लिये इसको पूरा और निरमल सुख नहीं मिल सकता और इसकी एकसी हालत नहीं रह सकी इस वास्ते चाहिये कि इस धारा को पुलटा

बहावे यानी ऊँचे की तरफ़ को घट में चढ़ावे तो इसको एक दिन अपने भंडार में पहुँच कर पूरन और अमर आनंद प्राप्त होगा ॥

४२९--(१) कुल जीव स्थूल देह में आँखों के मुक़ाम पर बैठकर इस लोक में मन और इन्द्रियों से कार्रवाई कर रहे हैं यानी सुरत की धार मन और इन्द्रियों के द्वारे बाहर की तरफ़ बिखर रही है और जड़ पदार्थों से विशेष कर इस धार का मेल होरहा है ॥

४३०--(२) जिन जीवों में कि इस शख़्स की प्रीत है उनकी तरफ़ तवज्जह करने या उनका ख़याल करने और मिलने में इसको आनंद होता है और इसी तरह जिन भोगों और पदार्थों में इसकी आशक्ती है या उनमें विशेष बर्ताव रहता है जब २ वे सन्मुख होते हैं या उनके साथ स्पर्श होता है या जब उनको यह ग्रहन करता है तब रस और आनंद मिलता है इस सबब से सुरत की धार इन सब की तरफ़ बारम्बार या अक्सर जाती है ॥

४३१--(३) हरचंद यह बात प्रघट है लेकिन फिर भी जीव उससे बेख़बर हैं कि जिस क़द्र आनंद और रस और स्वाद जीवों और पदार्थों और भोगों के वसीले से इन्द्री द्वारे मन को मिलता है वह असल में सुरत की धार में है, जो सुरत की

धार इंद्री के मुक़ाम पर न आवै और वहाँ से चलकर भोगों और पदार्थों से न मिले तो कुछ भी रस या आनंद प्राप्त नहीं होगा ॥

४३२--(४) सुपन अवस्था में इस बात का सबूत साफ़ मिलता है कि जीव उस हालत में कुल इंद्रियों के भोगों का रस और स्वाद वैसाही लेते हैं जैसा कि जाग्रत अवस्था में मिलता है और हाल यह है कि उस वक़्त बाहर की इन्द्रियाँ बेकार और कोई पदार्थ मौजूद नहीं होता फिर ज़ाहिर है कि वह रस और स्वाद जो अंतर में सुपन अवस्था में मिलता है सुरत की धार का है, सिवाय इसके जबकि आदमी सो जाता है और उसकी सुरत की धार अंतर में खिंच जाती है उस वक़्त जो कोई पदार्थ जो किसी इंद्री का विषय है सन्मुख लाया जावे या उस इद्री से उसका स्पर्श और मेल कराया जावे तो कुछ भी ख़बर नहीं होती और न किसी क़िस्म का रस सोते आदमी को मिलता है इससे भी साबित है कि बसबब न मौजूद होने सुरत की धार के सोते वक़्त बाहर की इंद्रियाँ बेकार होती है और कुछ रस नहीं ले सकती हैं ॥

४३३--(५) अब ख़याल करना चाहिये कि जबकि जिस क़दर रस और आनंद और स्वाद है वह सुरत की धार में है फिर जिस क़दर कि सुरत की धार बाहर की तरफ़ जारी रहेगी वह ख़र्च में

दाख़िल होगी और बाहरी भोगों और पदार्थों वग़ैरह से उस धार के ही मुवाफ़िक़ रस और स्वाद मिल सकता है और जो वही धार अपने भंडार की तरफ़ जो ऊँचे देश में है रुजू करे तो जिस क़दर उसकी चाल चलेगी यानी बाहर की तरफ़ से सिमटाव और अंदर में चढ़ाई होवेगी उसी क़दर बग़ैर मिहनत और धन ख़र्च करने के ज़ियादा से ज़ियादा आनंद और रस मिलता जावेगा और उसी क़दर चिन्ता फ़िक़र और दुख का असर कम ब्यापेगा ॥

४३४--(६) बाहर के भोग और पदार्थ बग़ैर धन ख़र्च होने के नहीं मिल सकते हैं और धन बग़ैर मिहनत के हासिल नहीं हो सकता लेकिन वैसाही रस और स्वाद बल्कि उससे ज़ियादा और फिर ज़ियादा से ज़ियादा अंतर में सुतंत्र यानी अपनी इच्छा के मुवाफ़िक़ थोड़ा प्रेम और बिरह अंग लेकर संतों की जुगत के कोई दिन अभ्यास करने से सहज में मिल सकता है और फिर उस आनंद और रस की हद्द और शुमार नहीं है यानी जिस क़दर सुरत चढ़ती जावेगी उसी क़दर आनन्द बढ़ता जावेगा और एक दिन सुरत अपने निज धाम में पहुँच कर महा आनद को जिसका वार पार नहीं है प्राप्त हो सकती है ॥

४३५--(७) इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जैसे बाहर के भोगों का रस और स्वाद लेने के वास्ते तन मन धन खर्च करते हैं ऐसेही वास्ते प्राप्ती अंतर के आनद के जो महा निर्मल है और जिस वक्त़ चाहें उस वक्त़ बग़ैर मिहनत और ख़र्च करने के हासिल हो सकता है थोड़ी तवज्जह और मिहनत अभ्यास की गवारा करें ॥

४३६--(८) यह अभ्यास सुरत को उसके निज घर में पहुंचा सकता है जहाँ से यह आदि में उतर कर आई है और वहाँ पहुँच कर दर्शन कुल मालिक राधास्वामी दयाल का जो इसके सच्चे माता पिता हैं और जिनकी यह अंस है हासिल करके निहायत आनंद को प्राप्त हो सकती है ॥

४३७--(९) इस अभ्यास का तरीक़ा और भी भेद रास्ते और कुल मालिक के धाम का संत सतगुर या साध गुरू या उनके प्रेमी भक्त से मालूम हो सकता है और इस वक्त़ में राधास्वामी दयाल की संगत में प्रघट सुनाया जाता है और उस अभ्यास का नाम सुरत शब्द जोग है यानी सुरत रूह को चेतन्य की धार की सवारी पर उलटा कर उसके भंडार यानी निज घर में पहुँचाना। यह चेतन्य की धार नज़र नहीं आ सक्ती और न पकड़ाई दे सक्ती है लेकिन जो कोई उस आवाज़ को जो उस धार

के साथ बराबर जारी है तवज्जह के साथ यानी बिरह और प्रेम अंग लेकर सुनता हुआ चलै तो उसकी सुरत एक दिन उस मुक़ाम पर पहुँच जावेगी जहाँ से कि वह धार और आवाज़ आती है ॥

४३८--(१०) मालूम होवे कि आवाज़ की बराबर कोई ताकत वाला और अंधेरे में प्रकाश करने वाला और रास्ता दिखाने वाला नहीं है। इस दुनियाँ में भी कुल कार्रवाई सुरत और शब्द के वसीले से होरही है यानी एक बोलता है और दूसरा सुनकर हुक्म की तामील करता है लेकिन यह शब्द इसी नीचे देश का है और जिस शब्द के सुनने के वास्ते संत सतगुर हिदायत फ़रमाते है वह शब्द आसमानी है उसकी धार आदि में कुल मालिक के धाम से निकस कर और रास्ते में कई जगह ठेके लेती हुई और मंडल बाँधकर रचना करती हुई ब्रह्मंड से गुज़र कर इस पिंड में आँखों के मुक़ाम पर ठहर कर देह और दुनियाँ का कारज कर रही है सो इसी धार को पकड़ कर यानी आवाज़ को सुनते हुए आँखों के मुक़ाम से रास्ता जारी होता है यानी आवाज़ को सुनती हुई सुरत एक मुक़ाम से दूसरे और दूसरे से तीसरे पर चढ़ती चली जाती है ॥

४३९--(११) जैसे कि कुल काम इस दुनियाँ के शौक़ और मुहब्बत के साथ जारी है यानी जिसमें

जिसका शौक़ होता है वही काम वह मौत के साथ करता है और उस कार्रवाई में उसको तक-लीफ़ नहीं होती इसी तरह अंतर की कार्रवाई यानी सुरत का चलना और चढ़ना बग़ैर मालिक के दर्शनों के शौक़ और प्रेम के मुमकिन नहीं है और यह शौक़ और प्रेम संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और प्रेमी जन के संग से पैदा होगा ॥

४४०--(१२) इस वास्ते कुल जीवों को जो अपने घट में निर्मल और गहरा आनंद लेना चाहते हैं मुनासिब है कि पहिले संत सतगुर या साध गुरू या उनके प्रेमी जन का खोज और पता लगाकर सत-संग करें और जब उनके बचन और भक्ती की रीत और क़ायदे समझ में आजावें तब उनसे उप-देश लेकर उनके सुरत शब्द मारग की कमाई यानी अभ्यास शुरू करें तब जिस क़दर कि सुरत और मन बाहर से सिमट कर अंतर में धसते जावेंगे उसी क़दर रस और आनंद मिलता जावेगा और सुरत की धार का बेफ़ायदे बाहरमुख फैलाव यानी फ़ज़ूल ख़र्च का बचाव होता जावेगा ॥

४४१--(१३) इस वक़्त में कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों पर निहायत दया फ़रमाई है कि सुरत शब्द मारग का अभ्यास इस क़दर आसान कर दिया है कि लड़का जवान बूढ़ा औरत मर्द

ग्रहस्त विरक्त उसकी थोड़ी बहुत कमाई सहज में कर सकते हैं और उसका फल यानी अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनंद और आहिस्ते २ अपना उद्धार होता हुआ इसी ज़िन्दगी में ले सकते हैं और कुल मालिक की दया और रक्षा को जो इस मारग के अभ्यासी के संग रहती है परख सकते हैं ॥

४४२-(१४) पिछले वक़्तों में वैराग और पुरुषार्थ पर बहुत ज़ोर दिया और योग अभ्यास और उसके संजम बहुत कठिन रक्खे कि जो विरक्त से भी मुशकिल से बन सकते थे और वैराग की सम्हाल के लिये घर बार और रोज़गार और बस्ती में रहना छुड़ाया और जंगल में बासा देकर अभ्यास कराया फिर भी उन अभ्यासियों की चढ़ाई सहसदल कमल से ज़ियादा नहीं हुई यानी माया के घेर के पार न गये और इस वास्ते उनका जनम मरन का चक्कर नहीं कटा ॥

४४३-(१५) लेकिन अब राधास्वामी दयाल ने ऐसी मेहर करी है कि सुरत शब्द मारग का अभ्यास जो प्राण योग से बहुत बढ़कर है (क्योंकि सुरत की धार प्राणों की चेतन्य करने वाली है) हर एक जीव से जिस हालत मे कि होवे सहज में कराके उसकी सुरत को दयाल देश यानी निर्मल चेतन्य देश मे जहाँ कुल मालिक राधास्वामी दयाल

और संतों का निज धाम है पहुँचा कर अमर आनंद को प्राप्त कराते हैं और अपनी दया का बल देकर जिस क़दर करनी मुनासिब और ज़रूर है जीवों से एक दो तीन हद्द चार जनम में करा-कर माया की हद्द के पार पहुँचाते हैं इस वास्ते जो जीव इस अभ्यास में लग जावें वेही बड़भागी हैं और उन्हीं का जनम मरन का चक्कर काटा जावेगा और अमर आनंद के स्थान में बासा पावेंगे और बाक़ी जीव चाहे जिस मत में होवें बाहरमुख करनी और करम और धरम में भरम कर चौरासी भोगते रहेंगे ॥

(३२) प्रकार बत्तीसवाँ

यह देश भूल और भरम का है और इस सबब से यहाँ जीव हमेशा दुख सुख और जनम मरन के चक्कर में भरमते रहते हैं जो कोई उससे बचना चाहें और परम सुख और अमर आनंद के देश में पहुँचना चाहें वह राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सुरत शब्द मारग का अभ्यास करें तो राधास्वामी दयाल की दया और सतगुर की कृपा से एक दिन काम उनका बन जावेगा ॥

४४४--(१) इस लोक में जीव कुल मालिक राधा-स्वामी दयाल को बिल्कुल भूल गये हैं यानी उनसे

और उनके धाम से बिल्कुल बेख़बर हैं बल्कि निरंजन के भी भेद से जिसको ब्रह्म त्रिलोकीनाथ परमेश्वर और ख़ुदा कहते हैं बहुत कम वाकिफ़ हैं ॥

४४५-(२) सबब इसका यह है कि सब जीवों के मन में दुनियाँ और उसके भोगों और सामान की चाह बहुत जबर है और उसके पूरा करने के निमित्त वे उमर भर जतन और धंधे करते रहते हैं और जोकि नई २ चाहें दुनियाँ के बिस्तार की उठती रहती हैं इस वजह से कभी जीवों के धंधे का अंत नहीं होता है और कमी फ़ुरसत की हमेशा शिकायत करते रहते हैं ॥

४४६-(३) जिन जीवों को सब सामान और भोग हासिल हैं वे त्रिष्ना के सबब से धंधे करते रहते हैं और जो फ़ुरसत भी मिले तो वह वक्त़ सैर और तमाशे और ग़प शप और अनेक तरह के भोगों के रस लेने में ख़र्च करते हैं ॥

४४७-(४) और जिन जीवों को कुछ भी सामान मुयस्सर नहीं है और न कोई जतन माक़ूल उनसे बन पड़ता है वे अपना वक्त़ भीख मांगने में ख़र्च करते हैं या आलस करके बेकार पड़े रहते हैं और दुख भोगते हैं ॥

४४८-(५) इस तरह कुल जीव किसी न किसी क़िस्म के दुनियावी कामों में लगे रहते हैं और अपने मालिक का और भी अपनी मौत का कभी

ख़याल भी नहीं करते और जो कोई उनको परमार्थी वचन सुनावे तो उसको फ़ज़ूल और बेज़रूर समझ कर तवज्जह नहीं करते अलबत्ता जो कुछ रसम पूजा या दान पुन्य वग़ैरह की उनके घराने मे ख़ास २ समय पर होती चली आई है उसको इस ख़ौफ़ से कि कहीं उसके बंद करने में नुक़सान माल होजावे या बीमारी पैदा होवे थोड़ा बहुत जारी रखते हैं और मालिक का ख़ौफ़ और प्यार भी उनके दिल में कहन मात्र होता है असली नहीं है ॥

४४९–(६) जोकि आम जीवों को दुनियाँ के भोग और सामान में और भी धनवान और हाकिमों में विशेष प्रीत रहती है और उन्हीं के संग में उनको रस और आनंद आता है और उन्हीं की चाह उठाकर जतन करते रहते है इसी सबब से संत कहते हैं कि यह लोग सच्चे मालिक को भूलकर नाशमान और जड़ पदार्थों में भरम रहे हैं और उन्हीं को अपने सुख और आनंद और रस और स्वाद का वसीला समझ रहे हैं और इस हाल से बेख़बर है कि जिस क़दर रस और स्वाद और आनंद है वह सुरत चेतन्य की धार में हैं क्योंकि जो भोगों के साथ सुरत चेतन्य की धार शामिल न होवे तो कुछ भी रस प्राप्त नहीं हो सकता इस वास्ते, चाहिये था कि चेतन्य जो सत्त है और सर्व

रस का भंडार है उसकी मुख्यता करते और ऐसी समझ लेकर भोगों और पदार्थों वग़ैरह में भी बर्ताव रखते तो उनको एक दिन महा सत्त और महा आनंद और महा चेतन्य स्वरूप का जोकि कुल का मालिक है पता लग जाता और उसके मिलने की जुगत भी दरियाफ़्त होजाती ॥

४५०-(७) जो जीव कि अपने सच्चे माता पिता कुल मालिक को भूलकर संसार में भरम रहे हैं और कुटुम्बियों और भोगों और पदार्थों में उनका भाव और प्यार रहता है वे दिन २ नीचे देश और जोनों में उतरते चले जाते हैं क्योंकि उनका विशेष मेल जड़ पदार्थों से रहता है और उन्हीं की प्राप्ती की चाह उनके मन में ज़बर रहती है इस सबब से उनका जनम मरन का चक्कर और देह धर कर दुख सुख का भोग कभी नहीं मिटेगा ॥

४५१-(८) लेकिन जो कोई कि इस संसार और उसके सामान को नाशमान और मौत को अपने सिर पर हमेशा खड़ा देखकर खोज़ कुल मालिक का करते हैं और पता और भेद उसका और उसके धाम का दरियाफ़्त करके दर्शन की प्राप्ती के लिये जतन करते हैं वेही आहिस्ते २ माया के घेर से जोकि भूल और भरम और दुख सुख और जनम मरन का स्थान है न्यारे होकर एक दिन सच्चे मालिक के धाम में पहुँच कर परम आनंद को

प्राप्त होंगे और जोकि वह देश अमर और अजर है तो वह जीव भी वहाँ पहुँच कर अमर हो जावेंगे और हमेशा का सुख उनको हासिल हो जावेगा ॥

४५२-(९) यह पता और भेद कुल मालिक और उसके धाम का और तरीक़ा उसकी प्राप्ती का राधास्वामी मत में खोल कर बर्णन किया है जो कोई सच्चा शौक़ीन है वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर और कोई दिन सतसंग करके उपदेश ले सकता है और उसकी कमाई करके थोड़ा बहुत फल उसका इसी ज़िन्दगी में देख सकता है और आइंदा के वास्ते उसकी आशा और निश्चय पक्का होकर अभ्यास आसानी के साथ बढ़ सक्ता है ॥

४५३-(१०) इस अभ्यास को सुरत शब्द मारग कहते हैं यानी रूह को आवाज आसमानी के साथ जो घट २ में होरही है ऊँचे देश में जहाँ कुल मालिक का धाम है चढ़ाना—वही निर्मल चेतन्य का स्थान है जहाँ माया नहीं है और न किसी तरह का कष्ट और कलेश है ॥

४५४-(११) बग़ैर सतसंग के तमोगुण जोकि संसार में फैल रहा है और कुल जीवों के अंतर में छा रहा है दूर नहीं हो सकता और भूल और भरम और ग़फ़लत इसी तमोगुण का फल है सो जब तक यह कम या दूर न होगा, तब तक सफ़ाई

नहीं होगी और आँख नहीं खुलेगी और यह तमो-गुण बाहर संत सतगुर और उनके प्रेमी जन के सतसंग से और अंतर में शब्द के स्रवन और स्वरूप के ध्यान से कम होता जावेगा और एक दिन राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से बिलकुल दूर हो जावेगा ॥

४५५-(१२) इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब है कि पहिले संत सतगुर और उनके सतसंग का खोज करें और जो संत सतगुर न मिलें तो उनकी बानी और प्रेमी सत-संगियों का संग करें और जुगत अंतर में मन और सुरत के चढ़ाने की दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करदें रफ़्ते २ संत सतगुर भी दया से मिल जावेंगे ॥

४५६-(१३) संतों के सतसंग और उनके सरन की महिमा बहुत भारी है यहाँ तक कि कैसाही पापी और मलीन जीव होवे जो वह चेत कर अंतर और बाहर सतसंग करेगा और चरन सरन दृढ़ करेगा तो कोई दिन में निर्मल हो जावेगा और सच्चे मालिक का प्रेम उसके हिरदे में पैदा होकर एक दिन उसको निज धाम में पहुँचा देगा ॥

(३३) प्रकार चौंतीसवाँ

दुनियाँ में देखा जाता है कि सब लोग बड़ी से बड़ी चीज़ के हासिल करने की ख़्वाहिश

करते हैं तो परमार्थ में भी चाहिये कि ऊँचे से ऊँचे देश में पहुँच कर सच्चे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों के दर्शन का परम आनंद हासिल करने के लिये कोशिश और जतन दिल और जान से करें और मूरत या निशान की पूजा या विद्या बुद्धी की समझौती पर राज़ी होकर अपना अकाज नहीं करना चाहिये ॥

४५७-(१) इस दुनियाँ में देखने में आता है कि हर एक शख़्स उम्दा से उम्दा चीज़ चाहता है और बड़े से बड़े आदमियों से मिलने की ख़ाहिश रखता है और ज़ियादा से ज़ियादा ताक़त और धन और माल और जौहर और हुनर हासिल करने की उम्मैद रखता है ॥

४५८-(२) जो शख़्स कोई विद्या या हुनर या किसी क़िस्म का काम सीखना चाहता है वह भी बड़े उस्ताद से मिलकर अपना मतलब बनाना चाहता है ॥

४५९-(३) लेकिन बड़ा तअज्जुब और अफ़सोस होता है कि परमार्थ के मुआमले में यानी अपनी मुक्ती और उद्धार के हासिल करने के वास्ते लोग सिर्फ़ किताब पढ़ना या सुनना या कोई निशान

या नक़ल जैसे मूरत वग़ैरह की पूजा करना या किसी खास दरिया या तालाब या कुएँ पर स्नान करना या दान पुन्य वग़ैरह करना या वंसावली और विद्यावान गुरुओं से उपदेश लेकर वग़ैर भेद के नाम का सुमिरन और बेठिकाने ध्यान करना काफ़ी कार्रवाई समझते हैं ॥

४६०-(४) यह लोग अच्छी तरह जानते हैं कि जो कार्रवाई वह कर रहे हैं उससे उनके संशय और भरम दूर नहीं होते और न किसी भारी सवाल का जो उनके मन में पैदा होवे जवाब साफ़ किताब या मूरत या वंसावली और विद्यावान गुरुओं से मिल सकता है और न अपनी कार्रवाई का फल यानी किसी क़दर मुक्ती होती हुई अंतर में या बाहर नज़राई देती है फिर भी यह लोग तलाश या तहक़ीक़ात भेदी और वाक़िफ़कार गुरू की नहीं करते ॥

४६१-(५) सबब इसका यह मालूम होता है कि इन जीवों के मन में सच्ची चाह अपने उद्धार की या दरियाफ़्त करने हाल कुल मालिक की नहीं है नहीं तो जैसे दुनियाँ में हर एक काम के वास्ते ज़ियादा से ज़ियादा वाक़िफ़कार आदमी और उम्दा से उम्दा चीज़ की तलाश करते हैं इसी तरह अपने उद्धार के वास्ते भी ज़रूर खोज पूरे गुरू और पूरी जुगती का करते ॥

४६२-(६) जिन लोगों के दिल में सच्चा शौक़ परमार्थ का है उनको वह कार्रवाई जो दफ़ा (३) में लिखी गई और जो अवाम लोग कर रहे हैं पसंद नहीं आती क्योंकि उससे उनको तसल्ली और शांती नहीं होती और मन में उनके बहुत से शक और सवालात धरे रहते हैं कि जो सिवाय पूरे गुरू के ते नहीं हो सकते ऐसे जीव सच्चे और पूरे गुरू और उनके सतसंग का खोज लगा कर और जब और जहाँ मिल जावें उनसे मिलकर सहज में अपना कारज बनवाते हैं ॥

४६३-(७) अब सब जीवों को समझना चाहिये कि वास्ते अपने जीव के कल्यान के सच्चे गुरू और सच्चे सतसंग का खोज करें और पूरे गुरू की पहिचान यह है कि वे सच्चे और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल का भेद देकर जुगत उसके दर्शनों के प्राप्ती की सुरत शब्द मारग के अभ्यास से बतावेंगे और सच्चा सतसंग उसको कहते हैं कि जहाँ सच्चे और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल की महिमा और उनके चरनों में प्रेम का ज़िकर होवे और भेद उनके धाम का और तरीक़ा उसके प्राप्ती का समझाया जावे ॥

४६४-(८) ऐसा सतसंग राधास्वामी दयाल की संगत में मौजूद है और सुरत शब्द मारग का उपदेश और अभ्यास जिसके सिवाय कोई दूसरी

जुगत मालिक के धाम में पहुँचने की रचना भर में नहीं है वहाँ जारी है, जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर अपने जीव का कारज करवावे ॥

४६५-(९) दुनियाँ में बहुत कम जीव हैं कि जो उसकी नाशमानता देखकर इस बात का सोच करें कि बाद मरने के कहाँ जावेंगे और क्या हाल होगा और जो कोई सच्चा मालिक इस रचना का है उससे और उनसे क्या निस्बत है और क्या कार्रवाई उनको वास्ते प्राप्ती हमेशा के सुख और आनंद के करना चाहिये ॥

४६६-(१०) और बाक़ी जीव इंद्रियों के भोग बिलास में और विशेष धन के प्राप्ती की चाह में ऐसे मस्त और बेहोश रहते हैं और इन्हीं की प्राप्ती के वास्ते रात दिन मिहनत के साथ धंधे कर रहे हैं कि उनको कुल मालिक या अपनी मौत का कभी ख़याल नहीं आता और बावजूदेकि संसार में अनेक तरह के कष्ट और कलेश सहते हैं और माया के हाथ से धक्के भी खाते हैं फिर भी बारम्बार उसी की तरफ़ दौड़ते हैं और उन्हीं तुच्छ सुखों की आसा बाँधकर मिहनत करते रहते हैं ॥

४६७-(११) यह ज़ीव क़ाबिल संतों के सतसंग के नहीं हैं लेकिन जो भाग से उनको किसी प्रेमी सतसंगी का संग मिल जावे तो उसके वचन बारम्बार

सुनकर और उसके प्रेम और भक्ती की हालत और दुनियाँ की तरफ़ से उसकी उदासीनता देखकर उनके मन में भी कुछ महिमा परमार्थ की समा जावेगी और फिर उसी प्रेमी के वसीले से संत सतगुर का दर्शन करके और उनके सतसंग में शामिल होकर थोड़ी बहुत उनकी हालत बदलेगी और जब उपदेश लेकर अंतर अभ्यास करेंगे और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल का कुछ जलवा अपने अंतर में देखेंगे और उनकी दया और रक्षा की परख करेंगे तब उनका भी प्रेम दिन २ बढ़ेगा और संत सतगुर की दया से एक दिन निज घर में जो कुल मालिक का धाम है पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होवेंगे ॥

४६८-(१२) जहाँ कि जीव की बैठक पिंड में है वहाँ से और कुल मालिक के धाम तक कितनेही ठेके या मंज़िलें रास्ते में हैं और हर एक मुक़ाम का धनी नीचे की रचना का मुख़्तार और मालिक है बहुत से परमार्थी लोग रास्ते के मुक़ामों में उन्हीं को आख़िरी मुक़ाम समझ कर ठहर गये और वहाँ के मालिक की पूजा जारी करी पर इन सब मुक़ामों का जोकि माया के घेर में हैं किसी का परलै और किसी का महापरलै में अभाव होवेगा और उस वक़्त उस मुक़ाम के मालिक के भक्त भी परलै में आवेंगे और जोकि भक्तों की रीत चाहे

जिसकी होवे एकसाँ है इस वास्ते परमार्थ के सच्चे शौक़ वालों को मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले अपने सच्चे और कुल मालिक का खोज और पता लगावें तब भक्ती में क़दम रक्खें ताकि उनकी मिहनत और कार्रवाई बरबाद न होवे और एक दिन संतों के देश में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त होवें। उस देश में परलै और महा परलै नहीं पहुँच सक्ती है और न वहाँ माया और उसके मसाले की रचना है और न वहाँ कष्ट और कलेश और जनम मरन का चक्कर है। वह धाम और वहाँ की रूहानी रचना हमेशा एक रस क़ायम रहती है और महा आनन्द और महा प्रेम और महा सुख का भंडार है॥

४६९-(१३) जो जीव कि कुल मालिक की भक्ती नहीं करेंगे यानी संतों के बचन के बमूजिब सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों का इष्ट बांध कर सुरत शब्द मारग का थोड़ा बहुत अभ्यास नहीं करेंगे वे माया के घेर में रहेंगे और बारम्बार देह धारन करके दुख सुख और जनम मरन का कलेश भोगते रहेंगे॥

(३४) ा र चौती वाँ

जगत में सब जीव मान बड़ाई के वास्ते तन मन धन ख़र्च करते हैं बल्कि जान तक दे देते

हैं और फ़िर भी पूरी और पायदार मान बड़ाई हासिल नहीं होती लेकिन सच्चे परमार्थी को जो राधास्वामी दयाल के चरनों में लगा है और एक दिन उनके निज धाम में पहुँचने की आसा करके जतन कर रहा है बेमांगे और बेचाहे इस जनम में और भी चोला छोड़ने के बाद भारी शोहरत और बड़ाई बल्कि पूजा और प्रतिष्ठा एक शहर में नहीं बल्कि देशों में हासिल होती है कि जिसका अंदाज़ा और हिसाब कोई नहीं कर सकता ॥

४७०-(१) इस दुनियाँ में सब जीव वास्ते प्राप्ती धन और माल और पदार्थों के जो इन्द्रियों के भोग हैं मिहनत करते हैं और हरचंद मान बड़ाई की चाह सब के हिरदे में भरी हुई है पर उसकी प्राप्ती के निमित्त ख़ास जतन थोड़े शख़्स करते हैं ॥

४७१-(२) धन स्त्री और पुत्र की चाह बहुत ज़बर है और सब जीव इसी चाह मे गिरफ़्तार होकर इस दुनियाँ में कार्रवाई कर रहे है लेकिन मान बड़ाई की चाह इन सब चाहों से भी ज़बर है ॥

४७२-(३) देखने में आता है कि जिस किसी के मन में मान बड़ाई की चाह है वह उसकी प्राप्ती के वास्ते भारी और कठिन जतन करता है यहाँ

तक कि धन स्त्री और पुत्र बल्कि अपनी देह और जान तक के कुरबान करने को तैयार हो जाता है ॥

४७३-(४) ऐसे शख़्स बहुत थोड़े होते हैं और उन्हीं से बल्कि सभों से संत कहते हैं कि दुनियाँ की मान बड़ाई तुच्छ और थोड़े दिनों की है और जिस किसी को बहुत से बहुत हासिल भी हुई तो एक क़सबा या शहर या एक देश में उसकी शोहरत हो जावेगी लेकिन बाद चोला छोड़ने या गुजरने थोड़े अर्से के वह नामवरी भी जाती रहेगी और जो कोई ख़ास काम उसके यादगारी का किया जावे या इमारत बनाई जावें उसका भी कोई अर्से बाद निशान नहीं रहेगा और जो कसरत औलाद का भरोसा रक्खे तो उसके क़ायम रहने का भी पूरा एतबार नहीं हो सकता ॥

४७४-(५) इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जिन जीवों के मन में अपनी बड़ाई और यादगारी की चाह ज़बर है उनको चाहिये कि अपने सच्चे कुल मालिक के चरनों में सच्ची और पूरी भक्ती तन मन और धन से करें तो उनके मन में से यह चाह कोई अर्से में बिल्कुल निकल जावेगी और बजाय उसके सच्चे मालिक के दर्शनों की अभिलाषा दिन २ बढ़ कर एक दिन उनको अपने मालिक के सन्मुख पहुँचा देगी और जो आनन्द कि दर्शन करके प्राप्त होगा वह कहने में नहीं आ सकता है और दुनियाँ

के कुल सामान बल्कि ऊँचे लोकों के भोगों से बेपरवाह कर देगा ॥

४७५-(६) सिवाय इसके वह सच्चा मालिक अपने भक्त पर मेहरबान होकर अपनी दया से इस क़दर बड़ाई और शोहरत बख़्शेगा कि जिसका अंदाज़ा नहीं हो सकता यानी उसकी ज़िंदगी में भी शहरों और देशों में उसकी शोहरत और बाद मरने के भी पूजा और प्रतिष्ठा दूर २ तक आम तौर पर फैलेगी और सब बड़े और छोटे आदमी और मर्द और औरत और लड़के बाले उसकी और उसके नाम और बचन और निशान की ताज़ीम और अदब करेंगे जैसा कि पिछले संतों और महात्माओं और औतारों और पैग़म्बरों और भक्तों के हाल से ज़ाहिर है ॥

४७६-(७) जिस भक्ती का कि ज़िकर ऊपर हुआ वह सिर्फ़ संतों के सतसंग से हासिल हो सकती है और सच्चे कुल मालिक का पता और भेद और भी उसके दर्शनों के प्राप्ती का तरीक़ा संत सतगुर या उनके सच्चे प्रेमी अभ्यासी से मालूम हो सकता है ॥

४७७-(८) और सब मतों में जो दुनियाँ में जारी हैं तरीक़ा भक्ती या ज्ञान परमेश्वर या परमात्मा या ब्रह्म पारब्रह्म या खुदा का बयान किया है या औतारों और देवताओं और पैग़म्बरों और

औलियों की भक्ती समझाई है लेकिन इस कारवाई से वह निर्मल और उत्तम और ऊँचे से ऊँचा दरजा जोकि कुल मालिक और संत सतगुर की भक्ती से हासिल होता है प्राप्त होना मुमकिन नहीं है ॥

४७८–(९) इस भक्ती की रीत और तरीक़ा अभ्यास का पिछले संतों और साधुओं की बानी में संक्षेप करके और इशारे में बयान किया है लेकिन अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुर रूप धारन करके निहायत दया के साथ उसको खोल कर तफ़सील के साथ प्रघट किया है और जुगत अभ्यास की सुरत शब्द मारग के वसीले से जिससे भक्ती और प्रेम दिन २ बढ़ता जावे और मन और सुरत अपने प्रीतम सच्चे मालिक के धाम की तरफ़ दिन २ चढ़ कर चलते जावें इस क़दर आसानी के साथ मुक़र्रर की है कि जो मर्द और औरत चाहे ग्रहस्त होवे या बिरक्त पढ़ा होवे या अनपढ़ बेतकलीफ़ और बेख़तरे कमा सक्ते हैं ॥

४७९–(१०) हर एक शख़्स को चाहे औरत होवे या मर्द जो इस दुनियाँ में पैदा हुआ है मुनासिब है कि इसके हाल को ग़ौर के साथ मुलाहिज़ा करे और जब उसको यक़ीन होजावे कि यहाँ कोई चीज़ या धन दौलत मान बड़ाई ठहराऊ नहीं है और चाहे राजा या अमीर या ग़रीब होवे सबको

जो कुछ कि सामान उसके पास है छोड़ना पड़ेगा और जीव यानी सुरत जो अमर है इस देह और देश को छोड़कर दूसरी देह धारन करेगी और जैसी कार्रवाई एक जनम मे की है उसी क़िस्म की नीच ऊँच जोन में बारम्बार देह धरकर करती रहेगी और दुख सुख और जनम मरन का कष्ट और क्लेश हमेशा सहना पड़ेगा तो वास्ते आराम और बचाव दुखों से अपने जीव के लाजिम होगा कि ऐसी कार्रवाई करे कि जिससे वह अपने निज घर यानी सच्चे मालिक राधास्वामी के धाम में पहुँच कर अमर आनंद को प्राप्त होवे और देहियों के बंधन से क़ितई छुटकारा हो जावे ॥

४८०–(११) दुनियाँ में अपने और अपने कुटुम्ब के औसत दरजे के गुज़ारे के वास्ते जो कार्रवाई ज़रूर है वह बेशक करना चाहिये लेकिन ऐसी फ़ज़ूल कार्रवाई कि जिससे दुनियाँ में बेफ़ायदे बंधन होवे या थोड़े दिन की मान बड़ाई हासिल हो जावे बग़ैर समझे और बिचारे और बग़ैर मौज अपने सच्चे मालिक और सतगुरू के करना मुनासिब नहीं है ॥

४८१–(१२) इस बात की समझ सतसंग से आवेगी इस वास्ते सब को मुनासिब है कि पहिले संत सतगुर का संग करें और संत सतगुर वेही हैं कि जो सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती

दृढ़ावें और सुरत शब्द मारग का अभ्यास कराके और काल और माया के जाल से निकाल कर पिंड और ब्रह्मंड के पार सच्चे मालिक के धाम में पहुँचावें ॥

४८२-(१३) संत सतगुर के बचन चित्त से सुनकर और मनन करके समझ कर दुनियाँ और उसके सामान की तरफ़ से आहिस्ते २ चित्त हटता जावेगा और कुल मालिक के चरनों में प्रीत जागती जावेगी और सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके वह प्रीत प्रतीत सहित बढ़ती जावेगी और मन और इन्द्रियों के भोग बिलास और धन और माल और मान बड़ाई की चाह आहिस्ते आहिस्ते घटती जावेगी ॥

४८३-(१४) इस तरह ऐसा सतसंगी दिन दिन संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का प्यारा होता जावेगा और जब उसकी भक्ती और अभ्यास ख़तम होवेंगे उस वक़्त वह मालिक के निज धाम में जो महा आनंद और महा चैतन्य और महा प्रेम का भंडार है बासा पावेगा ॥

४८४-(१५) ऐसे प्रेमी भक्त के द्वारे मालिक बहुत से जीवों का उपकार करावेगा यानी उनको भी भक्ती और प्रेम की दात बख़्श कर निज घर में पहुँचने की कार्रवाई करावेगा और इस तरह उस प्रेमी भक्त की महिमा बग़ैर उसकी चाह और

माँग के दिन २ बढ़ती जावेगी और बाद उसके चोला छोड़ने के भी दूर २ तक ज़ियादा से ज़ियादा फैलेगी ॥

४८५-(१६) यह भेद समझ कर जिस किसी के मन में सच्ची ख़ाहिश कुल मालिक के दरबार में पहुँचने की पैदा होवे उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर तहक़ीक़ात करे और सतसंग करके संशय और भरम अपने दूर करावे और फिर सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे और अपने अंतर में दया के परचे पाकर संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ावे तो उनकी मेहर और दया से एक दिन उसका काम पूरा बन जावेगा। और किसी मत में जो इस वक़्त जारी हैं भेद कुल मालिक और उसके धाम और रास्ते का और तरीक़ा चढ़ाने मन और सुरत का जारी नहीं है और न वहाँ से कुछ पता और भेद मिल सकता है ॥

४८६--(१७) इस वक़्त में जबकि कुल जीवों का झुकाव संसार और उसके भोगों की तरफ़ होरहा है और सच्चे परमार्थ की तरफ़ से बिल्कुल बेपरवाह होरहे हैं जिस किसी के दिल में दुनियाँ की नाशमानता देखकर सच्चा खोज सच्चे मालिक और जुगत प्राप्ती सच्ची मुक्ति का पैदा हो जावे वही

जीव बड़भागी है और उसी का संजोग राधास्वामी दयाल की दया से राधास्वामी संगत से मिल जावेगा और रफ़्ते २ संत सतगुर से भी भेंटा हो जावेगा और फिर उनकी सेवा और सतसंग से उसके घट में प्रेम बढ़ता जावेगा और अभ्यास भी दुरुस्ती से बनेगा और उनकी दया से एक दिन निज घर में बासा पाकर अमर और परम आनंद को प्राप्त होगा और तब अपने भागों को सराहेगा कि कैसे कठिन जंजाल से संत सतगुर ने सहज में निकाल कर माया के घेर के पार निज धाम में पहुँचाया ॥

---

(३५) प्र ार पैती वाँ

यह संसार अगिन भंडार है और यहाँ सब कामों और सब बातों में तपन होती है जो कोई इस तपन के स्थान से बचना चाहे उसको चाहिये कि आकाश यानी ऊँचे देश की तरफ़ भागे और महा सीतल और आनंद के स्थान में जो कुल मालिक का धाम है पहुँच कर बासा करे--रास्ता इस धाम का घट में है और उसके भेदी संत सतगुर हैं ॥

४८७--(१) इस लोक में माया का भारी ज़ोर और शोर है और वह अगिन रूप है इस सबब से कोई काम यहाँ का तपन से ख़ाली नहीं है यानी गरमी की मदद से होता है ॥

४८८--(२) जहाँ हरकत है वहीं तपन या गरमी है देह के औज़ार जो इन्द्रियाँ हैं इनकी भी कार्र-वाई हरकत और तपन के साथ होती है ॥

४८९--(३) इसी तरह पाँच दूत जो काम क्रोध लोभ मोह और अहंकार हैं इनकी भी कार्रवाई तपन के साथ होती है यानी पहिले मन में इच्छा की हिलोर होती है और फिर धार खड़ी होकर इन्द्रियों के द्वारे पर आती है और इन्द्रियाँ हरकत करती हैं और उस हरकत से तपन यानी गरमी पैदा होती है तब जो काम कि इन्द्रियों से लेना है वह दुरुस्त बनता है ॥

४९०--(४) हिलोर के वक़्त अंतर यानी मन में तपन पैदा होती है और फिर इन्द्रियों की रगड़ जो भोग और पदार्थों के साथ होती है उससे बाहर तपन पैदा होती है खुलासा यह कि कोई काम बग़ैर हरकत या रगड़ यानी तपन के नहीं बनता है ॥

४९१--(५) जबकि मन के अंदर ख़याल उठते हैं उस वक़्त अंतर में हरकत होती है यानी चक्कर चलता है और वहाँ भी थोड़ी बहुत तपन पैदा

होती है सिवाय इसके जिस क़िस्म का ख़याल होवे उसी मुवाफ़िक़ तपन में कमी बेशी होती है ॥

४९२--(६) सिवाय इसके तीन ताप यानी तीन क़िस्म के दुख हर एक जीव को समय समय पर व्यापते हैं और उनके सबब से अंतर में और देह में निहायत दरजे की तपन और तकलीफ़ पैदा होती है और वह तीन ताप यह हैं पहिला मानसी दुख जो बसबब ख़ौफ़ या रंज या चिन्ता और फ़िक्र या सोग वग़ैरह के पैदा होता है और अंतर में निहायत दरजे की तपन और जलन फैलाता है दूसरा रोग यानी देह का दुख जो बसबब अनेक क़िस्म की बीमारी के बदन में तपन यानी तकलीफ़ पैदा करता है तीसरा उपाधी यानी दूसरे जीवों से लड़ाई झगड़े क़िस्से क़ज़िये के सबब से चिन्ता और कलेश और दुख पैदा होता है ॥

४९३--(७) इन तीनों ताप से कोई जीव ख़ाली नहीं रहता है यानी राजा और अमीर और ग़रीब सब को अपने २ वक़्त पर यह दुख सताते हैं किसी २ ताप के दूर करने या घटाने का जतन बन आता है और कोई २ ताप यानी रोग और सोग असाध यानी लाइलाज हैं वहाँ आदमी की अक़ल और ताक़त कुछ काम नहीं करती लाचार होकर उस तकलीफ़ और दुख को सहते हैं ॥

४९४--(८) यह ताप और दुख मलीन माया देश यानी पिंड में जिसमें षट चक्र शामिल हैं ज़ियादा व्यापते हैं दूसरे दरजे यानी ब्रह्मांड में जो शुद्ध माया का देश है इनका असर बहुत कम व्यापता है और अव्वल दरजे में यानी निर्मल चेतन्य देश जो कुल मालिक का धाम है और जहाँ संत बिस्राम करते हैं इन तापों का नाम और निशान भी नहीं यानी वहाँ किसी क़िस्म का दुख और क़्लेश और तपन नहीं है यह देश ऊँचे से ऊँचा और पिंड और ब्रह्मांड के परे है ॥

४९५--(९) अब जो कोई इस अगिन भंडार यानी दुनियाँ और देह से बचकर महा शीतल और महा आनंद के स्थान में पहुँच कर बासा चाहे उसको मुनासिब है कि आकाश यानी ऊँचे की तरफ़ चले और इस स्थान को छोड़े ॥

४९६--(१०) बाहर से जो कोई आकाश में उड़ना चाहे तो छः सात मील तक गुब्बारे में सवार होकर या पहाड़ पर चढ़कर ऊँचे जा सकता है लेकिन वहाँ पहुँचने पर देह छूट जावेगी और हरचंद उस वक़्त चाहे जिस क़िस्म की तकलीफ़ होवे उससे बचाव हो जावेगा लेकिन जोकि सब तकलीफ़ और कष्ट व कलेश पाप करमों का फल है तो देह के छूटने से वे करम नहीं कटेंगे और आगे को सिल-सिला भी उनका बंद नहीं होगा क्योंकि जब तक

सुरत माया के घेर में रहेगी तब तक किसी न किसी क़िस्म की देह ऊँचे नीचे देश में उसको धारन करनी पड़ेगी और फिर उसके दुख सुख और जनम मरन का कष्ट भी भोगना पड़ेगा ॥

४९७-(११) इस वास्ते मुनासिब यह है कि ऐसी तरकीब के साथ आकाश में चढ़ाई करे कि जिससे पिछले करम कटते जावें और आइंदे को सिलसिला उनका बिल्कुल बन्द हो जावे और फिर ऊँचे से ऊँचे देश में जो कुल मालिक का धाम है और जहाँ काल और करम और माया और उसकी तपन बिल्कुल नहीं है पहुँच कर बिश्राम करे और अमर और परम आनंद को प्राप्त हो जावे ॥

४९८-(१२) यह तरकीब राधास्वामी संगत में जारी है और वहीं पता और भेद कुल मालिक और उसके धाम का और भी हाल रास्ते और मंज़िलों का मालूम हो सकता है जो कोई सच्चा शौक़ कुल मालिक के दर्शनों का रखता है उसको चाहिये कि पहिले राधास्वामी संगत में जाकर कोई दिन सतसंग करे और जो संशय या भरम उसके मन में धरे होवें उनको बचनों की मदद से निकाले और फिर भेद समझ कर और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करदे सिवाय इसके और कोई जुगत मन और सुरत के चढ़ाने की घट में ऐसी आसान और धुर पद में पहुँचाने वाली

रचना भर में नहीं है कि जिसकी कमाई स्त्री और पुरुष ग्रहस्त में रहकर कर सकते हैं और जीते जी उसका फल यानी तपन देश से आहिस्ते २ न्यारे होते हुए और सुख और आनंद और शीतल देश में अपनी सुरत को प्रवेश करते हुए देख सकते हैं ॥

४९९—(१३) इस अभ्यास का मतलब यही है कि सुरत को जो चेतन्य और ज्ञान और नूर और शब्द की धार है आवाज़ के आसरे उलटा कर जहाँ से कि आदि में वह धार निकसी है और उसके साथ शब्द प्रघट हुआ है पहुँचाना ॥

५००—(१४) ज़ाहिर है कि आवाज़ की बराबर कोई ताक़त वाला और अंधेरे में रोशनी करने वाला और रास्ता दिखाने वाला नहीं है इसी के वसीले से कुल कार्रवाई रचना की और उसका बन्दोबस्त और इसी तरह देह और दुनियाँ और हर एक घर का इन्तज़ाम चल रहा है और जोकि आवाज़ की धारहो चेतन्य और ज्ञान को धार है फिर इससे बढ़कर कोई धार रचना भर में नहीं है और इस वास्ते सुरत शब्द योग से बढ़कर और कोई जतन या अभ्यास रचा नहीं गया ॥

५०१—(१५) जिस किसी को ऊपर के बचन का निश्चय आ जावे और वह कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की सरन लेकर शौक़ के साथ अभ्यास शुरू कर देवे वही बड़ भागी

है और वही एक दिन कुल मालिक और संत सत-गुर की दया से पिंड और ब्रह्मांड के पार संतों के निज देश में बासा पाकर अमर और परम आनंद को प्राप्त होवेगा ॥

५०२-(१६) और जो जीव परमार्थ की तरफ़ से बेपरवाही करके संसार के भोग और बिलास में अटके और फँसे रहेंगे वह माया के तपन और जलन और अगिन देश से कभी बाहर नहीं जावेंगे और उसी देश में बारम्बार देह धर के दुख सुख भोगते रहेंगे ॥

५०३-(१७) अब जीवों को इख़्तियार है कि इस बचन को सुन कर और समझ कर चाहे अपने निज घर में जोकि कुल मालिक का धाम है और वही महा सुख और महा चेतन्य और महा आनंद का भंडार है पहुँचने का जतन शुरू कर दें और चाहे भूल और भरम में गिरफ़्तार रहकर माया के देश में जनम मरन और दुख सुख भोगते रहें। और मालूम होवे कि राधास्वामी मत की जुगत की कमाई करने के वास्ते घर बार और रोज़गार और ब्योहार छोड़ने की ज़रूरत नहीं है इस वास्ते राधास्वामी मत के सतसंगी को दोनों फ़ायदे हासिल होते हैं यानी संसार का भोग बिलास और भी परम आनंद और अमर घर में निवास और जोकि अपनी मूर्खता से संसार को महिमा और

बड़ाई चित्त में ठान कर और उसके भोग बिलास को परम सुख समझ कर उसी में फँसे और परमार्थ की तरफ़ से गाफ़िल रहेंगे वह तुच्छ सुखों के एवज़ में भारी कष्ट और कलेश हमेशा भोगते रहेंगे और उस जंजाल से उनका कभी छुटकारा नहीं होवेगा जब तक कि संत सतगुर की सरन और दया लेकर शौक़ के साथ सुरत शब्द मारग का अभ्यास नहीं करेंगे ॥

(३६) प्र ार त्ती वाँ

दुनियाँ के लोग बड़े शौक़ से चाहते हैं कि बड़े आदमियों राजा और महाराजा से मिलें और जब वह मिल जाते हैं तो बहुत खुश होते हैं और उसमें अपनी बड़ाई समझते हैं लेकिन जो प्रेमी कि संतों का परमार्थ कमावे तो उसको आत्मा परमात्मा ब्रह्म पारब्रह्म और सत्त पुरुष और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के अपने घट में दर्शन मिल सकते हैं और यह दर्शन पाकर ऐसी खुशी हमेशा के वास्ते होगी कि जिसका कोई अंदाज़ा नहीं कर सकता ॥

५०४—(१) इस दुनियाँ में सब जीवों के दिल में चाह मिलने की अपने से बड़े आदमियों और सेठ

साहूकारों और हाकिमों और अमीरों और राजों महाराजों से लगी रहती है और चाहे कुछ उनसे कारज निकले या नहीं सिर्फ़ उनसे मुलाक़ात और थोड़ी बात चीत करने के वास्ते तदबीरें करते हैं और धन भी ख़र्च करते हैं ॥

५०५-(२) इसी तरह भारी तमाशा करने वालों और अनेक तरह के हुनर वालों और ख़ूबसूरत आदमियों से मिलने का भी शौक़ रखते हैं और तलाश करके उनके पास पहुँचते हैं ॥

५०६-(३) जब इस क़िस्म के लोगों से जिनका नाम ऊपर लिखा गया मेला हो जाता है तब बड़ी ख़ुशी दिल में पैदा होती है और अपनी बड़ी इज़्ज़त समझते हैं लेकिन यह सब जीव नाशमान हैं और जो कुछ कि उनसे अपना कारज भी बन आवे वह भी तुच्छ और नाशमान ॥

५०७-(४) जिन लोगों की समझ और नज़र में यह दुनियाँ और उसका सामान ओछा और नाश-मान मालूम हुआ है और वे ऐसे पद और बस्तु के खोजी हैं कि जो हमेशा क़ायम रहे और जिससे पूरा फ़ायदा हमेशा का हासिल होवे वे इस दुनियाँ के बड़े आदमी और अमीरों और राजों और हुनर वालों से मिलने में अपना भारी नुक़सान समझते हैं और ऐसों से मिलना चाहते हैं कि जो उस

सत्त वस्तु का पता और भेद और प्राप्ती की जुगत बतावें ॥

५०८-(५) ऐसे शख़्स संत सतगुर और साध गुरू हैं कि जो सच्चे और कुल मालिक के भेदी और मुसाहब हैं और जो आप भी उसका रूप हो रहे हैं ऐसों का मिलना इस संसार में निहायत मुश्किल और दुर्लभ है ॥

५०९-(६) जिस किसी को इत्तिफ़ाक़ से संत सतगुर मिल जावें वही जीव बड़भागी है और उसी को एक दिन महा सुख का स्थान प्राप्त होगा ॥

५१०-(७) संत सतगुर का दरजा कुल रचना में सब से बड़ा है यानी दुनियाँ के अमीर और राजे उनके मुक़ाबले में कुछ हक़ीक़त नहीं रखते बल्कि ब्रह्मा विष्नु महेश और कुल देवता और औतार और पैग़म्बर और आत्मा और परमात्मा और ईश्वर और परमेश्वर और ब्रह्म और पारब्रह्म का दरजा उनसे नीचा है क्योंकि जो कोई संत सतगुर से मिलकर उनके उपदेश की कमाई करैगा उसको यह सब रास्ते में मिलेंगे और वह इन सब के मुक़ाम से आगे बढ़ कर कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी का दर्शन पावेगा और निज धाम में उसको बासा मिलेगा ॥

५११-(८) पहिले तो संत सतगुर का मिलना मुश्किल है और जब मिल जावें तो उनकी पहिचान

करना महा दुर्लभ है लेकिन जिसके दिल में सच्ची चाह और दर्द कुल मालिक से मिलने का है और दुनियाँ और उसके पदार्थ और भोग उसकी नज़र में तुच्छ और नाशमान मालूम हुए हैं उसको सहज में दर्शन देते हैं और अपनी दया से सतसंग और अभ्यास करा कर आहिस्ते २ अपनी पहिचान भी बख़्शते हैं ॥

५१२--(९) संत सतगुर के सतसंग में शामिल हो कर और उनके बचन सुनकर जीवों को उनकी और कुल मालिक और उसके धाम की महिमा समझ में आवेगी और इधर दुनियाँ और उसके सब सामान की ओछी क़दर और क़ीमत प्रघट हो जावेगी और फिर उनकी दया से भाव और प्यार उनके और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में पैदा होकर दिन २ बढ़ता जावेगा ॥

५१३--(१०) इसी तरह सतसंग में शामिल होकर संत सतगुर के उपदेश की महिमा और ज़रूरत जीवों की समझ में आवेगी कि बिना उसके अभ्यास के मन और माया के जाल से छुटकारा हरगिज़ मुमकिन नहीं है ॥

५१४--(११) वह उपदेश कुल मालिक और उसके धाम और उसके रास्ते और मंज़िलों का और भी चढ़कर चलने की जुगत का भेद है जोकि [illegible] य

संत सतगुर के और कोई नहीं जानता और न बग़ैर उनकी मेहर और दया के कोई उसको कमा सकता है ॥

५१५-(१२) चढ़ने और चलने का तरीक़ा यह है कि सुरत और मन शब्द की धुन को जोकि घट २ में होरही है सुनकर उमंग के साथ ऊंचे की तरफ़ को चलें। हर एक मुक़ाम या मंज़िल का शब्द जुदा जुदा है और उसका भेद संत सतगुर न्यारा करके समझाते हैं ॥

५१६-(१३) जोकि कुल रचना चेतन्य से हुई है और उसी के आसरे ठहरी हुई है और उस चेतन्य की धार का ज़हूरा और निशान शब्द यानी आवाज़ है इस वास्ते जो कोई उस आवाज़ को पकड़ के अपने घट में प्रेम अंग लेकर चलेगा वही रास्ते की मंज़िलों को तै करता हुआ धुर मुक़ाम में जहाँ से कि आदि धार निकल कर उतरी है पहुँचेगा सिवाय इसके और कोई रास्ता या तरीक़ा धुर पद में पहुँच कर सत्त वस्तु यानी कुल मालिक राधा-स्वामी दयाल से मिलने का नहीं है ॥

५१७-(१४) सच्चा दर्दी और खोजी संत सतगुर की पहिचान आसानी से कर सकता है यानी उनके बचन सुनकर उसको अपने अंतर में शान्ती आती जावेगी और सच्चे मालिक का प्यार उसके मन में बढ़ता जावेगा और दुनियाँ और उसके पदार्थों से

उसका चित्त थोड़ा २ हटता जावेगा और घट में उनके उपदेश की कमाई से कुछ रस और आनंद मिलता जावेगा और संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और दया के परचे अंतर और बाहर मिलते जावेंगे इन सब बातों से प्रेमी जीवों को संत सतगुर की गत मत की ख़बर पड़ती जावेगी और जिस क़दर सतसंग और अभ्यास सुरत शब्द मारग का बढ़ता जावेगा उसी क़दर पहिचान भी बढ़ती जावेगी और उसके साथ प्रीत और प्रतीत भी गहिरी होती जावेगी ॥

५१८-(१५) कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की ऐसी महिमा और दया है कि वे सच्चे प्रेमियों का संजोग अपने चरनों में आप लगाते हैं यानी उनको बहुत खोज और तलाश करना नहीं पड़ता और सहज में कोई न कोई संजोग या इत्तिफ़ाक़ से सच्चे प्रेमी का संत सतगुर से मेला हो जाता है और उनके बचन सुन कर दिन २ प्रीत उनके चरनों में बढ़ती जाती है और अंतर में रस और आनद और शान्ती प्राप्त होती जाती है यही निशान और पहिचान सच्चे दर्दी और खोजी की है ॥

५१९-(१६) जब संत सतगुर की ऐसी महिमा है कि थोड़ी सी ऊपर बयान की गई तो अब ख़याल

करो कि जिस किसी को उनका दर्शन और सतसंग प्राप्त है और थोड़ी सी पहिचान भी आई है उसको किस क़दर सच्ची खुशी होनी चाहिये और किस क़दर अपनी बड़भागता समझना चाहिये और दुनियाँ के लोग जो राजों महाराजों और अमीरों और हाकिमों से मिलकर तुच्छ खुशी के मारे फूले नहीं समाते हैं और अहंकार से भर जाते हैं किस क़दर ओछे उसकी नज़र में मालूम पड़ेंगे ॥

५२०-(१७) दुनियाँ के लोग ज़रासी खुशी में जो कि असल में कुछ कारज देने वाली नहीं है बल्कि नुक़सान कराती है फूल कर हर एक के सामने अपनी मान बड़ाई की नज़र से उसका ज़िकर करते फिरते हैं लेकिन संतों के प्रेमी जन और सतसंगी अपनी सच्ची खुशी को जोकि सिर्फ़ उन्हीं के जीव का नहीं बल्कि औरों के जीवों का भी कल्यान करने वाली है किस क़दर दबाये और छिपाये हुए बर्ताव करते हैं असल में उनकी ताक़त नहीं है कि उस खुशी और आनंद को हज़म कर सकें लेकिन संत सतगुर अपनी दया से ताक़त उनको देते हैं यानी अपनी और अपने सतसंग की चारों तरफ़ मूरख और संसारी जीवों से निंदा करा के अपने प्रेमी सेवकों के मन को भीचा हुआ और कुम्हलाया हुआ रखते हैं और अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनन्द देकर ताज़ा और

हरा करते रहते हैं इस तरह उनके मन में अहं-कार नहीं आने पाता है और न वे हर एक के सामने महिमा और बड़ाई संत सतगुर और उनके सतसंग की कर सकते हैं क्योंकि संसारी और बिषई जीव क़ाबिल उनके दर्शन और सतसंग और महिमा सुनने के नहीं हैं ॥

५२१--(१८) कुल जीवों को जो अपना सच्चा कल्यान चाहते हैं मुनासिब और लाज़िम है कि जिस क़सबे या शहर मे रहते होवें या जहाँ कहीं सफ़र में उनका गुज़र होवे तहक़ीक़ात इस बात की करें कि आया वहाँ संत सतगुर बिराजते हैं या उनकी संगत वहाँ है या नहीं जो उनकी संगत मौजूद है और वे आप भी वहाँ बिराजते हैं तो ज़रूर जैसे बने तैसे और जिस क़दर हो सके उनका दर्शन और सतसंग करें और जहाँ तक बन सके थोड़ी बहुत सेवा तन मन या धन की या तीनों से उनके चरनों में करें तो चाहे उस वक़्त उपदेश न ले सकें इतनीही सेवा और दर्शन और बचन सुनने से उनके हिरदे में भक्ती का बीजा पड़ जावेगा और सिलसिला उद्धार का आइंदे को जारी हो जावेगा और चौरासी का चक्कर बन्द हो जावेगा यानी जब तक दो तीन या चार जनम में भक्ती और सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके संतों के देश में बासा नहीं पावेंगे तब तक नर देह धर के भक्ती

और अभ्यास करते रहेंगे और संत सतगुर भी दया से उनको हर जनम में मिलते रहेंगे ॥

५२२-(१९) मालूम होवे कि जिस किसी को भाग से संत सतगुर का दर्शन मिला गोया वह कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल या उनके निज पुत्र से मिला फिर उनकी दया भरी हुई नज़र की महिमा जो उस पर पड़ी कहने में नहीं आ सक्ती यानी वह दृष्टी उसको एक दिन निज धाम में जो महा प्रेम और महा सुख और महा आनंद और महा चेतन्य का भंडार है और जहाँ काल और करम और कष्ट और कलेश और जनम और मरन का निशान भी नहीं है हमेशा आनंदही आनंद रहता है पहुँचा कर छोड़ेगी और जितने उसके अगले पिछले करम है वे सब भक्ती और अभ्यास कराके आहिस्ते २ काट दिये जावेंगे और जबसे भक्ती शुरू करेगा संत सतगुर अपनी मेहर और दया से वचन सुनाकर और समझौती देकर उसको निःकर्म कर देंगे यानी जो ज़रूरी करम वास्ते सम्हाल और परवरिश अपनी देह और कुटुम्ब वग़ैरह के उससे बनेंगे वह मौज के आसरे फल की आसा छोड़कर कराये जावेंगे और इस तरह वह उनमें लिप्त नहीं होवेगा ॥

५२३-(२०) और जो इत्तिफ़ाक़ से संत सतगुर का दर्शन न होवे तो उनकी संगत में जाने और

उनके सच्चे प्रेमी जन से मिलने और बानी और बचन सुनने का वही फ़ायदा होवेगा जो संत सतगुर के मिलने से हासिल होता क्योंकि अपने सच्चे प्रेमियों के सतसंग में संत सतगुर गुप्त रूप से आप बिराजते हैं और उनके द्वारे समझौती और उपदेश देकर अपनी मेहर और दया से जीवों का कल्यान और उद्धार करते हैं और जो जीव इस संगत में शामिल होकर सच्चे मन और प्रेम से अभ्यास में लग जावें उनको सबेर अबेर अपना दर्शन देकर कृतार्थ करते हैं और गुप्त दया तो उन पर उसी दिन से कि उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें फ़रमाते हैं कि जिससे उनके हिरदे में प्रेम कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का जागता और बढ़ता जावेगा और अंतर अभ्यास में थोड़ा बहुत रस भी मिलता जावेगा ॥

---

(३७) प्रकार सैंतीसवाँ

जीव इस संसार में निहायत निबल और लाचार है अपने बल से पूरे उद्धार का जतन दुरुस्त नहीं कर सकता पर कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया अपार है जो कोई उनका बचन माने उससे वे अपनी दया से ज़रूरी

करनी कराकर उसका कारज सहज में बनाते हैं इस दया की महिमा नहीं की जा सकती है ॥

५२४-(१) जीव जबसे कि संसार में पैदा हुआ उसी वक़्त से उसको संसारियों का संग होता है और उसकी बोल चाल और समझ बूझ और शौक़ और चाह और रहनी उन्हीं के मुवाफ़िक़ होती है यानी धन स्त्री और पुत्र और जगत की मान बड़ाई और शोहरत और हुकूमत और मन और इन्द्रियों के भोग विलास उसको प्यारे लगते हैं और उन्हीं के संग में रस आता है और सुख मिलता है और उन्हीं की चाह बारम्बार उठाकर जतन और मिहनत करता है और मन में भी उन्हीं की गुनावन और ख़याल उठाता रहता है और जब अपने कुटुम्बी और रिश्तेदार और दोस्त और आशनाओं से मिले तब उनके साथ भी उन्हीं की बाबत बात चीत और ज़िकर करता है ॥

५२५-(२) यही कार्रवाई बराबर जारी रहती है और कुल जीव जिनसे इस शख़्स का मेला होता है ऐसीही कार्रवाई करते नज़र आते हैं इस सबब से यह हालत ख़ूब पक्क जाती है बल्कि स्वभाव में दाख़िल हो जाती है और बग़ैर उस कार्रवाई के मन को चैन नहीं पड़ता है और जब कभी कोई तकलीफ़ या किसी काम में निरासता होती है तब

मन इसी क़िस्म के काम या पदार्थों के लिये नई आसा बाँध कर ताक़त हासिल करता है ॥

५२६-(३) हरचंद किसी ने किसी को पकड़ा और बाँधा नहीं है लेकिन मन की हालत बँधे हुओं से ज़ियादा हो जाती है यानी इस क़दर धन और माल और कुटुम्ब परिवार और भोगों में लिप्त हो जाता है कि छुटाये नहीं छूट सकता और जो थोड़ी ज़बरदस्ती की जावे या दबाव डाला जावे तो उसमें निहायत दुखी होता है और तकलीफ़ पाता है ॥

५२७-(४) असली परमार्थ यानी सच्चे मालिक का भेद और उसके मिलने की जुगत का तो कहीं ज़िकर भी नहीं है क्योंकि यह बात बहुत कठिन बल्कि नामुमकिन समझी जाती है और इस वास्ते कोई इसकी तहक़ीक़ात भी नहीं करता और जोकि ऐसा ख़याल अर्से से लोगों के दिल में भेषों ने पैदा कर दिया है कि बग़ैर छोड़ने दुनियाँ और उसके भोगों के इस रास्ते में कोई क़दम नहीं रख सकता है और जोकि संसारी लोग दुनियाँ को छोड़ना नहीं चाहते इस वास्ते असली परमार्थ की निसबत तहक़ीक़ात भी मौकूफ़ करदी ॥

५२८-(५) रसमी यानी दुनियावी परमार्थ की कार्रवाई थोड़ी बहुत जारी मालूम होती है इसमें बहुत करके इन्द्रियों से काम लिया जाता है और

और बुद्धी के शामिल होने का ख़याल बहुत रहता है जैसे पोथी का पाठ करना या नाम और मन्त्र का माला के साथ जाप करना या ज़ाहिरी रसूम मिस्ल मूरत या किसी निशान या पाक मुक़ाम या दरिया की पूजा या ताज़ीम या ज़ियारत या अश्नान या परकर्मा वग़ैरह करना या शब्द और भजन गाना और नाचना या कथा और पोथी सुनना या दान पुन्य और ख़ैरात करना या जीवों के आराम के लिये कुवाँ बावड़ी बाग़ मक़ान और मदर्सा और ख़ैरातख़ाना और शफ़ाख़ाना और ग़री .ाना बनवाना और सदाबर्त जारी करना या परमार्थी मेला और उत्सव में शामिल होना या आम तौर पर वाज़ और उपदेश और व्याख्यान करना या और रोज़ा रखना वग़ैरह २ ॥

५२९--(६) कुल मत जो दुनियाँ में बिलफ़ेल जारी हैं उनमें अक्सर इसी क़िसम की कार्रवाई को मुक्ती का साधन तजवीज़ किया है और कोई २ तन मन को काष्टा भी देते हैं जैसे पंच अगिन तपना और जल सैन करना खड़े रहना मौन साधना दूध अहार करना या घर बार छोड़ कर जंगल या पहाड़ में अकेले रहना और स्वाँसा या मन से नाम का सुमिरन करना या नाभी या हिरदे में ध्यान लगाना वग़ैरह ॥

५३०--(७) बाज़े विद्या और बुद्धिवान लोग बेद शास्तर पुरान और कुरान और अंजील और दूसरी

मज़हबी किताबों की टेक बाँध कर और अपनी बुद्धी के मुवाफ़िक़ उनके अर्थ लगा कर या और किसी विद्यावान के समझाये हुए अर्थों की समझौती लेकर कार्रवाई कर रहे हैं और जो नेष्टावान यानी अभ्यासी लोग समझ देवें उसको नहीं मानते इस सबब से वे जो कुछ कि ज़ाहिरी करनी अपनी बुद्धी के मुवाफ़िक़ कर रहे हैं उसमें असली फ़ायदा मालूम नहीं होता लेकिन टेक और पक्ष धारन करके आपस में हुज्जत और तकरार करते हैं और एक दूसरे गिरोह को बुरा भला या ओछा या ग़लत कहते हैं ॥

५३१–(८) कोई २ सूफ़ी या वाचक ज्ञानी बन बैठे हैं और अपने को ख़ुदा या ब्रह्म मान कर या उसके साथ मन और बुद्धी की समझौती से इकताई करके निःचिन्त और निडर हो रहे हैं और जो अभ्यास कि सच्चे ज्ञानी और सूफ़ियों ने जारी किया उससे नावाक़िफ़ हैं या उसको कठिन और ग़ैरज़रूरी समझ कर छोड़ दिया है और सिर्फ़ अक़्ली और इल्मी दलीलों से अपनी समझ बूझ दुरुस्त करके राज़ी और बेपरवाह हो गये हैं लेकिन इनमें से बाज़े दर्दी अंतःकर्ण की सफ़ाई और मन को निश्चल करने के वास्ते जो जतन मुक़र्रर हैं उनको किसी क़दर शौक़ और मिहनत के साथ करते हैं और उसका फ़ायदा भी थोड़ा बहुत देखते हैं ॥

५३२-(९) कोई २ विद्या पढ़ कर मालिक की मौजूदगी में शक लाकर भक्ति भाव को छोड़ बैठते हैं और सिर्फ़ जीवों के साथ दया भाव से बर्तने और संसारी उपकार करने को मुनासिब और ज़रूरी करम समझते हैं और जीव के अमर होने के क़ायल नहीं हैं यह लोग नास्तिक कहलाते हैं वे सिर्फ़ एक क़िस्म की क़ूवत को (जिसको चाहे चेतन्य कहो) और माया और उसके मसाले को क़दीम* और सब जगह व्यापक मानते हैं ॥

५३३-(१०) कसरत से नादान लोग छोटे २ देवताओं या क़बरों या मुर्दों या भूत पलीत मसान वग़ैरह को मानते और पूजते हैं, कोई उनको सच्ची बात बताने वाला या मालिक की ख़बर देने वाला नहीं मिलता और न वे अपनी टेक को छोड़ना चाहते हैं ॥

५३४-(११) जोगेश्वरों और औतारों और पैग़म्बरों ने परमेश्वर या ब्रह्म या ख़ुदा का भेद दिया और इशारे और मुअम्मे में और कहीं २ थोड़ा खोल कर उसके मिलने का रास्ता भी बर्णन किया लेकिन जो कि उसमें दुनियाँ से बैराग करना ज़रूरी और लाज़मी था और कुछ अभ्यास भी कठिन और ख़तरनाक था इस सबब के बहुत कम लोगों ने उसको अपने वक़्त में माना और बाद उनके सब के सब करम कान्ड यानी ज़ाहिरी और बाहरी

* अनादी ।

कार्रवाई में या विद्या बुद्धी के गढ़े हुए मत और समझौती और बिलास में अटक रहे ॥

५३५-(१२) बाद जोगेश्वरों और औतारों और पैग़म्बरों वग़ैरह के संत सतगुर इस संसार में प्रघट हुए और उन्होंने दया करके भेद सत्त लोक और पुरुष दयाल का और तरीक़ा पहुँचने उस धाम का जो कि आत्मा और परमात्मा और ख़ुदा और ब्रह्म और पारब्रह्म के परे है सुरत शब्द योग के अभ्यास से बताया लेकिन बहुत थोड़े जीवों ने उनके वक़्त में इस उपदेश को क़बूल किया और जो कि कसरत से लोग अनेक मतों और पूजाओं और करम कान्ड में भरम रहे थे उन्होंने संतों के बचन को नहीं माना बल्कि उलटी निन्दा करने लगे और जीवों को उनके सन्मुख जाने से रोकते रहे इस सबब से सुरत शब्द मारग का अभ्यास आम तौर पर जारी नहीं हुआ और बाद गुप्त होने संतों के उनके घराने में भी वही ज़ाहिरी रसूम और पूजा या बाचक ज्ञान जैसा कि और मतों में फैला हुआ है जारी हो गया और शब्द मारग को विद्या और बुद्धिवानों ने उलटे सीधे अर्थ लगा कर बिल्कुल गुप्त कर दिया या उसको जोग अभ्यास जो कि हमेशा से कठिन और नामुमकिन मशहूर हो रहा है क़रार देकर उसकी कार्रवाई बंद कर दी क्योंकि पिछले वक़्तों में उसके साथ अक्सर पवन का रोकना भी शामिल किया गया था ॥

५३६-(१३) ऐसी ख़राब हालत परमार्थ के मुआमले में जगत की देख कर कि कोई जीव भी सच्चे रास्ते पर नहीं चलता और न किसी ऊँचे मुक़ाम तक पहुँचता है और इधर जीवों को निहायत दुखी और बलहीन मुलाहिज़ा करके कि कसरत से रोग और सोग और निरधनता और अनेक तरह के दुक्खों में गिरफ़्तार हो रहे हैं, कुल मालिक राधास्वामी दयाल अति दया करके आप संत सतगुर रूप धारन करके जगत में प्रगट हुए और अपने निज नाम और निज धाम का भेद और रास्ते और मंज़िलों का हाल और आसान तरीक़ा चलने और चढ़ कर पहुँचने सुरत का निज धाम में तफ़सील के साथ खोल कर बर्णन किया कि जिसको ग्रहस्त और बिरक्त और औरत और मर्द बग़ैर छोड़ने रोज़गार और घर बार के सहज में कर सक्ते हैं और थोड़े ही अर्से के अभ्यास से अपना सच्चा और पूरा उद्धार होता हुआ इसी ज़िंदगी में देख सक्ते हैं ॥

५३७-(१४) पेश्तर के ज़माने में लोग सुरत और शब्द की धार से जो ऐन चेतन्य और जान की धार है बेख़बर रहे और इस सबब से उन्होंने प्राण की धार को मुख्य समझ कर उसी धार की सवारी का अभ्यास यानी प्राणों को रोकना और चढ़ाना जारी किया लेकिन जो कि उसके संजम बहुत कठिन हैं

और ख़तरों का बहुत ख़ौफ़ है इस वजह से यह अभ्यास आम तौर से जारी नहीं हुआ यानी ग्रहस्ती तो उसको मुतलक़ नहीं कर सके और विरक्तों से भी कठिनता के सबब से नहीं बना ॥

५३८–(१५) लेकिन अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने शब्द की महिमा और उसका भेद प्रघट करके फ़रमाया कि प्राण की धार भी शब्द यानी चेतन्य की धार के आधीन है क्योंकि जिस वक्त आदमी सो जाता है सुरत जो कि ऐन शब्द स्वरूप है और जाग्रत अवस्था में आँखों में जिसका बासा है खिँच जाती है और हरचंद प्राण की धार उस वक्त बदस्तूर जारी रहती है लेकिन देह और इन्द्रियों की कार्रवाई बन्द हो जाती है और जब सुरत की धार का ज़ियादा खिंचाव होता है तब प्राण की धार भी सिमट जाती है ॥

५३९–(१६) और यह भी फ़रमाया कि जो सुरत यानी शब्द की धार पर सवार होकर ऊँचे देश यानी घर की तरफ़ चलना शुरू करेगा वही माया के घेर के पार धुर धाम में जहाँ माया बिलकुल नहीं है पहुँचेगा और उसका सच्चा और पूरा उद्धार होगा और जो कोई प्राण और रोशनी और और किसी धार पर सवार होकर चलेगा वह उस मुक़ाम तक जहाँ से कि वह धारें बरामद हुई हैं पहुँच सक्ता है लेकिन माया की हद्द में रहेगा और इस

वास्ते उसका जनम मरन चाहे बहुत देर से होवे छूट नहीं सक्ता ॥

५४०–(१७) सिवाय प्रघट करने सुरत शब्द मारग के जिसको सहज योग कहते हैं कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके प्रेम और भक्ती पर ज़ियादा ज़ोर दिया और फ़रमाया कि जो कि कुल मालिक प्रेम का भंडार है और शब्द की धार जो उससे निकसी वही प्रेम की धार है और जहाँ वह धार पिंड में ठहर कर सुरत कहलाई वह भी प्रेम स्वरूप है यानी कुल जीव प्रेम स्वरूप हैं इस वास्ते जो कोई कुल मालिक और संत सतगुर के चरनों में भक्ती और इश्क़ करेगा और प्रेम अंग लेकर अंतर में शब्द को सुनेगा उसी का रास्ता आसानी से तै होगा और वही राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया से एक दिन धुरधाम में पहुँचेगा और बग़ैर प्रेम और दया के इस रास्ते का तै होना मुश्किल है ॥

५४१–(१८) और फिर अति दया करके फ़रमाया कि जो मालिक के अरूप और शब्द स्वरूप में बग़ैर संसार और उसके भोगों से किसी क़दर बैराग धारन करने के प्रेम जल्दी नहीं आ सकता इस वास्ते पहिले सतगुर स्वरूप में प्रीत करनी चाहिये और जोकि यह स्वरूप उसी क़िस्म का है जैसा कि सेवक का यानी देह स्वरूप, इस सबब से इसमें

प्रीत आसानी से लग सकती है क्योंकि सब जीव इसी क़िस्म के रूपों में जैसे स्त्री पुत्र माता पिता भाई बंद और रिश्तेदार और बिरादरी के लोगों से और भी उस्ताद और हाकिम व हकीम और राजा से और जिन २ से काम पड़ता है दरजे बदरजे प्रीत कर रहे हैं बल्कि जानवरों से भी जैसे तोता मैना कुत्ता बिल्ली घोड़ा हाथी वग़ैरह से भी प्यार करते हैं और वे भी उलट कर प्यार और दीनता करते हैं फिर सतगुर के स्वरूप में जो जीव का सच्चा उद्धार और कल्यान करता है थोड़ी बहुत प्रीत लाना कुछ मुश्किल नहीं है ॥

५४२-(१९) वास्ते बढ़ाने प्रीत के भक्ती में चार क़िस्म की सेवा मुक़र्रर की गई है एक तन की दूसरी धन की तीसरी मन की और चौथी सुरत की। पहिली और दूसरी क़िस्म की सेवा से प्रीत जागती है और बढ़ती है और तीसरी और चौथी क़िस्म की सेवा से सुरत और मन अंतर में सिमट कर चलते हैं और चढ़ते हैं और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों में प्रीत और प्रतीत को बढ़ाते हैं और मज़बूत करते हैं और अभ्यास में तरक़्क़ी होती है ॥

५४३-(२०) जब सतसंग और सेवा करके और बचन सुन कर और समझ कर जीव के दिल में थोड़ा बहुत भाव और प्यार कुल मालिक राधा-

स्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों में आजावे और वह सतगुर और उनके प्रेमी भक्तों से किसी क़दर नाता परमार्थी मुहब्बत का जोड़ लेवे तो फिर उसके उद्धार का सिलसिला सहज में जारी हो जावे और अंतर में भी अभ्यास के वक़्त थोड़ा बहुत रस मिलने लगे ॥

५४४-(२१) कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है कि जो कोई उनके चरनों में गहिरी प्रीत यानी स्त्री पुत्र धन और अपनी देह और जगत की मान बड़ाई से ज़ियादा लावे तो उसी का नाम गुरमुख है और उसके लिये महल में जाने के वास्ते कोई रोक टोक और अटक नहीं रहती यानी इसी जनम में उसका उद्धार हो जाता है और वह इसी ज़िंदगी में अपनी ऐसी हालत को परख सकता है, और जो कोई इस दरजे से कम की प्रीत करे जैसे क़रीब या दूर के रिश्तेदारों से या बिरा-दरी के लोगों से या जिनसे अक्सर या कभी २ काम पड़ता है तो उसके उद्धार का भी सिलसिला जिस दरजे की प्रीत होगी उसके मुवाफ़िक जारी हो जावेगा और एक दो या तीन हद्द चार जनम में जैसा प्रेम बढ़ता जावेगा काम पूरा बन जावेगा ॥

५४५-(२२) यहाँ इस बात का बयान करना मुनासिब और ज़रूर मालूम होता है कि थोड़ी सी

थोड़ी प्रीत वाले का उद्धार संत सतगुर किस तरह करते हैं यानी जिसके दिल में कि मुख्यता ं ार और उसके पदार्थों और कुटुम्ब परिवार की रही और संत सतगुर और उनके सतसंग से बहुत हलका नाता जोड़ा तो उसको वक्त मौत के दस्तूर के मुवाफ़िक़ पहिले संसारी प्रीतों और करमों का चक्कर चलाकर जब नम्बर संतों की प्रीत और सेवा का आवेगा उसी वक़्त संत सतगुर अपना दर्शन देकर और शब्द सुनाकर मरने वाले की सुरत को अपने चरनों में लिपटा कर ऊँचे सुख स्थान में ले जाकर बासा देवेंगे और वहाँ कुछ अर्से तक रखकर और अपने दर्शन और बचनों से उसकी प्रीत और प्रतीत को बढ़ाकर फिर नर देह मे जनम देंगे और सतसंग में मिलाकर और भक्ती और अभ्यास कराकर ज़ियादा ऊँचा दरजा बख़्शेंगे, इसी तरह दो तीन या चार जनम में धुरधाम में पहुँचा कर बासा देवेंगे कि जहाँ किसी क़िस्म का कष्ट और कलेश और जनम मरन का चक्कर नहीं है और सदा आनंदही आनंद रहता है॥

५४६-(२३) मालूम होवे कि अंत समय पर सब जीव बसबब उनकी प्रीत और बंधन के संसार और कुटुम्ब परिवार और अपनी देह में काल के हाथ से झटके सहते हैं और उनके करमों का चक्कर भी उस वक्त बड़े ज़ोर शोर से फिरता है

और जैसे करम हैं उसके मुवाफ़िक़ सुरत के खिँचाव के वक्त दुख सुख का भोग देते है जो उस जीव ने संतों के दर्शन किये हैं और कुछ सेवा और अभ्यास भी किया है तो इस करम के पेश होने के वक्त संत सतगुर दर्शन देकर उस जीव को काल की खींचा तानी से बचाकर सीतलता और आनन्द बख़्शते है और वह जीव ऐसी हालत में बहुत शौक़ और ज़ोर के साथ उनके चरनों में लिपटता है जैसे कि डूबता हुआ आदमी बचाने वाले से चिमटता है उस वक्त संत उसकी सुरत को ऊँचे मुक़ाम में ले जाते हैं और नीचे की तरफ़ झोका खाने से बचा लेते है ॥

५४७-(२४) अब ग़ौर करना चाहिये कि संत सतगुर से जो समरत्थ और दयाल हैं जैसी तैसी प्रीत लगाने और नाता जोड़ने में किस क़दर भारी फ़ायदा है कि चैारासी का चक्कर बन्द होकर जीव के निज घर यानी कुल मालिक के धाम की तरफ़ चलने और चढ़ने का रास्ता जारी हो जाता है और आइंदा उनकी दया और मेहर से प्रीत और प्रतीत की दात पाकर दिन २ प्रेम चरनों में बढ़ता और रास्ता आसानी से तै होता जाता है ॥

५४८-(२५) कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके फ़रमाया है कि जो कोई उनके प्यारे प्रेमी भक्तों के साथ जैसी तैसी प्रीता करेगा

और थोड़ा बहुत नाता जोड़ेगा तो उसको भी वही फ़ायदा हासिल होगा जैसा कि उनके या संत सतगुर के चरनों में प्रीत करने से हासिल होता है इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जैसे वह संसार में जाबजा और हर एक से अपने मतलब के वास्ते प्रीत लगाते हैं ऐसेही वास्ते अपने जीव के सच्चे उद्धार और कल्यान के कुल मालिक राधास्वामी दयाल या संत सतगुर के चरनों में जो वे भाग से मिल जावें और नहीं तो उनके सच्चे प्रेमी भक्त से जो उनसे मिला हुआ है जैसी तैसी प्रीत करें और नाता जोड़ें तो तकलीफ़ के वक्तों में ख़ास कर मौत के वक़्त उनकी ज़रूर थोड़ी बहुत सहायता की जावेगी और चौरासी के चक्कर से बचाकर और भक्ती और अभ्यास कराकर एक दिन निज घर में जो परम आनंद का भंडार है बासा दिया जावेगा ॥

५४९-(२६) कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की महिमा कहाँ तक बर्णन की जावे कि उनके दर्शन और स्पर्श और चरनों के प्रताप से बेशुमार जीवों का कारज बनता है यानी जिन जीवों ने उनका दर्शन किया और कुछ सेवा बन आई चाहे वह मनुष्य होवें या जानवर उनके उद्धार का भी सिलसिला जारी हो जाता है यानी पहिले जानवरों को नर देही मिलती है और फिर परमार्थ

की करनी में शामिल होते हैं और मेहर और दया से रफ़्ते २ एक दिन उनका काम भी पूरा बन जाता है ॥

५५०-(२७) कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का जब संत सतगुर रूप धारन करके प्रघट होते हैं विस्तार कहाँ तक कहा जावे कि जो कोई चीज़ खाने पीने और पहिनने ओढ़ने वग़ैरह की उनकी सेवा में आई तो उस चीज़ के लाने वाले से लेकर जितने आदमी और जानवरों का हाथ उसकी तैयारी में लगा है या जिस किसी ने जैसी तैसी उसमे मदद दी है उन सब पर थोड़ी बहुत दया पहुँच कर उसी जनम में चाहे दूसरे जनम में ज़रूर थोड़ी बहुत कार्रवाई परमार्थ की करा कर उनको ऊँचे और सुख स्थान में वासा देगी, जैसे किसी ने कोई कपड़ा तैयार करके पहिनाया तो उस शख़्स से लगा कर ज़मींदार तक जिसकी ज़मीन में रुई बोई गई और जिस २ ने उसके जोतने और बोने और चिनने और साफ़ करने और धुनने और कातने और बुनने और रंग करने और बेचने और सीने वग़ैरह में काम दिया है वह सब कार्रवाई सतगुर की सेवा में शुमार होकर उसके एवज़ में उनको थोड़ा बहुत भक्ती का दान मिलैगा और इस तरह सिलसिला उनके उद्धार का जारी हो जावेगा अब ख़याल करो कि इस दया और फ़ैज़ का कुछ शुमार नहीं हो सकता ॥

(३८) र .ती वाँ

सब लोग चाहते हैं कि अज्ञा री और न वर औलाद होवे और ऐसा उपकारी म आवे कि जिससे उनकी यादगारी दुनियाँ में रहे मगर यह बड़ी दुर्लभ बात है पर जिस किसी ने । परमार्थ कमाया तो बग़ैर उसकी ख़ाहिश के बेशुमार सेवक उसके चरन में आवेंगे कि जो दिलोजान से आज्ञा में बरतेंगे और उसके और उपदेश की शोहरत जगह २ करेंगे और यह सिलसिला उसकी यादगार का देश २ में हज़ारों बरस तक जारी रहेगा ॥

५५१-(१) इस दुनियाँ में सब लोगों के मन में ऐसी चाह भरी रहती है कि उनके आज्ञाकारी और नामवर औलाद पैदा होवे और उसका सिलसिला बराबर जारी रहै और तरह तरह के काम करना चाहते हैं कि जो बतौर उनकी यादगार के दुनियाँ में क़ायम रहें ॥

५५२-(२) इस ख़ाहिश के पूरा करने के वास्ते अनेक तरह के जतन और मिहनत लोग करते हैं और फिर भी उनका मतलब पूरा २ हासिल नहीं

होता और बहुत कम ऐसे लोग हैं कि जिनकी औलाद का सिलसिला या कोई ख़ास यादगार बहुत अर्से तक जारी और क़ायम रहे ॥

५५३-(३) लेकिन जो कोई सच्चे मन से मालिक के चरनों में भक्ती करे और दुनियाँ के भोगों और नामवरी की चाह छोड़कर अपना तन मन धन जिस क़दर मुमकिन होवे मालिक की सेवा में लगावे तो उसको सिवाय बख़्शिश करने परम पद के मालिक मेहरबान होकर दुनियाँ में भी भारी नामवरी और बड़ाई देता है कि जो दिन २ बढ़ती रहती है ॥

५५४--(४) परमार्थ की कार्रवाई में पहिले प्रसन्नता सतगुर और मालिक की हासिल होनी चाहिये तब कुछ दात और बख़्शिश मिलेगी और यह प्रसन्नता सतसंग और सेवा और अंतर मुख अभ्यास से आहिस्ते २ हासिल होगी ॥

५५५-(५) जो कोई अपने जीव का सच्चा कल्यान और उद्धार चाहता है और कुल मालिक का दर्शन उसके निज धाम में पहुँच कर करने की जिसके मन में ज़बर आसा है उसको चाहिये कि पहिले संत सतगुर का खोज करे और जो वे न मिलें तो उनके सच्चे प्रेमी सेवक से जिसने उनका सतसंग किया है और उनके उपदेश के मुवाफ़िक अभ्यास कर रहा है और अंतर में कुछ रास्ता तै कर चुका है और

उनकी दया से धुर धाम में पहुँचनहार है मिल कर और रास्ते का भेद और तरीक़ा चलने का सुरत शब्द मारग से दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन दृढ़ करता जावे तो उसको अंतर में कुछ रस और आनंद भी मिलेगा और दया भी थोड़ी बहुत मालूम पड़ेगी ॥

५५६--(६) जिस क़दर बिरह और प्रेम अंग लेकर अभ्यास करता जावेगा उसी क़दर राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की महिमा और उनकी म गत की ख़बर पड़ती जावेगी और मन में सच्चा और तेज़ शौक़ उनके दर्शनों का पैदा होवेगा और फिर संत सतगुर भी दया करके उसको दर्शन देंगे और उसकी प्रीत और प्रतीत को बढ़ावेंगे और अभ्यास में तरक़्क़ी देवेंगे ॥

५५७--(७) मालूम होवे कि सच्चे मालिक की भक्ती किसी के हिरदे में बग़ैर सतसंग संत सतगुर और उनके प्रेमी जन के पैदा नहीं हो सकती और सुरत शब्द मारग का भेद भी (जिसके बग़ैर कोई घट में रास्ता तै करके निज धाम में नहीं पहुँच सक्ता है) सिवाय संत सतगुर या उनके प्रेमी के और कोई नहीं दे सक्ता है और बिना भक्ती कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के किसी का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं हो सक्ता,

इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि जो अपने जीव का कारज बनाया चाहें तो राधास्वामी संगत में शामिल होकर जैसी तैसी भक्ती और जिस क़दर बन सके अभ्यास सुरत शब्द मारग का करें ॥

५५८-(८) जो कोई कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की भक्ती में बढ़ कर क़दम रक्खेगा यानी मन इन्द्रियों के भोगों और संसार की मान बड़ाई की चाह छोड़ कर चरनों का रस और आनंद हासिल करने के वास्ते मिहनत करेगा वही संत सतगुर और राधास्वामी दयाल का प्यारा होवेगा और वही ख़ास दया और मेहर का अधिकारी समझा जावेगा ॥

५५९-(९) ऐसे भक्त को गुरमुख कहते हैं और वही महल में दख़ल पावेगा और संसार में भी बिना उसकी चाह और माँग के कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर उसको ज़ियादा से ज़ियादा शोहरत और बड़ाई बख़्शेंगे और बहुत से जीवों का उपकार और उद्धार उसके रे करावेंगे ॥

५६०-(१०) अब ख़याल करना चाहिये कि दुनियाँ में जो कोई ज़ियादा से ज़ियादा मिहनत करे और अपना धन भी ख़र्च करे तो भी उसको वह शांती और आनंद और बड़ाई नहीं हासिल हो सक्ती है जो

परमार्थ में सच्चे मालिक की भक्ती करने से बग़ैर चाह और कोशिश के सहज में प्राप्त हो सक्ती है फिर जो कोई दुनियाँ की मान बड़ाई और यादगार की चाह लेकर जतन करते हैं किस क़दर भूल और में पड़े हुए हैं जो वे दुनियाँ के हाल को ग़ौर से मुलाहिज़ा करके और ज़रा अपने मन में सोच और बिचार लाकर परमार्थ में थोड़ा बहुत जतन करना शुरू करें तो उनको चंद रोज़ के सतसंग और अ स करने से मालूम हो जावेगा कि इस कार्रवाई से उनके जीव का सहज कल्यान और उद्धार होना मुमकिन है और दुनियाँ की बड़ाई और यादगार भी उनको बग़ैर उसके वास्ते कोई ख़ास जतन करने के मौज से ज़ियादा से ज़ियादा हासिल होवेगी ॥

५६१-(११) बहुत से लोग वास्ते क़ायम रखने अपने नाम और यादगार के किताब या मकान या मंदिर और मसजिद और गिरजा और कुएँ बावड़ी और तालाब और बाग़ और मुसाफ़िरख़ाना और अजायबख़ाना और दवाईख़ाना और मदर्सा और पाठशाला और पुल और नहरें और धरमशाला बनाते हैं और ख़ैरातख़ाना और सदावर्त जारी करते हैं यह सब काम परउपकार के हैं यानी इन से जीवों को सालहा साल फ़ायदा और फ़ैज और आराम पहुँचता है लेकिन जो फ़ायदा कि पर र्थी कार

से हासिल होता है वह बहुत भारी है यानी उससे जीवों की चौरासी और जनमान जनम के दुक्खों से हमेशा का बचाव हो जाता है और महा सुख और परम आनंद के स्थान में बिस्राम पाकर हमेशा की खुशी हासिल होती है ॥

५६२-(१२) परमार्थी उपकार का फ़ायदा और फ़ैज़ बेशुमार जीवों को बहुत से देशों में पहुँच सक्ता है और उपकार करने वाले के बचन और बानी और उपदेश और हिदायतें भारी यादगार हैं कि वह हज़ारों बरसों तक देशान्तर में जारी रहती हैं और उपकार करता के नाम को हमेशा बड़े भाव और प्यार और अदब के साथ ज़िंदा रखती हैं ॥

५६३-(१३) परमार्थी उपकार के संग संसारी उपकार भी जिसका ज़िकर दफ़ा ५६१ नम्बर ११ में हुआ बराबर जारी रहता है यानी परमार्थी लोग अपने मत के आदि गुरू और आचारज के नाम से सैकड़ों बल्कि हज़ारों मकान जीवों के आराम और फ़ायदे के वास्ते बनाते हैं इस तरह दोनों क़िस्म का उपकार परमार्थी शख़्स की ज़ात से उसकी ज़िंदगी में और भी बाद उसके गुप्त होने के हज़ारों बरस देशों २ में जारी रहता है इस वास्ते जिससे परमार्थ की पूरी करनी यानी सच्चे मालिक और संत सतगुर की पूरी भक्ती बन आवे वही मालिक का प्यारा और महा बड़भागी है और इस काम का इरादा

सब को वास्ते अपने जीव के फ़ायदे और भी और जीवों के कल्यान के लिये मज़बूत करना चाहिये और ख़ास कर उन लोगों को जिनकी नज़र परकार पर है और उसके वास्ते तन मन और धन करने को तैयार हैं ज़रूर परमार्थ में बढ़ कर क़दम रखना मुनासिब है तो उसमें दोनों मतलब हासिल होंगे यानी अपना और बहुत से जीवों का परमार्थी और संसारी सच्चा उपकार बन पड़ेगा ॥

५६४-(१४) और मालूम होवे कि सिवाय परमार्थी बड़ाई और शोहरत और उपकार और यादगार के मालिक के सच्चे भक्त को बहुत भारी मर्तबा और अधिकार महल में दख़ल पाने का हासिल होता है और हज़ारों और लाखों जीव उसकी सेवकाई में दाख़िल होकर अपने जीव का कारज बनवावेंगे और दिलोजान से उसका हुकम मानेंगे और बहुत शौक़ के साथ जगह २ उसका नाम और मत प्रघट करेंगे और यह सिलसिला देशों में बराबर हज़ारों बरस जारी रहेगा और दिन २ बढ़ता और फैलता जावेगा ॥

५६५-(१५) अब ख़याल करो कि दुनियाँ की औलाद परमार्थी सिलसिले के मुक़ाबले में किस क़दर कार्रवाई कर [illegible]ी है और कितनी जगह में वह कार्रवाई जारी और क़ायम रह सक्ती है और इसी तरह संसारी परउपकार के काम थोड़ो जगह

में और थोड़े जीवों को थोड़े अर्से तक फ़ायदा पहुँचा सक्ते हैं मगर परमार्थी सेवकों और परमार्थी कामों की बराबरी हज़ारवें हिस्से में भी नहीं कर सक्ते ॥

---

(३९) प्रकार उन्तालीसवाँ

हर एक आदमी चाहता है कि किसी को अपना ऐसा संगी और मददगार बनावे कि वह उसको हर वक़्त मदद दे और रक्षा करे पर कोई भी सच्चा और पूरा मददगार और हर मौक़े पर सहायता करने वाला नहीं मिल सक्ता लेकिन जिस किसी ने सच्चे गुरू और नाम यानी शब्द की सरन ली और उनको अपने घट में बसाया और प्रघट किया तो वह उसके दम दम के सहाई और मददगार हैं और किसी वक़्त और किसी हालत में उससे जुदा नहीं होते ॥

५६६-(१) हर एक शख़्स दुनियाँ में किसी न किसी क़िस्म का सहारा या आसरा या मददगार अपने पास रखना चाहता है कि ज़रूरत के वक़्त काम आवे और इस ग़रज़ से कोई धन या मिलकियत या ज़मींदारी या और किसी क़िस्म की आमदनी

का आसरा रखता है और स्त्री और पुत्र या ख़ास रिश्तेदार या कोई मोतमिद और पुराने नौकर को अपने संग रखता है और उनको अपना निज भेद देता है ताकि वक़्त ज़रूरत के मदद देवें और रक्षा करें ॥

५६७--(२) इसमें कुछ शक नहीं कि दुनियाँ के बहुत से कामों में धन और औलाद और दोस्त और रिश्तेदार वग़ैरह से मदद मिलती है मगर बहुत से मौक़े ऐसे हैं जैसे रोग सोग और कोई नागहानी आफ़त और सदमा वग़ैरह और ख़ास कर मौत के वक़्त कोई कुछ मदद नहीं दे सकता है और मुफ़लिसी के वक़्त बहुत से रिश्तेदार और दोस्त और कुटुम्ब परिवार की नज़र बदल जाती है और बजाय मदद देने के अक्सर संग भी छोड़ देते हैं ॥

५६८--(३) ज़ाहिर है कि किसी सच्चे संगी और मददगार की ज़रूरत दुनियाँ में और भी परमार्थ में बहुत है बग़ैर उसके कार्रवाई दुरुस्त नहीं बन पड़ती है ॥

५६९--(४) जबकि इस दुनियाँ का का [illegible]ना सब नाशमान है तो यहाँ का संगी भी कोई सच्चा और पूरा नहीं हो सकता लेकिन परमार्थ में सतगुर और कुल मालिक जो शब्द स्वरूप हैं इस जीव के सदा संग रहते हैं और जो यह सच्चे मन से उनकी

सरन लेवे और भक्ती इख़्तियार करे तो वे इसकी जब २ और जैसा २ मुनासिब यानी इसके हक़ में बेहतर होवे इसकी सहायता और रक्षा करते हैं और एक छिन भी कभी इससे जुदा नहीं होते ॥

५७०--(५) दुनियाँ में जो परमार्थ की कार्रवाई जारी है वह संसार के साथ तअल्लुक़ और सम्बन्ध रखती है उसमें सच्चे मालिक का पता और भेद और उससे मिलने की जुगत का ज़िकर नहीं है अल-बत्ते नीचे के दरजे के मालिकों का जैसे ब्रह्म और ईश्वर और परमात्मा और औतार स्वरूपों का इष्ट बंधवाया जाता है और पिछले महात्मा या बड़े देवता या पीर पैग़म्बर या औलिया का आसरा और सहारा लेकर कार्रवाई की जाती है पर इनमें से किसी के निज स्वरूप और निज धाम का भेद नहीं दिया जाता और न तरीक़ा उनसे मिलने का अपने घट में चलने और चढ़ने का समझाया जाता है इस सबब से क़रीब २ कुल मत वाले या तो नक़ल में अटके रहते हैं या ग़ायब मालिक का बेठिकाने और बेक़ायदे ध्यान या अनुमान या ख़्याल करते हैं और ऐसी कार्रवाई से उनको न तो कभी अपने इष्ट का दीदार या कुछ जलवा नज़र आता है और न उनके मन में सच्चा और गहिरा प्रेम उससे मिलने का पैदा होकर बढ़ता है फिर ख़्याल करो कि यह कार्रवाई उनकी वक़्त सख़्ती

और सदमा और तकलीफ़ और मौत के किस क़दर काम दे सकती है, ल तो यह है कि ऐसे इष्ट बांधने से सिवाय बिरले सच्चे प्रेमी के और किसी को वक्त ज़रूरत के कुछ भी सहारा नहीं मिल सकता है और बसबब न होने सच्चे और पूरे प्रेम और भेद निज स्वरूप और निज धाम उस इष्ट के कुछ भी मदद उससे नहीं मिल सकती है क्योंकि ऐसे परमार्थी लोग जब अपने इष्ट का ख़याल करते हैं तब उनकी नज़र उसकी नक़ल या निशान पर जाती है और वह नक़ल और निशान जड़ हैं और इस वास्ते कुछ मदद नहीं दे सकते ॥

५७१–(६) इस वास्ते जो कोई सच्ची मदद और सहारा और रक्षा चाहता है उसको मुनासिब है कि सच्चे मालिक की भक्ती करे और इस भक्ती की रीत और क़ायदा सिर्फ़ सच्चे और पूरे गुरू से जिनको संत सतगुर कहते हैं मालूम हो सकता है ॥

५७२–(७) इस ी में सिर्फ़ ज़बानी महिमा और अस्तुत गाना और बाहरी पूजा वग़ैरह करना नहीं है बल्कि अभ्यास चलने और चढ़कर मिलने का अपने भगवंत यानी कुल मालिक से उसके ऊँचे धाम में जारी है और उसको सुरत शब्द योग कहते हैं यानी सुरत रूह को आवाज़ में जो हर एक के घट में मालिक के दरबार से बराबर आती है लगा कर चढ़ाना ॥

५७३–(८) सच्चे खोजी को चाहिये कि पहिले संत सतगुर या उनके सतसंग की तलाश करे और वहाँ जाकर कोई दिन बानी और बचन सुने और संत मत के क़ायदे और भेद कुल मालिक और उसके धाम और रास्ते का और तरीक़ा चलने का दरियाफ़्त करके थोड़ा बहुत अभ्यास शुरू करे और संत सतगुर की दया लेकर उनकी और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करे तब आहिस्ते आहिस्ते अंतर में कुछ रस और आनंद और दया के परचे पाकर प्रीत और प्रतीत बढ़ेगी और मन सच्चा सहारा और आसरा उनकी दया का लेगा ॥

५७४--(९) इस तरह सतसंग और अभ्यास जारी रखने से बहुत कुछ फ़ायदा अंतर में मालूम होगा और जिस क़दर प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी उसी क़दर अभ्यासी को ख़बर पड़ती जावेगी कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर उसके अंग संग मौजूद हैं और उसकी हर तरह से निगरानी और रक्षा कर रहे हैं ॥

५७५–(१०) फिर उस अभ्यासी को पूरा भरोसा दया का रफ़्ते २ हो जावेगा और वक़्त तकलीफ़ और ख़ौफ़ और चिन्ता वग़ैरह और ख़ास कर मृत्यु के समय थोड़ी बहुत सहायता होती हुई और मदद मिलती हुई नज़र पड़ेगी ॥

५७६-(११) अब ख़याल करो कि संत सतगुर और कुल मालिक से बढ़कर रचना भर में कोई नहीं है और जब उनके चरनों में जीव की गहिरी प्रीत और प्रतीत आगई और वहाँ से समय २ पर दया और सम्हाल होती हुई नजर आने लगी तो फिर जीव को किस क़दर खुशी और शान्ती ऐसे सच्चे और पूरे सहाई और रक्षक के हर दम संग होने की हासिल होगी और चाहे वह अकेला रहे या दुनियाँ के संगियों का संग करे उसके मन में हमेशा ताक़त और भरोसा अपने सच्चे सहाई कुल मालिक का रहेगा और सब तरह से वह अपने अंतर में निःचिन्त और निरभय हो जावेगा ॥

५७७-(१२) इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब है कि ज़हाँ दुनियाँ के सहारे और आसरे और संगियों का अपने आराम और मदद के वास्ते बंदोबस्त करते हैं उसके साथही सच्चे मालिक का जो घट २ में मौजूद है भेद लेकर उससे मिलने का भी जतन अंतर में करते रहें और उसकी और संत सतगुर की सरन सच्ची और पक्की लेकर उनकी दया और सहायता को प्रत्यक्ष अपने संग यानी अंतर और बाहर देखते जावें तो बहुत तकलीफ़ों और दुखों से किसी क़दर बचाव हो जावेगा और ज़रूरत के वक्त ख़ास दया और मदद मिलती रहेगी और अख़ीर वक्त पर बजाय कष्ट और कलेश के निहा-

यत दरजे का सुख और आनंद प्राप्त होगा और चौरासी के चक्कर से निस्तारा हो जावेगा और रफ़्ते २ एक दिन कुल मालिक के धाम में बासा मिल जावेगा ॥

---

(४०) प्रकार चालीसवाँ

लोग अनेक तरह के अभ्यास करते हैं शुरू में कोई दिन रस आता है फिर आहिस्ते २ वह अभ्यास साधारन और फीके हो जाते हैं और उनका फल भी जैसा चाहिये हासिल नहीं होता लेकिन राधास्वामी मत के अभ्यासी को बसबब चलने चाल और तै करने रास्ते के हमेशा नवीन रस और आनंद मिलता है और इस तरह इसका शौक़ और प्यार दिन २ बढ़ता जाता है यहाँ तक कि एक दिन कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में जोकि महा सुख और महा आनंद का अमर और अजर भंडार है पहुँच कर हमेशा को मगन और निःचिन्त हो जावेगा ॥

५७८--(१) वास्ते प्राप्ती मुक्ति या परमार्थी लाभ के अनेक तरह के साधन लोग करते हैं और उनमें किसी २ को थोड़ा फ़ायदा भी शुरू में मालूम होता है लेकिन कुछ अर्से तक वही काम करते २ साधारन अंग हो जाता है यानी शौक़ और रस हलका होता चला जाता है यहाँ तक कि फिर उस कार्रवाई में मन बहुत कम संग देता है और स्वभावक यानी ऊपरी तौर से वह कार्रवाई जारी रहती है ॥

५७९--(२) सबब इसका यह है कि जो रस या फ़ायदा शुरू में उस जतन या कार्रवाई के (जोकि परमार्थ के निमित्त करते हैं) उनको मिलता है वह भी साधारण हो जाता है और जोकि उसमें चलना और चढ़ना नहीं है इस सबब से तरक़्क़ी नहीं होती है ॥

५८०--(३) बल्कि बहुत से जतन और कार्रवाइयाँ तो बाहरमुख हैं और उनमें जिस क़दर रस और आनंद मिलता है वह भी बाहरमुख है और यह कार्रवाई अक्सर करके बग़ैर ख़र्च करने धन के मन की चाह के मुवाफ़िक़ दुरुस्त नहीं बन पड़ती इस सबब से उसका आनंद भी थोड़ा बहुत गदला रहता है ॥

५८१--(४) और बहुत से साधन असल में रूखे फीके बल्कि कष्ट देने वाले हैं लेकिन उनमें जगत की वाह वाह और बड़ाई का रस मिलता है और कुछ

धन की भी प्राप्ती होती है इस सबब से लोग उनको खुशी से मान बड़ाई के लिये करते हैं और इतनेही लाभ पर मगन हो जाते हैं यानी परमार्थी फ़ायदे पर उनकी नजर बिल्कुल नहीं रहती ॥

५८२--(५) बाज़े प्रेमी और भोले जीव प्रतीत सहित कोई काम सख़्ती और तकलीफ़ के करते हैं और मुक्ती या आइंदे के जनम में सुख भोगने की आसा पर उस तकलीफ़ या सख़्ती को झेलते हैं तो उनको देह छोड़ने के बाद उसका फ़ायदा यानी सुख मिलता है लेकिन सच्ची मुक्ती प्राप्त नहीं होती यानी कुछ अर्से आराम पाने और सुख भोगने के बाद फिर जनम मरन का चक्कर बदस्तूर जारी हो जाता है ॥

५८३--(६) कुल मतों में जो कार्रवाई या साधन वास्ते प्राप्ती सुख या मुक्ती के जारी हैं वह सब थोड़े बहुत इसी क़िस्म से हैं जिनका ज़िक्र ऊपर किया गया और उनमें पूरा कारज जीव का नहीं बनता बल्कि परमार्थी फ़ायदा भी बहुत कम हासिल होता है ॥

५८४--(७) ऐसी ख़राब और ओछी हालत जीवों की परमार्थी कार्रवाई में देखकर कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुर रूप धारन करके ऐसी सहज जुगत वास्ते प्राप्ती सच्ची मुक्ती और परमार्थी आनंद के जारी फ़रमाई है कि जो लड़का

जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द थोड़े शौक़ के साथ आसानी से कर सकते हैं और अपने अंतर में उसका रस भी थोड़ा बहुत ले सकते हैं और जो उसको बराबर नेम के साथ होशियारी से करते रहें तो उसमें तरक़्क़ी होती जावे और नवीन रस और आनंद मिलता जावे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों में प्रीत और प्रतीत पैदा होती और बढ़ती जावे और इसी ज़िन्दगी में अपनी मुक्ती होती हुई देखते जावें ॥

५८५--(८) यह सहज जुगत मन और सुरत को घट में ऊँचे यानी कुल मालिक के धाम की तरफ़ .ाने का साधन है और जिस क़दर अभ्यास करके सिमटाव और चढ़ाई होती जाती है उसी क़दर नई कैफ़ियत मालूम होती है और नया आनंद मिलता है और नया रास्ता तै होता जाता है और शौक़ निज धाम में पहुँचने और कुल मालिक के दर्शनों के हासिल करने का बढ़ता जाता है ॥

५८६--(९) इस साधन को सुरत शब्द योग कहते हैं यानी सुरत को घट में आवाज़ असमानी को सुन कर चढ़ाना, और यह आवाज़ की धार कुल मालिक के धाम से कई मंज़िलों से गुज़र कर आरही है इसी धार के साथ सुरत का उतार हुआ है और उलट कर इसी धार को पकड़ के वह अपने निज घर में जा सकती है ॥

५८७--(१०) वह निज घर कुल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम है और वहाँ काल और करम माया और मन नहीं हैं और इस सबब से वहाँ जनम मरन और किसी क़िस्म का कष्ट और कलेश नहीं है ॥

५८८--(११) और वह निज धाम महा प्रेम और महा आनंद का भंडार है और जो सुरत इस दुनियाँ से हट कर और संत सतगुर की सरन लेकर और सुरत शब्द योग का अभ्यास करके कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से वहाँ पहुँच जाती है वह अजर और अमर हो जाती है और हमेशा के लिये परम आनंद को प्राप्त होती है ॥

५८९--(१२) ऐसी महिमा निज धाम की मालूम करके सब जीवों को चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर जिस क़दर बन सके अभ्यास शुरू करें तो उनको इसी ज़िन्दगी में कुछ परमार्थी आनंद और अपने उद्धार का सबूत मिलेगा और आइंदे को जब भक्ती उनकी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पूरी हो जावेगी तब निज धाम में वासा पावेंगे और चौरासी का चक्कर तो उपदेश लेते और अभ्यास शुरू करतेही कट जावेगा ॥

५९०--(१३) बड़ी महिमा राधास्वामी मत और उसके उपदेश की यह है कि जिस क़दर जीव से

अभ्यास दुरुस्ती से बन पड़े उसी क़द्र उसको रस और आनंद फ़ौरन मिलता है और अलावे उसके संत सतगुर राधास्वामी दयाल की दया से वह जीव अधिकारी परम पद के प्राप्ती का यानी कुल मालिक के धाम में पहुंचने का हो जाता है कि जहाँ पहुँच कर आवागवन का चक्कर हमेशा को मिट जाता है लेकिन यह बात संत सतगुर और उनके प्रेमी जन के सतसंग से हासिल होती है इस वास्ते सतसंग अंतर और बाहर बराबर जारी रखना चाहिये ॥

५९१--(१४) जितने मत कि दुनियाँ में जारी हैं उन में किसी न किसी क़िस्म के साधन वास्ते प्राप्ती मुक्ती के बर्णन किये हैं पर वह साधन महा कठिन हैं और फिर भी उनमें पूरा फल नहीं मिलता लेकिन राधास्वामी मत में साधन भी सहज और पूरा उद्धार सहज में होता है इस वास्ते सब जीवों को चाहिये कि जहाँ और सब काम दुनियाँ मे वास्ते अपने तन और मन के आराम के करते हैं वहाँ अपने जीव के कल्यान और दुखों से बचाव के लिये भी थोड़ी सी कार्रवाई राधास्वामी मत के उपदेश की करते रहें कि इसमें उनको भारी फ़ायदा इस ज़िन्दगी में और भी बाद छोड़ने इस देह और देश के हासिल हो सकता है ॥

---

(४१) प्रकार इकतालीसवाँ

अपने तन की सफ़ाई और सिंगार बहुत तवज्जह के साथ हर कोई करता है पर अपने अंतरी स्वरूप की भी सफ़ाई और आरास्तगी ज़रूर करना लाज़िम है क्योंकि यह तन दुनियादारों के दिखाने को है और वह आपा मालिक के सनमुख जावेगा ॥

५९२--(१) दुनियाँ में बहुत से लोग अपनी देह की सफ़ाई और सिंगार और आरास्तगी करते हैं और साफ़ और उम्दा पोशाक पहिनते हैं ख़ासकर वे लोग जो बड़े आदमियों और हाकिमों और अमीरों और राजों से मिलते हैं या उनके पास रहते हैं क्योंकि वग़ैर सफ़ाई और आरास्तगी तन के और पहिनने साफ़ कपड़ों के उनको बड़े आदमियों की संगत और सोहबत में या अमीरों और राजों के दरबार में दख़ल नहीं मिल सकता ॥

५९३--(२) इस ज़ाहिरी सफ़ाई और सिंगार करने में कुछ मिहनत और ख़र्च करना पड़ता है तब इस जीव को भी आराम मिलता है और दूसरे जीव भी इसके संग से राज़ी होते हैं यानी दुनियादार इस चाल को पसंद करते हैं लेकिन अंतर में बहुत

मैल और बिकार भरे हुए हैं उनको निकालना और सफ़ाई करना भी ज़रूर है ॥

५९४--(३) जब तक अंतर की सफ़ाई और सिंगार यानी आरास्तगी न होगी तब तक मन और सुरत ऊँचे देश में नहीं चढ़ सकते और न ऊँचे लोक के बासियों की संगत में मिल सकते हैं इस वास्ते जो कोई इस देश से जहाँ जनम मरन का चक्कर जारी है और सब जीव कष्ट और कलेश अनेक तरह के भोगते हैं बचना चाहे और कुल मालिक के धाम में पहुँचने और बिस्राम पाने की ख़ाहिश रखता है उसको ज़रूर है कि जिस क़दर जल्दी मुमकिन होवे अपने अंतर की सफ़ाई करे ॥

५९५--(४) अंतरी सफ़ाई से मतलब यह है कि बिकारी अंग जैसे काम क्रोध लोभ मोह अहंकार इर्षा बिरोध और त्रिश्ना वग़ैरह दूर हो जावें और मन और इन्द्री अपना ज़ोर और चंचलता छोड़ देवें और आरास्तगी और सिंगार से मतलब यह है कि सील क्षिमा संतोष दीनता और भोगों से किसी क़दर बैराग और दया और मित्रता रह और मालिक के चरनों में भक्ती और प्रेम हिरदे में पैदा हो जावें यानी किसी के साथ ईर्षा या बिरोध न रहे और सब के साथ दया और मित्र भाव से बर्ताव करे और संसार के पदार्थ और भोगों की चित्त में चाह और क़दर न रहे यानी

सिर्फ़ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ उन में बर्ताव रहे और फ़ज़ूली और हिर्स और त्रिश्ना दूर हो जावें ॥

५९६–(५) यह सफ़ाई और आरास्तगी बग़ैर संत सतगुर और उनके प्रेमी जन और साध के संग के हासिल नहीं हो सक्ती यानी जब तक कि जीव संतों के बचन नहीं सुनेगा और अपने मन में नहीं बिचारेगा तब तक संसारी ख़याल और स्वभाव और चाहें और ब्यौहार उस के नहीं बदलेंगे और जब तक संत सतगुर से उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास नहीं करेगा तब तक मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई नहीं होगी और मलीनता यानी नापाक चाहें और आदतें दूर नहीं होंगी ॥

५९७–(६) इस वास्ते जो जीव कि अपनी सच्ची और पक्की सफ़ाई चाहते हैं और अपने सच्चे मालिक से मिलने की आशा रखते हैं उनको चाहिये कि पहिले संत सतगुर या उनकी संगत से मिलें और सतसंग करके शब्द मारग का उपदेश लेवें और जिस क़दर बन सके नित्त अभ्यास करें तब आहिस्ते आहिस्ते सफ़ाई और आरास्तगी होवेगी और रफ़्ते २ संत सतगुर की दया से चरनों में प्रेम बढ़ता जावेगा और एक दिन मालिक के महल में बासा मिल जावेगा ॥

५९८–(७) यह काम सब जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द ज़रूर करना चाहिये इस से आवागवन

और देह धर के कष्ट और कलेश का भोग छूट जावेगा और इस मृत्यु लोक से बल्कि कुल माया के देश से न्यारा होकर निर्मल चेतन्य देश में जोकि कुल मालिक का निज धाम है बासा पावेगा और वह स्थान महा आनंद और महा सुख और महा प्रेम का भंडार है और हमेशा एक रस क़ायम रहता है ॥

५९९–(८) ज़ाहिरी सफ़ाई और आरास्तगी देह की जो यहाँ मिहनत करके की जाती है बराबर क़ायम नहीं रह सकती है क्योंकि यह देह मल मूत्र का भांड़ा है और इसकी मोरियों यानी सूराखों से हर वक़् मलामत और ग़िलाज़त जारी रहती है फिर चाहे जिस क़दर कोई सफ़ाई करे अंतर में मलामत हमेशा भरी रहेगी और द्वारे भी थोड़े बहुत नापाक रहे आवेंगे और हरचंद इस देह की सफ़ाई और आरास्तगी करके दुनियाँ के बड़े आदमियों से मेला और संग हो जावे लेकिन ऊँचे लोकों में या मालिक के दरबार में जब तक अंतरी सफ़ाई या सिंगार न होगा तब तक किसी सूरत में दख़ल नहीं मिलेगा और जो यह बात हासिल नहीं हुई तो बारम्बार मृत्यु लोक और माया के देश में ऊँच नीच जोनों में भरमना पड़ेगा और कहीं ठिकाना [illegible] ाम और पूरा आराम नहीं मिलेगा और कष्ट और कलेश का भोग जारी रहेगा ॥

६००-(९) बाहर की सफ़ाई के देखने और पसंद करने वाले दुनियाँ के लोग हैं और अंतर की सफ़ाई और आरास्तगी के बख़्शने वाले और जाँच करने वाले संत सतगुर और उनके साध और प्रेमी जन हैं जिस में अंतरी सफ़ाई नहीं है वह उनके सतसंग में और भी मालिक के दरबार में आदर और दख़ल नहीं पा सकता है ॥

६०१-(१०) दुनियाँ चंद-रोज़ा और नाशमान है यानी यहाँ की खुशी और आदर थोड़े दिन का है और जो सच्चे मालिक और संत सतगुर की भक्ती नहीं की जावेगी तो अख़ीर वक़्त और बाद मरने के जमदूतों के हाथ से बहुत तकलीफ़ और निरादर सहना पड़ेगा और जब २ देह धारन की जावेगी और छूटेगी तब ऐसीही तकलीफ़ और दुख भोगना होगा इस वास्ते जो इन दुखों से बचना चाहे उसको चाहिये कि संत सतगुर और उनके प्रेमी जन का संग करके अपने बिकार और मलीनता दूर करावे और अंतरी आरास्तगी और सिंगार करके मालिक के दरबार में दख़ल पावे और वहाँ बिस्राम करके हमेशा का आनंद और सुख पाने का अधिकारी हो जावे ॥

६०२-(११) सफ़ाई और आरास्तगी अंतरी और बाहरी हर हालत में मुनासिब और ज़रूर है लेकिन जो सिर्फ़ बाहरी सफ़ाई की तरफ़ तवज्जह करेंगे

और अंतर से बेपरवाही और ग़फ़लत रक्खेंगे वे नादान और अभागी हैं और हमेशा नुक़सान में रहेंगे और बारम्बार दुख सहेंगे और जो अंतरी सफ़ाई की तरफ़ तवज्जह करेंगे और मुवाफ़िक़ उपदेश संत सतगुर के कार्रवाई करेंगे तो उनको दोनों का फल और फ़ायदा हासिल होगा यानी बाहरी सफ़ाई भी उनसे दुरुस्त बन पड़ेगी और अंतर में उसका रास्ता सच्चे मालिक के निज धाम में पहुँचने का जारी हो जावेगा और एक दिन परम आनंद और अमर सुख को अमर देश में प्राप्त होवेंगे ऐसे जीवों को दाना सुजान और बड़-भागी समझना चाहिये यह अपना कारज जैसा चाहिये बनावेंगे और बहुत से जीवों को उनसे फ़ैज़ पहुँचेगा यानी उनके जीव का भी कल्यान और उपकार करावेंगे ॥

६०३--(१२) अपनी अंतरी सफ़ाई की पहिचान यह जीव आपही अच्छी तरह कर सकता है और थोड़ी सी वह लोग कर सकते हैं जो अक्सर उनके संग रहते हैं या जिनको ब्योहार और बर्ताव का काम पड़े। थोड़े से निशान उसके यह हैं कि मन में ख़याल नाक़िस और पाप करम के उठने कम या दूर होते जावें और बाहर लोगों के साथ बर्तावा इस क़िस्म का होवे कि जिसमें किसी को दुख न पहुँचे और किसी का हक़ न मारा जावे ॥

(४२) प्र ार बयाली वाँ

वास्ते बनाव परमार्थ यानी जीव के सच्चे कल्यान और उद्धार के सतगुर और सतसंग और सत्त शब्द की ज़रूरत है लेकिन प्रेम और शौक़ भी दरकार है और यह मन में पैदा होता है इस वास्ते पहिले मन की गढ़त और सफ़ाई चाहिये और यह सतगुर की दया और सतसंग और शब्द के अभ्यास से हासिल होगी और फिर दिन २ शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा ॥

६०४-(१) जीव संसार में तन मन और इंद्रियों के संग बँध रहा है और माया के रचे हुए जो भोग और पदार्थ हैं उनके भोगने और रस लेने की चाह और तरंगें मन में उठती रहती हैं और जोकि यह देश मलीन माया का है और तन में भी अनेक तरह की मलामत और मलीनता भरी हुई है इस सबब से यहाँ चाहे जिस क़दर सफ़ाई करे पर मलीनता दूर नहीं हो सकती है और जो ज़िन्दगी भर ऐसीही कार्रवाई रही तो बारम्बार देह धर के दुख सुख का भोग ज़रूर करना पड़ेगा ॥

६०५-(२) जो कोई इस चक्कर से बचना चाहता है और इस मलीन देह और देश से न्यारा होना चाहता है उसको मुनासिब है कि अपनी हालतों

की जो आठ पहर में इस पर गुज़रती हैं जाँच करके वह जतन करे कि जिसकी मदद से इस देश से आहिस्ते २ न्यारा होकर अपने निज घर में जोकि मालिक का धाम है और जहाँ माया और उसकी दुखदाई रचना नहीं है पहुँच जावे और महा सुख और अमर आनंद को प्राप्त होवे ॥

६०६--(३) तीन अवस्था में जो जाग्रत सुपन और सुषोपत कहलाती हैं सब जीव हर रोज़ बर्त रहे हैं उनकी जाँच करने से मालूम होगा कि जाग्रत अवस्था में जीव का विस्थूल देह के साथ इस लोक में है और सुपन और सुषोपत अव में इस देह और दुनियाँ और उसके सामान की खबर नहीं रहती और न यहाँ का दुख या चिन्ता और फ़िकर ब्यापते हैं ॥

६०७--(४) और अपने रोज़मर्रा के हाल और बर्ताव से साफ़ मालूम होता है कि जीव की बैठक जाग्रत अवस्था में आँखों में है और सुपन के वक्त़ रूह की धार यहाँ से अंतर में खिँच जाती है और उस वक्त़ देह और दुनियाँ के साथ बंधन ढीला हो जाता है ॥

६०८--(५) और सख़्त ार और ग़श की हालत में और भी मौत के वक्त़ आँखें जाती हैं और पुतली खिँच जाती है यानी रूह की धार आँख के मुक़ाम से अंतर की तरफ़ हट जाती है और जिस

क़दर वह धार हटती जाती है उसी क़दर देह और दुनियाँ की तरफ़ से ग़फ़लत और बेहोशी और अलहदगी होती जाती है ॥

६०९--(६) इससे साफ़ ज़ाहिर है कि जो कोई इस मलीन देह और देश से हटना चाहे वह आँखों के मुक़ाम से सरकने का जतन करे यानी रूह की धार को उसके भंडार और ख़ज़ाने की तरफ़ उलटावे ॥

६१०--(७) सब कहते हैं और समझते हैं कि इस रचना का कोई मालिक ज़रूर है और वह सर्व समरथ और सर्व व्यापक है फिर वह हर एक घट में भी ज़रूर मौजूद है और जोकि जीव उसकी अंस है जैसे सूरज और सूरज की किरन और उसके चरनों से जुदा होकर मलीन माया के देश में उतर कर नर देही में बँध गया है सो यहाँ से सरकने और उलटने का जतन करके अपने मालिक के धाम में पहुँच कर और बिदेह होकर परम आनंद को प्राप्त हो सकता है ॥

६११--(८) यह जतन संत सतगुर और उनकी संगत से मालूम हो सकता है लेकिन उसकी कार्रवाई यानी अभ्यास के वास्ते सच्चा प्रेम और शौक़ दरकार है और यह शौक़ दुनियाँ का हाल जोकि नाशमान है ग़ौर के साथ मुलाहिज़ा करके पैदा हो

सकता है और फिर संत सतगुर और उनके ेमी के संग से बढ़ सकता है ॥

६१२--(९) जोकि कुल जीवों को एक दफ़ा यह देह और देश छोड़ना ज़रूर पड़ेगा इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि मौत के वक़्त से पेश्तर उस रास्ते को जहाँ होकर जाना पड़ेगा खोलना और साफ़ करना शुरू करें और रास्ते के खोलने और साफ़ करने से मतलब यह है कि सुरत की धार को जो आँखों में ठहर कर देह और दुनियाँ के साथ बंध गई है कुल मालिक के चरनों की तरफ़ उलटाना शुरू करें ॥

६१३–(१०) जुगत उलटाने की संत सतगुर या के प्रेमी जन से मालूम हो सकती है इस वास्ते पहिले खोज सतगुर या उनकी संगत का करना चाहिये और जब वे भाग से मिल जावें तो प्रीत सहित उनका सतसंग और सेवा करना चाहिये और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर जिस क़दर बन सके उसके अभ्यास में लगना चाहिये ॥

६१४–(११) सुरत शब्द मारग से मतलब यह है कि रूह को आवाज़ के आसरे जो घट २ में हर दम हो रही है ऊँचे देश यानी कुल मालिक के धाम की तरफ़ चढ़ाना सिवाय इसके और कोई सहज और निर्विघ्न और धुर पहुँचाने वाला तरीक़ा वास्ते

उलटाने सुरत के नहीं रचा गया क्योंकि इसमें रूह यानी जान की धार पर सवार होकर चलना होता है और जान की धार से बढ़कर और कोई धार नहीं है ॥

६१५--(१२) जो संत सतगुर से मेला न होवे तो जो उनकी संगत मौजूद है उसमें शामिल होकर सतसंग करना चाहिये और संशय और विपर्जय दूर करके संत सतगुर से मिले हुए प्रेमी अभ्यासी से उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करना मुनासिब है ॥

६१६--(१३) सच्चे प्रेमी अभ्यासियों के संग से कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों में प्रीत और प्रतीत आहिस्ते २ बढ़ती जावेगी और अभ्यास में भी थोड़ा बहुत रस मिलता जावेगा और जो शौक़ और प्रेम ज़ियादा होगा तो संत सतगुर भी मौज से दर्शन देकर दया फ़रमावेंगे और अंतर और बाहर मुनासिब मदद देकर अभ्यास में तरक़्क़ी बख़्शेंगे ॥

६१७--(१४) संत सतगुर और उनकी संगत इस दुनियाँ में बड़े दुर्लभ पदार्थ हैं जिसको यह दोनों मिल जावें वही जीव बड़भागी है। जिस रोज़ से कि जीव संत सतगुर की सरन में आया उसी रोज़ से उसकी चौरासी छूट जाती है और जिस वक़्त से कि उपदेश लेकर अभ्यास सुरत शब्द मारग का शुरू किया उसी वक़्त से रास्ता उसके सच्चे उद्धार

और मुक्ती का जारी हो जाता है और इस कार्रवाई में कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया और रक्षा से काल और करम और मन और माया किसी क़िस्म का बिघन ऐसे तौर से नहीं डाल सकते कि जिससे रास्ता उद्धार का बंद हो जावे ॥

६१८--(१५) सच्चे खोजी प्रेमी को मुनासिब है कि अपनी प्रीत और प्रतीत चरनों में राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के दिन २ बढ़ाता रहे कि जिससे विशेष दया प्राप्त होती रहे और अभ्यास और सतसंग आसानी से बनता चला जावे ॥

६१९--(१६) कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर को जो सच्चे मन से उनकी सरन में आया है हर वक्त उस जीव की सम्हाल और रक्षा और तरक्क़ी परमार्थ की मंजूर है और वे अपनी मेहर से ऐसे संजोग पैदा करते और बनाते रहते हैं कि जिससे जीव की प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ती जावे और उमंग के साथ सेवा कराके नवीन प्रेम जगाते रहते हैं और यही प्रेम और प्रतीत उसके अभ्यास और भक्ती को तरक्क़ी देती जाती है ॥

६२०--(१७) यह सब बातें आज कल राधास्वामी संगत में हासिल हो सकती हैं, जिसके मन में सच्चा खोज और दर्द है वह संगत मज़कूर में शामिल

होकर और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर अपने जीव के सच्चे उद्धार के वास्ते कार्रवाई शुरू कर सकता है ॥

---

(४३) बचन तैंतालीसवाँ

पाँचों तत्त जो रचना के कारन हैं हर एक का मंडल जुदा २ है जैसे कि स्थूल तत्तों का यहाँ आँख से दीखता है इसी तरह सूक्षम तत्तों का मंडल जुदा २ है, फिर दो भारी तत्त सुरत और शब्द जो कुल रचना के कारन और करता हैं उनका भी मंडल जुदा २ है, सुरत तत्त पाँचों तत्त का कारन है और शब्द तत्त सुरत तत्त का कारन और कुल रचना का करतार है और जीव सुरत रूप है और शब्द की निज अंस और धार है सो वह जब तक कि अपने कारज से यानी पाँच तत्त की रचना से न्यारी होकर अपने कारन के निज मंडल यानी शब्द भंडार में चढ़कर न पहुँचेगी तब तक परम सुख को प्राप्त न होवेगी ॥

६२१-(१) इस रचना में पाँच तत्त की कारंवाई बिशेष नज़र आती है और वह तत्त यह हैं पृथ्वी जल अगनी पवन और आकाश ॥

६२२-(२) यहाँ स्थूल तत्तों का मंडल जुदा जुदा नजर आता है इसी तरह ऊँचे देश में सूक्षम और अति सूक्षम तत्तो का भी मंडल जुदा २ है ॥

६२३-(३) यह सब मंडल माया की हद्द यानी घेर में हैं और जब तक सुरत इस देश में रहेगी तब तक पाँच तत्त के मसाले से बनी हुई देह में उसका बासा रहेगा और जैसा स्थूल या सूक्षम देह और देश होगा वैसाही दुख सुख का भोग कम या ज़ियादा होगा ॥

६२४-(४) इन पाँचों तत्तों यानी माया देश के परे सुरत का मंडल है और यह सुरत तत्त पाँच तत्तों और उनसे पैदा हुई रचना का कारन है और सुरत मंडल के परे शब्द मंडल है जो सुरत और कुल रचना का कारन है और महा चेतन्य और महा आनंद और महा प्रेम स्वरूप है ॥

६२५-(५) जब तक कि सुरत माया के घेर से न्यारी होकर शब्द मंडल में नहीं पहुंचेगी तब तक देहियों के बंधन और उनके लाज़िमी दुख सुख और जनम मरन से छुटकारा नहीं होगा ॥

६२६-(६) इस वास्ते सब जीवों को ज़रूर और मुनासिब मालूम होता है कि जहाँ और सब काम

दुनियाँ के करते हैं वहाँ थोड़ीसी कार्रवाई पाँच तत्त की रचना यानी माया के घेर से न्यारे होकर शब्द मंडल में पहुँचने की करें तो आहिस्ते २ उनका छुटकारा हो जावे और एक दिन निज धाम में पहुँच कर अमर आनंद को प्राप्त होवें ॥

६२७--(७) माया के घेर से निकलने और शब्द मंडल में पहुँचने की तरकीब संत अथवा राधास्वामी मत में जारी है, जो कोई सच्चा शौक़ इस काम के करने का रखता है उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर अभ्यास शुरू करे तो एक दिन निज धाम में जहाँ माया नहीं है और निर्मल चेतन्य ही चेतन्य है बासा पावेगा ॥

६२८--(८) वास्ते दुरुस्ती से और पूरे बनने इस अभ्यास के कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया दरकार है सो जो शौक़ सच्चा है और थोड़ा बहुत प्रेम मन में है तो उस पर दया भी ज़रूर आवेगी और आहिस्ते २ कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन भी प्राप्त होगी और अचरज नहीं है कि संत सतगुर भी अपना दर्शन देवें और दया करके मन और सुरत को सहज में चढ़ावें और एक दिन निज घर में पहुँचा कर बासा देवें ॥

६२९--(९) ज़ाहिर है कि पाँच तत्त की रचना जो इस लोक में है और ऐसेही और लोकों में भी ठहराऊ नहीं है और दुख सुख और जनम मरन का चक्कर भी उसके साथ लगा हुआ है जो कोई नज़र ग़ौर से दुनियाँ के हाल को देखेंगे वह ज़रूर इस बात का खोज करेंगे कि सुरत चेतन्य जो पाँच तत्त की रचना की चेतन्य करने वाली है उसका भंडार और न्यारा मंडल ज़रूर होगा और जोकि रस और आनंद है वह सुरत और सुरत की धार में है तो सच्चे और पूरे आनंद का स्थान वहीं होना चाहिये ॥

६३०--(१०) ऐसे विचारवान और खोजी जीव इस बात को भी दरियाफ़ और तहक़ीक़ करेंगे कि किस तरह सुरत के मंडल और उसके भंडार में पहुँचना हो सकता है और जोकि सुरत अमर है तो जब तक कि अपने निज भंडार में न पहुँचेगी ज़रूर माया के घेर में पाँच तत्त की बनी हुई स्थूल या सूक्ष्म देह में भरमती रहेगी और दुख सुख और जनम मरन का भोग करती रहेगी इस वास्ते ज़रूर हुआ कि हर एक जीव वास्ते अपने सच्चे कल्यान और उद्धार के अपने निज भंडार का पता और भेद दरियाफ़ करके वहाँ चलकर पहुँचने का जतन शुरू करे ॥

६३१-(११) यह पता और भेद और चलने और चढ़ने का तरीक़ा जैसा कि ऊपर कहा गया सिर्फ़ राधास्वामी मत में खोल कर कहा गया है और राधास्वामी संगत में शामिल होकर उपदेश लेने के वक्त मुफ़स्सिल मालूम हो सकता है यह रास्ता विना खौफ़ और शौक़ के तै नहीं हो सकता है इस वास्ते दुख सुख और जनम मरन का थोड़ा बहुत खौफ़ और शौक़ मिलने दर्शन कुल मालिक का लेकर जो कोई अभ्यास शुरू करेगा उसका रास्ता आहिस्ते २ तै होता जावेगा और अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनंद सुरत मन के सिमटाव और चढ़ाई का मिलेगा और वही आनंद शौक़ को बढ़ाता जावेगा और अभ्यास में आसानी और तरक्क़ी होती जावेगी ॥

( ) प्र ार चवालीस

हर कोई बड़े आदमी और ख़ासकर अपने प्यारे से एकान्त में मिलना और बात चीत करना चाहता है इसी तरह सच्चे प्रेमी और परमार्थी को संत सतगुर और कुल मालिक से एकान्त में मिलने अभिलाषा रख के संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ जतन करना चाहिये ॥

६३२--(१) इस दुनियाँ में देखने में आता है कि हर कोई बड़े आदमी या अपने प्यारे से एकान्त में मिलकर बहुत खुश होता है क्योंकि वहाँ बेलिहाज़ और ख़याल और दबाव दूसरे या ग़ैर शख़्स के अपनी ख़ाहिश के मुवाफ़िक़ बात चीत कर सकता है ॥

६३३--(२) इसी तरह सच्चे परमार्थ में सेवक अपने स्वामी यानी संत सतगुर, और सच्चा प्रेमी अपने प्रीतम सतगुर या कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल से एकाग्र होकर यानी एकान्त में मिलकर और बचन सुनकर बहुत मगन होता है ॥

६३४--(३) एकाग्रता से मतलब यह है कि कोई बिरोधी अंग जैसे काम क्रोध लोभ मोह अहंकार या कोई बेमतलब की तरंग दसों इंद्रियों की या किसी क़िस्म के ख़याल जो अंतःकर्ण से उठते हैं वक़्त दर्शन और बचन अपने स्वामी और प्रीतम के प्रघट होकर बिघनकारक न होवें और एकान्त से मुराद यह है कि किसी क़िस्म की सूरत या रचना सिवाय अपने प्रीतम के स्वरूप और शब्द के नज़र न आवे और न किसी क़िस्म की आवाज़ें चित को इधर उधर खींचें ॥

६३५--(४) जब ऐसी हालत सच्चे प्रेमी की अंतर अभ्यास के वक़्त मौज से हो जावे तो उसको पूरा रस भजन और ध्यान का हासिल हो सकता है

और रफ़्ते २ अंतर में दर्शन भी मिल सकता है और जब सतसंग में सब तरफ़ से मन और चित्त और नजर हटकर एक सतगुर के दर्शन और बचन में लौलीन हो जावें तब गहिरा रस बाहर के सतसंग का मिल सकता है ॥

६३६–(५) ऐसी हालत परमार्थी शख़्स की बग़ैर तेज़ और गहरे शौक़ और प्रेम के नहीं हो सकती, और यह शौक़ और प्रेम बग़ैर दया कुल मालिक के और बग़ैर संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से चित्त में किसी क़दर बैराग और उदासीनता आने के पैदा नहीं हो सकता। और वास्ते उसके ठहराव और तरक़्क़ी के संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग और उनकी जुगत की कमाई यानी अभ्यास सुरत शब्द मारग का ज़रूर दरकार है ॥

६३७–(६) इस वास्ते जिस किसी के मन में इस दुनियाँ और उसके पदार्थों की नाशमानता और ओछापन देख कर थोड़ा बहुत बैराग उसकी तरफ़ से आया है और ख़्वाहिश खोज और तहक़ीक़ात सच्चे और असली परमार्थ की पैदा हुई है उसको चाहिये कि पहिले संत सतगुर और उन के प्रेमियों की संगत की तलाश करे। और जोकि ऐसा खोजी दयापात्र होता है उसका मौज से जल्द मेला संत सतगुर या उनकी संगत से हो जावेगा ॥

६३८-(७) जब भाग से संत सतगुर मिल जावें या उनकी संगत में शामिल हो जावे तब उसको चाहिये कि पहिले सतसंग होशियारी के साथ करे और बचनों को चित्त देकर सुने और बिचारे तब भरम और संशय और बेजा और नामुनासिब पकड़ें जो मन में धरी हुई हैं आहिस्ते २ निकलेंगी। और मन के बिकारी अंगों की ख़बर पड़ेगी और उनके घटाने और हटाने का जतन मालूम पड़ेगा और फिर सब तरह से सफ़ाई हासिल करने के लिये कोशिश भी बन आवेगी ॥

६३९-(८) जब इस तरह कोई दिन सतसंग करके थोड़ी बहुत सफ़ाई हासिल होती जावे और पूरा २ निश्चय कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम में पहुँचने की जुगत यानी सुरत शब्द मारग का हो जावे, तब उपदेश लेकर अंतर अभ्यास शुरू करे और जब अपने घट में कुछ कैफ़ियत नज़र आवेगी और थोड़ा बहुत रस मिलेगा तब शौक़ तेज़ होवेगा और प्रेम संत सतगुर और कुल मालिक के चरनों में जागेगा ॥

६४०-(९) इसी तरह सतसंग और अंतर अभ्यास करके दिन २ प्रेम और निश्चय बढ़ता जावेगा और दया के परचे मिलते जावेंगे और आहिस्ते २ काम बनता जावेगा यानी एक दिन रास्ता तै कर के निज धाम में पहुँच जावेगा। और कुल मालिक

राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

६४१-(१०) ऐसे प्रेमी के मन में अभ्यास की हालत में यही ख़ाहिश और कोशिश रही आवेगी कि किसी क़िस्म का बिघन उसकी परमार्थी कार्रवाई में न पड़े और कोई शख़्स या कोई शै बाहर या अंतर उसके अभ्यास में हारिज न होवे ताकि निर्मल भजन और ध्यान करते हुए उसके मन और सुरत ऊँचे की तरफ़ को सहज में चढ़ते चले जावें और एक दिन दोनों अपने २ भंडार में पहुँच कर निहचिन्त और मगन हो जावें ॥

६४२-(११) ऐसे प्रेमी के संग और सुहबत से बहुत से जीवों का उपकार मुमकिन है यानी वे इस की ज़बान से महिमा और बड़ाई संत सतगुर और उनके सतसंग और अभ्यास की और भी हाल दया कुल मालिक राधास्वामी दयाल का सुन कर वास्ते शामिल होने ऐसे सतसंग के उमंग उठावेंगे और रफ़्ते २ बचन सुनकर और समझ कर और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर अभ्यास में शामिल होवेंगे, और कुछ आनंद और रस अंतर में पाकर अपनी नर देही सुफल करेंगे ॥

(४५) प्र ार पैंतालीसवां

इस देह में नौ दरवाज़े हैं और उन में से हर दम मैल और ग़िलाज़त निकलती रहती है और इन्हीं द्वारों पर सुरत की धार उतर कर देह की कार्रवाई करती है। नापाक स्थान को कोई नहीं पसंद करता इस वास्ते पवित्र स्थान की तरफ़ जो घट में ऊँचे की तरफ़ है चलना शुरू करे तो एक दिन देह और इंद्रियों और मन और माया के बंधनों से छुटकारा हो जावे और कुल मालिक के धाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होवे ॥

६४३-(१) इस देह में नौ द्वार प्रघट हैं और दसवां गुप्त। नौ द्वार से हमेशा मैल और ग़िलाजत बहती रहती है और दसवाँ द्वार सुरत की आमद का है और हमेशा साफ़ और निर्मल रहता है ॥

६४४-(२) नौ द्वारों पर सुरत की धार उतर कर देह की कर्रवाई करती है यानी दसों इंद्रियों का कारज और व्योहार उन्हीं द्वारों की मार्फ़त जारी रहता है ॥

६४५-(३) जितने काम दुनियाँ के इंद्रियों के वसीले से होते हैं उन मे थोड़ा बहुत रस मन को मिलता है लेकिन सुरत की धार का बहाव बाहर

मुख रहता है और बाहर जिस क़दर भोग और पदार्थ हैं सब जड़ हैं इस सबब से सुरत की धार जड़ पदार्थों से मिल कर ख़र्च हो जाती है और इसी सबब से आदमी दिन भर या कुछ देर काम करके थक जाता है ॥

६४६-(४) जो कुछ तरंगें मन में उठती हैं वे सब बाहर मुख कार्रवाई से तअल्लुक रखती हैं और जोकि इस लोक में और भी स्थूल देह में माया और तमोगुन का ज़ोर बहुत है इस सबब से यह सब कार्रवाई जो इंद्रियों के वसीले से होती है मलीन समझी जाती है और उसमें सुरत की धार का ख़र्च और नुक़सान होता है ॥

६४७--(५) जो कोई भेद लेकर और जुगत दरियाफ़्त करके अपने अंतर में दसवें द्वार की तरफ़ सुरत की धार को चलावे तो वहाँ से विशेष ताक़त और विशेष आनन्द और रस जो निहायत निर्मल है हासिल कर सकता है और बजाय ख़र्च के अपनी सुरत की ताक़त को ऊपर की तरफ़ चढ़ाने से बढ़ा सकता है और थकावट वग़ैरह थोड़ी देर के इस क़िस्म की कार्रवाई से सहज़ मे दूर हो जाती है ॥

६४८--(६) अक़लमंद और विचारवान आदमी दुनियाँ का हाल देखकर मालूम कर सकता है कि जिस क़दर यहाँ के भोग विलास और रस और

आनंद हैं वह सब नाशमान हैं और उन सब में थोड़ी बहुत तलख़ी माया की लगी हुई है और किसा क़दर अपवित्र भी हैं फिर वह ज़रूर तलाश करेगा कि कोई स्थान और वहाँ का आनंद ऐसा भी है जो हमेशा क़ायम रहेगा और जहाँ तमोगुन और माया और उसकी तलख़ी न होवे ॥

६४९--(७) ऐसा देश और महा आनंद का स्थान रचना में ज़रूर है और उसका मुक़ाम ऊँचे से ऊँचा है और रास्ता उसका दसवें द्वार में होकर जाता है वही स्थान सच्चे और कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल का धाम है ॥

६५०--(८) इस धाम का भेद और हाल रास्ते और मंज़िलों का और तरीक़ा चलने का सिर्फ़ राधास्वामी मत में जिसको संत मत भी कहते हैं तफ़सील के साथ बर्णन किया है और किसी मत में जो दुनियाँ में जारी हैं उसका ज़िकर और पता नहीं है और न रास्ता ते करने की जुगत बयान की है ॥

६५१--(९) यह धाम और उसका रास्ता हर एक जीव के घट में मौजूद है क्योंकि कुल मालिक का तख़्त हर एक के घट में है पर उसके भेद से सिवाय संतों के और कोई वाक़िफ़ नहीं है ॥

६५२--(१०) इस धाम का रास्ता नेत्रों के स्थान से जहाँ जाग्रत अवस्था में जीव की बैठक है जारी होता है और दसवें द्वार से गुज़र कर ऊँचे की तरफ़ जाता है बिना मदद संत सतगुर के जो उस धुर धाम के बासी हैं और निहायत दया करके जीवों को उस धाम में पहुँचाने के वास्ते आप नर देह धारन करके इस देश में आते हैं कोई जीव उस रास्ते पर नहीं चल सकता है ॥

६५३--(११) इस वास्ते सब जीवों को जो इस अपवित्र और नाशमान स्थान से हट कर महा निर्मल और महा आनद के स्थान पर जो हमेशा एक रस क़ायम रहता है पहुँचना चाहें तो मुनासिब है कि पहिले संत सतगुर और उनकी संगत का खोज लगा कर उसमें शामिल होवें और सतसंग के बचन सुनकर और समझ कर उनके मुवाफ़िक़ अपनी रहनी और गहनी दुरुस्त करें और जो संत सतगुर भाग से मिल जावें तो उनसे नहीं तो उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से भेद धुरधाम और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करें और प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ावें ॥

६५४--(१२) जो शौक़ और लगन तेज़ और सच्ची होगी तो संत सतगुर का भी दर्शन मौज से हो जावेगा और अंतर में कुल मालिक राधास्वामी दयाल की

दया और रक्षा नज़र पड़ेगी और अभ्यास का भी थोड़ा बहुत रस और आनन्द मिलेगा और शौक़ बढ़ता जावेगा और रफ़्ते २ मन और सुरत अंतर में ऊँचे की तरफ़ चढ़ेंगे और एक दिन मेहर और दया से कारज पूरा बन जावेगा ॥

६५५--(१३) कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जो अपनी मेहर और दया से सहज अभ्यास सुरत शब्द योग का जारी फ़रमाया है उसमें कुछ ज़रूरत घर बार और रोज़गार छोड़ने की नहीं है और वह इस क़दर आसान और निरबिघ्न है कि हर कोई लड़का जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द बेतकलीफ़ जिस वक़्त और जिस जगह चाहें कर सकते हैं और इसी ज़िंदगी में उसका फ़ायदा देख सकते हैं ॥

६५६--(१४) जो जीव कि यह कार्रवाई अंतर में सुरत के चढ़ाने की नहीं करेंगे वे हमेशा देही में गिरफ़्तार रहेंगे और उसके बंधन का फल दुख सुख भोगते रहेंगे और अपवित्र तरंगें सदा उनके मन में उठ कर उनकी सुरत को नीचे के देश में जहाँ माया का भारी ज़ोर है भरमाती रहेंगी ॥

६५७--(१५) जो कष्ट और कलेश देह धारियों को मृत्यु लोक और उसके नीचे के देशों में भोगना पड़ता है और जनम मरन का दुख जो सब से

भारी है सहना पड़ता है उसका कुछ बयान नहीं हो सकता इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि सब जीव थोड़ी बहुत अंतरमुख कार्रवाई संतों के उपदेश के मुवाफ़िक़ अपनी ज़िन्दगी में शुरू कर दें ॥

६५८--(१८) कुल मालिक राधास्वामी दयाल की ऐसी भारी दया जीवों पर इस समय में है कि जो कोई बग़ैर छोड़ने घर बार और रोज़गार के थोड़ा अभ्यास एक या दो मर्तबे हर रोज़ सुरत शब्द मारग का संत सतगुर या साध गुरू या उनके प्रेमी सतसंगी से उपदेश लेकर नेम से करता रहेगा तो भी राधास्वामी दयाल उसको चौरासी से बचा कर अख़ीर वक़्त पर सुख स्थान में बासा देंगे और तीन चार जनम नर देही मे देकर और हर जनम में विशेष करनी और अपने चरनों की भक्ती करा कर मेहर से एक दिन निज घर में पहुँचा देंगे कि जहाँ मायाकृत देही के बंधन और जनम मरन के चक्कर से क़तई छुटकारा हो जावेगा और अमर आनंद प्राप्त होगा। अब जो कोई कि इस कार्रवाई में शामिल नहीं होगा तो समझना चाहिये कि वह महा अभागी है और अभी उसको कोई काल माया के देश में रहना मंजूर है और निज घर में जाकर परम आनंद को प्राप्त होने का अधिकार और भाग नहीं रखता है ॥

(४६) प्रकार छियालीसवाँ

कुल जीवों के दिल में शौक़ देखने अच्छे रूप रंग और सुनने उम्दा बाजे और आवाज़ का रहता है और जब कहीं यह दोनों चीज़ें देखने और सुनने में आती हैं वहीं मन फ़ौरन लग जाता है और हाल यह है कि इस दुनियाँ के रूप रंग और आवाज़ें निहायत ओछे और कसीफ़ और नाशमान हैं और घट में ऊँची तरफ़ बहुत बढ़कर और निहायत ख़ूबी और नूरानियत के साथ रूप और आवाज़ें मौजूद हैं इस वास्ते उनका देखना और सुनना भी ज़रूर चाहिये ख़ास कर जबकि उनकी तरफ़ तवज्जह करने से गाहिरा आनंद और रस मिलता है और सच्चा उद्धार और जनम मरन से नृवित्ती और अमर आनंद की प्राप्ती सहज में हो सक्ती है॥

६५९-(१) इस दुनियाँ में सब कोई ख़ूबसूरत आदमी या जानवर या चीज़ को देखना चाहते हैं और जब मिल जावें तो उनको देख कर बहुत ख़ुश होते हैं इसी तरह सब कोई उमदा बाजों की आवाज़ और अच्छा गाना सुनना चाहते हैं

और जब इत्तिफ़ाक़ से वह मिल जावे तो मन उनका फ़ौरन लग जाता है और खुश होकर वहीं ठहर जाता है ॥

६६०-(२) यह बात सिर्फ़ आदमियों में नहीं बल्कि जानवरों में भी पाई जाती है कि वह भी खूबसूरत जानवर या चीज़ को देख कर और खुश आवाज़ बाजे को सुन कर खुश होते नज़र आते है और अचरज करते हैं और चाहते है कि बराबर उस आवाज़ को सुनें ॥

६६१--(३) सबब इसका यह है कि सुरत आप निहायत नूरानी और खूबसूरत और शब्द स्वरूप है और कुल मालिक की अंस है जोकि महा प्रकाश और महा सुन्दर स्वरूप और महा रसीले शब्द का भंडार है इस वास्ते उसको सुन्दर रूप और रसीली आवाज़ से इश्क़ है ॥

६६२-(४) इस दुनियाँ में जो सुंदर से सुंदर रूप और निहायत शीरी आवाज़ देखने और सुनने में आती हैं वह बमुकाबले उन रूपों और आवाज़ों के जो घट २ के ऊँचे से ऊँचे देशों में मौजूद हैं एक किनके और ज़र्रे की बराबर नहीं हैं, और वहाँ निहायत मोहनी रूप और आवाज़ जिनकी उपमा नहीं है और कोई महिमा नहीं कर सक्ता मौजूद हैं ॥

६६३-(५) इस वास्ते हर एक को मुनासिब है कि अपने घट में भी थोड़ी बहुत सैर करे और वहाँ के नूर को देख कर और आवाज़ को सुनकर अचरजी आनंद हासिल करे तब उसको मालूम होगा कि किस क़दर भारी सामान कुदरत का उस के अंतर में मौजूद है और वह कैसे ओछे और नाशमान पदार्थों के लिये इस दुनियाँ में तलाश और मिहनत कर रहा है ॥

६६४-(६) बड़भागी वे जीव हैं कि जो दुनियाँ में भी अपने मालिक की कारीगरी और ताक़त को देख कर खुश होते हैं और शुकराना करते हैं और अपने घट में भी उस की भारी से भारी कुदरत और अचरजी रचना की सैर कर के असली आनंद और खुशी हासिल करते हैं और उस सर्व समरथ और कुल दयाल मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते हैं और उसके निज रूप के दर्शनों की अभिलाषा उठा कर सच्चे मन से उसकी प्राप्ती के लिये जतन करते हैं ॥

६६५-(७) घट का भेद और तरकीब उसके सैर करने की सिर्फ़ संत सतगुर से मालूम हो सक्ती है। क्योंकि वे पूरे भेदी और निज मुसाहब या निज पुत्र कुल मालिक सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के हैं ॥

६६६-(८) जो कोई घट की सैर और कैफ़ियत देखने का शौक़ रखता है उस को चाहिये कि पहिले

संत सतगुर या उन की संगत का खोज करे और जो पता मिल जावे तो उस संगत में शामिल होकर कोई दिन सतसंग करे और कुल मालिक की महिमा और भेद के वचन सुने और समझे और दुनियाँ की असली हालत और कैफ़ियत और उसके सामान का ओछापन और नाशमानता मालूम करके उसकी तरफ़ से किसी क़दर हटे और कुल मालिक के चरनों की तरफ़ तवज्जह लावे॥

६६७-(९) कोई दिन के सतसंग से खोजी को सब हाल दुनियाँ का और भेद घट का मालूम हो जावेगा फिर मुनासिब है कि संत सतगुर से जो भाग से मिल जावें नहीं तो उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से उपदेश लेकर अंतर में अभ्यास शुरू करें ॥

६६८-(१०) वह अभ्यास सुरत और मन को स्वरूप और आवाज़ में लगाने का है और उसको भजन और ध्यान कहते हैं यानी सुरत को आवाज़ में जो घट २ में ऊँचे देश से आरही है लगा कर चढ़ाना और अंतर के स्वरूप में जोडना और इस अभ्यास को सुरत शब्द जोग भी कहते हैं ॥

६६९-(११) जीव की बैठक इस देही में आँखों के मुक़ाम पर है और कुल मालिक का तख़्त भी घट में ऊँचे से ऊँचे मुक़ाम पर मौजूद है और रास्ते

में कई मंज़िलें या मुक़ाम हैं और हर एक मुक़ाम की आवाज़ जुदा २ है, सो यह सब भेद संत सतगुर या उनके प्रेमी सतसंगी से वक़्त उपदेश के मिलेगा उस के मुवाफ़िक़ अभ्यासी को कार्रवाई करना चाहिये ॥

६७०-(१२) जब मौज से अंतर में स्वरूप का दर्शन होगा और तरह २ का प्रकाश और नूर नज़र आवेगा और रसीली आवाज़ कभी २ सुनाई देगी तब अभ्यासी सतसंगी अपने भागों को सराहेगा और दुनियाँ के रूप रंग और आवाज़ वग़ैरह से सहज में उसका चित्त हटता जावेगा और चरनों में संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के गहरी प्रीत और प्रतीत इस के हिरदे में जागती जावेगी ॥

६७१-(१३) इसमें कुछ शक नहीं है कि घट का खेल और सैर बग़ैर दया और मेहर संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के नज़र नहीं आ सक्ते हैं लेकिन अभ्यासी भी सच्चे शौक़ वाला और प्रेमी और मिहनती होना चाहिये तब कारज बनना शुरू होगा यानी आहिस्ते २ कैफ़ियत नज़र आती जावेगी और मन और सुरत मगन होकर उमंग के साथ घट में लगते जावेंगे ॥

६७२-(१४) इसी तरह शौक़ और प्रेम दिन २ बढ़ता जावेगा और अंतर में संत सतगुर और

राधास्वामी दयाल की दया के परचे पाकर प्रतीत और सरन मज़बूत होती जावेगी। रफ़्ते २ एक दिन सुरत निज धाम में पहुँच कर अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनंद को प्राप्त होगी और मन और माया और काल और करम से पीछा छूट जावेगा॥

६७३-(१५) ऐसा सतसंग और यह कार्रवाई सुरत शब्द मारग की इस वक़्त में राधास्वामी संगत में जारी है और यह सतसग कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने आप संत सतगुर रूप धारन कर के जारी फ़रमाया और घट का कुल भेद और तरीक़ा चलने और चढ़ने सुरत और मन का निहायत सहज तरकीब से (जिस को लड़का जवान और बूढ़ा आसानी से कर सक्ता है) प्रघट करके जीवों को अति दया कर के समझाया॥

६७४-(१६) ऐसी तासीर और बरकत सुरत शब्द मारग के अभ्यास में अपनी मौज और दया से कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने रक्खी है कि जो कोई उस को शुरू करके थोडे दिन भी नेम से जैसा तैसा कमावे तो भी उसका छुटकारा चौरासी के चक्कर से हो जावेगा और आइंदे को दिन २ उस की भक्ती चरनों में बढ़ती जावेगी और अभ्यास में भी इस क़दर तरक्क़ी होती जावेगी कि दो तीन या चार जनम में वह संत सतगुर की

दया से अपना काम पूरा बनालेगा यानी राधा-स्वामी धाम में पहुँच कर बिस्राम पावेगा और माया के घेर से जहाँ जनम मरन और सुख दुख का चक्कर चल रहा है न्यारा होकर अमर और परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

---

(४७) प्रकार सैंतालीसवाँ

दुनियाँ में जीव दो क़िसम के काम कर रहे हैं एक स्वार्थ दूसरा परमार्थ लेकिन असली परमार्थ की कारवाई से (जिससे सच्चा उद्धार मुमकिन है) बेख़बर हैं यह राधास्वामी मत में जारी है। और सच्चे परमार्थी को थोड़े दिन अभ्यास करने से फ़ायदा उसका मालूम हो सक्ता है और आख़िर को परम धाम प्राप्त होगा ॥

६७५-(१) इस दुनियाँ में जीव दो क़िस्म के काम कर रहे हैं एक स्वार्थ दूसरा परमार्थ ॥

६७६-(२) स्वार्थ से मुराद उन करमो से है जो वास्ते प्राप्ती सुख और आराम के इस लोक और इस ज़िंदगी में या स्वर्ग और बैकुंठ और बहिश्त

वग़ैरह में वाद छोड़ने इस देह और देश के किये जावें इस को प्रविर्ती कहते हैं ॥

६७७-(३) परमार्थ से मतलब उन कामों से है जो वास्ते प्राप्ती मुक्ती के या मिल जाने के परमेश्वर या ब्रह्म के स्वरूप में किये जावें इस को नृविर्ती कहते हैं ॥

६७८-(४) असली और सच्चा और निर्मल परमार्थ नृविर्ती से जुदा है उसका भेद सिवाय राधास्वामी मत अथवा संत मत के और कहीं नहीं है और इस को नृविर्त पर कहते हैं ॥

६७९-(५) इस परमार्थ से मतलब यह है कि जीव मन और सुरत के घट में चढ़ाई का अभ्यास सुरत शब्द मारग के तरीक़े से करके कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में जो निर्मल चेतन्य देश और महा प्रेम और परम आनद का भंडार है पहुँच कर बिस्राम पावे और जनम मरन से क़ितई छुटकारा हो जावे ॥

६८०-(६) यह फ़ायदा और किसी मत की परमार्थी कार्रवाई से हासिल नहीं हो सक्ता है क्योंकि जिस क़दर साधन नृविर्ती के हैं उन का सिद्धान्त शुद्ध माया के देश में है और परमेश्वर और ब्रह्म और पारब्रह्म का पद भी उसी देश में वाक़े है और वहाँ जनम मरन के चक्कर से क़ितई

छुटकारा नहीं है और इस देश का महापरलै के वक्त सिमटाव हो जाता है ॥

६८१-(७) जो कि मिहनत और कार्रवाई और बर्ताव परमार्थियों का चाहे वह परमार्थ ब्रह्म पद की प्राप्ती के वास्ते होवे या कुल मालिक के धाम में पहुँचने के लिये होवे थोड़ा बहुत एकसाँ होता है इस वास्ते सच्चे परमार्थी को मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले अपने मालिक का निरनय बख़ूबी कर लेवे कि वह सच्चा और कुल मालिक है या कि रास्ते की किसी मंज़िल और मुक़ाम का अफ़सर और मुख़्तार है ॥

६८२-(८) बग़ैर प्रेम और भक्ती के सच्चे मालिक के चरनों में पहुँचना नामुमकिन है इस वास्ते जो भक्ती कि संतों ने और ख़ास कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुर रूप धारन करके आप जारी फ़रमाई है उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना मुनासिब है ताकि रास्ता आसानी से तै होवे और माया के देश के पार जो कुल मालिक का धाम है वहाँ पहुँच कर बिश्राम पावे ॥

६८३-(९) प्रेम और भक्ती पहिले संत सतगुर के चरनों में करनी चाहिये और चित्त से चेत कर उनके वचन सुनकर और समझ कर उनकी धारना करना ज़रूरी है और संसार के भोगों और पदार्थों से किसी क़दर नफ़रत यानी बैराग करके और

उपदेश सुरत शब्द मारग का हासिल करके अंतर में अभ्यास मन और सुरत के चढ़ाने का ध्यान और भजन के वसीले से जिस क़दर बन सके दुरुस्ती के साथ करना चाहिये तब कुछ घट में कैफ़ियत नज़र आवेगी और थोड़ा बहुत रस और आनन्द भी मिलता जावेगा और शौक़ और प्रेम आहिस्ते २ बढ़ता जावेगा ॥

६८४-(१०) जो संत सतगुर से मेला न होवै तो उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से मिलकर और कोई दिन संगत में शामिल होकर सतसंग करे और उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे और राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की सरन दृढ़ करके उनके मिलने की मन में अभिलाषा रक्खे तो अचरज नहीं है कि वे मेहर और दया से मिल जावें और अपने दर्शन देकर और बचन सुनाकर उसकी प्रीत और प्रतीत को बढ़ावें ॥

६८५-(११) जब तक संत सतगुर से मेला न होवे तब तक जो बिरह और प्रेम के साथ अभ्यास किया जावेगा उसमें भी राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया थोड़ी बहुत मालूम पड़ेगी और आहिस्ते २ तरक्क़ी होती जावेगी और सतसंग की मदद से करम और भरम कट जावेंगे और निर्मल प्रीत और प्रतीत चरनों में और भी सुरत शब्द मारग की बढ़ती जावेगी ॥

६८६-(१२) ऐसा सतसंग और कार्रवाई सुरत शब्द मारग के अभ्यास की इस वक़्त में सिर्फ़ राधास्वामी संगत में जारी है जो कोई अपना सच्चा और पूरा उद्धार चाहे उसको मुनासिब है कि संगत मज़कूर में शामिल होकर सतसंग और अंतर अभ्यास शुरू करे तब कुछ अरसे के बाद फ़ायदा उस सतसंग और अभ्यास का उसको अपने अंतर और बाहर में आप नज़र आवेगा ॥

६८७-(१३) कुल मत जो दुनियाँ में जारी हैं और कुल जीव चाहे कैसेही आलिम और फ़ाज़िल और विद्यावान और बुद्धिवान हैं सच्चे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम से बेख़बर हैं और किसी मत में रास्ता चलने और चढ़ने का घट में जोकि निर्बिघ्न होवे और जिसका अभ्यास हर कोई गृहस्त या बिरक्त और स्त्री और पुरुष आसानी से कर सकें जारी नहीं है इस सबब से सिवाय राधास्वामी संगत के जोकि कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने आप संत सतगुर रूप धारन करके क़ायम की और कहीं इस अभ्यास का पता और भेद इस वक़्त में नहीं मिल सकता है ॥

६८८-(१४) हर क़िस्म के सवाल का पूरा २ जवाब राधास्वामी मत में मौजूद है और जोकि इस मत के असूल और क़ायदे कुल रचना के असूल के मुवाफ़िक़ हैं और कोई बात ख़िलाफ़ क़ायदे क़ुदरत

के या बेमसलहत और बेफ़ायदे इस मत में जारी नहीं है इस सबब से यह मत कुदरती है और उसमें विद्या और बुद्धी को दख़ल नहीं है बल्कि जितनी विद्या हैं वे सब इसी की साखा समझनी चाहियें इस वास्ते सच्चे खोजी परमार्थी को चाहिये कि विद्या और चतुराई को छोड़ कर निर्मल और प्रेमी बुद्धी के साथ इस मत के क़ायदों को समझ कर अभ्यास शुरू करे और जो कुछ कि भेद और तरीक़ा राधास्वामी दयाल ने दया करके जीवों के सहज उद्धार के वास्ते प्रघट किया है उसको अपने घट मे आहिस्ते २ देखता जावे और मेहर और दया को भी परखता चले तब उसकी प्रीत और प्रतीत बढ़ेगी और अभ्यास में भी तरक्क़ी होती जावेगी और इसी ज़िन्दगी मे अपने सच्चे उद्धार का सबूत उसको मिल जावेगा ॥

६८९-(१५) जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है उसको सिवाय राधास्वामी मत के और किसी मत के असूल और तरीक़े अभ्यास वग़ैरह में (जोकि अक्सर बाहरमुखी हैं और अक़ली और इल्मी दलीलों से क़ायम किये गये है) पूरी शांती हरगिज़ नही आवेगी और न उसके मन में सच्चा प्रेम सच्चे मालिक के चरनों में जिसके बग़ैर चलना और चढ़ना मन और सुरत का घट में मुमकिन नही है पैदा होगा और न उसकी तरक्क़ी वहाँ का

अभ्यास करके मुमकिन है फिर सच्चा और पूरा उद्धार कि जिससे जनम मरन का चक्कर छूट जावे और देहियों के साथ दुख सुख का भोग करने से रिहाई होवे और अमर और परम आनन्द प्राप्त होवे किसी सूरत में हासिल होना मुमकिन नहीं है ॥

---

(४८) प्र ार अड़ताली वाँ

जोकि इस दुनियाँ का सब सामान नाशमान है और यहाँ सुख कम और दुख ज़ियादा है और अख़ीर वक़्त पर आंखों के मुक़ाम से सुरत का खिंचाव होता है इस वास्ते हर एक जीव को मुनासिब है कि इसी ज़िन्दगी में इस रास्ते पर चलने का अभ्यास शुरू कर दे तो अंतर में दरजे बदरजे बिशेष सुख मिलेगा और तकलीफ़ और दुखों से ख़ास कर मौत के वक़्त बचाव हो जावेगा ॥

६९०-(१) यह दुनियाँ और इसका सब सामान और भी सब देहियाँ नाशमान हैं और यहाँ के सुख दुख भी छिनभंगी हैं लेकिन इस लोक में सुख कम और दुख ज़ियादा है ॥

६९१-(२) जबकि यह मालूम है कि यह देह और देश और सब सामान और कुटुम्ब परिवार एक दिन ज़रूर छोड़ना पड़ेगा तब अक़लमंद और विचारवान आदमी को चाहिये कि जहाँ तक मुमकिन होवे अपना बंधन इस देह और देश में कम करे ताकि उनके छोड़ने के वक़्त बहुत दुख न होवे ॥

६९२-(३) और यह भी मुनासिब है कि कोई ऐसा जतन करे कि जिसके सबब से इस ज़िन्दगी में कष्ट और कलेश कम व्यापे और मौत के वक़्त इस देह के छोड़ने में तकलीफ़ कम होवे या बिलकुल न होवे ॥

६९३-(४) मरने के वक़्त का हाल देख कर मालूम होता है कि सुरत या जीव का खिँचाव उँगलियों से शुरू होता है और जिस क़दर सिमटाव होता नज़र आता है उसी क़दर बदन सिथल और बेकार होता जाता है और अख़ीर वक़्त जब पुतली आँखों की फिर जाती है तब चोला छूट जाता है और जान निकल जाती है ॥

६९४-(५) अब मुनासिब मालूम होता है कि जो मुमकिन होवे तो वह जतन किया जावे कि जिससे इसी ज़िन्दगी में जिस रास्ते पर कि अख़ीर वक़्त पर जाना है उसको पहिलेही से जबकि होश हवास दुरुस्त हैं खोलना और तै करना शुरू करे तो जिस

क़दर पुतली को सरकाने या उलटाने की ताक़त आती जावेगी उसी क़दर देह और दुनियाँ के दुख सुख कम व्यापेंगे और अख़ीर वक़्त पर चलने में तकलीफ़ नहीं होगी बल्कि आनंद आवेगा ॥

६९५-(६) यह जतन और तरीक़ा जीते जी मरने का है यानी इस क़िस्म का अभ्यास इस ज़िन्दगी में किया जावे कि जिससे सुरत का खिंचाव और सिमटाव मौत के मुक़ाम बल्कि उसके परे तक हो जावे और फिर देह में उतर आवे ॥

६९६-(७) जिस किसी से यह अभ्यास दुरुस्ती से बन आवे वह जीते जी अपनी ताक़त से मर कर अमर हो जावेगा और मौत को जीत लेगा यानी फिर उसको मरने का कष्ट और कलेश नहीं व्यापेगा और जब वक़्त आवेगा या जब वह शख़्स चाहेगा सहज में बग़ैर किसी क़िस्म की तकलीफ़ के देह को छोड़ देगा ॥

६९७-(८) यह अभ्यास इस समय में सिर्फ़ राधास्वामी मत में जिस को संत मत भी कहते हैं जारी है और उस का नाम सुरत शब्द जोग है यानी सुरत रूह को आवाज़ आसमानी या आकाशबानी में लगा कर घट में ऊँचे की तरफ़ को चढ़ाना और देह से न्यारे हो कर ब्रह्मांड और उसके परे संतों के देश में सैर करना और फिर कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में जो निरमाया और

अमर देश है और महा प्रेम और महा आनंद का भंडार है चढ़ कर विश्राम करना ॥

६९८-(९) जितने मत दुनियाँ में जारी हैं उन में अनेक तरह की कार्रवाई वास्ते प्राप्ती मुक्ती के जारी हैं और बहुत से लोग उन को अपनी समझ और ताक़त के मुवाफ़िक़ कर रहे हैं। लेकिन ज़ाहिर में और इसी ज़िंदगी में उन की हालत ऐसी नहीं बदलती कि जिससे पूरा सबूत इस बात का मिल जावे कि उस साधन की कार्रवाई से ज़रूर एक दिन सच्ची मुक्ती का हासिल होना [illegible]किन है। और वह साधन इस दुनियाँ के दुख सुख के कम व्यापने के वास्ते भी बहुत कम मदद देते [illegible]र आते हैं ॥

६९९-(१०) सबब इस का यह है कि जो कार्रवाइयाँ हर एक मत में जारी हैं वह या तो बाहरमुख हैं, या अंतरी पिंड के नाभी और हृदय चक्र के अभ्यास हैं और जो कि इनका तअल्लुक़ सुरत रूह की धार के साथ (जो जाग्रत अवस्था में नेत्र के [illegible]म पर बैठ कर कार्रवाई देह और दुनियाँ की करती है) नहीं है इस सबब से उन में मुक्ती का फल बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं हो सक्ता है ॥

७००-(११) जो फ़ायदा और मतलब इस क़ि[illegible] के अभ्यास से हासिल होना चाहिये वह सिर्फ़ संतों के सुरत शब्द मारग की कमाई से प्राप्त होना मुमकिन

है क्योंकि वह अभ्यास रूहानी यानी सुरत का है और किसी मत के अभ्यास को में दख़ल नहीं है ॥

७०१-(१२) यह रूहानी अभ्यास कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुर रूप धारन करके आप प्रघट ि ा और उस को इस क़दर सहल कर दिया कि स्त्री और पुरुष और जवान और बूढ़ा उसको आसानी के साथ निर्बिघ्न कर सक्ते हैं और उस का फ़ायदा यानी अपनी मुक्ती होती हुई इसी ज़िंदगी में देख सक्ते हैं और अंतर में आनंद और सरूर हासिल कर के मगन हो सक्ते हैं ॥

७०२-(१३) इस रूहानी अभ्यास की अब तक ी मत वाले को ख़बर नहीं हुई और न कुल मालिक राधास्वामी दयाल का पता और भेद किसी ने जाना इस सबब से जो अभ्यास कि और मतों में जारी हैं उन में कठिनता और तकलीफ़ और परहेज़ वग़ैरह बहुत सख़्त बरदाश्त करने पड़ते हैं और फिर भी सच्ची ु ी प्राप्त नहीं होती ॥

७०३-(१४) इस रूहानी अभ्यास की मदद से तन मन और इंद्रियाँ बस में आवेंगी और जिस क़दर कि बिकार मन में हैं वह सब आहिस्ते २ दूर हो जावेंगे क्योंकि जिस क़दर कि कार्रवाई देह और दुनियाँ की है वह रूह की ताक़त से जारी है और जबकि अभ्यास करके अभ्यासी को इस क़दर गत

हासिल हुई कि जब चाहे जब रूह की धार को पिंड में उतार लावे और जब चाहे जब ब्रह्मांड में या सत्त पुरुष राधास्वामी देश में चढ़ा लेवे तो साफ़ ज़ाहिर है कि सब पसारा पिंड और ब्रह्मांड का उस अभ्यासी के आधीन हो जावेगा यानी मन और इंद्री वग़ैरह उस के क़ाबू में आ जावेंगे और वह मालिक की कुदरत और अपनी ताक़त को अंतर और बाहर परख कर निहायत मगन होगा ॥

७०४-(१५) इस रूहानी अभ्यास का भेद और हाल रास्ते और मंज़िलों का सिर्फ़ संत सतगुर या उन के प्रेमी अभ्यासी सतसंगी से मालूम हो सक्ता है और उन्हीं की मदद से और भी कुल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से यह रास्ता जारी हो सक्ता है। इस वास्ते सच्चे खोजी को चाहिये कि पहिले संत सतगुर की तलाश करे और जो वे न मिलें तो उनकी संगत मे शामिल होकर और प्रेमी अभ्यासी से उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करदे और वह संगत राधास्वामी संगत के नाम से मशहूर है ॥

७०५-(१६) जिस वक़्त कि सच्चा खोजी प्रेम अंग लेकर और कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन मन में धारन कर के अभ्यास शुरू करेगा तो उस को अंतर में दया और मेहर की परख आती जावेगी और अपनी रक्षा और सम्हाल अंतर और बाहर

देख कर चरनों में प्रीत और प्रतीत बिशेष लावेगा और इसी तरह दिन २ प्रेम की तरक़्क़ी होती हुई आसानी के साथ उसके मन और सुरत की चढ़ाई होती जावेगी और एक दिन धुर धाम में पहुँच कर बासा पावेगा और मन और माया और काल और करम के जाल से क़तई छुटकारा हो जावेगा ॥

---

(४९) ार उन ा वाँ

संसार की दौलत और मान बड़ाई बग़ैर शौक़ और मिहनत और मशक़्क़त के हासिल नहीं होती और फिर भी वह नाश न है, लेकिन जो कोई परमार्थ की दौलत और बड़ाई हासिल करे वह हमेशा क़ायम रह सक्ती है और जिस क़दर बाँटी जावे उसी क़दर बढ़ती है ॥

७०६--(१) इस दुनियाँ में हर कोई जब से कि वह होश सम्हालता है वास्ते प्राप्ती धन और माल और हासिल करने मान बड़ाई और अपनी शोहरत और नामवरी के उमर भर जतन और मिहनत करता है फिर भी बहुत कम जीवों को यहाँ की दौलत और बड़ाई मुवाफ़िक़ उनकी चाह के हासिल होती है ॥

७०७-(२) ज़ाहिर है कि इस दुनियाँ की दौलत और मान बड़ाई ठहराऊ और संग चलने वाली नहीं है और बहुत मुश्किल से प्राप्त होती है, फिर भी कुल आदमी उस की चाह में गिरफ़्तार हैं और उसके वास्ते सख़्त मिहनत और तकलीफ़ गवारा करने को तैयार हैं ॥

७०८-(३) सिवाय नाशमान और संगी न होने के इस दुनियाँ की दौलत की हिफ़ाज़त में बहुत तकलीफ और तरद्दुद होता है, और जब कभी इसी ज़िंदगी में नुकसान हो जावे यानी वह दौलत हाथ से जाती रहे और मान बड़ाई और नामवरी में भी ख़लल आजावे तो निहायत दर्जे का रंज और कलेश मन को होता है और उसका दूर होना अक्सर नामुमकिन हो जाता है यानी मरते वक़्त तक वह रंज दूर नहीं होता ॥

७०९-(४) जिस किसी को दुनियाँ की दौलत और मान बड़ाई थोड़ी बहुत हासिल हो जाती है उसके मन में अहंकार और नमूद और दिखावा इस क़दर बढ़ जाता है कि वह किसी क़दर आपे को और अपने मालिक को भूल जाता है और ग़रीबों और कमज़ोरों और अपने से कम दरजे वालों को हिक़ारत की नज़र से देखता है और अक्सर मुआमलों में बेसबब या बेमतलब उनके दिल को दुखा देता है या और तरह से सख़्ती करता है या

तकलीफ़ पहुँचाता है, और इस तरह अलावे ईर्षा वालों के बहुत से लोगों को अपना बदख़्वाह और दुश्मन बना लेता है ॥

७१०-(५) दुनियाँ की दौलत हासिल होने में मन और इंद्री बहुत ज़बर हो जाते हैं और मामूली और फ़जूल भोगों की चाह उठा कर उनमें बेतकल्लुफ़ और बेख़ौफ़ कसरत के बर्ताव करते हैं कि जिसके सबब से अक्सर बीमारी और बदनामी पैदा होती है और करमों का भार सिर पर बढ़ता है और आइंदा दुख सहने पड़ते हैं ॥

७११-(६) जिन लोगों को बावजूद तलाश और मिहनत और मशक्क़त के अच्छी तरह गुज़ारे के ला . भी दौलत नहीं मिलती है या सिर्फ़ इस क़दर हासिल होती है कि जिसमें मामूली तौर पर या औसत दरजे का गुज़ारा हो जावे और ज़ियादा भोग बिलास नहीं कर सक्ते वे अपने से बड़ों को देख कर अक्सर जलते कुढ़ते रहते हैं और अपने मन की चाहें पूरी न होने के सबब से सदा दुखी रहते हैं और बाज़े उनमें से नई २ तरकीबें बग़ैर लिहाज़ मुनासिब और नामुनासिब के वास्ते पैदा करने धन और माल के सोचते और करते रहते हैं और उनका फल जैसा कि होता है दुख सुख भोगते रहते हैं ॥

७१२-(७) ऐसी हालत जगत के जीवों को देख कर संत सतगुर दया करके फ़रमाते हैं कि यहाँ की

दौलत और नामवरी के वास्ते मुनासिब तौर पर जिस क़दर कार्रवाई ज़रूरी होवे करो और उसके हासिल होने पर बहुत होशियारी और सम्हाल के साथ वर्ताव करो कि जिस में पाप और दंड के भागी न होओ और जिस क़दर मौक़ा होवे और फ़ुरसत मिले थोड़ा बहुत वक़्त अपना वास्ते हासिल करने परमार्थी दौलत और शोहरत के तवज्जह के साथ लगाओ ताकि इस ज़िंदगी में भी आराम पाओ और आइंदा को हमेशा के आनंद के भागी हो जाओ और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से बच जाओ ॥

७१३–(८) यह दौलत सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर का प्रेम और जिस क़दर बन सके पहिचान है और वह संत सतगुर और उन के प्रेमी जन के सतसंग से और भी अंतरमुख अभ्यास से हासिल होगी ॥

७१४–(९) अंतरमुख अभ्यास मतलब सुरत शब्द योग से है यानी मन और सुरत को आसमानी शब्द के वसीले से जो घट २ में हर वक़्त जारी है समेटना और कुल मालिक के धाम की तरफ़ चढ़ाना और मालिक की कुदरत और उसके स्वरूप का कुछ प्रकाश अंतर में देखना ॥

७१५–(१०) सत संग के बचन सुन कर और समझ कर और अंतर में थोड़ी बहुत कैफ़ियत देख कर

सच्चे परमार्थी की हालत बदलती जावेगी यानी उसको किसी क़दर संत सतगुर की पहिचान आवेगी और फिर उनके और मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी ॥

७१६–(११) जिस क़दर कि सच्चे परमार्थी का शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा उसी क़दर भक्ती के अंगों में जैसे सेवा और भजन वग़ैरह में उसका बर्ताव ज़ियादा होता जावेगा और फिर उसी क़दर की ी की शोहरत देशों में फैलती जावेगी ॥

७१७–(१२) इसी तरह जिस क़दर सच्चा परमार्थी अपने रिश्तेदार और बिरादरी और मित्र और पड़ोसी वग़ैरह से सच्चे परमार्थ यानी सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की भक्ती की महिमाँ सुना कर उन को हिदायत वास्ते शामिल होने सतसंग के करेगा उसी क़दर उसकी परमार्थी समझ और प्रतीत बढ़ती जावेगी और जिस क़दर कि लोग उसकी ी की हालत देखेंगे उसी क़दर वे भी परमार्थी कार्रवाई में शामिल होवेंगे यानी परमार्थी दौलत और दीनता की उनको भी मिलती जावेगी ॥

७१८–(१३) जो सुख और आनंद और शान्ती कि परमार्थी दौलत यानी चरनों के प्रेम के पैदा होने और बढ़ने में हासिल होती है उसके मुक़ाबले में दुनियाँ के भोग बिलास तुच्छ और ओछे नज़र

आते हैं इस सबब से सच्चा परमार्थी अपने सतगुर के संग में हमेशा मगन और निःचिन्त रहता है और दुनियाँ की तरफ़ से उसका चित्त और मन अक्सर बेपरवाह और उदास रहते है और दिन २ उनकी चाह और मोह घटते जाते हैं और उसी क़दर दुनियाँ के दुख सुख कम व्यापते हैं ॥

७१९-(१४) जो कोई बिरह और प्रेम अंग लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास करेगा उसको ज़रूर अंतर में निर्मल रस और आनंद मिलेगा और इसी ज़िन्दगी में उसको अपने सुरत और मन देह और संसार से थोड़े बहुत न्यारे होते हुए नज़र आवेंगे और संसार का दुख सुख कम व्यापेगा और जिस रास्ते पर कि मौत के वक्त़ चलना है वह रास्ता किसी क़दर खुलता जावेगा और शौक़ उस रास्ते को जलदी से तै करके निज घर यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में पहुंचने का बढ़ता जावेगा कि जिसके सबब से अख़ीर वक्त़ पर निहायत उमंग के साथ उसके मन और सुरत निज घर की तरफ़ को चलेंगे और अंतर में लीला और बिलास देखकर निहायत मगन होंगे कि जिसका असर चेहरे पर बाद छूटने देह के साफ़ दिखलाई देता है ॥

७२०-(१५) ऐसा भारी फ़ायदा सुरत शब्द मारग के अभ्यास और संत सतगुर के सतसंग का है कि

जिस की महिमाँ बयान करने में नहीं आसक्ती--उस कैफ़ियत और आनंद को प्रेमी जनही ख़ूब जानते हैं

७२१-(१६) बड़ भागी वह जीव हैं कि जो वास्ते हासिल करने परमार्थ की दौलत के उमंग उठावें और फिर बाहर से सतगुर का सतसंग और अंतर में सुरत शब्द जोग का अभ्यास करके प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते जावें उन्हीं को वह अविनाशी दौलत यानी गहरा प्रेम और विश्वास चरनों में एक दिन हासिल होगा और फिर दिन २ उसकी तरक्क़ी होकर एक दिन धुर धाम में पहुँच कर मगनता और परम शान्ती को प्राप्त होंगे ॥

७२२-(१७) यह सतसंग और अभ्यास इस वक़्त में राधास्वामी सगत में जो कि कुल मालिक ने दया करके संत सतगुर रूप धार कर आप क़ायम की जारी है जो कोई सच्चा खोजी और दरदी है उसको मुनासिब है कि सगत मज़कूर में शामिल होकर और कोई दिन सतसंग करके उपदेश लेवे और अभ्यास शुरू करदे जिस क़दर उसकी लगन चरनों में कुल मालिक राधास्वामी दयाल के होगी उसी क़दर उसको फ़ायदा होगा ॥

---

(५०) प्रकार पचासवां।

दुनियाँ मैं लोग नशा खाते और पीते हैं कि जिससे रंज और तकलीफ़ न ब्यापे और मज़ा और सरूर हासिल होवे लेकिन उसके पीछे खुमार और सुस्ती और अक्सर बीमारी पैदा होती है-- जो कोई घट में शब्द का अभ्यास करे उसको ठहराऊ आनंद सहज में प्राप्त हो सक्ता है और दुनियाँ के दुख और चिन्ता भी कम ब्याप सक्ते हैं और आख़िर को सच्चा उद्धार मुफ़त में हो जावेगा।

७२३-(१) दुनियाँ में वहुत से लोग वास्ते हासिल करने ताज़गी और सरूर और दूर करने थकाव मिहनत वग़ैरह के और भी सोच फ़िकर दुनियाँ और ग्रहस्त के नशे की चीज़ पीते और खाते हैं॥

७२४-(२) जिस मतलब से कि लोग नशे की चीज़ खाते या पीते है वह जरूर थोड़ा बहुत हासिल होता है लेकिन बाद उतरने नशे के किसी २ को सिर दर्द और घुमेरी मालूम होती है या मामूली खाने पीने में कुछ फ़र्क़ आजाता है और सब नशा करने वालें के दिमाग़ और रगों के मंडल में किसी क़द्र अब्र-तरी और परेशानी पैदा होती जाती है कि वह

आख़िर को कोई सख़्त बीमारी पैदा करती है कि जिस में जान जाने का ख़ौफ़ होता है ॥

७२५-(३) बाज़ी नशे की चीज़ें जैसे चरस गाँजा अफ़यून निहायत दरजे का नुक़सान दिमाग़ को पहुँचाती हैं और मनुष्य को थोड़ा बहुत पागल बना देतीं हैं यानी उसकी अक़ल में फ़ितूर आ जाता है और अपने और कुटुम्ब के नफ़े और नुक़सान का ख़याल बहुत कम या बिलकुल नहीं रहता है ॥

७२६-(४) इस में कुछ शक नहीं कि पिछले ज़माने में जोगियों ने आम जीवों को थोड़ा बहुत अंतरी खुशी और दुख सुख से आज़ादगी और बचाव का फ़ायदा पहुँचाने की नज़र से नशे की चीज़ें जैसे शराब और भंग और अफ़यून वग़ैरह प्रघट कीं कि जिसके थोड़े से इस्तेमाल से दिन भर की मिहनत का थकाव और दुनियाँ और ग्रहस्त की चिन्ता और फ़िकर थोड़ी देर को न व्यापै लेकिन लोगों ने उसके इस्तेमाल में ज़ियादती की और इस सबब से नुक़सान और तकलीफ़ भोगने लगे ॥

७२७-(५) यह जीव परमार्थ के अधिकारी न थे इस सबब से बजाय परमार्थी आनंद के उनको नशे का संसारी आनंद देना मुनासिब समझा ॥

७२८-(६) जो सतोगुनी पुरुष हैं और जोकि अपने मन से आपही बिचार कर और दुनियाँ और

उस के भोगों की नाशमानता देख कर सच्चे मालिक और उसके धाम का खोज करते हैं और ऐसा अभ्यास परमार्थी चाहते हैं कि जिससे दिन २ अंतर में कुछ आनंद मिले और संसार और देह आहिस्ते २ किसी क़दर बिसरते जावें ऐसे बड़भागी लोग परमार्थी कहलाते हैं ॥

७२९–(७) चाहे कोई किसी दरजे का परमार्थी होवे पर उस को भेद कुल मालिक और उसके धुर धाम का और भी जुगत चलने और चढ़ने की बग़ैर संत सतगुर के मालूम नहीं हो सक्ती इस वास्ते जो कोई निर्मल नशा नाम यानी शब्द का रस लेना चाहे उस को चाहिये कि अव्वल संत सतगुर या उनकी संगत का खोज करे ॥

७३०–(८) जो भाग से संत सतगुर या उनकी संगत से मेला हो जावेगा तो वे बचन सुनाकर दुनियाँ और उसके सामान का भाव और मोह मन से आहिस्ते २ निकाल देंगे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की प्रीत और प्रतीत जगा कर दिन २ बढ़ावेंगे और सुरत शब्द मारग का उपदेश देकर और उसका अंतर में अभ्यास करा कर थोड़ा बहुत रस और आनंद बख़शेंगे ॥

७३१–(९) इस अभ्यास का नशा और सरूर बहुत भारी है एकाएक हर एक से बरदाश्त नहीं हो सक्ता लेकिन आहिस्ते २ ताक़त उसके बरदाश्त की संत सतगुर की दया से आती जावेगी ॥

७३२--(१०) जो कोई प्रेम और उमंग के साथ कई दफ़े दिन रात में अभ्यास करेगा तो उसका नशा और आनंद बढ़ता जावेगा और कभी घटेगा नहीं और न किसी क़िस्म की तकलीफ़ या बीमारी सुरत शब्द मारग के अभ्यासी को सतावेगी ॥

७३३--(११) बलकि संतों के सतसंगी अभ्यासी को ज़रासी तवज्जह अंतर में करने से वग़ैर ख़र्च करने दाम के थोड़ा बहुत नशा और आनंद हासिल हो सक्ता है और रूहानी ताक़त बढ़ती है और एतदाल क़ायम होता है कि जिसके सबब से कोई बीमारी अभ्यासी को नहीं सताती सिवाय उसके कि जो राधास्वामी दयाल या संतसतगुर अपनी मौज से वास्ते काटने करम और गढ़त मन और इंद्रियों के और सफ़ाई और चढ़ाई सुरत के भेजें और ऐसी बीमारी में तकलीफ़ कम होगी और परमार्थी फ़ायदा ज़ियादा मिलेगा ॥

७३४--(१२) अलावे हासिल होने सरूर और आनंद के सुरत शब्द मारग के अभ्यासी के मन और सुरत दिन २ घट में ऊँचे देश की तरफ़ जहां कुल मालिक का धाम है चढ़ते जावेंगे और जिस क़दर कि चढ़ाई होवेगी उसी क़दर माया के घेर से निकास होता जावेगा और देहियों के बंधन जो दुख सुख और जनम मरन के देनेवाले हैं ढीले होते जावेंगे और आनंद और सरूर बढ़ता जावेगा ॥

७३५--(१३) इसी तरह दो तीन या चार जनम में अभ्यासी की सुरत मन और माया और काल और करम के जाल और घेर से निकल कर निज घर में जो निर्मल चेतन्य देश है और जहाँ कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त है पहुंच कर बिस्राम पावेगी और अमर आनंद को प्राप्त होगी और जनम मरन से रहित हो जावेगी--इसी का नाम सच्चा और पूरा उद्धार है ॥

७३६--(१४) अब समझना चाहिये कि जो कोई सिर्फ़ नशे और आनंद के हासिल करने की नज़र से अभ्यास करेगा उसको दिन२ ज़ियादा से ज़ियादा आनंद और सरूर भी मिलेगा और सच्ची मुक्ती और सच्चा उद्धार सहज में और मुफ़ हासिल हो जावेगा और फिर काल और माया के घेर में नहीं आवेगा और माया के मसाले की देही धारन करके कष्ट और कलेश नहीं भोगेगा ॥

७३७--(१५) इस वास्ते सब जीवों को जो सच्चे और निर्मल और ठहराऊ आनंद के चाहने वाले हैं मुनासिब है कि संत सतगुर के चरनों में जाकर उनका सतसंग करें और जिस क़दर बने उन की सेवा और भक्ती करें और जब वे मेहर से सुरत शब्द मारग का उपदेश देवें तो उमंग और प्रेम के साथ उसका अभ्यास हर रोज़ बिला नाग़ा जारी रक्खें तो उनको वह सरूर और आनंद आहिस्ते २

मिलता जावेगा और जिस क़दर शौक़ बढ़ेगा उसी क़दर वह आनंद भी बढ़ता जावेगा ॥

७३८--(१६) जो जीव कि अधिकारी परमार्थ के नहीं हैं वह भी जो संत सतगुर या उनके प्रेमी और अभ्यासी भक्तों के संग में आजावेंगे तो आहिस्ते २ उनके मन में भी कुल मालिक के चरनों का प्यार पैदा होगा और वे भी अंतर के निर्मल और ठहराऊ आनंद के हासिल करने को खुशी और शौक़ के साथ मिहनत करेंगे और कोई दिन में उनको मिहनत का फ़ायदा उनको मिलना शुरू होजावेगा ॥

७३९--(१७) कोई जीव ि ी क़िसम का होवे वह संत सतगुर के सतसंग में शामिल होने से सबेर अबेर दुरुस्त हो सक्ता है इस वास्ते कुल जीवों को चाहिये कि पहिले संत सतगुर का खोज लगा कर जैसे बने तैसे उनके सन्मुख जावें और दर्शन और सेवा करके और बचन सुन कर थोड़ा बहुत को धारन करके अपने भाग जगावें तो इस ज़िंदगी में भी सिवाय संसारी सुक्खों के कुछ परमार्थी आनंद उनको हासिल होना मुमकिन है और आख़िर को महा और परम आनद के धाम में बासा पाकर हमेशा को सुखी हो जावेंगे ॥

(५१) प्रकार इकक्यावनवाँ

मनुष्य को अक़ल और समझ और ताक़त मालिक ने दी है कि जिससे यह अपने और अपने मालिक के स्वरूप और धाम का पता और खोज लगाकर दर्शन कर सक्ता है और जो यह काम न किया जावेगा तो नर देही मुफ़्त बरबाद जावेगी और जनम मरन और देहियों के दुख सुख से छुटकारा नहीं होगा ॥

७४०-(१) मालिक ने इस लोक में मनुष्य को सब जीवों में श्रेष्ठ और उत्तम रचा है और उसका सब जानवरों पर थोड़ा बहुत हुक्म जारी है और तत्तों और गुनों से भी जो काम चाहता है लेता है ॥

७४१-(२) यह बड़ाई मनुष्य स्वरूप की बसबब अक़ल और समझ बूझ के है कि जिसके वसीले से भलाई और बुराई और नफ़े और नुक़सान का तमीज़ होता है और अपने करतार कुल मालिक की थोड़ी बहुत पहिचान कर सक्ता है ॥

७४२-(३) मनुष्य के शरीर में कुल रचना का नमूना छोटे पैमाने के मुवाफ़िक़ मौजूद है और रास्ता भी उसकी सैर का जो कोई भेद लेकर अपने घट में चलना चाहे अंतर में जारी है ॥

७४३-(४) और जीवों की देह मुवाफ़िक़ नमूने मनुष्य की देह के कुछ कमी बेशी के साथ रची गई है लेकिन उन में ताक़त समझ बूझ और तमीज़ करने नफ़े और नुक़सान की बनिस्बत मनुष्य के कम है और इस सबब से उनको सुरत की चढ़ाई अभ्यास करके नहीं हो सक्ती है॥

७४४-(५) जो कोई नर देह पाकर उसको मुवाफ़िक़ पशुओं और दूसरे जानवरों के खान पान और मिहनत मशक्क़त में वास्ते प्राप्ती धन और मान के ख़र्च करेगा तो वह कुल मालिक और संत सतगुर की ख़ास दया से महरूम रहेगा यानी अपने घट का भेद और जुगत चलकर पहुँचने को कुल मालिक के धाम में उसको नहीं मालूम होवेगी और इस सबब से जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से बचाव और छुटकारा नहीं होगा॥

७४५-(६) इस वास्ते सब मनुष्यों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपनी नर देह को जो अमोल पदार्थ है सुफल करें यानी संत सतगुर का खोज लगाकर जैसे बने तैसे उनके सनमुख पहुँचें और उनका सतसंग करके और बचन चित्त से सुनकर और बिचार कर उनके मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत अपनी रहनी दुरुस्त करें और घट में चलने की जुगत यानी सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर अभ्यास जारी कर दें॥

७४६-(७) बिरह और प्रेम अंग लेकर अभ्यास करने से कुछ कैफ़ियत अंदरूनी यानी रस और आनंद हासिल होगा और कुछ तमाशा क़ुदरत का नज़र आवेगा और इस दुनियाँ और उस के सामान की नाशमानता और तुच्छता की खबर पड़ेगी ॥

७४७-(८) जोकि कुल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त हर एक के घट में मौजूद है इस वास्ते हर एक शख़्स को जो उनका भेद लेकर चरनों में थोड़ी बहुत प्रीत लावेगा और प्रतीत करेगा और उनके चरनों की धारना के साथ अभ्यास करेगा उसको थोड़ा बहुत जलवा उनकी दया का मालूम पड़ेगा और दिन २ प्रेम चरनों में और शौक़ दर्शनों का बढ़ता जावेगा तब इस नर देही की क़दर मालूम पड़ेगी ॥

७४८-(९) बहुत से लोग बड़ी २ मिहनत और कारवाई ख़तरे के साथ वास्ते प्राप्ती धन और दुनियाँ की मान बड़ाई के कर रहे हैं और उसका फ़ायदा वास्ते चंद रोज़ के इसी ज़िंदगी में मिल जाता है लेकिन जो कोई वास्ते प्राप्ती दर्शन कुल मालिक के और बिस्राम पाने उसके निज धाम में थोड़ा वक़्त अपना संत सतगुर के सतसंग और सेवा और अभ्यास सुरत शब्द मारग में ख़र्च करेगा उसको जल्द परचा मिलेगा यानी अंतर में स्वरूप का दर्शन और थोड़ा बहुत शब्द का रस हासिल होगा और आइंदा यह कारवाई बढ़ती जावेगी कि

जिसके सबब से जनम मरन और देह धर कर दुख सुख भोगने का चक्कर मिट जावेगा ॥

७४९--(१०) जो संत सतगुर का दर्शन यकायक न प्राप्त होवे तो मुनासिब है कि उनकी संगत में जाकर शामिल होवे और प्रेमी जन से जो संत सतगुर से उपदेश लेकर अभ्यास कर रहे हैं प्रीत करे और उनके बचन और बानी को चित्त देकर सुने और पढ़े और बिचारे और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर थोड़े बहुत शौक़ के साथ अभ्यास शुरू करे ॥

७५०--(११) जो शौक़ सच्चा है तो संत सतगुर भी ज़रूर दर्शन देंगे और अपनी दया का बल देकर प्रेमी अभ्यासी से मुनासिब और जरूरी करनी करावेंगे कि जिससे इसकी तरक़्क़ी आहिस्ते २ होती जावेगी और प्रेम कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों में बढ़ता जावेगा ॥

७५१--(१२) इस तरह शौक़ीन अभ्यासी संत सतगुर का सतसंग और सेवा करके और उनकी मेहर और दया का बल लेकर आहिस्ते २ अपना काज बनावेगा यानी एक दिन माया के घेर से निकल कर निज धाम में पहुँचेगा तब उसको नर देही और संत सतगुर की क़दर मालूम होवेगी कि कैसे दुर्लभ पदार्थ हैं ॥

७५२--(१३) जो लोग कि सच्चे मालिक की [illegible]ी नहीं करते और संत सतगुर के दर्शनों की या उनके

सतसंग में मिलने की चाह नहीं रखते और नरकों और चौरासी के दुक्खों का ख़ौफ़ दिल में नहीं लाते और सारी उमर अपनी संसार के भोग बिलास और उन्हीं के हासिल करने के निमित्त जतन करने में ख़र्च करते है वे लोग असल में पशू समान हैं सूरत मे मनुष्य हुए तो क्या उनको मालिक का दर्शन और उसके धाम में बासा नहीं मिल सक्ता है और उनका छुटकारा भी जनम मरन के चक्कर से नहीं हो सक्ता है ॥

७५३--(१४) इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब है कि आसमानी और ज़मीनी रचना और कुदरत कुल मालिक की देख कर और अपने हाल और देह की कार्रवाई को विचार कर सच्चे मालिक और अपने स्वरूप का खोज करें और यह भेद और पता माकूल तौर पर और तसल्ली के लायक़ सिर्फ़ राधास्वामी मत में कि जिसको संतमत भी कहते हैं मिल सक्ता है, और मत जो कि दुनियाँ में जारी हैं उन में यह भेद और पता पूरा २ मौजूद नहीं है और न जुगत घट में चलने और चढ़ने का साफ़ तौर पर और आसान तरकीब के साथ वर्णन की है ॥

(५२) प्र ार बावनवाँ

प्रीत और शौक़ से कुल कार्रवाई दुनियाँ की होती है मगर यहाँ का सब सामान नाशमान है इस वास्ते वह प्रीत भी जाती रहती है लेकिन जो कोई मालिक के चरनों में प्रेम लावे वह दिन २ तरक्क़ी पाकर एक दिन प्रेम भंडार में पहुँचा देगा और आइंदा को जनम मरन और देहियों के बंधन से छुटकारा कर देगा ॥

७५४--(१) जितने काम दुनियाँ के हैं और भी जीवों का मेला आपस में बसबब प्रीत और शौक़ के होता है और काम दुरुस्ती से अंजाम पाते हैं ॥

७५५--(२) जहाँ शौक और मुहब्बत नहीं है वहाँ आपस में इत्तिफ़ाक़ भी नहीं है और न बिना शौक़ के किसी काम में कोई क़दम रख सकता है ॥

७५६--(३) बहुत से काम औरत और मर्द मिहनत और मश्क़ करके इस क़िस्म के करते हैं कि जो मामूली आदमियों से किसी तरह नहीं बन सकते हैं और जिनको देखकर बहुत अचरज होता है और उन कामों के करने वालों की मश्क़ और मिहनत पर वाह २ और तारीफ़ की जाती है ॥

७५७--(४) यह सब काम लोग धन और मान बड़ाई के शौक़ से बरसों मिहनत और मशक्क़त

करके सीखते हैं और बाज़े कामों में जान जाने का ख़तरा भी रहता है फिर भी उनको सीखते हैं और आप करके दिखलाते हैं ॥

७५८-(५) यह सब ताकत शौक़ की है कि मुशकिल और ख़तरनाक कामों को अंजाम देवे दूसरे की ताक़त नहीं है कि उस काम को दुरुस्ती से कर सके ॥

७५९-(६) इन सब कामों का फल और फ़ायदा मुवाफ़िक़ उन कामों के नाशमान है और जो कोई अर्से तक वह काम कायम भी रहे और उनका फ़ायदा भी जारी रहा तौभी उस काम का करने वाला आप नहीं ठहर सक्ता और बाद मरने के उसको कुछ हिस्सा उस फ़ायदे का नहीं पहुँच सक्ता ॥

७६०-(७) लेकिन जो कोई जिस क़दर मिहनत और मशक्क़त दुनियाँ के भारी कामों में करते हैं उसका दसवाँ हिस्सा भी सच्चे परमार्थ के कामों में करे तो उसको बहुत भारी फ़ायदा अपने सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की प्रसन्नता का हासिल हो सक्ता है कि जिससे उसको गहरा आनंद अंतर में प्राप्त होवेगा और वह आनंद और उसके साथ प्रेम मालिक के चरनों में दिन २ बढ़ता जावेगा और एक दिन निज धाम में जो महा आनंद और महा प्रेम का भंडार है पहुँचा देगा ॥

७६१-(८) यह मिहनत जब बन पड़ेगी कि जब कुल मालिक और उसके धाम की महिमा सुन कर

शौक़ दर्शनों का पैदा होगा और यह महिमाँ और भेद धाम का संतों के सतसंग में मालूम होवेगा ॥

७६२–(९) जोकि परमार्थी कार्रवाई का फ़ायदा बहुत भारी है और वह कार्रवाई सिर्फ़ नर देही में बन सक्ती है इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब है कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते और भी वास्ते प्राप्ती दर्शन कुल मालिक और बड़ाई परमार्थ के पहिले खोज संत सतगुर और उनकी संगत का लगा कर जैसे बने तैसे सतसंग में शामिल होवें और बचन सुनकर और दुनियाँ और अपनी देह की हालत बिचार कर थोड़ा बहुत प्रेम मालिक के दर्शनों का दिल में पैदा करें ॥

७६३--(१०) संसारी प्रीत दुनियाँ के बड़े आदमियों में बहुत जलद लग जाती है लेकिन उसका फ़ायदा बहुत कम है यानी सिर्फ़ मन को एक क़िस्म का मान इस बात का कि हमारी बहुत से बडे आदमियों से मुलाक़ात है प्राप्त होता है लोकिन संत सतगुर से बढ़ कर दुनियाँ में कोई नहीं यानी राजा और महाराजा भी उनके सेवक और दास हैं और कुल देवता और मनुष्य बल्कि ईश्वर और परमेश्वर उनकी दया के जाचक और मंगता हैं और वे ऐन कुल मालिक का स्वरूप या उसके निज पुत्र या निज मुसाहब हैं फिर जो उनके चरनों में किसी जीव को भाव और प्यार आजावे

तो किस क़दर बड़ भागी उसको समझना चाहिये कि उनकी दया के वसीले से वह एक दिन कुल मालिक के धाम में पहुँच कर उसका दर्शन हासिल कर सक्ता है और माया और मन और काल और करम के घेर से न्यारा होकर अमर लोक में जो परम आनंद का भंडार है वासा पा सक्ता है ॥

७६४--(११) बड़े अफ़सोस का मुक़ाम है कि दुनियाँ के तुच्छ और नाशमान फ़ायदे या मान बड़ाई के वास्ते जीव सख़्त मिहनत और तकलीफ़ उठावें और ख़तरनाक संग इख़्तियार करें और परमार्थी बेअंदाज़ खुशी और आनंद के हासिल करने के लिये और सब से भारी दुक्ख जनम मरन के दूर करने के वास्ते थोड़ी सी मिहनत और हाज़िरी संत सतगुर के सतसंग में करना नहीं चाहते और बावजूदेकि सब जीव देह धरके और अनेक तरह के बन्धनों में अपने मन को बाँध कर दुख सुख भोग रहे हैं और जनम मरन का अत्यंत दुख और कलेश सहते हैं फिर भी कोई इस बात का खोज नहीं करता कि इस कलेश और बारम्बार देह धरने से कैसे बचाव हो और अमर सुख का स्थान कैसे मिले ॥

७६५--(१२) यह बात सही है कि जीवों को कोई सच्चा और पूरा हितकारी और समझाने वाला नहीं मिलता है और जो कोई परमार्थी लिबास में

(जो गुरुवाई का दावा कर रहे हैं) मिलते भी हैं सो वह स्वार्थी यानी धन और मान के ख़ास्तगार नज़र आते हैं और सच्चे परमार्थ से महज़ बेख़बर और नादान मालूम होते हैं। हर जगह ऐसे लोगों का हजूम है और यह संसारी जीवों को खूब भरमाते हैं और जिस क़दर बन सके उनसे धन खैंचते हैं और असली परमार्थ का भेद एक किनके के मुवाफ़िक़ भी नहीं दे सक्ते हैं ॥

७६६-(१३) जब और जहाँ संत सतगुर या साध गुरू प्रघट होते हैं उनकी शोहरत भी बहुत दूर तक फैलती है और अधिकारी जीव बराबर चरनों में चले आते हैं और उपदेश लेकर अभ्यास में लग जाते हैं लेकिन आम तौर पर दुनियाँ के जीव कमो बेश उनके निंदक हो जाते हैं और उनके दर्शन और सतसंग से दूर भागते हैं इसका सबब सिवाय उन जीवों की भारी अभागता के और क्या कहा जावे ॥

७६७-(१४) असल में जीव परमार्थ की तरफ़ से बेपरवाह मालूम होते हैं और हरचंद कुदरत और रचना कुल मालिक की ज़मीन और आसमान पर रंग बरंग देखते हैं फिर भी खोज इस बात का कि वह कुल मालिक कैसा है और कहाँ है किसी के दिल में पैदा नहीं होता और न उससे मिलने की कोई चाह उठाता है ॥

७६८--(१५) दुनियाँ के भोग बिलास जो कि तुच्छ और नाशमान हैं इस क़दर जीवों के मन को अपनी तरफ़ खैंच रहे हैं कि उनसे छूटना निहायत मुशकिल हो गया है और बसबब कसरत धोखेबाजों और ठगई करने वालों के जीवों के मन में अनेक तरह के शक और संदेह पैदा हो गये हैं कि जिसके सबब से वे संतों के बचन की प्रतीत नहीं करते बल्कि उनके सनमुख जाने में डरते हैं कि कहीं ऐसा न होवे कि दुनियाँ से रिश्ता मुहब्बत का और उस का संग ढीला हो जावे या छूट जावे यह समझ निहायत नादानी की है और विद्या और बुद्धिमान लोगों के वास्ते निहायत शरम की बात है और भारी दाग़ मूर्खता और दुनियाँ के मोह का उनकी अक़ल और दानाई (समझ बूझ) पर लगाती है ॥

७६९--(१६) दुनियाँ में बहुत से काम और रोज़गार जैसे सिपाहीगरी का ऐसे है कि जिन में सरीह ख़तरा जान जाने का रहता है और अक्सरों की जान जाती रहती है फिर भी लोग उन कामों को बदस्तूर करते हैं और अपनी जान के नुक़सान का ख़ौफ़ नहीं लाते हैं बल्कि जब भारी लड़ाई का मौक़ा होता है तो अपने आप दरख़ास्त करके नामवरी और तरक़्क़ी के लालच से लड़ाई पर जाते हैं और जान जाने का और अपने कुटुम्ब परिवार के छोड़ने का ज़रा भी सोच और ख़याल नहीं करते ॥

७७०--(१७) फिर बड़े अचरज की बात है कि बावजूदेकि संत घरबार और रोज़गार किसी का नहीं छुड़वाते और लोगों को ग्रहस्त में रह कर अभ्यास करने की जुगत बताते हैं फिर भी लोग ख़ौफ़ कम हो जाने मुहब्बत दुनियाँ और कुटुम्ब परिवार वग़ैरह का मन में लाकर और भी परशादी लेने से घबरा कर सतसंग से दूर रहते हैं और अपने जीव के कल्यान के वास्ते उस में शामिल होना नहीं चाहते ॥

७७१--(१८) इससे ज़ाहिर है कि आम तौर पर जीवों को शौक़ परमार्थ का और फ़िकर अपने जीव के कल्यान का और ख़ौफ़ मौत और दुक्खों का बहुत कम है और संत और महात्मा और हर एक मत के आचारज के वचनों का पूरा २ यक़ीन नहीं है, जो कोई मतलब दुनियाँ का पेश होवे या कोई उम्मेद फ़ायदे की मालूम पड़े या ख़ौफ़ किसी क़िसम के नुक़सान का पैदा होवे तो कुछ कार्रवाई परमार्थ की ज़ाहिरी तौर पर करते हैं और सिर्फ़ इस मतलब से कि कुल मालिक प्रसन्न होवे और अपने धाम में बासा देवे और जीव जनम मरन के चक्कर से छूट जावे बहुत कम शख़्स परमार्थी कार्रवाई करने को तैयार होते हैं ख़ास कर मुताबिक़ संतमत के अभ्यास करना जिस में प्रेम मालिक के चरनों में पैदा करना और तन मन और इंद्रियों

को रोकना और ठहराना पड़ता है कोई नहीं पसंद करता है ॥

७७२--(१९) संतमत में परशादी की भारी क़दर और माहिमाँ है और जब तक कि कोई प्रेम के साथ उस को न माँगे तब तक किसी को दी नहीं जाती है और यह चाल कुछ नई नहीं है सब मतों में और मंदिरों में प्रसाद तक़सीम होता है और लोग उसकी बड़ी महिमा समझ कर और तबर्रुक जान कर शौक़ के साथ लेते हैं जो कोई कि परशादी से नफ़रत करता है उसको ग़ौर करना चाहिये कि वह जानवरों की परशादी अक्सर खाता है जैसे चिड़िया और चूहा और बिल्ली और मक्खी और चींटी वग़ैरह की जो अक्सर खाने पीने की चीज़ों को जूँठा कर जाते हैं और बहुत से तमाशबीन वेस्वाओं के साथ जिनकी क़ौम का कुछ ठिकाना नहीं है खाते पीते हैं और उनका मुख चूमते हैं इन लोगों की जात पाँत का कुछ ठिकाना नहीं और वृथा अहंकार अपनी जात और मान बड़ाई का संतों के मुक़ाबले में जहाँ इन को हर तरह से दीनता करनी मुनासिब है करते हैं और उनकी दया से जो जीव की कल्यान-करता है महरूम रहते हैं ॥

७७३ -(२०) मुनासिब तो यह है कि संतों की महिमा सुन कर और समझ कर ज़रूर उनके चरनों में जाकर शौक़ के साथ सतसंग और सेवा और

प्रेम करें और अपने जीव को चौरासी के चक्कर से बचावें नहीं तो अपनी ग़फ़लत और वेपरवाही का नतीजा भोगना पड़ेगा यानी चौरासी के चक्कर में भरमते और बार २ देह धर कर दुख सुख सहते रहेंगे और सच्चा उद्धार उनका जब तक संत सरन में आकर सच्ची दीनता और प्रीत और सुरत शब्द मारग का अभ्यास थोड़े बहुत शौक़ के साथ नहीं करेंगे हरगिज़ नहीं होगा॥

---

(५३) प्रकार तिरपनवाँ

दुनियाँ में बहुत से लोग जवाँमर्दी और बहादुरी का काम वास्ते प्राप्ती धन और नामवरी के करते हैं बल्कि जान तक देदेते हैं पर उसका फ़ायदा चंद रोज़ का है लेकिन जो कोई मन और माया और काल और करम से लड़े उस को सच्चे मालिक का धाम और चरनों में बासा मिल सक्ता है कि जहाँ अमर और परम आनंद प्राप्त होगा और जनम मरन का दुख और किसी क़िसम का कष्ट और कलेश नहीं है॥

७७४-(१) दुनियाँ में बहुत से लोग वास्ते प्राप्ती धन और नामवरी और तरक़्क़ी ओहदे वग़ैरह के

बहुत से काम बहादुरी और जान जोखों के करते हैं और सख़्त मौक़ों पर और दूर देश में जाकर लड़ाई में शामिल होते हैं और ख़ूँख़ार जानवरों से शिकार के वक़्त लड़ते हैं या वास्ते प्राप्ती धन और शोहरत अपनी ताक़त और बहादुरी के उन को मारते हैं ॥

७७५-(२) संत कहते हैं कि यह लड़ाई हरचंद कठिन और जान जोखों की है पर किसी क़द्र आसान है लेकिन जो कोई मन और माया से लड़े और इन दोनों को अपने क़ाबू में लावे वही सच्चा और पूरा सूरमा है और वही संत सतगुर और मालिक के दरबार में आदर और बड़ा दरजा पावेगा ॥

७७६-(३) आदमियों और जानवरों से हथियार के साथ लड़ाई में एक बार और एक वक़्त की तकलीफ़ होती है लेकिन मन और माया के साथ लड़ाई में दम २ की मौत और तकलीफ़ है जो कोई इसको कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया का बल लेकर झेले और मैदान से क़दम न हटावे और भक्ती दिन २ बढ़ावे वही सच्चा बहादुर है और वही काल और करम को जीतेगा और वही एक दिन कुल मालिक के दरबार में दख़ल पावेगा ॥

७७७-(४) हर किसी की ताक़त और हिम्मत नहीं है कि मन और माया का मुक़ाबला करे क्योंकि जब तक उसके दिल में संसार के भोग बिलास की बासना भरी हुई है और अनेक तरह की चाहें उसके पूरा करने के निमित्त उठती रहती हैं और वह उनके मुवाफ़िक़ थोड़ा बहुत जतन करता रहता है तो वह मन और माया का क़र्ज़दार है और जब तक कि क़र्ज़ अदा नहीं करेगा तब तक उनके इलाक़े से बाहर नहीं जा सक्ता है और न किसी तरह से उनका मुक़ाबला कर सक्ता है और ऐसा शख़्स संतों के सतसंग में नहीं ठहर सक्ता और न उनकी जुगत की कमाई उससे बन सक्ती है ॥

७७८--(५) जिस किसी के दिल में संसार का हाल और उसकी नाशमानता देख कर थोड़ा बहुत बैराग दुनियाँ की तरफ़ से पैदा हुआ है और कुल मालिक का खोज कि वह कहाँ है और कैसे मिले मंजूर है तो ऐसा शख़्स संतों के सतसंग का अधिकारी है और संत सतगुर अपनी दया से उसका संजोग अपने चरनों में आप लगावेंगे ॥

७७९--(६) ऐसा शख़्स सतसंग में शामिल होकर दुनियाँ के भोगों की नाशमानता और तुच्छता का हाल संतों के मुख से सुन कर उनसे नफ़रत करेगा और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर और उनके प्रेमीजन की महिमा सुनकर

उन में प्रीत और भाव लावेगा और उमंग के साथ मन और माया को अपनी परमार्थी कार्रवाई में विघ्न कारक समझ कर उन से मुक़ाबला और लड़ाई करने को तैयार होगा ॥

७८०--(७) जो ख़ाहिश या तरंग वास्ते प्राप्ती ज़रूरी सामान के बनज़र अपने और अपने कुटुंबियों के गुज़ारे के औसत दरजे के मुवाफ़िक़ मौज से पैदा होवे वह मुबाह है लेकिन फ़ज़ूल तरंगें और फ़ज़ूल ख़ाहिशें वास्ते प्राप्ती भोग बिलास और दुनियाँ की मान बड़ाई के परमार्थी जीव को उठाना मने हैं क्योंकि इस में मन और माया ताक़त पाते हैं ॥

७८१--(८) जो कोई मन और माया को जीतने का इरादा करके और संत सतगुर का बल लेकर लड़ाई शुरू करेगा वही आहिस्ते २ उन पर फ़तह पावेगा यह लड़ाई बड़ी भारी और सख़्त है और बग़ैर मदद और दया और मेहर संत सतगुर के कोई मन और माया का मुक़ाबला नहीं कर सक्ता ॥

७८२--(९) मुक़ाबला करने वाले अभ्यासी को लाज़िम होगा कि अपने मन की चौकीदारी रक्खे और उसकी चाल ढाल को संत सतगुर के बचन के मुवाफ़िक़ दुरुस्त करे यानी जब २ मन और माया के ग़लबे के वक़्त कोई तरंगें फ़ज़ूल या नामुनासिब दिल मे पैदा होवें तो उनको फ़ौरन कुल मालिक

राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया के बल से काटे और हटावे ॥

७८३--(१०) यह बात सच्चे परमार्थ की कार्रवाई में बहुत ज़रूर दरकार है क्योंकि जो इस तरह पर मनकी गढ़त न की जावेगी तो वह हमेशा निजमन और माया का और भी उन के रचे हुए पदार्थ यानी भोग बिलास का गुलाम बना रहेगा और बजाय उनसे लड़ाई लेने के उलटी उनकी तावेदारी करेगा ॥

७८४--(११) जिस किसी को संत सतगुर सच्चा प्रेमी और खोजी देखते हैं उसको चरनों में लगा कर और सतसंग के वचन सुनाकर दिन २ ताक़त और मदद देते हैं और अनेक तरह की जुगतें समझा कर मन और माया से लड़वाते हैं ॥

७८५--(१२) यह लड़ाई वर्षों बल्कि जनम भर जारी रहती है तब कुछ मन ढीला और कमज़ोर होकर किसी क़दर बस में आता है और प्रेमी की ख़ाहिश के मुवाफ़िक़ काम करता है यानी अपनी संसारी चाल और आदत छोड़ता जाता है और परमार्थी रहनी और बर्ताव इख़्तियार करता जाता है ॥

७८६--(१३) ऐसे प्रेमी और दर्दी अभ्यासी को गुरमुख कहते हैं यानी उसके मन में सिवाय मालिक को

प्रसन्नता और उसके दर्शन हासिल करने के और कोई चाह ज़बर नहीं रहती है और जिन को संसार और उसके भोग बिलास प्यारे लगते हैं और उन्हीं के हासिल करने के निमित्त जतन करते रहते हैं वे मनमुख कहलाते हैं यानी मन और इंद्रियों के कहने में चलना उनकी आदत है और जो कोई उस में कुछ हर्ज डाले या परमार्थी समझौती सुनावे वह उनको बैरी नजर आता है ॥

७८७--(१४) गुरमुख यानी सच्चे प्रेमी जन सच्चे मालिक के प्यारे हैं उनको मालिक सच्ची और भारी बड़ाई देता है और एक दिन अपने महल में बिस्राम देकर हमेशा को सुखी कर देता है ॥

७८८--(१५) मनमुख जीव काल और माया के आधीन रहते हैं और उन्हीं के देश में बारम्बार देह धर कर जैसा तैसा सुख दुनियाँ में पाते हैं और अपनी करनी अनुसार दुख भी भोगते है और जनम मरन के चक्कर से उनका बचाव नहीं हो सक्ता है ॥

७८९--(१६) इसी वास्ते संत सतगुर दया कर के सब जीवों को समझाते है कि जो अमर आनंद की प्राप्ती चाहो तो गुरमुखता इख़्तियार करो और मन और माया से चित्त में बिरोध रक्खो और यह काम सतसंग की मदद और सुरत शब्द मारग के अभ्यास से बनना मुमकिन है ॥

७९०--(१७) ऐसा सतसंग और अभ्यास और मन और माया के आहिस्ते २ संत सतगुर के बल से जीतने की कार्रवाई राधास्वामी मत में जारी है ऐसी आसान जुगती आज तक किसी मत और किसी वक़्त में प्रघट नहीं हुई वह कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों को निहायत बलहीन और दुखी देख कर आप संत सतगुर रूप धारन करके समझाई है ॥

७९१--(१८) जो कोई सच्चा प्रेमी और दर्दी है और हिम्मत और इरादा पक्का मन और माया के मारने का रखता है उस को चाहिये कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेकर और राधास्वामी संगत में शामिल होकर उपदेश लेवे और अभ्यास शुरू करे तो वह एक दिन संत सतगुर की दया के बल से इन दोनों पर फ़तह पावेगा और निर्मल और आज़ाद होकर माया के घेर के पार कुल मालिक के धाम में पहुँच कर बासा पावेगा और परम सुख और परम आनंद को प्राप्त होगा वहाँ किसी क़िसम का कष्ट और कलेश नहीं है हमेशा निर्मल आनंद रहता है यानी वह स्थान महा आनंद और महा प्रेम का भंडार है और काल और करम का वहाँ मुतलक़ दख़ल नहीं है ॥

---

(५४) प्रकार चौवनवाँ

दुनियाँ के भारी काम और दुनियावी परमार्थ की कार्रवाई करके लोग चाहते हैं कि वह सब पर प्रघट होवे ताकि लोग उनकी और उन कामों की महिमा करें लेकिन राधास्वामी मत के सतसंगी जो कुछ सेवा और काम भक्ती के ज़ाहिर में और भजन और ध्यान अंतर में करते हैं वे उन को गुप्त रखना चाहते हैं और प्रघट करने में डरते हैं कि उनका अकाज न हो जावे और सच्चे परमार्थ की कार्रवाई का गुप्त रहना ही मुनासिब है॥

७९२--(१) दुनियाँ में ऐसा दस्तूर हो रहा है कि जो जीव कोई भारी काम दुनियाँ का करते हैं या कोई नई बात प्रघट करते हैं तो वह उस को भारी शोहरत देते हैं और इस में दो मतलब हैं एक तो यह कि उनकी और उस काम की सब कोई महिमा करे और दूसरी यह कि जो वह काम मुफ़ीद आम है तो सब कोई उससे फ़ायदा उठावें॥

७९३--(२) इसी तरह जो काम परमार्थ और पर-उपकार के करते हैं उनको भी खूब मशहूर करते हैं ताकि उनकी और उन कामों की महिमा हर कोई करे॥

७९४--(३) शोहरत देने में इस क़दर फ़ायदा है कि अजान जीवों को नई बात और नये कामोँ की ख़बर पड़ती है और उनका फ़ायदा देख कर और लोग भी वैसी ही कार्रवाई करने को तैयार होते हैं और अपनी नामवरी और दूसरोँ के फ़ायदे की नज़र से अच्छे कामोँ में मिहनत और कोशिश करते हैं ॥

७९५--(४) लेकिन यह सब काम ज़ाहिरी हैं और जो कुछ कि फ़ायदा जीवों को इन से हासिल होता है वह भी ज़ाहिरी है चाहे वह इल्मी और अक़्ली होवे या ब्योहारी या बाहरमुख परमार्थी होवे ॥

७९६--(५) जो कि बाहरमुख परमार्थी काम पिछले में महात्माओं ने जारी किये वह बतौर संजम के थे और उनमें कुछ मतलब सफ़ाई का था सो बसबब प्रघट कर देने उनके अवाम को वह फ़ायदा जाता रहा और उन कामोँ के करने वाले अपनी वाह २ और महिमा सुनकर अहंकारी हो गये और रफ़्ते २ मूरख और नादान रह गये और उन कामोँ में सिर्फ़ धन और मान बड़ाई के हासिल करने का मतलब रहगया और परमार्थ जाता रहा ॥

७९७--(६) यह बड़ा भारी नुक़सान जीवों का हुआ कि मिस्ल दुनियाँ के कामोँ के परमार्थी कामोँ में भी चाह धन और मान बड़ाई की हर एक के

मन में धँस बैठी और ग़ालिब हो गई और परमार्थ से ख़ाली रह गये ॥

७९८--(७) मालूम होवे कि सच्चे परमार्थ की कार्रवाई दुनियाँ की कार्रवाई से उलटी है यानी उस में जब चाह शोहरत और मान बड़ाई की पैदा होगी तबही उस का फ़ायदा जाता रहेगा और धन का लोभ मन में धँस बैठेगा और अनेक तरह की ख़राबी पैदा करेगा यानी भोगों की तरफ़ झोका देकर सुरत और मन को संसार में फंसावेगा ॥

७९९--(८) इस वास्ते संतों ने फ़रमाया है कि असली परमार्थ उसका नाम है कि जिस में जीव मालिक से मालिक को ही चाहे और दूसरी चाह किसी क़िसम की चाहे परमार्थी होवे या संसारी पेश न करे ॥

८००--(९) जो कि मन का ख़मीर यानी मसाला माया के मसाले से मेल रखता है और इसी सबब से उसका झुकाव इन्द्रियों के भोगों की तरफ़ ज़बर रहता है इस वास्ते पहिले ऐसी कार्रवाई करनी चाहिये कि जिसमें मन संसारी खुशी या बड़ाई या फ़ायदा समझ कर या उस की आसा बाँध कर फूलने न पावे ॥

८०१--(१०) बल्कि मुनासिब यह है कि परमार्थी कार्रवाई इस किसम की या इस तौर से की जावे कि जिसमें मन सुस्त और डरा हुआ और शरमिन्दा और बुझा हुआ और भिचा हुआ रहा आवे तो

उससे अंतरी अभ्यास परमार्थ का दुरुस्त बनेगा और ·री फ़ायदा सफ़ाई और चढ़ाई और सिमटाव वग़ैरह का ज़ियादा हासिल होगा ॥

८०२-(११) हर चंद मन का हाल मुलाहज़ा करके और महात्माओं ने भी यही बात कही है पर जीवों ने उसको न माना और इस सबब से नुक़सान में रहे और बजाय हासिल करने सफ़ाई और चढ़ाई के मलीनता बढ़ाई और नीचे की तरफ़ को झोका खाया ॥

८०३-(१२) इस में कुछ शक नहीं कि जीव बहुत निबल है और मन और इंद्रियाँ उस पर ग़ालिब और ज़बर रहती हैं इस सबब से बारम्बार संसार और उसके भोगों की तरफ़ झोका खाता है और जब तक कि संत सतगुर का हाथ उसके सिर पर न होवे यानी वे इसकी निगरानी और . रगीरी न करें तब तक यह अपने आप से कभी बच नहीं सक्ता और न संसार रूपी सागर से इसका ार मुमि है ॥

८०४-(१३) जिस किसी मत में जब तक कि पूरे गुरू यानी साध प्रघट होते रहे और जीव उन की तरफ़ रुजू लाते रहे तब तक परमार्थी चाल और ब्यौहार जिस दरजे का कि था दुरुस्त जारी रहा और जब वे गुप्त हो गये और विद्यावान और बुद्धि-

वानों का दौर आया तब कहने और समझने के वास्ते तो बातें बहुत दुरुस्त और मज़बूत रहीं लेकिन बसबब न होने अमल यानी अभ्यास के उन की कार्रवाई जारी न हुई और मन और इंद्रियाँ और उनके भोग सब पर ग़ालिब रहे बल्कि ख़ुद विद्यावान और बुद्धिवान उनके ज़ोर से न बच सके क्योंकि वे बेअमल थे और अभ्यास के तरीक़े से ना-वाक़िफ़ और बेख़बर ॥

८०५-(१४) संत अथवा राधास्वामी मत में ऐसी दया ख़ास कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की है कि जो जीव सच्चे मन से उन की सरन में आया है और जिसको उन्होंने अपनाया है उसकी सम्हाल और रक्षा सब तरह से वे आप फ़रमाते हैं और सुरत शब्द मारग का अभ्यास करा के उसके मन और सुरत को समेटते और चढ़ाते जाते हैं और माया और उसके भोगों से उसको रास्ते में बचाते जाते हैं ॥

८०६-(१५) संतों ने अपनी मौज से अनेक तरकीब जारी फ़रमाई हैं कि जिससे उनके सेवक मन और माया और दुनियाँ और उसके भोगों के विघनों से जहाँ तक मुनासिब है बचे रहें ॥

८०७-(१६) जब संत सतगुर सतसंग जारी फ़रमाते हैं तो उस वक़्त सब इष्टों का खंडन करके यानी

उन को ओछा दिखा कर एक कुल मालिक राधा-स्वामी दयाल का इष्ट और निश्चय बंधवाते हैं और सब जुक्तियों और जोग अभ्यास वग़ैरह का खंडन कर के एक सुरत शब्द जोग का मंडन करके उसका उपदेश जीवों को देते हैं और फ़रमाते हैं कि कुल मालिक के चरन में सब इष्ट आगये और इसी तरह सुरत शब्द मारग के अभ्यास में सब अभ्यास और जुक्तियों का फ़ायदा और असर हासिल होता है ॥

८०८-(१७) इन बचनों को सुन कर संसारी और नादान जीव और भी विद्यावान और बुद्धिवान बे समझे बूझे निंद्या करते हैं और राधास्वामी मत के सतसंगियों को मूरख और नादान देखते हैं और उन पर तान मारते हैं और हसी उड़ाते हैं इस सबब से सतसंगी और सतसंगिन हमेशा दुनियाँ के लोगों से जो कि निंद्या करते हैं डरते रहते है और उनको बिघनरूप समझ के उनसे मेल और मिलाप करना या रखना नहीं पसद करते और न अपनी भक्ती और अभ्यास की करतूत को उन पर ज़ाहिर करना चाहते हैं क्योंकि जिस क़दर कि सतसंगियों के प्रेम और भक्ती और अभ्यास में तवज्जह का हाल सुनते हैं उसी क़दर विरोध चित्त में बढ़ाते है और उस कार्रवाई मे बिघन और हर्ज डालना चाहते हैं ॥

८०९-(१८) संतों का शब्द मारग ऐसा भारी और अमोल है कि कोई उसकी महिमा नहीं कर सक्ता और जिस किसी से उसका अभ्यास थोड़ा बहुत बिरह और प्रेम के साथ बन आवे उस के बड़ भागता की भी महिमा कहने में नहीं आसक्ती फिर जो संत मौज से निंदक न पैदा करते तो उन के सतसंगियों का मन अपने मत की महिमा सुन कर बहुत फूल्ता और बढ़ता और अभ्यास में भारी ख़लल डालता, इस विघ्न से सहज में संतों ने बचाया बल्कि बजाय फूलने और खुश होने के निंदकों के उल्टे सीधे बचन सुनकर अपने मन में भिचते और मुरझाते हैं और परमार्थ में मन का सिमटाव और दुनियाँ की तरफ़ से हटाव वास्ते दुरुस्ती अभ्यास ध्यान और भजन के बहुत ज़रूर है॥

८१०-(१९) इसी तरह अंतर में सच्ची दीनता और बेकली और तड़प पैदा करने और बिरह को जगाये रखने के वास्ते भजन और ध्यान का रस और आनंद बराबर नहीं देते हैं और जो कि सिद्धान्त पद उनका यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम ऊँचे से ऊँचा और बहुत दूर दराज़ है इस सबब से अभ्यासी अपने तईं कितने ही अर्से तक ओछी हालत मे देख कर अपने मन में शरमिंदा और उदास रहता है और वास्ते तरक्क़ी के पुकार और प्रार्थना करता रहता है और अपने आप को

दीन अधीन और ओछा और नीच देखता रहता है कि जिसके सबब से उसकी सफ़ाई और चढ़ाई अंतर में गुप्त और जल्द होती रहती है और शौक़ बढ़ता रहता है ॥

८११-(२०) यह फ़ायदे सतसंगी को संत सतगुर और कुल मालिक राधास्वामी की दया से सच्चे तौर पर सहज में और बग़ैर अपनी ख़ास मिहनत और कोशिश के हासिल होते हैं, जो कोई चाहे कि पोथियाँ पढ़ कर और भेद और हाल सुन कर और समझ कर ऐसी हालत मन की यानी दीनता और सिमटाव और उदासीनता ैरह पैदा करे तो किसी तरह मुमकिन नहीं, चाहे पोथी पढ़ने के वक़्त थोड़ी देर को कुछ हालत बदल जावे मगर वह क़ायम नहीं रह सक्ती बल्कि उल्टे अहंकार और मान पैदा होकर भक्ती और अभ्यास में ख़लल डालेंगे ॥

८१२-(२१) इस वास्ते कुल जीवों को जो सच्चा परमार्थ कमाया चाहते हैं मुनासिब और लाज़िम है कि जो कुछ कार्रवाई करें संत सतगुर के सतसंग में शामिल होकर और उनसे उपदेश लेकर करें तो उनके सिर पर दया और रक्षा का हाथ रहा आवेगा और उन की सम्हाल हर तरह से जारी रहेगी और अभ्यास में गुप्त तरक़्क़ी होती जावेगी ॥

८१३-(२२) जो लोग संत सतगुर का उपदेश और उनकी सरन नहीं लेवेंगे और ओछे और झूठे गुरुओं से मिल कर या पोथियाँ पढ़ कर अपने तौर पर कारंवाई परमार्थ की करेंगे तो माया और काल अनेक तरह के बिघन कि जिनकी इन लोगों को ख़बर भी न होगी डाल कर उनसे अभ्यास छुड़वादेंगे या किसी क़िसम के सिफ़ली यानी नीचे के दरजे के अभ्यास में लगा कर और थोड़ा रस देकर अहंकारी और मानी बना देंगे कि जिस्से आइंदे की तरक़्क़ी और अभ्यास और रस्ते का चलना बंद हो जावेगा ॥

८१४-(२३) इस वास्ते परमार्थी जीवों को मुनासिब है कि जब वे अंतरमुखी अभ्यास अपने घट में शुरू करें तो पूरे गुरू या पूरे गुरू के प्रेमी अभ्यासी सतसंगी से उपदेश लेकर कारंवाई जारी करें और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की सरन अपने हिरदे में धारन करें और सिवाय सुरत शब्द मारग के दूसरा अभ्यास न करें तो राधास्वामी दयाल की दया से उनका अभ्यास निरविघ्न जारी हो जावेगा और सम्हाल और रक्षा रहेगी और मौज से संत सतगुर का दर्शन हो जावेगा और कुल मालिक राधास्वामी दयाल का अंतर में कुछ जलवा नज़र आवेगा कि जिस के सबब से अभ्यासी को मदद और ताक़त मिलेगी और अभ्यास बिलानाग़ा थोड़ा बहुत दुरुस्ती के साथ

मरने के भी कुछ सुख की प्राप्ती का स्वर्ग वग़ैरह में है पर जनम मरन की फाँसी या देह धर कर दुख सुख का भोग दूर नहीं होता ॥

८२१-(७) बड़ भागी और सब में उत्तम वह जीव हैं कि जिनके हिरदे में सच्चा शौक़ सच्चे मालिक से मिलने और उसके धाम में जो कि महा आनंद और प्रेम का भंडार है बासा पाने का पैदा होवे और सच्चा ख़ौफ़ देह के साथ बंधन और दुख सुख भोगने और बारम्बार जनम धारन करने और मरने का मन में प्रघट हुआ है ॥

८२२-(८) और जो कि सच्चे मालिक का पता और भेद संतों के पास है या उनके सच्चे प्रेमी अभ्यासी से मिल सक्ता है इस वास्ते ऐसे जीवों को पहिले खोज और तलाश संत सतगुर की या उनके प्रेमी सतसंगी और संगत की मुनासिब है ॥

८२३--(९) जब जीव संतों के सतसंग में जाकर महिमा कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम की सुनेगा और हाल नाशमानता और तुच्छ होने संसार और उसके सामान का मा करेगा तो ज़रूर उसके मन में थोड़ा बहुत शौक़ मालिक के दर्शनों का और भी बैराग संसार के भोग बिलास की तरफ़ से पैदा होगा और जब कैफ़ियत सहज उपदेश और सहज जुगत यानी सुरत शब्द जोग की समझेगा तब इरादा उसके अभ्यास का

उमंग के साथ करेगा और फिर सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया से कुछ रस अंतर में पाकर मगन होवेगा और शौक़ भी बढ़ेगा ॥

८२४--(१०) बग़ैर सतसंग के किसी के मन से भरम दूर नहीं हो सक्ते और न तवज्जह और पकड़ उसकी कुटुम्ब परिवार और भोगों और पदार्थों में ढीली हो सक्ती है इस वास्ते पहिले दरजे की सफ़ाई हासिल करने के वास्ते और मन की तरंगों और ख़ाहिशों को रोकने और घटाने के लिये होशियारी के साथ संत सतगुर का सतसंग करना और वचनों को सुनकर बिचारना और अपने फ़ायदे के वचनों को ग्रहण करना और उनके मुवाफ़िक थोड़ी बहुत कार्रवाई शुरू करना ज़रूर है ॥

८२५--(११) जब तक कोई ऊपर की लिखी हुई तरकीब से सतसंग नहीं करेगा और सच्चा शौक़ और इरादा हासिल करने सच्चे परमार्थ का उस के मन में पैदा न होगा तब तक संतों के उपदेश का अभ्यास भी उससे दुरुस्ती के साथ नहीं बन पड़ेगा यानी सुमिरन और ध्यान और भजन में उसका चित्त जैसा चाहिये नहीं लगेगा और रस भी नहीं आवेगा ॥

८२६--(१२) इस वास्ते जो कोई सच्चा परमार्थ हासिल किया चाहे उसको संतों का सतसंग और

अभ्यास सुरत शब्द मारग का थोड़ा बहुत शौक़ लेकर दुरुस्ती के साथ करना ज़रूर है तब उसके मन की हालत बदलेगी और प्रेम का रंग चढ़ना शुरू होगा ॥

८२७-(१३) फिर उसके मन में सच्चा ख़ौफ़ सच्चे मालिक और संत सतगुर की अप्रसन्नता का पैदा होगा और दुनियावी ख़ौफ़ जिनका ज़िकर दफ़ा पहिली व दूसरी व तीसरी में लिखा है आहिस्ते २ कम और दूर होते जावेंगे और सच्चे मालिक और संत सतगुर के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी और उनकी मेहर और दया का भरोसा मज़बूत होता जावेगा ॥

८२८-(१४) इसी तरह दुनियाँ के शौक़ और चाह मान बड़ाई और भोग बिलास की घटती जावेगी और जिन कामों में कि पहिले इस को रस मिलता था वे सब रूखे और फीके मालूम होंगे यानी सब शौक़ और चाहें दुनियाँ की हट कर एक राधास्वामी दयाल के दर्शनों का शौक़ और प्रेम मन में बस जावेगा और दिन २ बढ़ता जावेगा ॥

८२९-(१५) जिस क़द्र यह शौक़ बढ़ता जावेगा उसी क़द्र रस और आनंद अंतरी ज़ियादा मिलेगा यानी मन और सुरत ऊँचे देश की तरफ़ . कर और शब्द की अमी रूप धार से मिल कर निरमल और मगन होते जावेंगे ॥

८३०--(१६) दुनियाँ के जितने शौक़ हैं उनमें सुरत और मन की तवज्जह बाहर भोगों की तरफ़ जाती है और उन भोगों का रस भी मलीन है और अंतर में मलीनता और चंचलता को बढ़ाता है और मन और सुरत को नीचे की तरफ़ झोके देता रहता है कि जिसके सबब से उन का वासा नीचे के देश में रहता है और ऊँचे देश यानी सुरत के निज घर की तरफ़ से भूल और दूरी बढ़ती जाती है ॥

८३१--(१७) लेकिन जिस किसी को भागों से संतों का संग मिल जावे और उनके अभ्यास की कमाई में लग जावे तो उसके सुरत और मन अपने घर की तरफ़ ऊँचे को आहिस्ते २ चढ़ेंगे और अमी धार में अश्नान करके नित्त आनंद को प्राप्त होवेंगे और ऊँचे देश से नई ताक़त रूहानी जब २ भजन दुरुस्ती से बनेगा हासिल करके मगन होवेंगे ॥

८३२--(१८) यह बात बग़ैर संत सतगुर की दया के और मौज कुल मालिक राधास्वामी दयाल के हासिल नहीं हो सक्ती और संत सतगुर की दया तब हासिल होगी जबकि जीव उनका सतसंग चेत कर करेगा और तन मन धन से सेवा करके उनकी आज्ञा में बरतेगा और चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत लावेगा वही उनका प्यारा होगा और वही एक दिन जगत से न्यारा हो जावेगा ॥

८३३--(१९) जिस पर संत सतगुर दयाल होंगे उसी जीव के वास्ते कुल मालिक राधास्वामी दयाल की भी मेहर की मौज होवेगी और वही महल में दख़ल पावेगा यानी माया के घेर के पार दयाल देश में जावेगा ॥

८३४--(२०) जिसके मन में सच्ची चाह सच्चे मालिक से मिलने और उसके धाम में वासा पाने की है और यह संसार और उसके भोग बिलास उसको रूखे और फीके मालूम हुए हैं उसी जीव का धुर की मेहर और दया से संत सतगुर से मेला हो जावेगा और वही उनके सतसंग में ठहरेगा और उनके चरनों में तन मन धन से भक्ती करके और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर और बिरह और उमंग के साथ उसका अभ्यास करके अपना कारज पूरा बनवावेगा यानी राधास्वामी धाम में वासा पावेगा ॥

---

(५६) प्र ार प्पनवाँ

जड़ पदार्थों में प्रीत करने से जड़ का संग मिलेगा और चेतन्य के संग से जो संत सतगुर हैं सच्चे मालिक का संग पावेगा ॥

८३५-(१) इस दुनियाँ में जितने जीव हैं उन सब की प्रीत अक्सर जड़ पदार्थों के साथ रहती है जैसे धन माल ज़मीन व मकानात व बाग़ वग़ैरह ॥

८३६-(२) बल्कि जितनी चीज़ों और असबाब और पदार्थों से मनुष्यों को काम पड़ता है वे सब जड हैं और जानवर वग़ैरह जो पाले जाते हैं वे भी बनिस्बत मनुष्य के अचेत और जड़ हैं ॥

८३७-(३) और जो कुटुम्ब परिवार बिरादरी दोस्त आशना वग़ैरह से प्रीत की जाती है वे भी अक्सर निपट संसारी होते हैं और सिवाय धन पैदा करने के जतन और उद्यम के और भोग बिलास खान पान वग़ैरह के और कुछ नहीं समझते यानी अपनी और अपने मालिक की पहिचान और कोई करतूत वास्ते कल्यान अपने जीव के नहीं करते इस वास्ते उनके संग से सिवाय दुनियादारी के कामौं और बातौं के और कुछ फ़ायदा नहीं होता ॥

८३८-(४) कोई २ मनुष्य बिद्यावान होते हैं और उनकी बुद्धी बनिस्बत और जीवौं के बहुत तेज़ और गहरी और ज़बर होती है और बहुत से जीवों और मुल्कों का बंदोबस्त करते हैं पर वे भी कुल मालिक के भेद से बेख़बर हैं और कोई ख़ास करतूत वास्ते अपने जीव के कल्यान के जोकि बाद छोड़ने इस देह और दुनियाँ के प्राप्त होना चाहिये बहुत करते हैं और बहुतेरे तो उससे . फ़ियत

भी कम रखते हैं। इन लोगों को दुनियाँ और अपने मन्सब के कारोबार से फ़ुर्सत भी कम मिलती है॥

८३९–(५) इसी तरह बहुत से जीव तिजारत यानी ब्यौपार का काम करते हैं और उनकी सारी तवज्जह और कोशिश इसी में रहती है कि कैसे धन बढ़ावें और हरचंद पुन्य दान व ख़ैरात वग़ैरह करते हैं पर मालिक का खोज और अपने जीव के कल्यान का फ़िक्र बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं करते॥

८४०–(६) बाज़े मनुष्य परमार्थी किताबें जिन में परमेश्वर की महिमा और उसकी पूजा वग़ैरह और धरम करम का ज़िक्र है पढ़ते और पढ़ाते हैं और लोगों को हिदायत और उपदेश भी करते हैं पर जो ग़ौर करके देखा जावे तो इस काम से उनका मतलब धन पैदा करने और दुनियाँ में अपना गुज़ारा करने और मान बड़ाई हासिल करने का रहता है सच्चे और कुल मालिक का खोज और जीव के कल्यान का सोच और फ़िक्र और उसके जतन के दरियाफ़्त करने का शौक़ या इरादा उन में भी नहीं पाया जाता॥

८४१–(७) कोई २ लोग घर बार और रोज़गार छोड़ कर और परमार्थी लिबास पहन कर इधर उधर और तीर्थों में घूमते फिरते हैं, ज़ाहिरा मतलब उन का यही मालूम होता है कि मालिक का खोज लगाने और अपने जीव के कल्यान के वास्ते जतन

करने के लिये यह कार्रवाई करी है लेकिन जो ग़ौर कर के देखा जावे और खुद उनसे बात चीत करके तहक़ीक़ किया जावे तो मालूम होता है कि उनके मन में सैर और तमाशे का शौक़ धरा हुआ है और जिस पंथ में कि वे शामिल हुए हैं उसकी ज़ाहिरी और ऊपरी कार्रवाई करके तृप्त होगये हैं और न तो मालिक का खोज है और न उसके भेद से कुछ वाक़िफ़ियत रखते हैं और न इस बात का तमीज़ करते हैं कि जो कार्रवाई परमार्थी वे कर रहे हैं उस से कुछ उन को फ़ायदा हासिल हुआ या नहीं और उनके मन की हालत कुछ बदली या नहीं अलबत्ता भेष का अहंकार और धन और मान बड़ाई की चाह मन में खूब भरी हुई नज़र आती है ॥

८४२-(८) बाज़े भेषों में से जंगल और पहाड़ों में रहकर कुछ अभ्यास सफ़ाई मन और इंद्रियों का करते हैं और अपने ऊपर बहुत कुछ काष्टा और तकलीफ़ और सख़्ती की बरदाश्त करते हैं ज़ाहिर में यह सब कार्रवाई वास्ते हासिल करने परमार्थ यानी मिलने के मालिक से करते हैं लेकिन जो ग़ौर से देखा जावे तो इस में भी मान बड़ाई की चाह और निहायत दरजे का अहंकार अपनी कार्रवाई का नज़र आता है और सच्चे मालिक का खोज और प्रेम बहुत कम उनके दिल में दिखाई देता है ॥

८४३--(९) यह सब लोग जिनका ज़िकर ऊपर हुआ असल में संसारी भोग बिलास या दुनियाँ की बड़ाई और हुकूमत और शोहरत या परमार्थी मान बड़ाई और धन के चाहने वाले हैं और सच्चे मालिक का खोज या अपने जीव के कल्यान के जतन का पता लगाने का शौक़ या इरादा इनके मन में नहीं पाया जाता बल्कि जो कोई उनको चितावे और समझावे और जुगत और जतन सच्चे मालिक के चरनों में पहुँचने का बताना चाहे तो यह लोग हुज्जत और तकरार करने को तैयार होते हैं और बिलकुल रूखे फीके होकर और झगड़ा बखेड़ा उठाकर ऐसे शख़्सों से मिलना और उनसे बात चीत करना भी नहीं चाहते ॥

८४४--(१०) अब ग़ौर करके बिचारो कि यह लोग सब के सब संसारी या दुनियाँदारों के संगी हैं और जब सच्चे मालिक की भक्ती या प्रेम या उसके मिलने की चाह इनके मन में नहीं है तो यह उसकी तरफ़ से अजान रहे और उसके धाम में कभी नहीं पहुँच सक्ते हैं और दुनियाँ और उसके भोगों की चाह ज़बर होने से हमेशा जनम मरन और देह के संग दुख सुख भोगते रहेंगे ॥

८४५--(११) इस वास्ते हरचंद यह मनुष्य स्वरूप हैं और विद्या बुद्धी और समझ बूझ भी हर तरह की जो दुनियाँ और दुनियावी परमार्थ के मुतअल्लिक़

है रखते हैं और कुछ कार्रवाई भी परमार्थ के नाम से करते हैं लेकिन यह सच्चे और प्रेमी और अभ्यासी भक्तों के ज़ैल में दाखिल नहीं हो सक्ते और न इनके संग से किसी को सच्चा परमार्थी फ़ायदा पहुँच सक्ता है ॥

८४६--(१२) जीवों को परमार्थी फ़ैज चैतन्य पुरुष के संग से हासिल होसक्ता है बशर्तेकि वे उनके चरनों में प्रेम प्रीति करें और जो जुगत कि वे बतावें उसका अभ्यास बिरह और प्रेम अंग लेकर दुरुस्ती से करें ॥

८४७--(१३) चेतन्य पुरुष संत सतगुर को कहते हैं और संत सतगुर वे हैं जो धुरपद में पहुँच कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल से मिले हैं ॥

८४८--(१४) सच्चे और कुल मालिक का निज धाम ऊँचे से ऊँचा और माया देश के परे है और साध गुरू का मुकाम संतों के दसवें द्वार यानी सुन्न में है और वही पारब्रह्म पद है ॥

८४९--(१५) संत सतगुर और साध गुरू चेतन्य पुरुष हैं यानी पहिले तो चेतन्य सिंध में पहुँच कर उस के साथ एक हो रहे हैं और दूसरे उस ऊँचे धाम में थोड़े अर्से में पहुँचनहार हैं और माया की हद्द तै कर चुके हैं ॥

८५०--(१६) इन दोनों साहबों के संग से परमार्थी फ़ैज़ और फ़ायदा हासिल होना मुमकिन है और

परमार्थी फ़ायदे से मतलब यह है कि जो कोई संत सतगुर या साध गुरू से प्रीत करे वह राधास्वामी मत की जुक्ती का उपदेश लेकर चेतन्य सिंध की तरफ़ चलना शुरू करके अबेर सबेर उस धाम में पहुँच सक्ता है यानी दिन २ बिशेष चेतन्य से मिल कर कुल मालिक राधास्वामी दयाल के जो महा चेतन्य और महा प्रेम का भंडार हैं सन्मुख पहुँच कर उनके धाम में वासा पा सक्ता है और अमर और पूरन आनंद को प्राप्त हो सक्ता है॥

८५१-(१७) अब ख़याल करो कि संत सतगुरु और साधगुरू ही इस दुनियाँ में सच्चे चेतन्य पुरुष हैं क्योंकि वे या तो महा चेतन्य स्वरूप हैं या महा चेतन्य से अनक़रीब मिलने वाले हैं और बाक़ी जितने मनुष्य हैं चाहे वे बिद्यावान और बुद्धिवान और धनवान और हुकूमतवान हैं या अनपढ़ और मूरख हैं वे चेतन्य पुरुष नहीं समझे जा सक्ते हैं और इस वास्ते उनके संग से सच्चे परमार्थ का फ़ायदा हासिल नहीं हो सक्ता। अलबत्ता जो संत सतगुरु और साधगुरू के प्रेमी सतसंगी हैं और कुल मालिक के धाम में यानी महा चेतन्य के भंडार में पहुँचने का जतन कर रहे हैं उनकी सोह-बत से भी परमार्थी मदद मिल सक्ती है और और शौक़ चेतन्य पुरुष से मिलने और महा चेतन्य के धाम में चल कर पहुँचने का जाग सक्ता है॥

८५२-(१८) इस वास्ते कुल जीवों को जो जड़ का संग छोड़ कर यानी इस देश और देही और दुनियाँ के पदार्थों से न्यारे होकर महा सुख और आनंद के स्थान में पहुँच कर महा चेतन्य से मिलना चाहते हैं मुनासिब है कि पहिले खोज संत सतगुरु या साधगुरू या उनकी संगत का करके सतसंग में शामिल होवें और बचन सुन कर अपने मन और इंद्रियों की चाल ढाल बदलें यानी संसारी स्वभाव और चाल आहिस्ते २ छोड़ कर भक्ती रीत में वर्ताव करें और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर अंतरमुख अभ्यास शुरू करें तो संत सतगुर की दया से उनका काम बनना शुरू होगा यानी मन और सुरत आहिस्ते २ ऊंचे देश की तरफ़ घट में चलेंगे और दिन दिन विशेष चेतन्य से मिलकर आनंद और रस पाकर मगन होवेंगे ॥

८५३-(१९) जो जीव कि यह काम नहीं करेंगे और ज़िंदगी भर दुनियाँ में उसके भोग बिलास और संसारी जीवों के संग में बंधे और फँसे रहेंगे वे बारम्बार देह धारन करेंगे और जड़ पदार्थों और अचेत मनुष्यों के संग में दुख सुख पाते रहेंगे यानी सच्चे मालिक और उसके धाम से बेख़बर रहेंगे और न उसका दर्शन पावेंगे ॥

---

(५७) प्र ार सत्तावनवां

जीव बड़े खूँख़ार और ख़तरनाक जानवरों को क़ाबू में लाकर उन से अनेक तरह के काम लेते हैं लेकिन जो कोई मन और इंद्रियों को अपने बस में लावे वह परमार्थ का पूरा दरजा हासिल कर सक्ता है ॥

८५४-(१) इस दुनियाँ में मनुष्य सब में उत्तम और श्रेष्ठ है और यहाँ की कुल रचना यानी जानदारों और तत्तों पर थोड़ा बहुत उसका इख़्तियार है और सब से वह कुछ न कुछ काम लेता है ॥

८५५-(२) बाज़े जानवरों को जो ज़हरी और खूँख़ार और मनुष्य के दुश्मन हैं क़ैद में लाकर और उन को तरबियत करके उनसे तरह २ के काम तमाशे के लिये जाते हैं, यह सब मनुष्य ही की ताक़त है कि जुगती से उन को पकड़ता है और अपने तौर पर जो काम चाहे वह उनको सिखा लेता है और कुछ ख़ौफ़ उनका नहीं करता ॥

८५६-(३) जो काम कि इन जानवरों से लिये जाते हैं उन से दुनियावी फ़ायदा यानी धन कमाया जाता है और शोहरत और नामवरी भी किसी २ मौक़े पर हासिल होती है पर यह फ़ायदे चंदरोज़ा हैं और आख़िरत में कुछ काम नहीं दे सक्ते हैं ॥

८५७-(४) मनुष्य को पहिले ज़रूरत खाने पीने और पहिनने ओढ़ने और कुटुम्ब परिवार के पालने की है और दूसरी और सबसे भारी ज़रूरत अपने जीव के फ़ायदे और आराम की है और वह भी उस वक़्त और हालत में जब कि इस देह और दुनियाँ को छोड़ कर जावे यानी वक़्त मरने के और उसके बाद ॥

८५८-(५) पहिलो ज़रूरत के रफ़ा करने के लिये अनेक तरह के पेशे और काम, उनमें से बाज़े २ बहुत सख़्त और ख़तरनाक, मनुष्य करता है लेकिन दूसरी ज़रूरत के बंदोबस्त का लोगों को बहुत कम ख़याल है और उसके वास्ते जतन भी बहुत कम करते हैं और जो कुछ करते हैं उसकी जाँच कि आया उससे वह फ़ायदा और मतलब हासिल होता है या नहीं कोई विरले जीव करते हैं ॥

८५९--(६) जो कार्रवाई वास्ते फ़ायदे और आराम जीव के (बाद चोला छोड़ने के) की जावे उस की जाँच जीते जी करना बहुत ज़रूर है नहीं तो रोज़-गारी और ख़ुदमतलबियों के हाथ से धोखा खाना पड़ेगा और फिर पीछे पछताने और अफ़सोस करने से कुछ हासिल नहीं होवेगा ॥

८६०-(७) इस जतन और जुगत का भेद और तरकीब संतों के पास है जो कोई उनका सतसंग दीनता और प्रेम के साथ करेगा और उनसे उपदेश लेकर अंतरमुख अभ्यास में लगेगा उसी से वह

कारंवाई कि जिससे मरने के बाद आराम और सुख स्थान मिले बन पड़ेगी ॥

८६१--(८) जोकि सब जीवों को एक रोज़ चोला और यह देश छोड़ना ज़रूर है और जबकि सुरत यानी जीव अमर हुआ तो कहीं न कहीं बाद मरने के किसी न किसी देह में फिर जनमेगा और अपने कर्म अनुसार दुख सुख भोगेगा और यह सिलसिला जब तक कि संतों की सरन में आकर उनके उप-देश सुरत शब्द मारग की थोड़ी बहुत कमाई न करेगा बराबर जारी रहेगा--इसी को चौरासी में भरमना और भटकना कहते हैं ॥

८६२--(९) इस वास्ते जीवों के हाल पर निहायत दया करके कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर फ़रमाते हैं कि जबकि वास्ते दुनियाँ के चंदरोज़ के गुज़ारे के तुम ऐसे ख़ौफ़नाक और खतरे के काम कर रहे हो जैसे ज़हरदार और ख़ूँख़ार जानवरों का जोकि तुम्हारे बैरी हैं पकड़ना और पालना और उनको तमाशे की बातें सिखाना फिर वास्ते अपने आइंदे के यानी बाद मरने के आराम और सुख के इस मन बैरी को जोकि तुम्हारे घट में बैठा हुआ तुमको दुनियाँ में नाच नचा रहा है और आइंदे के नफ़े और नुक़सान से बेख़बर रखता है जुगत और जतन दरियाफ़्त करके क्यों नहीं थोड़ा बहुत क़ाबू में लाते हो और उससे थोड़ा

काम जिसमें तुम्हारे जीव का आइंदा को गुज़ारा महा आनंद के साथ होवे और फिर देही धर कर दुख सुख का चक्कर न भोगना पड़े क्यों नहीं लेते हो ॥

८६३--(१०) वह काम बनिसबत खूँख़ार जानवरों के पालने और सिखाने के बहुत आसान है और उसका फ़ायदा थोड़ा बहुत फ़ौरन मालूम हो सक्ता है और किसी तरह का खतरा उसमें नहीं है और थोड़ी तवज्जह और रोक के साथ यह मन वैरी आहिस्ते २ मित्र बनाया जा सक्ता है और जिस तरह इससे संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ काम लेना है थोड़ी सी मिहनत और होशियारी और चेत कर सतसंग और सुरत शब्द मारग का अंतर-मुख अभ्यास करने से यह मन आप ही शौक़ के साथ वह काम करने लगेगा और ऐसी भारी ख़िदमत तुम्हारी सपूतों के मुवाफ़िक़ करेगा कि आइंदा तुमको मिहनत और तकलीफ़ और बारम्बार जनमने और मरने से बचा लेगा और निज घर की तरफ़ सुरत के संग चलकर महा आनन्द और अमर सुख के धाम में पहुँचा देगा ॥

८६४--(११) लेकिन इस मन का क़ाबू में लाना और इससे सच्चे परमार्थ की कार्रवाई कराना आसान नहीं है क्योंकि यह तिरलोकी नाथ की अंस है और माया के मसाले का इस का ख़मीर है और क़ुदरती झुकाव इसका संसार यानी बाहर और नीचे की तरफ़

को है और जनमान जनन और जुगान जुग से देह धरता हुआ और भोगों में बर्ताव करता हुआ । आरहा है यकायक इसका बदलना यानी अपनी पुरानी आदत का छोड़ना और भोगों की तरफ़ से मुख मोड़ना मुमकिन नहीं है ॥

८६५-(१२) सिवाय संत सतगुर के और किसी से काल और मन नहीं डरते हैं सो जिस किसी को संतों की दया से उनका सतसंग प्राप्त हुआ और उसने उनके चरनों में प्रीत प्रतीत करी वही उनकी जुगती का अभ्यास करके आहिस्ते २ इस मन को ज़ेर करेगा और अपना मित्र बना कर उससे काम लेगा यानी इस ज़हरीले और जानलेवा मन के क़ाबू में लाने का मंत्र और तरीक़ा संतों के पास है जब वे दया करके वह जुगत बतावेंगे और आप इस जीव की रक्षा करेंगे यानी अपना बल देकर मन और काल से लड़ाई कराकर जितावेंगे तब यह दोनों हाथ आवेंगे और काम बनेगा ॥

८६६-(१३) जब तक संत सतगुर मेहर से नहीं मिलेंगे तब तक किसी जीव की ताक़त नहीं है कि वह मन और काल को जोकि ब्रह्मांडी मन है ज़ेर करे और उससे परमार्थी काम लेवे चाहे कैसेही महात्मा होवें और चाहे कैसेही जुगती कमाते होवें पर ब्रह्मांडी मन को बिना संत सतगुर की दया के नहीं जीत सकेंगे और इस सबब से निज धाम में

कुल मालिक के वासा भी नहीं मिलेगा और न सच्चा और पूरा उद्धार होगा ॥

८६७-(१४) खुलासा यह है कि जितने मत दुनियाँ में जारी हैं उन में जुगत ब्रह्मांडी मन के जीतने की बिलकुल नहीं कही है और जोकि पिंडी मन को बस में लाने के वास्ते जतन बताते हैं वह भी निहायत कठिन और मुशकिल हैं और हर एक जीव से बन नहीं सक्ते हैं। यह सिर्फ़ संतों ही की गत और ताक़त है कि इन्होंने सब मनों को जो पिंड और ब्रह्मांड में हैं जीत कर और सच्चे मालिक के धाम में पहुंच कर वासा किया ॥

८६८-(१५) जो जुगत कि संतों ने वास्ते क़ाबू में लाने नीचे और ऊँचे यानी पिंडी और ब्रह्मांडी मन के बताई है वह सुरत शब्द मारग का उपदेश है क्योंकि बिना शब्द के किसी का मन बस में हरगिज़ नहीं आवेगा। जो कोई हिम्मत वाले और सूरमा जीव हैं वह पहिले संत का खोज लगावेंगे और उनके चरनों में सच्ची दीनता और प्रेम करके उनकी जुगत का अभ्यास दुरुस्ती से करेंगे और वे ही मन को क़ाबू में लाकर और अपनी सुरत को चढ़ा कर निज धाम में बासा पावेंगे ॥

८६९-(१६) संत सतगुरु की महिमा बहुत भारी है जो जीव उनकी सरन में आवे और सच्चे मन

से उनका सतसंग और सेवा करे तो वह अपनी मेहर और दया से सुरत शब्द मारग की कमाई करावेंगे और अपना बल देकर पिंडी और ब्रह्मांडी मन और माया से लड़ाकर और खेत जिता कर धुर घर में पहुंचावेंगे और अमर धाम और अमर आनंद बख़शेंगे ॥

८७०-(१७) जो जीव कि संसार और उसके भोगों में और कुटुम्ब परिवार वग़ैरह में फँसे रहेंगे और अपने मन के हुक्म में चलेंगे यानी जो २ तरंगें और ख़ाहिशें वह उठावे उनके पूरा करने के वास्ते जतन और मिहनत करते रहेंगे तो वह हमेशा माया के जाल में पड़े रहेंगे और जनम मरन का दुख सहते रहेंगे यानी बारम्बार अपनी बासना और कर्म अनुसार देह धारन करके दुख सुख भोगते रहेंगे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम की तरफ़ से भूले हुए रह कर माया के पदार्थों और भोगों में भरमते रहेंगे ॥

८७१-(१८) इस वास्ते सब जीवों को जो इस जिंदगी में और भी बाद मरने के परम सुख और परम धाम को चाहें उनको लाज़िम और मुनासिब है कि संत सतगुर का खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवें और शौक़ और प्रेम के साथ उनके बचन सुनें और उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करें और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर जिस क़दर बने

अपने अंतर में उसका अभ्यास करें तो वह संत सतगुर की मेहर और दया से एक दिन निज धाम में बिश्राम पावेंगे यानी आहिस्ते २ ऊँचे स्थानों पर चढ़कर और दिन २ बिशेष आनंद पाकर कुल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पावेंगे और काल और करम और मन और माया के जाल से छुटकारा उनका हो जावेगा। और जो ऐसा नहीं करेंगे तो काल यानी ब्रह्मांडी मन उनको बारम्बार निगलेगा और उगलेगा यानी बारम्बार जन्मेंगे और मरेंगे और देहियाँ धार कर दुख सुख भोगते रहेंगे ॥

---

(५८) प्रकार अट्ठावनवाँ

दुनियाँ में हर एक शख़्स अपने जात पांत हसब नसब और गुन और जौहर और धन और माल वग़ैरह का अहंकार रखता है और अपने ख़ानदानी रसम और तरीक़े की मज़बूत पक्ष और बर्ताव करता है। लेकिन अफ़सोस है कि हरचंद संत सतगुर जीवों को पुकार कर कहते हैं कि तुम सत्त पुरुष राधास्वामी की अंश यानी बालक हो और दयाल देश में तुम्हारा निज घर है यहां ऐसी चाल चलो कि

जिससे जम की चोट न खानी पड़े और अपने पिता के दर्शन के वास्ते शौक़ के साथ जतन करते रहो ताकि एक दिन अपने धाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त हो पर जीव उनके बचन को बहुत कम मानते हैं बलकि उलटी उनकी निंदा करते हैं और उनसे दूर रह कर अपना अकाज करते हैं ॥

८७२-(१) इस दुनियाँ में सब जीवों को अपनी जात पाँत और गुन और जौहर और धन और माल और अपने कुल और ख़ानदान की बड़ाई और बुज़ुर्गी का बड़ा अहंकार रहता है ख़ास कर जात और खानदानी बुज़ुर्गी का; यह ख़याल दिल से कभी नहीं भूलता और जहां कहीं जीव जाता है या किसी नये शख़्स से मिलता है तो ज़रूर वहाँ और उसके रूबरू अपनी जात और ख़ानदान की बुज़ुर्गी का ज़िकर पेश करता है ताकि लोग उसका आदर और इज़्ज़त करें ॥

८७३-(२) सिवाय इसके जोकि अपनी जात पाँत और ख़ानदान के तरीक़े और रसम और ब्योहार और बर्ताव है उनकी पक्ष और कार्रवाई बहुत हठ और मज़बूती के साथ जीव करते हैं और जो कुछ कसर या भूल चूक तरीक़े और रसम और बर्ताव की

कार्रवाई में पड़ जावे तो सख़्त नाराज़ होते हैं और अपनी बुज़ुर्गी और सफ़ाई की उसमें हान समझ कर जैसे बने उसका बदल और दुरुस्ती करते हैं ॥

८७४--(३) ज़ाहिर है कि जब जीव अमर है तो मरने के बाद ज़रूर उसकी देह और कुल बदलता है यानी नई देही नये ख़ानदान में धारन करता है और फिर उसी तरह उस ख़ानदान की रसमों और व्यौहार की पक्ष करके अपनी बुज़ुर्गी और बड़ाई का अहंकार दिल में रखता है यानी हर जनम में नई देह और नये ख़ानदान का बंधन हठ के साथ धारन करता है ॥

८७५--(४) यह बात आम तौर पर जारी है कि हर एक जीव अहंकार के साथ अपने ख़ानदान और बाप दादे की बड़ाई और बुज़ुर्गी को हर एक के सामने ज़ाहिर करता है और चाहता है कि उस हाल को सुनकर लोग उसकी ख़ातिरदारी और इज्ज़त करें और अपने ख़ानदानी और जात के रसमों और बर्ताव को मरते दम तक कभी नहीं भूलता है और बहुत शौक़ और ज़ोर के साथ उसकी पक्ष करके कार्रवाई करता है ॥

८७६--(५) लेकिन संत सतगुर जो कुल मालिक सत्त पुरुष राधास्वामी दयाल के ख़ास मुसाहब या महा प्यारे पुत्र हैं और असल में उसी का स्वरूप हो रहे हैं पुकार कर जीवों से कहते हैं कि तुम कुल

मालिक की अंस हो यानी उसके बच्चे और बालक हो और सत्त पुरुष राधास्वामी वंसी तुम्हारी जात है और जोकि उस कुल मालिक के ख़वास और सिफ़्तें हैं वही असल तुम्हारे ख़वास और सिफ़त हैं क्योंकि दोनों का जौहर एकही है पर कुसंग के सबब से यानी मन और माया और इंद्रियाँ और माया के रचे हुए भोगों और पदार्थों की सोहबत और संग से तुम अपने सच्चे माता पिता राधास्वामी दयाल और उसके धाम को जो तुम्हारा निज देश और वतन है भूल गये हो और तुम्हारे असली ख़वास और सिफ़तें दब गई हैं और बजाय उनके मन और माया और उनके ख़वास और गुन तुम्हारे अंतर में घस गये हैं और उन्हीं के स्वभाओ में तुम इस देह और इस लोक में वर्त रहे हो और दुख सुख भोगते हो और धर्मराय और जम दूतों के हाथ से ज़िल्लत और ख़िफ़्फ़त और ख़्वारी सहते हो और नाक़िस आदतों और पाप करमों के सबब से जो कुसंग की वजह से तुम से बन रहे हैं नीची ऊँची जोनों और देशों में जिसको चौरासी का चक्कर कहते हैं भरमते रहते हो ॥

८७७-(६) और फिर संत सतगुर फ़रमाते हैं कि जो दुख सुख और जनम मरन के चक्कर और ख़्वारी और ज़िल्लत और बेइज़्ज़ती से बचना चाहो तो अपने सच्चे माता पिता कुल मालिक राधास्वामी

दयाल की महा महिमा और महा आनंद और सब से ऊँचे धाम का और महा निर्मल और दया और प्रेम के भरे हुए ख़वासों और सिफ़तों का और अपने सब से आला और भारी जौहर और जात और वंस का ख़याल करके अपने प्यारे और दयाल पिता से मिलने और वतन में पहुँचने का जतन करो और अपनी ऊँची जात और ऊँचे वंस और ऊँचे से ऊँचे धाम का ख़याल और अहंकार मन में बसा कर कुसंगियों की सोहबत जो कि महा मलीन और बिकारी और असल में तुम्हारे वैरी और जान-लेवा और बुज़ुर्गी और इज़्ज़त के बिगाड़ने वाले हैं आहिस्ते २ छोड़ते जाओ और संत सतगुर और प्रेमी जन का सतसंग (जोकि तुम्हारे सच्चे पिता और कुल मालिक के मुसाहब और पयारे पुत्र हैं) दिल और जान से शौक़ और प्रेम के साथ करो और उनके ख़वास और स्वभाव और आदत इख़्तियार करो और मलीन ब्यौहार और बर्ताव जो कुसंगियों के संग से तुमने इख़्तियार किया है आहिस्ते २ छोड़ते जाओ तब दिन दिन तुम्हारे सुरत और मन निर्मल होते जावेंगे और जब संत सतगुर से उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर (जो कि तुम्हारे निज घर में जाने का रास्ता और तरीक़ा है) बिरह और प्रेम के साथ अंतर में अभ्यास करोगे तब तुम्हारे सुरत और मन आहिस्ते आहिस्ते

घर की तरफ़ चलते और चढ़ते जावेंगे और दिन २ रस और आनंद ज़ियादा से ज़ियादा लेते हुए माया की हद्द के पार पहुँचेंगे और वहाँ से सुरत मन से न्यारी होकर सत्त पुरुष राधास्वामी धाम में पहुँच कर और अपने सच्चे पिता का दर्शन पाकर महा आनंद और महा सुख को प्राप्त होगी। उस देश में माया और काल और कष्ट और कलेश और जनम मरन का चक्कर बिलकुल नहीं है और वहाँ का आनंद और बिलास और वह देश भी अमर और अजर है ॥

८७८-(७) पर अफ़्सोस की बात है कि जीव संतों के बचन को बहुत कम बल्कि बिलकुल नहीं सुनते और अपने सच्चे माता पिता और निज कुल की बड़ाई का ज़रा भी ख़याल दिल में नहीं लाते हैं और न इरादा अपने निज देश में पहुँचने का करके जो जतन कि संतों ने फ़रमाया है उसका खोज या अभ्यास करते हैं इस सबब से सब जीव माया और काल के जाल मे फँसे रहते हैं और दुख सुख और जनम और मरन का चक्कर भोगते हैं ॥

८७९-(८) बाज़े जीव जो वास्ते कल्यान अपने जीव के मामूली और रस्मी परमार्थी कार्रवाई करते हैं उस कार्रवाई में न तो अपने देश में पहुँचने का फ़ायदा हो सक्ता है और न कुछ रस और आनंद रास्ते का मिलना मुमकिन है और न पता और भेद सच्चे

मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम और उसके रास्ते का दरियाफ़्त हो सक्ता है फिर वह कार्रवाई थोड़ा बहुत सुख दूसरे जनम में या इसी जनम में दे सक्ती है लेकिन सच्चा उद्धार यानी माया के देश के पार राधास्वामी धाम में पहुँचना मुमकिन नहीं है ॥

८८०-(९) जोकि संतों का मत और उपदेश आम तौर पर प्रघट नहीं हुआ है इस सबब से जीव उस के भेद और अभ्यास से बेख़बर हैं और अपने २ मत के पुराने इष्ट और चालों में अटक रहे हैं और दुनियाँ के कारोबार और भोग बिलासों में ऐसे ग्रस रहे हैं कि किसी को खोज भी सच्चे मालिक और सच्चे रस्ते और सच्ची जुगत उसके तै करने का नहीं है और बसबब धोखा देने लिबासी और नक़ली परमार्थियों के कि ज़रा २ से काम में मुक्ती का फल मिलना बतलाते हैं जीव उन कामों को करके किसी क़दर निचिन्त और निरभय हो जाते हैं और उन नादानों के बचनों को सही और दुरुस्त मानते हैं ॥

८८१-(१०) इस वक़्त में जो कि कुल मालिक राधास्वामी दयाल जीवों को महा दुखी और निर्बल देख कर अति दया करके आप इस लोक में संत सतगुर रूप धारन करके प्रघट हुए और निज भेद अपना और अपने धाम का और सहज रास्ता और सहज जुगत उसके तै करने की (अपने घट

में) जीवों को समझाई और आम तौर पर उसको अपनी बानी और बचन में बर्णन किया इस वास्ते बड़ा भारी मौक़ा कुल मतों के जीवों को मिला है कि राधास्वामी दयाल के चरनों की सरन लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास जिस क़दर दुरुस्ती से बन सके शौक़ के साथ अपने अंतर में करके सच्चे उद्धार के अधिकारी हो जावें और बारम्बार देह धर कर दुख सुख और जनम मरन के भोग से अपना छुटकारा कर लेवें ॥

८८२--(११) कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों के उपकार के वास्ते ख़ास आगरे में जहाँ कि वे प्रघट हुए और भी कितने ही बड़े २ शहरों में मेहर और दया से अपना सतसंग जारी फ़रमाया है और इन मुक़ामों में थोड़े से उनके सच्चे प्रेमी और भक्त रहते हैं और उनकी जुगती का जिस क़दर जिससे बन सक्ता है अभ्यास कर रहे हैं और दिन २ उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं जो कोई सच्चा अनुरागी परमार्थ का उनके पास जावे और सतसंग करे तो वे बहुत ख़ुशी के साथ उसको मदद देते हैं और उपदेश सुरत शब्द मारग का इजाज़त हासिल करके समझाते हैं ॥

८८३--(१२) इन प्रेमियों के संग से भेद भाव राधास्वामी मत का और तरीक़ा अभ्यास वग़ैरह

का मालूम हो सक्ता है और बानी और बचन वग़ैरह की पोथियाँ भी मिल सक्ती हैं और जो कार्रवाई बताई जाती है उसको करके उनके हिरदे में मालिक के चरनों का प्रेम भी पैदा हो सक्ता है और आइंदे को आहिस्ते २ बढ़ सक्ता है ॥

८८४-(१३) भारी महिमा राधास्वामी मत की यह है कि जो कोई उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास करेगा वह एक दिन धुर धाम में पहुँचेगा और इस कार्रवाई के वास्ते उसको घर बार या रोज़गार वग़ैरह छोड़ने की कुछ ज़रूरत नहीं है और ग्रहस्त और विरक्त और स्त्री और पुरुष पढ़े होवें चाहे नहीं और लड़का जवान और बूढ़ा इस अभ्यास को आसानी के साथ कर सक्ते हैं ॥

८८५-(१४) पिछले वक़्त में जो तरीक़ा प्राणायाम वग़ैरह वास्ते मुक्ती के बताते थे वह महा कठिन और ख़तरनाक था और ग्रहस्ती जीवों से मुतलक़ नहीं बन सक्ता था और इस सबब से उनका उद्धार भी नहीं होता था। बरख़िलाफ़ उसके अब ग्रहस्तियों से चाहे औरत होवे या मर्द जो थोड़ा भी शौक़ रखता होवे तो राधास्वामी मत का अभ्यास आसानी के साथ दुरुस्त बन सक्ता है और उसका फ़ायदा यानी रस और आनन्द भी अंतर में जल्द मिल सक्ता है और राधास्वामी दयाल की दया के

घट में परचे पाकर तरक़्क़ी भी आसानी के साथ जल्द मुमकिन है ॥

८८६–(१५) अब जो जीव इस हाल की ख़बर पाकर फिर भी दया न लेवें यानी राधास्वामी मत में शामिल होकर उसका अभ्यास शुरू न करें तो जानना चहिये कि वे बड़े अभागी हैं कि रसमी परमार्थ में जहाँ कुछ फ़ायदा नहीं मिलता और न मुक्ती होती नज़र आती है वहाँ मिहनत और तकलीफ़ अनेक तरह की और तन मन धन का ख़र्च गवारा करते हैं और जिस जगह फ़ौरन फ़ायदा मिले यानी मुक्ती होती नज़र आवे और आइंदे को तरक़्क़ी आसानी के साथ जल्द होवे वहाँ मुतलक़ तवज्जह नहीं करते बल्कि उलटी निंदा करके सतसंग से दूर भागते हैं और बानी और बचन का पढ़ना और सुनना नहीं चाहते, और हर रोज़ सत सतगुर और उनके प्रेमियों की थोड़ी बहुत निंदा करके पाप के भागी होते हैं और अपना परमार्थी भाग नहीं जगाते हैं कि जिसकी वजह से वे मन और माया और काल और करम के जाल में हमेशा फँसे रहेंगे और अपनी बासना और करनी अनुसार जनम मरन और दुख सुख का भोग करते रहेंगे ॥

(५९) प्र ार उनसठवाँ

जो जीव दुनियाँ के सामान के वास्ते तड़प रहे हैं और अनेक तरह के जतन और मिहनत कर रहे हैं उनको थोड़ा बहुत संसारी सामान हासिल हो जाता है इसी तरह से जो मालिक के दर्शन की बिरह रखते हैं और उसके वास्ते जतन करते हैं उनको भी सतगुर द्वारा सत्त पुरुष के दर्शन प्राप्त हो सक्ते हैं और यह काम बनिसबत दुनियाँ के कामों के ज़ियादा ज़रूरी है ॥

८८७-(१) दुनियाँ में अनेक जीव वास्ते प्राप्ती अनेक तरह के सुक्खों के और स्त्री और पुत्र और धन और माल वग़ैरह के अनेक जतन करते हैं और उन में बहुत मिहनत और तक़लीफ़ भी उठाते हैं और सब को हर एक की कारंवाई और भाग के मुवाफ़िक़ कामयाबी होती है यानी फल थोड़ा बहुत मिलता है ॥

८८८-(२) इसी तरह हज़ारों तरह के काम कोई आसान और कोई मुशकिल और कोई निहायत मुशकिल और ख़तरनाक हर एक क़िसम के लोग करते हैं और अपने पक्के और सच्चे इरादे के बमूजिब खुशी के साथ हर तरह की मिहनत और तकलीफ़

भी बरदाश्त करते हैं और फिर उस में काम्याबी भी ज़रूर होती है यानी किसी की मिहनत ख़ाली नहीं जाती है ॥

८८९-(३) लेकिन इन सब मिहनतों और कार्रवाइयों का फ़ायदा जिस क़दर कि है वह सब देह और दुनियाँ के आराम का है बाद मरने के उससे कुछ मतलब जीव के फ़ायदे का नहीं निकलता और न किसी को इस बात का ख़याल है कि बाद मरने के भी हम को सुख की दरकार और ज़रूरत होगी ॥

८९०-(४) हर एक मत में जो दुनियाँ में ज़ारी हैं थोड़ी बहुत हिदायत वास्ते करने जतन और तदबीर के बनज़र हासिल करने सुख या मोक्ष के बाद छोड़ने इस देह और देश के की है और उस के मुवाफ़िक़ बाज़े लोग कुछ कार्रवाई भी करते हैं पर हर एक को पूरा २ यक़ीन इस बात का नहीं है कि बाद मरने के ज़रूरत सुख की है और वह सुख उन तदबीरों और जतन से जो उनके मत के आचारजों ने लिखे हैं मिल सक्ता है ॥

८९१-(५) इस सबब से बहुत कम लोग मोक्ष की प्राप्ती के निमित्त कोई जतन करते हैं और उस में भी पूरी तवज्जह और जिस क़दर कि मिहनत दरकार है दुरुस्ती के साथ नहीं करते ॥

८९२-(६) सबब न होने पूरे यक़ीन का ऐसा मालूम होता है कि हर एक मत में जुदा २ तौर और तरीक़े से हिदायत मोक्ष की प्राप्ती के वास्ते की है और कोई तरकीब बहुत आसान और कम-ख़र्च और कोई बहुत मुशकिल और किसी में धन का ख़र्च ज़ियादा तजवीज़ किया है और जो कि मालिक एक समझा जाता है और तरीक़े हर एक क़ौम और हर एक मत में जुदा २ मुक़र्रर किये हैं इस वजह से सब के दिलों में संदेह और भरम पैदा होते रहते हैं लेकिन उनको बख़ौफ़ पेशवाओं अपने २ मत के कि वे बजाय दूर करने उन शुभों और भरमों के उस को नास्तिक और काफ़िर बतलावेंगे कोई शख़्स अपने मन और बुद्धी के हाल और कैफ़ियत को खोल कर आम तौर पर बयान नहीं करता ॥

८९३-(७) सिवाय इसके लोगों को दुनियाँ के कारोबार और भोग बिलास और दुनियाँ की ख़ाहिशों और तरंगों के हजूम के सबब से इस क़दर फ़ुर्सत भी नहीं होती कि वे आख़िरत के मुआमले में तहक़ीक़ात माक़ूल करके अपने शुभे और भरम दूर करें और न इस क़दर ज़रूरत इस काम की उन की नज़र में मालूम होती है कि उसके वास्ते खोज और तलाश ज़रूरी और मुक़द्दम* समझें ॥

*मुख्य ।

८९४-(८) संत सतगुर जो कुल मालिक के प्यारे और उसके भेद से ख़बरदार हैं फ़रमाते हैं कि सबब नाइत्तिफ़ाक़ी कुल मतों का और जारी होने जुदा २ तरीक़े का हर एक मत में यह है कि वे सच्चे मालिक और उसके धाम और भेद से नावाक़िफ़ हैं और यह भी उनको मालूम नहीं है कि सच्चा उद्धार और सच्ची मोक्ष किसे कहते हैं और वह किस तरह प्राप्त हो सक्ती है इस वास्ते जो २ जतन और मिहनत कि सब मत वाले अपनी अपनी समझ के मुवाफ़िक़ कर रहे हैं वह मिहनत उनकी अक्सर बरबाद जाती है और असली फ़ायदा उनको हासिल नहीं होता यानी न तो सच्ची मुक्ती उनको प्राप्त होती है और न सच्चे मालिक का दर्शन जिससे परम आनंद को प्राप्त होवें मिलता है ॥

८९५-(९) ऐसी हालत जगत के जीवों की देख कर संतों ने दया करके अनेक तरह से उनको समझौती देना चाहा और भेद और तरीक़ा अभ्यास का भी वर्णन किया लेकिन बहुत कम जीवों ने बसबब ज़ोर शोर होने विद्या और बुद्धिवान पेशवाओं अपने २ मत के संतों के बचन को माना और बाक़ी के जीव उनकी दया लेने से ख़ाली रहे बल्कि लिबासी और नक़ली परमार्थियों के बहकाने और भरमाने से उलटी संतों और उनके उपदेश की

निंदा करने लगे और आम जीवों को उनके सत-संग में शामिल होने से रोकते रहे ॥

८९६-(१०) ऐसी हालत जीवों की देख कर कि कोई भी मुक्त पद को प्राप्त नहीं होता और सब के सब चौरासी के चक्कर यानी माया के घेर में भरमते चले जाते हैं कुल मालिक राधास्वामी दयाल अति दया करके आप संत सतगुर रूप धारन करके जगत में प्रघट हुए और आम तौर से भेद अपने निजधाम और तरीक़ा उसकी प्राप्ति का समझाया और पुकार कर जीवों को सुनाया कि जो काल और माया के जाल और जनम मरन और नरकों के दुक्खों से बचना चाहें तो उनके चरन सरन में आवें और उपदेश सुरत शब्द मारग, का कि जिस के सिवाय दूसरा रास्ता प्राप्ती सच्चे उद्धार और कुल मालिक के दर्शनों का नहीं है लेकर जिस क़दर बन सके अभ्यास करें तो एकही जनम में उनके मुक्ती और परम आनन्द के प्राप्ती का थोड़ा बहुत सामान मुयस्सर होकर उसका रास्ता जारी होना मुमकिन है ॥

८९७-(११) इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि वास्ते कल्यान और प्राप्ती सुख और आनन्द अपने जीव के हर कोई संत सतगुरु या उनकी संगत का खोज करके सतसंग में शामिल होवे और जो संत सतगुरु न मिलें तो उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे और

सतसंग भी होशियारी के साथ करता रहे तो उस का आहिस्ते २ कारज बनना शुरू होगा और जो बिरह और शौक़ सच्चा होगा तो रफ़्ते २ संत सतगुर भी मेहर और दया से दर्शन देंगे और उस पर अपनी कृपा करेंगे ॥

८९८-(१२) इस जगह इस बात का ज़िकर करना मुनासिब है कि इस ज़िंदगी में जिस क़दर जरूरत वास्ते सुख और आराम के दुनियाँ में है उससे बहुत ज़ियादा ज़रूरत वास्ते करने उस जतन और तदबीर के है जिससे हमेशा का सुख और आराम मिले मगर जीव नादान हैं और अपने हाल से बेख़बर। इस सबब से उनको आइन्दे के सुख की प्राप्ती के निमित्त जतन करने का कुछ ख़याल नहीं, नहीं तो जो उनको समझ माक़ूल और पूरी ख़बर होती तो हरगिज़ ऐसी ग़फ़लत और बेपरवाही न करते ॥

८९९-(१३) अब यह बात खोल कर समझाई जाती है कि जिस क़दर मिहनत और मशक्क़त जीव अनेक तरह के कामों के सीखने और करने में कर रहे हैं और अनेक तरह की तकलीफ़ों और जान के ख़तरों को गवारा कर रहे हैं उसमें जो पूरा पूरा फ़ायदा भी हुआ और उनकी ख़ाहिश के मुवाफ़िक़ आराम और सुख भी मिला तो वह चंद-रोज़ा या इस ज़िंदगी भर फल देगा लेकिन जो जीव अमर और अजर हैं यानी उसका नाश

नहीं है तो बाद छोड़ने इस देह और देश के जब तक माया के घेर में रहेगा किसी न किसी देश में फिर देह धरेगा और वही मिहनत और तकलीफ़ उद्यम और रोज़गार के वास्ते काम सीखने की उठानी पड़ेगी और फिर चंद रोज़ उस का फ़ायदा हासिल करके अपनी देह और देश को वक़्त मरने के छोड़ेगा और इसी तरह जनम मरन और करम यानी मिहनत और तकलीफ़ का चक्कर बराबर जारी रहेगा और कभी ज़ियादा सुख और कभी ज़ियादा दुख भोगता रहेगा ॥

९००-(१४) इस चक्कर और बारम्बार की मिहनत और तकलीफ़ के बचाने के वास्ते कुल मालिक राधास्वामी दयाल दया करके फ़रमाते हैं कि जब एक जनम यानी ज़िंदगी के सुख और आराम के वास्ते ऐसी सख़्त तकलीफ़ और ख़तरनाक मिहनत गवारा करते हो तो फिर हमेशा के आराम और सुख की प्राप्ती और जनम मरन से बचाव के लिये किस क़दर तवज्जह के साथ मिहनत करना मुनासिब और लाज़िम है ॥

९०१-(१५) और फिर कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने ऐसी भारी दया फ़रमाई है और ऐसी जुगत और तदबीर कृपा करके बताई है कि जो उसकी कार्रवाई कम से कम दो घंटे और ज़ियादा से ज़ियादा चार पाँच या छः घंटे रोज़मर्रा थोड़े

बहुत शौक़ के साथ की जावे तो एक ही ज़िंदगी में बहुत कुछ काम बन जावे और आइंदे को सिलसिला उस का जारी हो जावे और दो तीन हद्द चार जनम में काम पूरा बन जावे यानी सुरत धुरधाम में पहुँच कर अपने मालिक के चरनों में बासा पाकर हमेशा को सुखी हो जावे और फिर किसी क़िसम का कष्ट और कलेश या जनम मरन का दुख न सतावे ॥

९०२-(१६) और जो जतन और जुगत वास्ते हासिल होने इस भारी न्यामत के समझाई है वह यह है कि अपनी सुरत को आँख के मुक़ाम से जहाँ जाग्रत अवस्था में उसकी बैठक है और वही करम और दुख सुख के भोग और देह और दुनियाँ के साथ बंधन का स्थान है आहिस्ते २ शब्द को सुनते हुए यानी जिस धार पर सुरत उतरी है उसी धार को पकड़ के ऊँचे की तरफ़ चलाना और चढ़ाना शुरू करे तो इसी ज़िंदगी में अपनी मुक्ती और बिशेष आनंद की प्राप्ती होती हुई देख सक्ता है और यह वही रास्ता है कि जहाँ होकर मरते वक्त़ सब जीवों को लाचार होकर जाना पड़ेगा और यही रास्ता निज घर का है जो कि सच्चा मुक्त पद है फिर बजाय अख़ीर वक्त़ पर ज़बरदस्ती से तकलीफ़ के साथ खींचे जाने के ख़ुशी और शौक़ के साथ उस रास्ते पर जीते जी चलना और अपने

सच्चे मालिक के जलवे को देखते हुए धुर मुक़ाम पर पहुँच कर उसका दर्शन और चरनों में बासा हासिल करना कुल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द ज़रूर मुनासिब और लाज़िम है ॥

९०३-(१७) यह भेद और उपदेश इस वक्त में सिर्फ़ राधास्वामी मत में जोकि संतों का निज मत है जारी है और जो कोई सच्चा शौक़ीन होवे वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर उस भेद को दरियाफ़्त कर सक्ता है और मुवाफ़िक़ हिदायत के कोई दिन अभ्यास करके थोड़ी बहुत कैफ़ियत अपने अन्तर में देख सक्ता है और थोड़ा बहुत आनंद और सरूर हासिल करके इस बचन की तसदीक़ और जाँच करके अपना परमार्थी भाग बढ़ा सक्ता है ॥

९०४-(१८) जो कोई संत बचन को नहीं मानेंगे और बेपरवाही और ग़फ़लत करके दुनियाँ के भोग व बिलास और मिहनत और मशक्कत में अटके रहेंगे वे बारम्बार नीच ऊंच जोन और नीच ऊँच देश में देह धारन करके दुख सुख और मिहनत और मशक्क़त के चक्कर में पड़े रहेंगे और चाहे जैसी करतूत रसमी और नक़ली परमार्थ की करें उनका सच्चा उद्दार हरगिज़ नहीं होगा यानी जनम मरन और कष्ट और कलेश और माया के घेर से कभी छुटकारा नहीं होवेगा ॥

(६०) रा ग

बाहर मुख शब्द के वसीले से यह जीव देह इंद्री और मन और भोगों के रस में बंध गया है और दुख सुख भोगता है अब जो कोई अंतर के शब्द में सतगुर से भेद लेकर चित्त लगावे तो वह आहिस्ते २ चढ़कर एक दिन कुल मालिक के धाम में पहुँच कर परम आनन्द को प्राप्त हो सक्ता है ॥

९०५-(१) सुरत रूह ऊँचे से ऊँचे धाम यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से उतर कर पिंड में नेत्र के स्थान में बैठी है इसी जगह इसका बंधन देह और दुनियाँ के साथ हुआ और यही स्थान करम करने का है और यहाँ ही दुख सुख का भोग होता है ॥

९०६-(२) इसी आँखों के स्थान पर बैठ कर सुरत इंद्रियों के वसीले से भोगों में और बाहर-मुख शब्द में रची और दुनियाँ और उसके सामान का बिस्तार किया ॥

९०७-(३) सुरत असल में धुन रूप थी सो पिंड में बैठ कर इस लोक में भी शब्द के साथ मेल करके कुटुम्ब परिवार और धन माल और भोगों में फँस

गई और इसी देश के शब्द के वसीले से कुल कार्रवाई कर रही है ॥

९०८-(४) बालकपन से माता पिता और कुटुम्ब परिवार और जिन २ से काम पड़ता गया और व्यौहार वर्ता गया उनके शब्द में रची और बंधी और दुनियाँ की कार्रवाई सीखी और उस में बर्तने लगी और नाच रंग और गाने बजाने का रस और आनन्द लेने लगी ॥

९०९-(५) दुनियाँ में मन और इंद्री और भोगों का संग करके इस क़दर फँसाव और घिराव सुरत का हो गया है कि अब बग़ैर मदद सतगुरु के इस क़ैद से छुटकारा मुमकिन नहीं है बलकि दिन २ बंधनों के बढ़ाने की कोशिश की जाती है और जिस क़दर विस्तार होता जाता है उसी क़दर खुश होकर अपने भागों को सराहती है ॥

९१०-(६) इस देश में जिस क़दर कि आदमी आपस में मिलते हैं और मुहब्बत करते हैं उसी क़दर काल पुरुष यानी निज मन उनको आपस में बाँधता और फँसाता चला जाता है और यह सब एक दूसरे को संसार में बराबर मदद दुनियाँ की तरक़्क़ी के वास्ते देते हैं और उसकी हान में दुखी होते हैं ॥

९११-(७) फिर ऐसी हालत में जीव की क्या ताक़त है कि अपने बल से अपने छुटकारे की

कोई तदबीर या जतन कर सके बल्कि अपने निज मालिक और निज घर को इस क़दर भूल गया है और यहाँ के पदार्थों को देख करके इस क़दर उन में भरम रहा है कि कभी अपने घर की सुध भी नहीं लेता और न ऐसे लोगों से कि जो घर का भेद और रास्ता बतावें और चलने में मदद देवें मिलना चाहता है बल्कि उनसे दूर भागता है और उनका बचन सुनना और मानना नहीं चाहता ॥

९१२-(८) अब ख़याल करो कि जब जीव सुरत अमर है और इस देश में थोड़े अर्से ठहरता है फिर किस क़दर नादानी और ग़फ़लत है कि इसी लोक के सामान और अपने कुटुम्ब परिवार और बिरादरी के संग में दिल और जान से लिपटता है और उन्हीं को अपना आधार और सुख का कारन समझ कर उन में मज़बूत और गहरी प्रीति करता है और अपनी मौत और इस देह और देश के छोड़ने की और फिर आइंदा कहाँ जाना और रहना होगा और वहाँ दुख मिलेगा या ज़रा भी नहीं लेता और न खोज इस बात का करता है कि उसका करतार कौन है और कहाँ है और आया कोई ऐसा भी स्थान है कि जो हमेशा एक रस क़ायम रहे और वहाँ पहुँच कर यह जीव भी अमर हो जावे और परम आनंद और महा सुख इसको प्राप्त होवे ॥

९१३-(९) यह भेद और यह हाल संतों के सतसंग से जो कि कुल मालिक के धाम के (जो महा आनंद और महा सुख का भंडार है) वासी हैं मालूम हो सक्ता है और वे जीवों को ग़ाफ़िल और भूला हुआ देख कर अति दया करके इस लोक में नर रूप धारन करके प्रघट हुए और अनेक रीत से जीवों को अपनी तरफ़ खींच कर भेद उनके सच्चे माता पिता कुल मालिक और उसके निज धाम का जोकि उनका निज घर है समझाते हैं और भी हाल इस देश का जोकि मन और माया का धाम है और जहाँ कोई चीज स्थिर नहीं है और उसके सुखों के साथ दुख भी लगा हुआ है और जिसको मौत के वक्त़ ज़रूर छोड़ना पड़ेगा सुनाकर जुगत अपने निज घर यानी कुल मालिक राधास्वामी के धाम में चढ़ कर पहुंचने की बताते हैं और मेहर करके अपना बल और मदद देकर जो कोई बचन माने उससे रास्ता तै कराकर निज घर में पहुंचाते है और बारम्बार देह धरने और जनम मरन के चक्कर से फ़िलकुल छुटकारा कराते हैं ॥

९१४-(१०) अब जो जीव संतों को मुवाफ़िक़ माता पिता और कुटुम्ब परिवार के अपना हितकारी समझ कर उनके बचन को चित्त से सुनें और मानें और प्रीति के साथ उनका सतसंग करें

तो वे संसार और उसके भोगों की तरफ़ से आहिस्ते २ हटाकर और उपदेश देकर अंतरमुख शब्द में जो हर दम हर एक के घट में बोल रहा है लगावें और तब रफ़्ते २ अभ्यास करके अंतर में सुरत और मन जोकि संसार में लिपट रहे हैं धुन का रस लेकर चलना और चढ़ना शुरू करेंगे ॥

९१५--(११) इस तरह जिस क़दर संत सतगुर और प्रेमी अभ्यासियों का संग बढ़ता जावेगा और बारम्बार सतसंग के बचन सुनकर संसार का मोह घटता जावेगा उसी क़दर अंतर शब्द और स्वरूप में रस मिलेगा और प्रेम बढ़ेगा और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की मेहर से रफ़्ते रफ़्ते एक दिन निज घर में बासा मिल जावेगा ॥

९१६--(१२) जैसा कि अंतर और बाहर सतसंग करके रस और आनंद आवेगा उसी क़दर घट के शब्द की महिमा और बड़ाई की ख़बर पड़ती जावेगी और उतनाही बाहर के शब्द से चित्त हटता जावेगा और वह रूखा और फीका मालूम पड़ेगा ॥

९१७--(१३) इस वास्ते कुल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अंतर शब्द की महिमा समझ कर संतों के सतसंग में ज़रूर वास्ते अपने जीव के कल्यान के शामिल होवें और सुरत शब्द मारग

का उपदेश जिसके सिवाय और कोई रास्ता कुल मालिक से मिलने और अपने निज घर में उलट कर जाने का नहीं है संत सतगुर और उनके निज प्रेमी से लेकर जिस क़दर बन सके अभ्यास शुरू करें और अंतर का थोड़ा बहुत रस लेवें। जो यह काम सच्चे मन से शुरू किया जावेगा तो ज़रूर संत सतगुर और कुल मालिक उस अभ्यासी पर दया करेंगे और अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनंद बख़्शेंगे कि जिससे तरक़्क़ी दिन २ होती जावे और एक दिन काम पूरा बन जावे ॥

९१८-(१४) जो जीव कि इस दुनियाँ की नाशमानता और मौत को हर दम सिर पर खड़ा देख कर नहीं चेतेंगे यानी ग़फ़लत और बेपरवाही सच्चे परमार्थ की तरफ़ से नहीं छोड़ेंगे और अपने जीव के हमेशा के वास्ते सुखी होने का फ़िकर नहीं करेंगे तो वे हमेशा जनम मरन के चक्कर मे रहकर बारम्बार देह धरेंगे और दुख सुख भोगते रहेंगे। यह फल उनको बाहरमुख शब्द और भोगों में रचने से मिलेगा और जो संतों के सतसंग में शामिल होकर अंतरमुख शब्द में लगेंगे तो एक दिन सच्चे मालिक के महल में वासा पाकर परम आनंद को प्राप्त होंगे और काल और माया के घेर से जहाँ जनम मरन का चक्कर जारी है पार हो जावेंगे ॥

(६१) प्रकार इकसठवाँ

दुनियाँ के भोगों और पदार्थों के लिये हर कोई सच्ची दीनता और मिहनत और हुकम बरदारी करता है लेकिन परमार्थ के हासिल करने के लिये ऐसी कार्रवाई मुश्किल है पर सच्चे खोजी और दर्दी से बन पड़ेगी और वही सतगुर के सतसंग और उपदेश से पूरा २ फ़ायदा उठावेगा यानी मेहर और दया और नाम की बख़्शिश उसको मिलेगी।

९१९--(१) दुनियाँ में धन और भोगों की प्राप्ती के वास्ते सब लोग सच्ची दीनता और मिहनत और ताबेदारी करते हैं और हर तरह से अपने अफ़्सर और मालिक को प्रसन्न करना चाहते हैं ताकि उससे ज़ियादा फ़ायदा हासिल होवे॥

९२०--(२) इसी तरह वास्ते दूर होने बीमारी और दूसरी क़िस्म की तकलीफ़ों के हकीम और डाक्टर और सयानों की दीनता और खुशामद और धन की खिदमत करते हैं और जब आराम होजावे तब निहायत इहसानमंदी और शुक्र गुज़ारी ज़ाहिर करते हैं और वास्ते आइंदे के मदद और काम लेने के उनसे मुहब्बत और मेल जारी रखते हैं॥

९२१--(३) जब कभी किसी को ख़ौफ किसी दुश्मन या जानवर वग़ैरह का होता है तब भी किसी धनवान या बलवान या हुकूमतवान की जो उस दुश्मन को हटा सकता है या और तरह उसको ज़ेर कर सकता है खुशामद और दीनता करके अपना काम निकालते हैं और उसके साथ मेल और मुहब्बत रखते हैं ॥

९२२--(४) खुलासा यह है कि दीनता और ख़ातिरदारी और ख़िदमत और खुशामद ऐसी भारी तदबीर है कि जिसकी मदद से सब तरह के काम आदमी अपने बना सकता है और कुल जीव इससे राज़ी होते हैं यहाँ तक कि जानवर भी चाहे पालतू होवें या ख़ूँख़ार मुहब्बत और ख़िदमत से राज़ी होकर अपने पालने वाले को प्यार करते हैं और वक्त सख़्ती के अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ उसकी मदद और रक्षा और पक्ष करते हैं ॥

९२३--(५) दुनियाँ के कामों की सब को ज़रूरत पड़ती है और इस सबब से हर कोई आम तौर पर ऊपर के लिखे हुए तौर और क़ायदे के मुवाफ़िक़ जहाँ से उसका काम निकलना मुमकिन होवे बेतकल्लुफ़ जात पाँत और क़ौम और दरजे और मर्तबे का ख़याल छोड़कर बर्ताव करता है और कोई किसी की शिकायत नहीं करता और न किसी पर तान मारता है ॥

९२४-(६) बाज़े काम जो सरीह नाक़िस और अपने मजहब और धरम के बरख़िलाफ़ हैं लेकिन जो उनकी कार्रवाई जहाँ तहाँ जारी है यानी जो कोई चाहता है वही उनको बेतकल्लुफ़ और बेख़ौफ़ करने लगता है जैसे जुवा खेलना, शराब पीना, मांस खाना, तमाशबीनी करना, ग़ैर क़ौम के शख़्स से दोस्ती और मेल जोल और खान पान का बर्ताव बेधड़क करना और चोरी और दग़ाबाज़ी और जालसाज़ी वग़ैरह के काम करना वग़ैरह २ तो जब वे किसी से अपनी बिरादरी में बन पड़ते हैं तो कोई रोक टोक नहीं लगाता और चाहे पीठ पीछे बुराई करें लेकिन मुकाबले में कोई तान नहीं मारता और न ऐसे काम करने वाले को धमकाता है या जात से ख़ारिज करने का इरादा या तदबीर करता है और सब उसके घर और बिरादरी के लोग उसके साथ ब्यौहार और बर्ताव बदस्तूर जारी रखते हैं ॥

९२५-(७) लेकिन सच्चे परमार्थ की क़दर लोगों के चित्त में बहुत कम मालूम होती है हरचंद कि इस की जरूरत और बड़ाई दुनियाँ के कुल कामों और ज़रूरतों से ज़ियादा से ज़ियादा है यानी दुनियाँ के काम थोड़े दिन या ज़िंदगी भर फ़ायदा दे सक्ते हैं पर सच्चे परमार्थ की कार्रवाई में हमेशा का फ़ायदा और आराम हासिल हो सक्ता है फिर भी लोग

ऐसे बेपरवाह और भूले हुए हैं कि उसकी ज़रूरत बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं समझते हैं और न उसके वास्ते कुछ तलाश या खोज या जतन करना चाहते हैं और परमार्थी शख़्सों से मिलने में भी किसी क़दर कराहियत और नफ़रत रखते हैं और उनको ओछा और नादान ख़्याल करते हैं॥

९२६-(८) जो कोई सच्चे परमार्थ की प्राप्ती के वास्ते किसी संत या साध या महात्मा का सतसंग और सेवा करे या उनके चरनों में प्रेम प्रीत और दीनता करे तो दुनियाँ के लोग अनेक तरह के भरम उस की निसबत उठाकर उसकी और संत सतगुर और साध महात्मा की निंदा करने और अनेक तरह के ऐब और इलज़ाम लगाने से नहीं डरते हैं बल्कि तरह २ के ख़ौफ़ दिखाते है और धमकियाँ देकर उसको परमार्थ से रोकना और हटाना चाहते हैं॥

९२७-(९) परमार्थ के घर में सच्चे परमार्थियों को दीनता और सेवा करते हुए देख कर दुनियाँ के लोग बहुत नाराज़ होते हैं और हँसी उड़ाते हैं और धन ख़र्च करने वाले को नादान और दीवाना बताते हैं ताकि और कोई शख़्स उसके साथ शामिल न होवे॥

९२८-(१०) सच्चे परमार्थियों को प्रेमा भक्ती के भाव और रीत में बर्ताव करते हुए देख कर उनके कुटुम्ब और बिरादरी के लोग जात पाँत से निकाल

देने का जतन बेधड़क करने को तैयार हो जाते हैं और अनेक तरह की तकलीफ़ें और दुख पहुँचाना चाहते हैं और आप उस जगह ज़रा भी दीनता और ख़िदमत नहीं करते हैं बल्कि परमार्थ में ज़ियादा अहंकार और बेपरवाही दिखलाते हैं ॥

९२९-(११) यह सब दुनियाँ के लोग रसमी और नक़ली परमार्थ की कार्रवाई थोड़ी बहुत कर रहे हैं और वहाँ भक्ती के सर्ब अंगों में आप और उन के कुटुम्बी और बिरादरी क्या स्त्री क्या पुरुष बर्त रहे हैं और कोई किसी की शिकायत नहीं करता और न कोई किसी पर तान मारता है और बावजूदेकि उन कामों में कुछ फ़ायदा ज़ाहिर या अंतर में मालूम नहीं होता पर ऐसी मज़बूत टेक और पक्ष उन कामों की बाँधी है कि छुड़ाये नहीं छोड़ते और जो कोई उन कामों को फ़ज़ूल और ओछा करके दिखलावे तो उसके साथ तकरार और हुज्जत बेफ़ायदा करके लड़ने को तैयार हो जाते हैं ॥

९३०-(१२) सबब इस क़िसम के बर्ताव और चाल का इस दुनियाँ में यही है कि लोग सच्चे परमार्थ की महिमा और ज़रूरत नहीं जानते हैं और न सच्चे मालिक और उसके ऊँचे धाम से ख़बरदार हैं और न अपनी असलियत से वाक़िफ़ हैं कि वे कौन हैं और कहाँ से आये हैं और कहाँ जायँगे, जो संतों का सतसंग मयस्सर आता तो उनको

खबर इन सब बातों की पड़ती और दुनियाँ के भी असल हाल को जानते तब सच्ची कदर सच्चे परमार्थ और परमार्थियों की करते लेकिन बसबब हुजूम और कसरत यानी भीड़ भाड़ नक़ली और लिबासी और पाखंडी परमार्थियों और उनकी खुद-मतलबी और बेखबरी की कार्रवाई और रसूम वग़ैरह के संतों का परमार्थ गुप्त रहा और खास २ लोगों को उसकी महिमा मालूम पड़ी से। उनसे दुनियाँ के लोग जो नक़ली और रसमी परमार्थ में बंधे हुए हैं दूर रहे और पाखंडी और ओछे परमार्थियों के बहकाने और भरमाने से बजाय संतों के सत-संग में शामिल होने के उनकी और उनके सतसंग की निंदा करते रहे ॥

९३१-(१३) ऐसी हालत जगत के जीवों की देख कर कि सब चौरासी में चले जाते हैं और सच्चा उद्धार किसी का नहीं होता कुल मालिक राधास्वामी दयाल आप संत सतगुर रूप धारन करके इस दुनियाँ में प्रघट हुए और निज भेद अपना और तरीक़ा सच्चे उद्धार का सुरत शब्द मारग के वसीले से वर्णन किया और जीवों को दया करके समझाया कि जो इस देह में न चेते तो फिर चौरासी में भरमोगे और जुगत अभ्यास की ऐसी सहज करदी कि लड़का जवान और बूढ़ा और औरत और मर्द उसको आसानी से कर सकें और थोड़े दिन के अभ्यास के बाद कुछ रस और आनन्द अंतरी मिल जावे ॥

९३२-(१४) जो कोई सच्चा परमार्थी होवे यानी जो बेवास्ते और बेसबब किसी की निंदा नहीं करता है और हर एक बात को तहक़ीक़ करके समझना चाहता है वह संतों और उनके संग की महिमा सुन कर ज़रूर के सन्मुख आवेगा और भेद और जुगत दरियाफ़्त करके म होवेगा और उसकी भारी ज़रूरत समझ कर फ़ौरन अभ्यास में लग जावेगा और अंतर में थोड़ा बहुत रस और आनंद लेकर अपने भागों को सराहेगा और गहरा प्रेम और सच्ची दीनता संत सतगुर के चरनों में करेगा और कोई ख़ौफ़ या ख़याल दुनियाँदारों का या उनकी पुरानी चाल ढाल या पुरानी रसमों का दिल में नहीं लावेगा ॥

९३३--(१५) ऐसे जीव संत गुर के दयापात्र कहलाते हैं और अपनी सेवा और करनी वग़ैरह से दिन २ मेहर और दया बिशेष हासिल करके मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में ि ाम पाते हैं और वही स्थान सच्चे और पूरे उद्धार का है और जो कोई ऐसे परमार्थियों का देगा पर भी ऐसीही बख़शिश होवेगी ॥

९३४--(१६) जो कोई मन हठ और अहंकार और मूर्खता करके संतों के परमार्थ की क़दर नहीं करेगा और बजाय उनके सतसंग में शामिल होने के उन की और उनके प्रेमी सेवकों की निंदा और बुराई

करेगा या उनसे विरोध बांधेगा वह काल और करम और मन और माया के जाल में फँसा रहेगा और अपनी करनी के मुवाफ़िक़ नीच ऊंच जोन और नीच ऊंच देश में भरमता रहेगा यानी बारम्बार देह धरके दुःख सुख का भोग करता रहेगा और कभी सच्चे मालिक का दर्शन उसको नहीं मिलेगा ॥

९३५--(१७) इस वास्ते सब जीवों को जो अपने जीव का कल्यान चाहते हैं मुनासिब और लाज़िम है कि संत सतगुर और उनकी संगत के साथ दीनता और भाव से वर्ताव करें और जैसे बने सत-संग और सेवा करके उनकी दया और प्रसन्नता हासिल करें तो उनके जीव का सहज में कारज बनना मुमकिन है यानी माया के घेर से निकल कर सच्चे मालिक के धाम में वासा मिलेगा और हमेशा के वास्ते महा आनन्द और सुख को प्राप्त होंगे ॥

(६२) प्रकार बासठवाँ

संसार में बाहर और अंतर करनी परमार्थ की, वास्ते हासिल करने अपने मत के सिद्धान्त के, बाज़े लोग करते हैं और तन मन धन भी लगाते हैं बल्कि कोई २ निहायत कष्ट धारन करते हैं लेकिन पूरा कारज उनका नहीं बनता पर जो

कोई इसी क़दर बल्कि थोड़ी उससे कम कार-वाई संत सतगुर के चरनों में करे तो उसको सच्चा परमार्थ हासिल होवे यानी अमर धाम में परम आनन्द को प्राप्त होवे ॥

९३६-(१) दुनियाँ में अनेक मत जारी हैं और हर एक मत मे अनेक फ़िरक़े हैं और हर एक मत और फ़िरक़े में कार्रवाई परमार्थ की बाहरमुख जैसे बाहर की पूजा और रसूम और करम और बानी का पाठ वग़ैरह और कुछ अंतरमुख जैसे सफ़ाई मन और इंद्रियों की सुमिरन और ध्यान या मुद्रा और प्राणों का साधन करके जारी है ॥

९३७-(२) बहुत से लोग तो बाहरमुख या ज़ाहिरी कार्रवाई बतौर पुरानी रसम और चाल के करते हैं और उनके दिल पर उसका असर बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं होता और उन में से बहुत कम ऐसे हैं कि जो इस कार्रवाई को साथ यक़ीन और पूरी तवज्जह के अंजाम देते हैं इनके मन पर उस कार्रवाई का असर उसी वक्त थोड़ा बहुत होता है लेकिन बाद छोड़ने उस कार्रवाई के जबकि दुनियाँ के कामों मे लग जाते हैं तब उसका असर कुछ नहीं रहता ॥

९३८--(३) बाज़े जीव कुछ अंतर कार्रवाई करते हैं इन में से अक्सर वास्ते हासिल होने सिद्धो

या शक्ती या कोई और दुनियावी मतलब की नज़र से जैसे प्राप्ती तन्दुरुस्ती और धन और माल और तरक्क़ी कुटुम्ब और परिवार वग़ैरह के यह काम करते है और बहुत कम ऐसे हैं कि जिनका मतलब प्रसन्न करने अपने इष्ट और प्राप्ती उसके दर्शन और धाम के और बचाव दुक्खों और चिन्ता वग़ैरह से होता है यह लोग वह कार्रवाई बग़ैर मदद और हिदायत गुरू वाक़िफ़कार और अभ्यासी के नहीं कर सक्ते हैं लेकिन ऐसे गुरू भी दुर्लभ और नायाब है और सच्चे शौक़ीन भी कोई बिरले जीव होते है॥

९३९--(४) जोकि हर एक मत और उसके फिरक़ों का इष्ट अक्सर जुदा २ है इस सबब से इन परमार्थियों का सिद्धान्त भी अलहदा २ होता है लेकिन इन में से कोई भी सच्चे और कुल मालिक और उसके धाम के भेद से वाक़िफ़ नहीं हैं और न उनके मत के आचारजों को इस हाल की ख़बर हुई ॥

९४०--(५) और जोकि सब मतों का सिद्धान्त रास्ते में किसी न किसी मंज़िल तक रहा और धुरधाम का भेद और पता उनको मालूम नहीं हुआ इस सबब से सब ओछे रहे और जब कुछ उनको फ़ायदा अपने मत की कार्रवाई से हासिल हुआ तब किसी न किसी अंग और ढंग से दुनियाँ की तरफ़ झोका खागये यानी उनके मन में मुख्यता अपने इष्ट से मिलने की जैसा कि चाहिये न रही

यानी ज़ाहिरी मान बड़ाई और जीवों की भीड़ भाड़ बढ़ाने की ख़ाहिश ज़बर पड़ी और मतलब इस काम में यह समझा गया कि अंधेरा और ग़फ़लत दूर करने और पर उपकार और जीव के कल्यान के निमित्त यह कारंवाई की जाती है ॥

९४१–(६) जो ऐसे पेशवा लोग पहिले अपने जीव का सच्चा कल्यान कर लेते यानी माया के घेर के पार हो जाते तो अलबत्ता उनका यह कहना और परउपकार का काम करना दुरुस्त होता यानी वह जीवों को ऐसी जुगत और तदबीर बताते कि जिससे उनके मन से हवा व हवस दुनियाँ और उसके सामान की दूर या कम होती जाती और बजाय उसके थोड़ा बहुत प्रेम और भक्ती मालिक के चरनों की उनके मन में पैदा होती लेकिन जो ऐसी हालत न हुई यानी मालिक के प्रेम का रंग नहीं चढ़ा तो यह काम कच्चा रहा और उसमें जीव का उपकार असल में कुछ नहीं हुआ ॥

९४२–(७) जो ग़ौर और तअम्मुल से बग़ैर पक्षपात के नज़र फैला कर हाल हर एक मत के पेशवाओं और आचारजों का इस ज़माने में देखा जाता है तो मालूम होता है कि उन के पास कोई जुगत या अभ्यास इस क़िसम का कि जिससे अंतःकर्ण की सफ़ाई होवे और मालिक के चरनों का प्रेम मन में पैदा होवे और बसे नहीं है और न उन

पोथियों और कितावों में जो वह पढ़ते और पढ़ाते हैं इस क़िस्म का अभ्यास खोल कर थोड़ी बहुत तफ़सील के साथ लिखा है इस सबब से वे और उनके संगी जीव अंतर में ख़ाली नज़र आते हैं हरचंद बाहर से बातें बहुत बनाते हैं पर उनका अमल दरामद यानी अभ्यास उनकी रहनी और बर्ताव वग़ैरह से जैसा चाहिये ज़ाहिर नहीं होता और इस सबब से उनके उद्धार और सिद्धान्त पद की प्राप्ती में भी शक और शुभा रहता है ॥

९४३-(८) जो नतीजा कि ऊपर निकाला गया इस का भारी सबूत यह है कि इन सब मतों में कहीं ज़िकर मालिक के निज धाम का और भेद रास्ते और मंजिलों का और भी पिंड में जीव की बैठक का साफ़ तौर पर और सिलसिलेवार नहीं है और न चलने और चढ़ने का तरीक़ा और अभ्यास समझाया है बल्कि बहुत से लोग मालिक को सर्व व्यापक यानी हर जगह मौजूद समझ कर उससे मिलने के लिये चलने और चढ़ने को भरम मानते हैं और मालिक की ख़सूसियत किसी मुक़ाम या धाम से नहीं करते क्योंकि वे कहते हैं कि मुक़ाम और धाम मुक़र्रर करने में मालिक महदूद हो जाता है ॥

९४४-(९) इस बयान से इन सब मत वालों की बेखबरी और नावाक़िफ़कारी कमाल दरजे की ज़ाहिर होती है और इस भेद के न होने से इनके

बिलकुल ओछे और मन और बुद्धी के बनाये और गढ़े हुए साबित होते हैं॥

९४५—(१०) संत जो कुल मालिक के भेदी और उसके स मुसाहब या निज पुत्र हैं फ़रमाते हैं कि वह मालिक अपनी किरनियें यानी चेतन्य धारों से सब जगह मौजूद है और वे किरनियाँ यानी रूहें कुल रचना का कारज दे रही हैं और उसका निज रूप और निज धाम सब से न्यारा और ऊँचे से ऊँचा है और वहाँ माया का जिसके मसाले से तीन लोक की रचना की देहियाँ बनी हैं और उन में सुरतें यानी रूहें बैठ कर कार्रवाई कर रही हैं नाम और निशान भी नहीं है ॥

९४६—(११) वह मालिक और उसकी किरनियाँ माया से जुदी हैं लेकिन जबकि वे माया के घेर में उतर कर आईं वहाँ से माया उनका ग़िलाफ़ या ख़ोल होती चली आई यानी जिस क़दर कि उनका ार माया के घेर में हुआ उसी क़दर उन पर ग़िलाफ़ पर ग़िलाफ़ चढ़ते चले आये क्योंकि माया में दरजे हैं इस सबब से समान और बिशेष चेतन्य का भेद हर एक दरजे या मंडल में होता चला आया है ॥

९४७—(१२) इस बयान का सबूत यह है कि हरचंद चेतन्य सब जगह मौजूद है पर बग़ैर मदद अपने से बिशेष चेतन्य के कुछ कार्रवाई रचना

वग़ैरह की नहीं कर सक्ता जैसे इस लोक का चेतन्य बिदून मदद सूरज की किरनियों के जो इसका बिशेष चेतन्य है कुछ कार्रवाई उतपत्ति और पालन इस देश की रचना की नहीं कर सक्ता इसी तरह यह सूरज निरंजन रूपी सूरज के आधीन है और उसके गिर्द मय अपने तारों के घूम रहा है और वह सूरज पारब्रह्म रूपी सूरज के और यह सत्त पुरुष रूपी सूरज के और वह कुल मालिक राधास्वामी दयाल के आधीन है यह सब सूरज एक दूसरे के बिशेष चेतन्य हैं और राधास्वामी दयाल महा बिशेष चेतन्य हैं और वही कुल मालिक हैं ॥

९४८-(१३) अब ख़याल करो कि जो लोग चेतन्य को सर्व व्यापक मान कर चलने चढ़ने को भरम कहते हैं वे किस क़दर ग़लती में पड़े हैं और कितना भारी अपना अकाज कर रहे हैं इस वास्ते हर एक परमार्थी को चाहिये कि संत सतगुर की जुगत लेकर अपने घट में चलने और चढ़ने का अभ्यास इस मतलब से कि एक दिन कुल मालिक के धाम में पहुँच कर उसका दर्शन करे और वहाँ वासा पावे करना मुनासिब और ज़रूर है और नहीं तो भारी अकाज होगा ॥

९४९-(१४) संत सतगुरु ने साफ़२ फ़रमाया है कि जीव यानी सुरत कुल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है और इस बेगाने यानी माया के देश में

उतर कर देह और मन और इंद्रियों के साथ भोगों और पदार्थों में बंध गई है सो जब तक इस देश को छोड़ कर अपने निज घर में न पहुँचेगी तब तक सुखी नहीं होगी और वास्ते छोड़ने इस देश के सुरत शब्द मारग का अभ्यास कराते हैं ॥

९५०–(१५) शब्द चेतन्य और जान और नूर की धार को कहते हैं, यही कुल का करतार है और इसी के वसीले से कुल रचना का काम चल रहा है इसी चेतन्य धार पर सुरत पिंड में उतरी है और इसी को पकड़ के अपने घर की तरफ़ उलट सक्ती है इस वास्ते जिस मत में शब्द का भेद और उसके अभ्यास की जुगत नहीं है वह मत थोथा और ख़ाली है और चाहे कोई किसी कि का अभ्यास अंतरमुख करे पर उससे सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा, जो उस अभ्यास में चढ़ाई भी है तो भी वह अभ्यासी कहीं न कहीं माया के घेर में रहेगा और जनम मरन के चक्कर से उसका बचाव हरगिज़ नहीं होगा ॥

९५१–(१६) इस वास्ते संत अति दया करके फ़रमाते हैं कि सब जीवों को चाहे औरत होवें या मर्द जो अपने जीव का कारज बनाना चाहते हैं लाज़िम है कि संतों के चरनों की सरन लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास शुरू करें तो उनका बचाव चौरासी और जनम मरन के चक्कर से सहज में हो जावेगा ॥

९५२-(१७) सुरत शब्द मारग की ऐसी महिमा है कि जो कोई संत सतगुर से उपदेश लेकर थोड़े दिन भी उसका अभ्यास करे तौ भी वह जीव चौरासी में नहीं जावेगा और संत सतगुर की दया से चार जनम में उसका काम पूरा बन जावेगा यानी धुरधाम में पहुँच जावेगा और जब तक ऐसा न होगा वह अच्छे कुल में जनम लेकर बदस्तूर अपना अभ्यास संत सतगुर के सतसंग में शामिल होकर करता रहेगा और हर जनम उसका पहिले जनम से बेहतर होगा ॥

९५३--(१८) हरचंद कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुर रूप धारन करके शब्द के अभ्यास को निहायत सहज कर दिया है कि लड़का जवान और बूढ़ा बग़ैर छोड़ने घर बार और रोज़गार के सहज में कर सक्ते हैं लेकिन जब तक कि राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया शामिल न होवे तब तक इस अभ्यास का किसी से दुरुस्ती से बन पड़ना मुश्किल बल्कि नामुम्किन है ॥

९५४--(१९) और मतों के अभ्यास को चाहे जो कोई कष्ट धारन करके या हठ के साथ कर लेवे पर राधास्वामी मत का अभ्यास सुरत शब्द योग का कोई जीव कामयाबी के साथ बग़ैर संत सतगुर की दया के नहीं कर सक्ता ॥

९५५-(२०) जो कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की दया शामिल हाल होवे तो थोड़ी सी मिहनत और तवज्जह के साथ कार्रवाई करने से पूरा फल मिल सक्ता है यानी संत सतगुर अपनी दया का बल देकर अभ्यास करावेंगे और मेहर से उस में कामयाबी बख़्शेंगे ॥

९५६-(२१) जीव निहायत निबल है और और माया और काल और करम वग़ैरह का जो परमार्थ में बिघन कारक हैं मुक़ाबला नहीं कर सक्ता और न उनको हटा सक्ता है लेकिन संत सतगुर अपनी दया से उससे जिस क़दर कार्रवाई मुनासिब हो करा सक्ते हैं और तीन चार जनम में धुरपद में पहुँचा सक्ते हैं और मन और माया और काल को भी हटा सक्ते हैं इस वास्ते सच्चे परमार्थी और दर्दी जीवों को मुनासिब है कि संत सतगुर और उनके सतसंग की सरन लेकर कार्रवाई शुरू करें तो उन का काम सहज में बन जावेगा ॥

९५७-(२२) संतों का मारग प्रेमा भक्ती का है यानी बग़ैर संत सतगुर और सच्चे मालिक के चरनों में थोड़ा बहुत प्रेम और प्रीत लाने के शब्द का अभ्यास दुरुस्ती से नहीं बन सक्ता है और यह संत सतगुर की दात और बख़्शिश है यानी उनके सतसंग और सेवा से पैदा होगा और अभ्यास करके दिन २ बढ़ता जावेगा और एक दिन धुर घर में

पहुँचा कर छोड़ेगा। प्रेमी से सब काम कैसे ही कठिन होवें आसानी से बन सक्ते हैं और उनके करने में उसको रस और आनंद मिलता है और न करने में दुख और कलेश होता है ॥

९५८-(२३) प्रेम ऐसी भारी दौलत और शक्ती है कि कुल मुश्किलों को आसान करके प्रेमी को उसके प्रीतम से मिला देती है और सब विघनों को सहज में हटाती चली जाती है और जोकि यह दौलत कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुर की मेहर की दात है इस वास्ते सर्व शक्तियाँ इस अचरजी दया और शक्ती के आधीन हैं, जिसको यह दौलत थोड़ी बहुत मिली है या मिलती जाती है वही जीव बड़भागी है और उसी को संत सतगुर का मंजूर और अपनाया हुआ समझना चाहिये और उसी का एक दिन उनकी दया से सच्चा और पूरा उद्धार हो जावेगा ॥

---

(६३) प्रकार तिरसठवाँ

कुल जीव मालिक को मान कर और अपने २ मत के मुवाफ़िक़ उसका निश्चय करके थोड़ी बहुत कार्रवाई भी कर रहे हैं पर हालत किसी की नहीं बदलती यानी मन के बिकार दूर नहीं होते और प्रेम का रंग नहीं चढ़ता लेकिन जो

जीव कि संत सतगुर का निश्चय करके उनके सतसंग और सरन में आये हैं उनकी हालत भी आहिस्ते २ बदलती जाती है और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की प्रीत और प्रतीत भी उनके मन में बढ़ती और मज़बूत होती जाती है और जोकि यह हालत बिना सतसंग सतगुर के हासिल नहीं हो सक्ती इस वास्ते सब से पहिले खोज करके संत सतगुर या उनकी संगत से मिलना चाहिये और उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास करना चाहिये ॥

९५९–(१) जितने मत दुनियाँ में जारी हैं और जो २ जीव उनमें शामिल हैं वे सब मालिक का इष्ट बाँध कर अपने २ मत के आचारजों की हिदायत के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत कार्रवाई परमार्थ की कर रहे हैं, यह कार्रवाई बहुत करके बाहरमुखी है और कहीं कहीं थोड़ी अंतरी भी जारी है पर सिवाय बिरले भोले और प्रेमी जीवों के आम तौर पर किसी की हालत नहीं बदलती है यानी मन के बिकार दूर नहीं होते और [illegible] का रंग नहीं चढ़ता है ॥

९६०–(२) सबब इसका यह है कि जहाँ बाहरमुखी कार्रवाई परमार्थ की जारी है वहाँ हरचंद प्रेम की

बानी और बचन पढ़ते हैं और गाते हैं लेकिन उनका असर उसी वक़्त तक रहता है बाद उसके फिर कोई अभ्यास इस क़िसम का नहीं किया जाता है कि जिससे वह प्रेम मन के अन्दर धसे और ठहरे ॥

९६०--(३) और जहाँ कुछ अंतरी अभ्यास जारी है वह बहुत करके वास्ते सफ़ाई अंतःकर्ण के या किसी अंग के अस्थूल देह में करते हैं और इसी में उमर गुज़ार देते हैं पर मालिक के चरनों का प्यार दिल में नहीं आता न उसके दर्शनों की इच्छा पैदा होती है ॥

९६१--(४) बहुत से मज़हबों का ऐसा ख़याल है कि मालिक अगम है और कोई उसको लख नहीं सक्ता और न कोई उसका ख़ास स्थान है कि जहां चल कर कोई पहुँचे बल्कि वह सब जगह मौजूद है और जो कोई नेक काम करेगा और उसकी महिमा और स्तुत गावेगा तो उसको बहिश्त या वैकुंठ में वासा मिलेगा और वहाँ उमदा भोग व बिलास उसको प्राप्त होंगे ॥

९६२--(५) लेकिन मालूम होना चाहिये कि यह बहिश्त या वैकुंठ या स्वर्ग एक ऊँचा लोक है और जोकि वह माया की हद्द में वाक़ै है इस सबब से परलय या महा परलय मे उसका अभाव हो जाता है

और वहां के बासी जीव फिर जनम मरन के चक्कर में आते हैं ॥

९६३–(६) बाज़े मज़हब वाले ऐसा ख़याल करते हैं कि ब्रह्म सब जगह मौजूद है और वे आप भी वही स्वरूप हैं और तन मन और इंद्रियाँ माया का कारज और नाशमान हैं और स्वाभाविक संसार और उसके भोगों में बर्तते हैं सो इस वर्ताव का असर ब्रह्म तक नहीं पहुँचता वह सदा निरलेप है और जीव भरम करके अपने ब्रह्म स्वरूप को भूल गये हैं सो ज्ञान की पोथियाँ पढ़ कर इस बात का निश्चय करना चाहिये कि हम ब्रह्म हैं और तन मन और इंद्रियाँ और कुल माया के पदार्थों से न्यारे हैं ऐसा निश्चय करने से वक़्त मौत के जब इस देह और दुनियाँ से छुटकारा होगा तब बिदेह मुक्ती हासिल हो जावेगी और इस मुक्ती के हासिल करने के वास्ते और कोई जतन ज़रूर नहीं है और न चलना और चढ़ना दरकार है क्योंकि ब्रह्म सब जगह मौजूद और भरपूर है ॥

९६४--(७) लेकिन यह ख़याल इन लोगों का किसी क़दर ग़लत है क्योंकि हरचंद ब्रह्म सब जगह मौजूद है पर माया के आवर्ण यानी ग़िलाफ़ों से ढका हुआ है और जब तक जोग अभ्यास करके यह परदे नहीं फोड़े जायँगे तब तक उस का दर्शन यानी उससे मिलना मुमकिन नहीं है इस वास्ते यह लोग जब

तक कि अपनी ज़िंदगी में ग़िलाफ़ों यानी देहियों के बंधन काट कर या ढीले करके ब्रह्म का दर्शन नहीं करेंगे तब तक मरने के वक़्त ब्रह्म पद में पहुँच कर बासा नहीं पासक्ते हैं यानी ब्रह्म से मिल नहीं सक्ते और अपने करम अनुसार और ज़बर स्वभाव और बासना के मुवाफ़िक़ फिर देह के बंधन में आवेंगे यानी उनको मुक्ती हासिल नहीं होगी ॥

९६५-(८) जो किसी बिरले जीव से इस क़िस्म की धारना कि मैं ब्रह्म हूं दुरुस्त भी बन पड़ी और निश्चय उसका बहुत पक्का और मज़बूत हो गया तो वह मनाकाश के चैतन्य से मिलकर कुछ अर्से के वास्ते सुख स्थान पावेगा और फिर देह धारन करेगा और बदस्तूर जनम मरन के चक्कर में आवेगा ॥

९६६--(९) बाज़े जीव किसी औतार स्वरूप या महात्मा या पैग़म्बर और औलिया वग़ैरह की टेक बाँधकर ऐसा निश्चय करते हैं कि जो वे उनके हुकम के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत कार्रवाई परमार्थ की बाहर-मुख करेंगे या अंतर में थोड़ा बहुत सुमिरन और ध्यान अपने इष्ट का (चाहे वह बेठिकाने है) करेंगे तो वह इष्ट उनका अख़ीर वक़्त पर सहाई होगा और सुख स्थान में बासा देगा या जो वे किसी लोक में फिर जनमेंगे तो अच्छे कुल में पैदा होकर दौलत और उमदा भोग और पदार्थ पावेंगे और बहुत खुशी के साथ गुज़रान करेंगे ॥

९६७--(१०) ऐसा निश्चय और यक़ीन धारन करना बग़ैर अंतरी अभ्यास के बहुत मुशकिल है पर जो किसी बिरले जीव से यह कारंवाई बन पड़ी तो यह बात मुमकिन है कि जो उससे शुभ करम बन पड़ेंगे और वह पूरे यक़ीन के साथ किसी औतार स्वरूप या महात्मा या पैग़म्बर का भरोसा करेगा तो उसको मरने के बाद कोई सुख स्थान में (संतों के तीसरे दरजे की हद्द में) कुछ अर्से के वास्ते बासा मिल जावेगा या इसी लोक में उम्दा जनम धारन करेगा पर जनम मरन और सुख दुख का चक्कर इस करनी से नहीं मिटेगा और हमेशा का आनंद प्राप्त नहीं होगा ॥

९६८--(११) इसी तरह जो किसी से प्राण योग या मुद्रा का साधन (जोकि निहायत कठिन और ख़तरनाक अभ्यास हैं) दुरुस्ती से बन पड़ा तो उसको इसी ज़िन्दगी में कुछ अंतर में रस और आनंद मिल जावेगा और अख़ीर वक्त़ पर उसकी सुरत खिँचकर परमातम पद या ब्रह्म के मुक़ाम तक पहुंचेगी और वहां कुछ काल आनंद का भोग करेगी या ब्रह्म में लीन होकर बेख़बर रहेगी लेकिन कुछ अर्से के बाद यानी परलय या महा परलय के समय फिर किसी न किसी लोक में जनम धारन करके देह के बंधन में आवेगी यानी सच्ची मुक्ती हासिल नहीं होवेगी ॥

९६९-(१२) आम जीव कुल मतों के जो खान पान और भोग बिलास में अटके रहेंगे वे अपनी करनी का फल भोगेंगे और जैसे शुभ अशुभ करम उनसे बनेंगे उसके मुवाफ़िक़ बारम्बार देह धर के दुख सुख भोगते रहेंगे ॥

९७०-(१३) अब मालूम करना चाहिए कि सच्चा और पूरा उद्धार जीव का बग़ैर दया संत सतगुर के हरगिज़ नहीं हो सकता इस वास्ते कुल जीवों को जो अपना कल्यान चाहें मुनासिब और लाज़िम है कि पहिले संत सतगुर या उनकी संगत का खोज लगाकर उसमें शामिल होवें और सतसंग करके अपने भरम दूर करावें और भेद और महिमा सच्चे और कुल मालिक की समझ कर उसके चरनों का इष्ट मज़बूत बाँधें और जो जुगत कि संत सतगुर बतावें उसके मुवाफ़िक़ बिरह और प्रीत के साथ अभ्यास शुरू करें तब रास्ता उनके उद्धार का जारी होगा ॥

९७१-(१४) संतों के सतसंग की ऐसी महिमा है कि जो जीव थोड़े शौक़ के साथ भी उनके चरनों में आवे तो वे बचन सुनाकर दिन २ उसके मन में से संसार का भाव और प्यार और भोगों में आशक्ती कम करते जावेंगे और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम की महिमा समझा कर उसके चरनों में प्यार और दर्शनों का

शौक़ बढ़ाते जावेंगे और सुरत शब्द मारग का उपदेश देकर और भेद रास्ते और मंज़िलों का जनाकर उसके मन और सुरत को अंतर में आँख के मुक़ाम से जहाँ कि कुल जीवों की बैठक है ऊँचे यानी निज धाम की तरफ़ सरकाते जावेंगे और थोड़ा बहुत रस और आनंद अंतर में देकर उसका शौक़ बढ़ाते जावेंगे ॥

९७२-(१५) इस तरकीब से सच्चे और प्रेमी अभ्यासी की हालत आहिस्ते २ बदलती जावेगी यानी मन की मलीनता और बिकार किसी क़दर घटते जावेंगे और कुल मालिक के दर्शनों का शौक़ और चरनों में प्यार उसके मन में पैदा होकर बढ़ेगा और सुरत शब्द मारग के अभ्यास में प्रीत जागेगी और संसार और उसके भोग और सामान की तरफ़ से चित्त उदासीन होता जावेगा ॥

९७३-(१६) ज़ाहिर है कि बिना प्रीत और शौक़ के कोई काम दुनियाँ और परमार्थ का दुरुस्ती के साथ नहीं बन सकता है और बग़ैर प्रेम और मुहब्बत के कोई किसी से नहीं मिल सकता है इस वास्ते जब सच्चे परमार्थी के मन में मालिक के चरनों का प्रेम आया और शौक़ दर्शन का पैदा हुआ तब ज़रूर वह एक दिन संत सतगुर की दया से निज धाम में पहुँच कर राधास्वामी दयाल का दर्शन पावेगा और उसी शख़्स से अभ्यास भी

आसानी और दुरुस्ती के साथ बन पड़ेगा यानी रास्ता आहिस्ते २ तै होता जावेगा इसी का नाम सच्ची मुक्ती और पूरा उद्धार है ॥

९७४–(१७) यह हालत और कैफ़ियत सच्चे परमार्थी की जैसा कि दफ़ा (१५) में लिखा है इसी ज़िन्दगी में थोड़ी बहुत पैदा होती हुई नज़र आवेगी और अंतर में मालिक की दया के परचे पाकर उसकी प्रतीत और प्रीत मज़बूत होती जावेगी तब सच्चा ख़ौफ़ और सच्चा भाव मालिक का मन में पैदा होगा और फिर नाक़िस करम उस शख़्स से बहुत कम बल्कि बिलकुल नहीं बनेंगे और भक्तों और प्रेमियों के मुवाफ़िक़ उसकी रहनी और व्यौहार होता जावेगा और अंतर में उसको पूरा यक़ीन हो जावेगा कि इसी कार्रवाई से मैं देह और दुनियाँ से न्यारा होकर और माया के घेर से निकल कर एक दिन धुर घर में जो महा सुख और महा प्रेम का भंडार है पहुँच कर अपने मालिक का दर्शन और उसके चरनों में बिश्राम पाऊँगा ॥

९७५–(१८) सब मतों में मालिक को अरूप कहा है और इस सबब से उसका ध्यान कुछ नहीं बन सक्ता सिर्फ़ आकाशवत उनमान करके और उसको सर्ब व्यापक समझ कर बेठिकाने ध्यान लगाते हैं इस सबब से चाहे मन और इंद्रियाँ कुछ सिमट

ज़ावें लेकिन चढ़ाई सुरत और मन की नहीं हो सक्ती और हालत भी जैसा चाहिये नहीं बदलती और जो किसी क़दर बैराग पैदा हो जावे उसके क़ायम रहने का एतबार नहीं हो सक्ता और न अख़ीर वक़्त पर संतों के तीसरे दरजे यानी मलीन माया के देश के ऊपर सुरत का गुज़र या ठहराव मुमकिन है ॥

९७६-(१९) संत मत में भी मालिक को अरूप कहा है और शब्द स्वरूप से उसका ज़हूरा और प्रकाश बर्णन किया है और इसी स्वरूप से वह सब जगह प्रघट और भरपूर है और जो आदि धार शब्द की कुल मालिक के चरनों से निकली वही उतार के वक़्त जगह २ मंडल बाँधती हुई और रचना करती चली आई उस आदि धुन और धार का भेद मुक़ामवार संतों ने खोल कर समझाया है उसी धुन को चित्त से सुनना और उसके आसरे सुरत को उस मुक़ाम की तरफ़ जहाँ से कि वह धुन आती है चढ़ाना सुरत शब्द का अभ्यास कहलाता है इस तरकीब से अरूप का ध्यान भी दुरुस्त बनता है क्योंकि शब्द भी अरूप है और ऊँचे मुक़ामों पर चढ़ कर उस से मेला भी होता जाता है और रफ़्ते २ धुर मुक़ाम पर जहाँ से आदि शब्द प्रघट हुआ पहुँचना मुमकिन है सिवाय इसके और कोई जुगत माया के घेर से निकल कर पार पद में जाने

की नहीं रक्खी गई इस वास्ते जिस मत में शब्द का मुक़ामवार भेद और उसके वसीले से सुरत की चढ़ाई का अभ्यास जारी नहीं है वह मत थोथा है और उस में पूरा और सच्चा उद्धार जीव का हरगिज़ मुमकिन नहीं है ॥

-९७७-(२०) अब दुबारा खोल कर कहा जाता है कि जिसको अपने जीव का कल्यान मंजूर है उसको चाहिये कि संत सरन में आवे और उनके सतसंग में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर जिस क़दर बन सके अभ्यास शुरू करे तब आहिस्ते २ उसका कारज बन जावेगा और किसी तरकीब से माया के जाल से निकलना और धुरपद में पहुँचना मुमकिन नहीं है ॥

---

(६४) प्र ार चौंसठवाँ

बहुत से लोग मुक्ती के वास्ते अनेक तरह के करम करते हैं और तन मन धन भी ख़र्च करते हैं फिर भी सच्ची मुक्ती प्राप्त नहीं होती लेकिन जो कोई संतो के बचन के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत करनी करे तो वह अपनी मुक्ती होती हुई कोई दिन में अपनी आँख से देखकर

निचिन्त हो जावेगा और अंतर में दिन २ आनंद और सरूर बढ़ता जावेगा।

९७८–(१) दुनियाँ में अनेक मत जारी हैं और हर एक मत में कोई न कोई जतन वास्ते हासिल करने मुक्ती के बर्णन किया है पर मुक्ती का भेद नहीं लिखा और न वह जतन करके जीतेजी मुक्ती होती हुई नज़र आती है॥

९७९–(२) इस सबब से मुवाफ़िक़ संतों के बचन के वह साधन जैसा चाहिये दुरुस्त नहीं है और अक्सर खुद मतलबी और रोज़गारी लोगों ने जीवों को धोखा दिया॥

९८०–(३) जो कोई सच्चा उद्धार चाहता है उसको मुनासिब है कि पहिले इस बात को तहक़ीक़ करे कि मुक्ति पद यानी जिस स्थान में पहुँच कर दुनियाँ और हर क़िस्म की देह के बंधन छूट जावें और अमर आनंद प्राप्त होवे कहाँ है और वहाँ पहुँचने का रास्ता कहाँ और कैसा है और कौन जुगत से उस रास्ते पर चलना मुमकिन है॥

९८१–(४) यह भेद किसी मत में खोल कर नहीं लिखा सिर्फ़ इस क़दर कहते हैं कि स्वर्ग या बैकुंठ या बहिश्त या परमेश्वर के लोक में पहुँचने से मुक्ती हासिल होती है पर भेद उस धाम का कि कहाँ है और किस रास्ते और किस तरकीब से चलना होगा बिल्कुल बयान नहीं किया है॥

९८२-(५) जोग शास्तर में अलबत्ता सात म यानी छः चक्र और उनके ऊपर सहसदल कँवल सातवाँ लिखा है मगर तरकीब चलने की प्राणों को रोकने और चढ़ाने के साथ लिखी है लेकिन यह अभ्यास निहायत कठिन और ख़तरनाक है और ग्रहस्तियों से क़तई नहीं बन सकता बल्कि बिरक्तों से भी बनना उसका निहायत मुशक्लि है इस सबब से यह रास्ता मुक्ती का सहसदल कँवल तक बिल्कुल बंद समझना चाहिये ॥

९८३-(६) सिवाय इसके जो मुद्रा वग़ैरह का साधन बर्णन किया है उसमें भी चलने और चढ़ने की तरकीब साफ़ नहीं लिखी है लेकिन जोकि वह साधन अक्सर ऊँचे चक्रों में किया जाता है इस वास्ते अभ्यासी को कुछ रस और आनंद अभ्यास के समय प्राप्त होता है और मरने के बाद भी संतों के तीसरे दरजे की हद्द में सुख स्थान मिलता है पर सच्ची मुक्ती हासिल नहीं होती ॥

९८४-(७) जिन मतों में सिर्फ़ बाहरमुखी साधन जारी हैं वह मुक्ती के रास्ते से बहुत दूर पड़े हैं और मुक्ति पद या किसी ऊँचे स्थान का भेद भी नहीं जानते और न चलने की जुगत से वाक़िफ़ हैं इस वास्ते इन मत वालों का आवागवन दूर नहीं होता और अपने करम और बासना के मुवाफ़िक़ दुख का भोग करते हैं ॥

९८५-(८) संत फ़रमाते हैं कि सच्चा मुक्ति पद वह है कि जहाँ माया का नाम व निशान भी नहीं है और वहाँ हमेशा आनंदही आनंद रहता है और जहाँ कष्ट और कलेश और जनम और मरन का ज़िकर भी नहीं है। यह स्थान ऊँचे से ऊँचा है और निर्मल चेतन्य देश और कुल मालिक का धाम और महा आनंद और महा प्रेम का भंडार यही है, वहाँ पहुँच कर जीव का सच्चा और पूरा उद्धार और सच्ची मुक्ती मुमकिन है॥

९८६-(९) यह धाम पिंड और ब्रह्मांड के पार है और उसका रास्ता घट में नैन नगर में होकर जारी है और उसके तै करने की जुगत सिर्फ़ संतों के पास है और किसी मत के आचारज को इस स्थान का हाल और रास्ते का भेद मालूम नहीं हुआ॥

९८७-(१०) जोकि शब्द कुल मालिक का ज़हूरा है और इसी की धार उत्तर कर जगह २ मंडल बाँध कर रचना करती चली आई है और पिंड में आँख के मुक़ाम पर ठहरी है सो उसी धार के वसीले से सुरत का उलटना यानी घर की तरफ़ चलना और चढ़ना मुमकिन है और कोई रास्ता या धार जिसका धुरपद से सिलसिला लगा हुआ है रची नहीं गई और जो दूसरी धारें हैं वे सब माया के देश से निकसी हैं और माया की हद्द में

ही ख़तम हो जाती हैं जो कोई इन धारों पर जैसे प्राण और दृष्टी की धार पर सवार होकर चलेगा वह माया की हद्द में रहकर सबेर अबेर जनम मरन के चक्कर में आवेगा ॥

९८८-(११) कुल मालिक शब्द और प्रेम और आनंद स्वरूप है और जीव जोकि उसकी अंस है वह भी शब्द और प्रेम स्वरूप है और जोकि सुरत की धार का सिलसिला दसवें द्वार और वहाँ से सत्तलोक और राधास्वामी पद से लगा हुआ है इस वास्ते जो कोई प्रेम अंग लेकर और शब्द की धार को पकड़ कर अपने घट में संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ उनकी सरन लेकर चलेगा वह एक दिन ज़रूर धुरपद यानी निर्मल चेतन्य देश में जो शब्द और प्रेम और आनंद का भंडार है बासा पावेगा ॥

९८९--(१२) जो कोई शब्द का अभ्यास बिना भेद रास्ते और मंज़िलों के इधर उधर से उपदेश लेकर या पोथियाँ पढ़कर करेगा उसका रास्ता हरगिज़ नहीं चलेगा अलबत्ता शब्द की धुन सुनकर उसका मन एकाग्र हो जावेगा और कुछ रस भी आवेगा लेकिन बसबब न होने भेद काल और दयाल के वह शख़्स माया के घेर में अटका रहेगा और सच्चा मुक्ति पद नहीं पावेगा ॥

९९०--(१३) इस वास्ते जो कोई शब्द का अभ्यास करे उसको चाहिये कि संतों के सतसंग में शामिल होकर और उनसे उपदेश लेकर अपने अंतर में जुगत कमाना शुरू करे तब उसकी प्रीत और प्रतीत राधास्वामी दयाल और संत सतगुर के चरनों में बढ़ेगी और अपनी मुक्ती होती हुई नज़र आवेगी यानी देह और दुनियाँ के बंधन ढीले और कम होते जावेंगे और भोगों में आशक्ती कम और दर्शनों का शौक़ ज़ियादा होता जावेगा ॥

९९१--(१४) बहुत से मतों का सिद्धान्त किसी मंज़िल पर संतों के तीसरे दरजे में और जोगेश्वरों का अंत पद ब्रह्मांड यानी संतों के दूसरे दरजे में ख़तम हुआ है और पहिले दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश में जो माया की हद्द के पार है सिवाय संतों के कोई नहीं पहुँचा इस सबब से सच्चा उद्धार किसी का नहीं हुआ क्योंकि माया के घेर में स्थूल या सूक्ष्म देह का बंधन और दुख सुख का भोग और जनम मरन का चक्कर बराबर जारी है ॥

९९२--(१५) जो कोई सुरत शब्द मारग का अभ्यास करेगा उसके मन और सुरत आहिस्ते २ ऊँचे की तरफ़ को चढ़ेंगे और जिस क़दर पिंड देश से न्यारे होते जावेंगे उसी क़दर उस अभ्यासी को दुनियाँ का दुख सुख कम ब्यापेगा और तन मन और इंद्री और भोगों में आशक्ती कम होती जावेगी

यही निशान मुक्ती के प्राप्त होते जाने का है। इसी तरह अभ्यास करने से एक दिन सुरत तन मन से न्यारी होकर संत सतगुर के प्रताप से सच्च पुरुष राधास्वामी दयाल के देश में दाखिल होगी और काल और माया के जाल को काट कर दयाल देश में अपने सच्चे माता पिता के चरनों में आनंद व बिलास करेगी ॥

---

(६५) प्रकार पैंसठवाँ

दुनियाँ में लोग अनेक प्रकार के बाजे बजाते हैं और उनके साथ गाते हैं और हर एक की आवाज़ सुहावनी और प्यारी लगती है और जब कई बाजे सुर मिलाकर इकट्ठे बजाते हैं और गाना होता है उस वक़्त गहिरा आनंद मालूम होता है अब जो कोई अंतर के बाजे और राग सुने उसके आनंद की सिफ़त क्या वर्णन की जावे, मन और सुरत दोनों लीन होकर ऊँचे की तरफ़ चढ़ेंगे और एक दिन महा आनंद के भंडार में पहुँच जावेंगे।

९९३-(१) दुनियाँ में लोग अनेक तरह के बाजे बजा कर मगन होते हैं और हर एक बाजे से

आवाज़ सुरीली और रसीली अपने २ दरजे के मुवाफ़िक़ निकलती है और सुनने वालों को रस देती है ॥

९९४–(२) और जबकि कितनेही बाजे उनके सुर मिला कर एक दम बजाये जाते हैं तो कुल बाजों की आवाज़ मिलकर निहायत रसीली और मीठी मालूम होती है और दिल उसके सुनने को बेइख़्तियार चाहता है ॥

९९५–(३) सिर्फ़ मनुष्य नहीं बल्कि जानवर भी सुरीली और रसीली आवाज़ के आशिक़ मालूम होते हैं यानी जब उनके सामने कोई बाजा या कितनेही बाजे मिलाकर बजाये जावें तो उन पर एक तरह की मस्ती छा जाती है और हिस्स व हरकत बंद हो जाती है ॥

९९६–(४) इससे ज़ाहिर है कि मन और सुरत को क़ुदरती इश्क़ और शौक़ साथ आवाज़ के है। जब यह सुरीली और रसीली सुनाई देती है तब दोनों मन और सुरत उसके सुनने में लग जाते हैं और अंतर में किसी क़दर मस्त हो जाते हैं यानी चिन्ता और फ़िकर और दूसरे ख़याल उस वक़्त दिल से दूर हो जाते हैं ॥

९९७–(५) और जबकि बाजों के साथ एक दो या ज़ियादा मर्द या औरत अपनी आवाज़ को मिलाकर कोई प्रेम या चितावनी या भेद के शब्द

या गीत गाते हैं तो उस वक़्त ज़ियादा समा बँध जाता है और सुनने वालों को बहुत आनंद मालूम होता है और हर कोई दूर से बाजे की आवाज़ सुनकर उस जलूसे में पहुँच कर शामिल होते हैं और रस लेते हैं यानी सुरीली और रसीली आवाज़ में शक्ती है जोकि जीवों को अपनी तरफ़ खैंचती है और मर्द और औरत और लड़के बाले बल्कि छोटे बच्चे और जानवरों पर भी असर गाने बजाने का बराबर पहुँचता है ॥

९९८--(६) सबब इस खिंचाव और आशक्ती का यह है कि सुरत यानी रूह आपही धुन स्वरूप है और शब्द से ही इस का निकास हुआ है और शब्द यानी चेतन्य की धार के साथ ही यह हमेशा रहती है इस सबब से जब और जहाँ सुरीली आवाज़ सुनाई देती है वहाँ सुरत फ़ौरन लग जाती है और चाहे जैसा ज़रूरी काम हो उस को मुल्तवी करके थोड़ी देर उस आवाज़ का रस लेकर खुशी हासिल करती है ॥

९९९–(७) यह सब बाजे जो कि दुनियाँ में जारी हैं अंतरमुख अभ्यासियों ने मिस्ल जोगी और जोगेश्वर अपने घट में आकाशबानी यानी आसमानी आवाजें सुनकर बनाये हैं फिर असल आवाज़ में जोकि ऐन रूहानी है यानी रूह की धार से निकलती है किस क़दर रसीलापन और शीरीनी होगी

और किस क़दर वह मन और सुरत में मस्ती और महविंयत यानी लीनता पैदा करेगी ॥

१०००-(८) संतों ने जो कुल मालिक के ख़ास पुत्र या मुसाहब हैं और कुल रचना के भेद से वाक़िफ़ हैं शब्द की महिमा बहुत गाई है और वह शब्द रूह की आवाज़ है जोकि घट २ में ऊँचे देश यानी मस्तक में हो रही है और इस महिमा से मतलब यह है कि जीव जोकि मन और इंद्रियों के साथ अपने निज देश और निज स्वरूप को भूलकर इस संसार के भोग और पदार्थों में लिपट कर माया में फंस गया है उसको बजाय बाहर की आवाज़ों के उसके घट में सुरीली और रसीली धुनें सुना कर निज घर की तरफ़ जहाँ से वह आवाज़ें उठ रही हैं चलावें और इस तरफ़ से उस के चित्त को आहिस्ते २ हटा कर सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में जो प्रेम और आनन्द का भंडार है प्रीत और लगन पैदा कराके ऊँचे और धुर स्थान में बासा देवें ताकि काल और माया के कष्ट और कलेश और जनम और मरन के चक्कर से बच कर परम आनन्द को प्राप्त होवे ॥

१००१--(९) जगत के जीव शब्द की महिमा से बिलकुल बेख़बर हैं और हरचंद सब मतों के आचारजों ने जोकि अब दुनियाँ में जारी हैं अपनी बानी में शब्द की बुज़ुर्गी बयान की है मगर भेद

उसका नहीं खोला और न जुगत उसको सुन कर घट में चढ़ने की बर्णन की है इस सबब से यह महिमा गुप्त रही और किसी को इस क़दर जुरअत न हुई कि अपने घट में शब्द को सुने और न कोई भेदी मिला कि भेद रास्ते का और जुगत शब्द को सुन कर घट में चढ़ने और चलने की बतावे ॥

१००२-(१०) इस सबब से कुल जीव चाहे जिस मत मे हैं किसी न किसी क़िस्म की बाहरी पूजा पाठ या परमार्थी कार्रवाई में जिसको शुभ करम कहना चाहिये लग गये और सच्चा तरीक़ा हासिल करने सच्ची और पूरी मुक्ती का शब्द के अभ्यास के वसीले से किसी को मालूम नहीं हुआ ॥

१००३-(११) लेकिन बाहरमुखी कार्रवाई में भी शब्द संग रहता है यानी हर एक मत में परमार्थी बानी को राग रागनी में बाजों के संग गाते हैं और जीवों को सुना कर उनके मन को परमार्थ की तरफ़ खींच कर लगाते हैं ॥

१००४--(१२) जोकि शब्द आनंद और रस का भंडार है इस वास्ते संसारी कामों में भी गाना बजाना जल्सों और महफ़िलों और ज्योनारों में और भी राज दरबार और फ़ौज में जारी रक्खा है कि जिससे मन और सुरत को सिर्फ़ आनंदही नहीं बल्कि ताक़त करने कामों की और लड़ाई में लड़ने की हासिल होती है ॥

१००५--(१३) इसी तरह घट में आवाज़ सुन कर मन और सुरत को ताक़त चढ़ने की ऊंचे देश की तरफ़ हासिल होती है लेकिन बग़ैर भेद रास्ते और मंजिलों के शब्द के और मदद पूरे गुरू के यह कार्रवाई शब्द के अभ्यास की दुरुस्ती से नहीं बन सक्ती ॥

१००६--(१४) जो कि सुरत कुल मालिक राधास्वामी के धाम से नीचे के देशों में उतर कर देह और माया के पदार्थों में रच गई है और मलीन माया के खोल इस पर चढ़ गये हैं सो जब तक कि इस देश को छोड़ कर ऊपर की तरफ़ जहाँ निर्मल चेतन्य देश है न चढ़ेगी तब तक बिकार दूर न होंगे और सफ़ाई प्राप्त नहीं होगी और अपने सच्चे माता पिता कुल मालिक के धाम में पहुँचने और बिश्राम पाने के क़ाबिल नहीं होवेगी और जो नीचे यानी माया के देश में पड़ी रही तो बारम्बार देह धारन कर के दुख सुख भोगेगी और जनम मरन के चक्कर से छुटकारा नहीं होगा ॥

१००७--(१५) इस वास्ते लाज़िम पड़ा कि हर एक जीव चाहे स्त्री होवे या पुरुष थोड़ा बहुत जतन इसी ज़िंदगी में वास्ते चलने अपने घर की तरफ़ के करे और यह जतन सुरत शब्द का अभ्यास है कि जिसके सिवाय और कोई तरकीब घट में चलने और चढ़ने की नहीं रची गई है ॥

१००८--(१६) अब सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि पूरे गुरू को (जो ज़रूर शब्द भेदी होंगे) तलाश करके उनसे भेद रास्ते का और तरकीब चढ़ाने मन और सुरत की शब्द के वसीले से दरियाफ़्त करें और जो वे न मिलें तो जो कोई उनका प्रेमी और दर्दी सेवक मिल जावे तो उससे उपदेश लेवें और एकान्त बैठ कर रोज़मर्रे अभ्यास प्रीत और प्रतीत के साथ करें तो दिन २ आहिस्ते २ चढ़ाई मन और सुरत की होती जावेगी और रस और आनंद भी मिलता जावेगा। और जो शौक़ और प्रेम बढ़ता जावेगा तो एक दिन संत सतगुर भी इसको दर्शन देकर अपनी मेहर और दया से निहाल करेंगे यानी रफ़्ते २ धुर घर में पहुँचा कर उसका कारज बनावेंगे ॥

१००९--(१७) इसी कार्रवाई का नाम सच्चा परमार्थ है और बाक़ी जो कुछ [illegible]र या बाहर कार्रवाई कर रहे हैं उससे सच्चे परमार्थ का फ़ायदा हासिल न होगा यानी सच्चा उद्धार और सच्ची मुक्ती प्राप्त न होगी ॥

॥ इति ॥